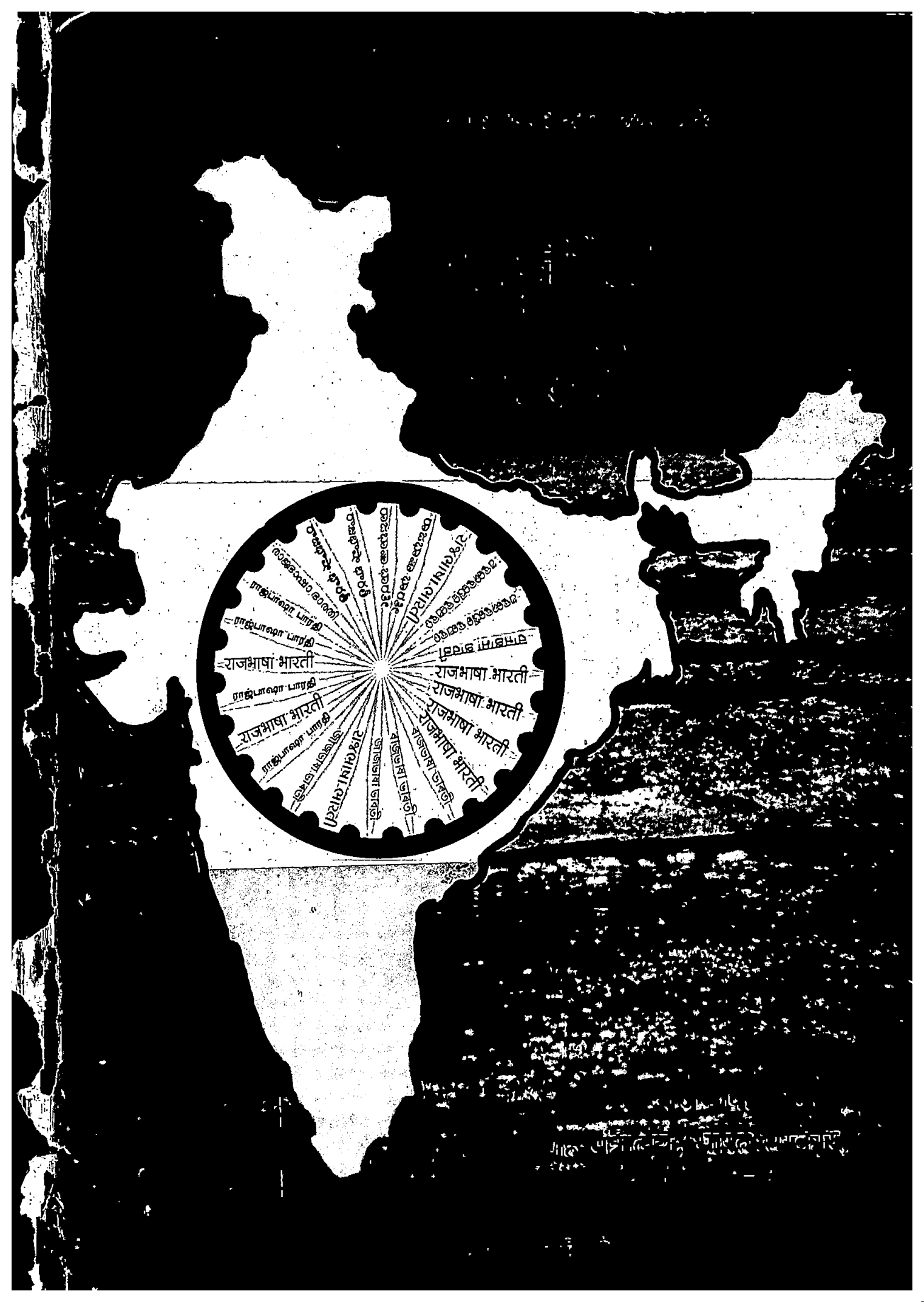
राजभाषा भारती

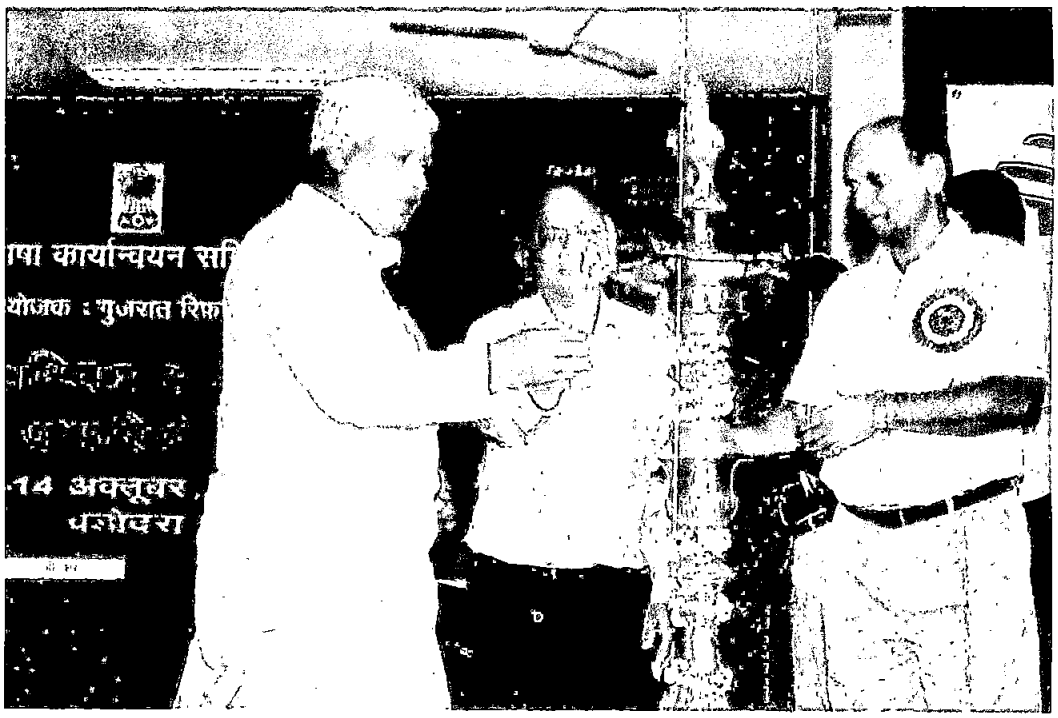

राजभाषा कार्यान्वयन समिति गुजरात रिफाइनरी द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल एवं संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग) श्री डी.के. पाण्डेय ।

देहरादून में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण एवं विचार मंथन में श्री आर. के. कालिया, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, प्रो. (श्रीमती) सुधा पांडेय, कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार पुरस्कार प्रदान करते हुए तथा श्री एस. आर. शर्मा, जनरल मैनेजर (फील्ड), पंजाब नेशनल बैंक पुरस्कार गृहण करते हुए ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

—निराला

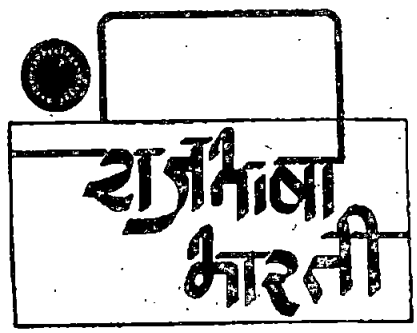

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 35

अंक : 134

अप्रैल–जून, 2012

❑ संरक्षक :
शरद गुप्ता, भा.प्र.से.
सचिव, राजभाषा विभाग

❑ परामर्शदाता :
डी.के. पाण्डेय
संयुक्त सचिव (रा.भा.-I)

आर.के. कालिया
संयुक्त सचिव (रा.भा.-II)

❑ संपादक :
डॉ. जय प्रकाश कर्दम
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 011-23438129

❑ सहायक संपादक :
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 011-23438137

❑ निःशुल्क वितरण के लिए :
पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ अपना लेख एवं सुझाव भेजें :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
एन डी सी सी-II, भवन बी विंग,
चौथा तल, नई दिल्ली-110001
ईमेल–patrika–ol@.nic.in

विषय-सूची

पृष्ठ

राजभाषा विभाग के नए सचिव (iii)

❑ संपादकीय (iv)

❑ चिंतन

1. कामकाजी हिंदी एवं उसकी वाक्य–संरचना –डॉ. रामचंद्र राय 1
2. उच्चारण, वर्तनी और लिपि के अंतर्संबंध –डॉ. अचलानन्द जखमोला 6
3. आंशिक पर्यायवाची–सूक्ष्म–अर्थ भेदी शब्द –प्रा. शशिकांत पशीने 'शाकिर' 12
4. भाषा बंधन : परिसंवाद –उमाकांत खुबालकर 17
5. गंवई गांव गुलाव (अनुवाद के कुछ सिद्धांत) –क्षेत्रपाल शर्मा 20
6. तकनीकी विषय और राजभाषा–वर्तमान स्थिति –राकेश कुमार 23

❑ साहित्यिकी

7. सहजता के कवि : नागार्जुन –मनोज तिवारी 26
8. महान समाज सुधारक : संत पीपा जी –ललित शर्मा 29

❑ विज्ञान/तकनीकी

9. खगोलीय पिंड और हमारा जीवन –सुरेन्द्र प्रसाद राय 34

❑ पत्रकारिता

10. मीडिया और आम आदमी के सरोकार –देवेन्द्र उपाध्याय 40

❑ स्वास्थ्य

11. जीवन शैली एवं स्वास्थ्य –ज्ञानवती धाकड़ 42

❑ राजभाषा संबंधी गतिविधियां :

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 46

'ग' क्षेत्र: पूर्व रेलवे, कोलकाता; मंडल रेल प्रबंधक मालदा; दक्षिण मध्य रेलवे सिंकदराबाद; केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क विशाखापट्टणम; खादी और ग्रामोद्योग आयोग हैदराबाद; पावरग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि. जम्मू; आकाशवाणी, कटक;

'ख' क्षेत्र : कर्षण मशीन कारखाना नाशिक रोड; पश्चिम रेलवे दाहोद; सीमा शुल्क केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर गोवा; आयकर आयुक्त अमृतसर;

3608 HA/12—1A

'क' क्षेत्र : पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर; पश्चिम मध्य रेल कोटा; उत्तर रेलवे अंबाला छावनी; शहरी विकास मंत्रालय, नई दिल्ली; भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई; आकाशवाणी मथुरा; आकाशवाणी राजकोट; दूरदर्शन राजकोट;

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 55

'ग' क्षेत्र : गुवाहाटी; तृश्शूर; फरक्का;

'ख' क्षेत्र : चण्डीगढ़; राजकोट

'क' क्षेत्र : कोटा; अंबाला; बालाघाट; सोनीपत; अलीगढ़; फरीदाबाद;

(ग) कार्यशालाएं 61

'ग' क्षेत्र : महालेखाकार भुवनेश्वर; दक्षिण मध्य रेलवे सिकंदराबाद; भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन; मुख्य नियंत्रण सुविधा हासन; राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रोद्योगिकी अनुसंधान संस्थान कोलकाता; न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन आफ इंडिया लि., कैगा; उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र कुन्नूर; बी ई एम एल लि., बैंगलौर; बी एस एन एल सेलम; दूरदर्शन केंद्र बैंगलूर; दूरदर्शन केंद्र हैदराबाद; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन गुवाहाटी; आकाशवाणी ओडिशा/जयपुर; आकाशवाणी कडपा केंद्र; आकाशवाणी हैदराबाद; आकाशवाणी कोलकाता;

'ख' क्षेत्र : गोला बारूद फैक्टरी पुणे; भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण गोवा; नाईपर एस ए एस नगर; आकाशवाणी पणजी; दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र भावनगर; आकाशवाणी जालंधर;

'क' क्षेत्र : कोयला खान भविष्य निधि रांची; राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो नई दिल्ली; नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन नई दिल्ली; सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास मंत्रालय मुजफ्फरपुर; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण जयपुर; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण रांची; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान नई दिल्ली; भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लि., नई दिल्ली; क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र देहरादून; एन एच पी सी लि., कुल्लू; एन टी पी सी दादरी; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र बालाघाट; केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रांची; आकाशवाणी इंदौर;

(घ) विश्व हिंदी दिवस 74

'ग' क्षेत्र : नाभिकीय इंधन सम्मिश्र हैदराबाद; अंतरिक्ष विभाग हासन;

'ख' क्षेत्र : भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा

'क' क्षेत्र : परमाणु ऊर्जा विभाग, जयपुर

(ङ) हिंदी दिवस 76

'ग' क्षेत्र : प्रधान महालेखाकार ओड़िशा; सीमा-शुल्क आयुक्त शिलांग; राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय तिरुवनंतपुरम; कर्मचारी राज्य बीमा निगम कोलकाता; कर्मचारी राज्य बीमा निगम गुवाहाटी; दूरसंचार गुलबर्गा; बीईएमएल बैंगलौर; एच एल एल तिरुवनंतपुरम; जवाहर नवोदय विद्यालय मणिपुर; दूरदर्शन हैदराबाद;

'ख' क्षेत्र : केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला चण्डीगढ़; पावर ग्रिड कार्पोरेशन आफ इंडिया जम्मू; दूरदर्शन केंद्र मुंबई; दूरदर्शन केंद्र राजकोट;

'क' क्षेत्र : मंडल रेल प्रबंधक कोटा; रेल विद्युतीकरण अंबाला छावनी; पूर्व मध्य रेल हाजीपुर; केंद्रीय लोक निर्माण विभाग नई दिल्ली; केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर पटना; राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक जयपुर; कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल नोएडा; क्षेत्रीय रेशम उत्पाद अनुसंधान केंद्र देहरादून; आकाशवाणी जमदेशपुर; आकाशवाणी जयपुर;

❑ संगोष्ठी/सम्मेलन 85

पूर्व क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन; मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण गुवाहाटी; राष्ट्रीय इस्पात निगम लि., विशाखापट्टणम; भारतीय पैट्रोलियम संस्थान देहरादून; महानदी कोल फील्ड्स लि., संबलपुर; नराकास (उपक्रम) बडोदरा; बैंक आफ इंडिया नई दिल्ली;

❑ प्रतियोगिता/पुरस्कार 91

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान कोलकाता; राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय तिरुवनंतपुरम; सहायक आसूचना ब्यूरो तिरुवनंतपुरम; उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र कुन्नूर; एच एल एल लाइफकेयर लि.; भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण गुवाहाटी; मंडल रेल प्रबंधक पुणे; पोस्टमास्टर जनरल इंदौर;

❑ प्रशिक्षण 93

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली; प्रधान कार्यालय कार्पोरेशन बैंक मंगलूर;

❑ विविध 96

यूनिकोड क्यों, क्या और यूनिकोड का प्रयोग

❑ पाठकों के पत्र 97

राजभाषा विभाग के नए सचिव

श्री शरद गुप्ता, भा.प्र. सेवा (असम मेघालय : 1977) ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव के रूप में 2 मार्च, 2012 को अपना कार्यभार ग्रहण किया।

श्री शरद गुप्ता, उत्तर प्रदेश के मूल निवासी हैं। आपने भौतिकी, गणित, रसायन में प्रथम श्रेणी में स्नातक तथा भौतिकी विषय में प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की।

श्री शरद गुप्ता भारतीय प्रशासनिक सेवा के असम मेघालय संवर्ग से हैं। आपने असम एवं मेघालय सरकार के संवर्ग में भू-राजस्व प्रबंधन एवं जिला प्रशासन, मानव संसाधन विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास, पर्यटन, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन, तथा निर्वाचन जैसे महत्वपूर्ण विभागों में शीर्ष पदों पर कार्य किया। इसके पश्चात् आपने केंद्र सरकार में पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग तथा भारतीय मानक ब्यूरो जैसे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर सेवा की और इस समय आप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय में सचिव के पद पर कर्मठता पूर्वक कार्यरत हैं।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के इन मृदु भाषी कर्मठ प्रशासक के कुशल मार्ग दर्शन और नेतृत्व में राजभाषा विभाग हिंदी के प्रसार को प्रभावी बनाने में समर्थ होगा।

—संपादक

संपादकीय

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है । वैचारिक आदान-प्रदान, व्यापार व्यवहार का आधार भाषा है । अर्थात् भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है भाषा के बिना न तो एक-दूसरे को समझा जा सकता है और न पारस्परिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है । भाषा ही मनुष्यों को एक-दूसरे से जोड़े रखती है । किंतु मानव-जीवन में भाषा की व्याप्ति और महत्व इससे कहीं अधिक है । भाषा एक प्रवाहमान नदी है जिसमें हमारा जीवन बहता है । भाषा से ही समाज बनता है और भाषा के द्वारा ही उसे एकसूत्र में बांधकर रखा जा सकता है । सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के किसी भी क्षेत्र की उन्नति या प्रगति में भाषा की अहम भूमिका होती है । भाषा के बिना व्यक्ति या समाज प्राणहीन और अपंग है । भाषा किसी भी समाज की ताकत भी होती है और उसकी पहचान भी । यह पहचान अस्मिता का निर्माण करती है और अस्मितावान समाज और राष्ट्र अन्यों की तुलना में अधिक प्रगति और विकास करते हैं । प्रत्येक राष्ट्र की कोई न कोई राष्ट्रभाषा या राजभाषा है । भारत एक बहुभाषी देश है, इसकी कोई एक राष्ट्रभाषा नहीं है । किंतु भारत की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा और राजभाषा भी है । कम या ज्यादा देश भर में हिंदी सर्वत्र मौजूद है । हिंदी की इसी व्यापकता और भारतीय जन-मानस में उसकी गहरी पैठ को देखते हुए ही जर्मनी के विख्यात हिंदी विद्वान लोठार लुत्से ने कहा था कि 'हिंदी सीखे बिना भारत के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता' । यह टिप्पणी इस तथ्य को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है कि हिंदी भारत की पहचान है । भाषा की यह पहचान भारतीय संस्कृति की भी पहचान है । वस्तुतः भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है । या कहिए कि भाषा संस्कृति का प्रवेश द्वार है । इसलिए भारतीय संस्कृति की अक्षुण्णता और विकास इस बात पर निर्भर करता है कि हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में हिंदी कितनी समाविष्ट रहती है ।

प्रस्तुत अंक में अन्य के साथ-साथ हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं पर उपयोगी सामग्री देने का प्रयास किया गया है । डॉ. रामचन्द्र राय ने कार्यालयीन हिंदी एवं उसकी वाक्य संरचना पर विस्तार से चर्चा की है । उच्चारण, वर्तनी और लिपि के अंतर्संबंध पर डॉ. अचलानंद जखमोला द्वारा प्रकाश डाला गया है । सार्थकता की दृष्टि से भाषा की मौलिक अथवा लघुतम इकाई शब्द है । अतः सार्थक ध्वनि या ध्वनि-समूह को शब्द कहा जाता है । अर्थ प्रकट करने की दृष्टि से शब्द इतना विलक्षण है कि वह अकेला ही अर्थ देता है तो कभी एक ही अर्थ के लिए अनेक शब्दों का तांता लगा देता है । समानार्थी शब्दों में सूक्ष्म अंतर के बारे में प्रा. शशिकांत पशी ने 'शाकिट' ने अपने लेख 'आंशिक पर्यायवाची-सूक्ष्म-अर्थभेदी शब्द' में गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है । अन्य भारतीय भाषाओं के 'भाषा बंधन, परिसंवाद' पर श्री उमा कांत खुबालकर ने उपयोगी बात की है । इसी तरह अनुवाद के कुछ सिद्धांतों पर श्री क्षेत्रपाल शर्मा ने अपने लेख 'गंवई गांव गुलाब' के अंतर्गत कुछ नुस्खे प्रस्तुत किए हैं । आम मानसिकता है कि हिंदी में विज्ञान और तकनीकी विषयों की पढ़ाई तथा अनुसंधान कार्य करना उतना आसान नहीं है जितना अंग्रेजी में । इस भ्रांति को दूर किया है श्री राकेश कुमार ने अपने लेख 'तकनीकी विषय और राजभाषा-वर्तमान स्थिति में ।'

'साहित्यिकी' स्तंभ में इस बार 'सहजता के कविः नागार्जुन' और 'महान समाज सुधारः संत पीपा जी' के बारे में लेख दिए गए हैं । 'विज्ञान/तकनीकी' स्तंभ में 'खगोलीय पिंड और हमारा जीवन' पर श्री सुरेन्द्र प्रसाद राय ने प्रकाश डाला है । इसी तरह 'पत्रकारिता' और 'स्वास्थ' स्तंभ में 'मीडिया और आम आदमी के सरोकार' और 'जीवन शैली एवं स्वास्थ्य' पर चर्चा की गई है ।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं ।

आशा है इस अंक को भी पाठक रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

—डॉ. जयप्रकाश कर्दम

चिंतन

कामकाजी हिंदी एवं उसकी वाक्य-संरचना

डॉ रामचन्द्र राय*

कामकाजी हिंदी से तात्पर्य उस हिंदी से है जिसका प्रयोग कार्यालयीन कार्य में पत्र-व्यवहार, टिप्पणी लेखन आदि के लिए किया जाता है। कार्यालयीन हिंदी की भाषा सामान्य बोलचाल को भाषा से थोड़ी भिन्न होती है। फिर भी इस भाषा को जन-भाषा के निकट रखा जाना आवश्यक है। इसकी भाषा क्लिष्ठ और दुरूह नहीं होनी चाहिए। कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग एवं उसके स्वरूप का निर्धारण सरकारी कार्य-प्रणाली और उसके पीछे निहित सिद्धान्तों के लिए किया जाता है। कार्यालय हिंदी के लिए निम्न विशेषताओं का होना आवश्यक है :-

1. स्पष्टता :-

(क) अर्थ विचार, दिन, तिथि आदि के सम्बंध में साफ-साफ लिखना आवश्यक है। उदाहरण स्वरूप **इसकी मंजूरी दे सकते तो ठीक होता** यह वाक्य स्पष्ट नहीं है। कार्यालयीन हिंदी में **इसकी मंजूरी दी जा सकती है**। यह वाक्य स्पष्ट है।

(ख) अर्थ की निश्चितता होनी चाहिए। दो अर्थों वाले शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ग) तिथि की निश्चितता :- रिपोर्ट 31 दिसम्बर, 2005 तक भेज दें।

(घ) सभी तथ्यों का उल्लेख साफ-साफ होना चाहिए।

2. विषय सपेक्षता :-

टिप्पणी/मसौदा अथवा रिपोर्ट लिखते समय विषय से अलग कुछ नहीं लिखना चाहिए। जिस विषय से संबंधित टिप्पणी/मसौदा अथवा रिपोर्ट लिखा जा रहा है उसी से सम्बंधित ही लेखन होना चाहिए।

3. श्रृंखलाबद्धता :-

टिप्पणी/मसौदा अथवा रिपोर्ट लिखते समय विचारों की श्रृंखला होनी चाहिए। पूरी टिप्पणी/मसौदा अथवा रिपोर्ट एक सूत्र में बंधी एक संपूर्ण इकाई होनी चाहिए।

4. संक्षिप्तता :-

विचार स्पष्ट करने के लिए चाहे कितना विस्तार ही क्यों न हो? अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। उदाहरण स्वरूप आपका भावपूर्ण लम्बा दिनांक.....का पत्र संख्या .....मिला। के स्थान पर आपका दिनांक .....का पत्र सं..... मिला होना चाहिए। भाषा निश्चित एवं संक्षिप्त होनी चाहिए।

5. औपचारिकता :-

सरकारी पत्राचार का ढांचा निश्चित है-शीर्ष कहां लिखना है। संबोधन कहां/कौन-सा करना/लिखना है। स्वनिर्देश कहां लिखना है, पदनाम लिखें या नहीं निश्चित है।

6. सुसंस्कृतता/सभ्यता/शिष्टता :-

कार्यालयीन भाषा का सुसंस्कृत/सभ्य/शिष्ट होनी चाहिए। अगर पहले लिए गये निर्णय, गलत हो रहे हों तो उसे इस प्रकार न लिखा जाय-**वह इतना मूर्ख था कि इतना भी उसकी समझ में नहीं आया**। इस वाक्य के स्थान पर इस प्रकार लिखना चाहिए-**उस समय इन बातों पर विचार नहीं किया गया**। यह सुसंस्कृत/सभ्य/शिष्ट वाक्य है।

7. कर्मवाच्य का प्रयोग :-

कार्यालयीन हिंदी में कर्मवाच्य का अधिक प्रयोग किया जाता है। इसका कारण उनमें व्यक्ति निरपेक्षता एवं सत्यनिष्ठा होती है।

*रूपान्तर, रतन पल्ली नार्थ, शान्ति निकेतन -73123507, पश्चिम बंगाल

608 HA/12—2A

8. दृष्टान्त :–

पूर्व उदाहरणों के द्‌वारा शीघ्र निर्णय लिया जा सकता है। इसलिए इनका महत्त्व रहता है।

9. संभावनार्थ का अत्यधिक प्रयोग :–

कार्यालयीन हिंदी में संभावनार्थ का प्रयोग आज्ञार्थ की अपेक्षा अधिक किया जाता है। उदाहरण स्वरूप-**परिचालित किया जाय/जारी किया जाय/चर्चा करें/भेज दिया जाय**। हम जानते हैं कि प्रत्येक भाषा की अपनी शैली अपनी अभिव्यक्ति की पद्धति अलग-अलग होती है। इसलिए एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय जिस भाषा में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं, उस भाषा की शैली, अभिव्यक्ति पद्धति का प्रयोग करना आवश्यक होता है जिससे उस भाषा की स्वभाविकता बनी रहती है।

हम लोगों के यहाँ कार्यालयीन कार्य की भाषा का मूल स्रोत अंगरेजी भाषा का रहा है। अंगरेजी भाषा में कार्यालयीन में कर्मवाच्य/व्यक्ति निरपेक्ष कथन/व्यक्ति विहीन रचनाओं की प्रधानता मिलती है। इसका कारण यह है कि कार्यालयीन भाषा में व्यक्ति की अपेक्षा पदनाम प्रमुख होता है। इसमें व्यक्ति अपने ऊपर दायित्व नहीं लेना चाहता है। सभी कार्य आदेश, स्वीकृति एवं अनुदेश के आधार पर किए जाते हैं। हिंदी में भी कार्यालयीन भाषा में इसी संरचना को ध्यान में रखकर कार्यालयीन कार्य किया जाता है। इससे पूर्व उल्लेख किया जा चुका है कि कार्यालयीन भाषा में व्यक्ति निरपेक्षता के साथ-साथ कर्मवाच्य की प्रधानता रहती है। इसलिए कार्यालयीन हिंदी में आदेशात्मक, सुझावात्मक, कथनात्मक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। कार्यालयीन हिंदी में आदेशात्मक वाक्य के दो रूप होते हैं। उदाहरण स्वरूप :

1. मिसल पर प्रस्तुत करें
2. चर्चा के अनुसार कार्रवाई करें
3. सक्षम अधिकारी का अनुमोदन प्राप्त करें।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्म करनेवाला कर्ता वाक्य की संरचना में ही निहित है।

इसी कार्य के लिए निम्न व्यक्ति निरपेक्ष एवं कर्मवाच्य प्रधान वाक्यों का प्रयोग मिलता है :–

1. मिसल प्रस्तुत किया जाए।
2. चर्चा के अनुसार कार्रवाई की जाए।
3. सक्षम अधिकारी का अनुमोदन प्राप्त किया जाय।

इसके अन्तर्गत निम्न वाक्य भी आ सकते हैं :–

1. मिसिल के लौटाने पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।
2. इस संबंध में निर्णय लेने पर सूचित किया जाएगा।
3. मुख्यालय छोड़ने की अनुमति दी जाती है।
4. इस मामले में विशेष स्वीकृति दी जा सकती है।

कर्ता के लोप से भी वाक्य की संरचना होती है। उदाहरण स्वरूप :

1. सूचित किया जाता है कि ....
2. शिकायत मिली है कि ....
3. अनुरोध किया जाता है कि ....
4. अनुरोध है कि ....
5. निवेदन है कि ....

कामकाजी अथवा कार्यालयीन हिंदी में वाक्य-साँचे का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य साँचे से अभिप्राय वाक्यांशों के ऐसे क्रिया रूप, जिनका प्रयोग वाक्य बनाने में किया जाता है। एक ही वाक्य साँचे के द्‌वारा विभिन्न प्रकार के वाक्यों की संरचना की जा सकती है। वाक्य साँचों का जितना अधिक ज्ञान होता है, वाक्य-रचना में उतनी ही सहायता मिलती है। सरकारी कार्यालय में हिंदी में काम करने, टिप्पणी एवं मसौदा लिखने के लिए वाक्य-साँचों का ज्ञान होना आवश्यक है। ये वाक्य-साँचे वर्तमान, भूत और भविष्यत् तीन काल में होते हैं। कामकाजी हिंदी का वाक्य साँचा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है :

(1) वर्तमान काल से सम्बंधित वाक्य सांचा :–

कार्यालयीन कार्य में वर्तमान काल से संबंधित वाक्यों का प्रयोग सबसे अधिक किया जाता है। वर्तमान काल के मुख्य वाक्य-साँचे इस प्रकार हैं :–

करना है/ करनी है :–

इस साँचे का प्रयोग कार्य के निपटान के लिए किया जाता है। उदाहरण स्वरूप :

3608 HA/12—2

(1).....has no comment to make.

.....को कोई टीका नहीं करना है ।

(2) I have no comment to make.

मुझे कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।

करें :

इस वाक्य साँचे का प्रयोग आदेशात्मक और अनुरोधात्मक वाक्यों में किया जाता है, इसमें आदर का भाव सन्निहित रहता है ।

उदाहरण स्वरूप :

1. कृपया संबंधित कागजात प्रस्तुत करें ।

   Please put up the relevant papers.

2. कृपया इस मामले को पिछले कागजातों के साथ प्रस्तुत करें ।

   Please put up the case with previous papers.

3. कृपया इस निर्णय को विशेष रूप से नोट करें ।

   Please make a special not of this decision.

4. औपचारिक अनुमति/मंजूरी/आदेश प्राप्त करें ।

   Obtain formal permission/sanction/order

5. कृपया बातचीत/प्रस्तुत/पुष्टि करें ।

   Please speak/put up/confirm

6. पिछले पृष्ठ पर टिप्पणियाँ एवं आदेश देखें ।

   Notes and Orders may please be seen on previous page

किया जाता है/की जाती है/ किए जाते हैं

इस वाक्य साँचे का प्रयोग कार्रवाई के सम्पन्न होने की सूचना का विवरण देने के लिए किया जाता है । उदाहरण स्वरूप :

1. मामले के तत्काल निपटान के लिए अनुरोध किया जाता है ।

   Immediate disposal of the case is requested.

2. आपको इसके द्वारा मंजूरी दी जाती है ।

   Sanction is hereby accorded to you.

3. देखकर वापस किया जाता है ।

   Seen and returned.

4. आपको इसके द्वारा प्राधिकृत किया जाता है ।

   You are hereby authorised.

5. आपको मुझे अवगत कराने का निर्देश हुआ है कि...

   I am directed to inform you that ...

6. अधो-हस्ताक्षरी को आदेश देने का निर्देश हुआ है कि

   The undersigned is directed to order you that

किया जा सकता है/की जा सकती है/ किए जा सकते हैं

इस वाक्य साँचों का प्रयोग सुझाव या चेतावनी देने के लिए किया जाता है । उदाहरण स्वरूप :

1. आपका अनुरोध नहीं माना जा सकता है ।

   Your request can not be acceded.

2. इस मामले पर विचार किया जा सकता है ।

   This case may be considered.

प्रस्तुत है :

जब कार्यालय में अधिकारी के समक्ष कागज पत्र/फाइल प्रस्तुत किया जाता है । तब इसका प्रयोग किया जाता है । उदाहरण स्वरूप:

1. सूचना के लिए प्रस्तुत है ।

   Submitted for information.

2. आदेश के लिए प्रस्तुत है ।

   Submitted for Order.

3. विचारार्थ प्रस्तुत है ।

   Submitted for consideration.

4. मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।

   Draft is put for approval

रहा है/रहे हैं/रही है

इस वाक्य-साँचे का प्रयोग की जा रही कार्रवाई की सूचना देने के लिए होता है । उदाहरण स्वरूप :

1. आदेश भेजा जा रहा है ।

   Order is being sent.

2. पत्र भेजे जा रहे हैं ।

Letters are being sent.

3. सूचना भेजी जा रही है ।

Information is being sent.

(2) भूतकाल से संबंधित वाक्य सांचा :

पिछली कार्रवाई/निर्णय/सूचना की जानकारी देने के लिए भूतकाल का प्रयोग वाक्यों में किया जाता है । इसका प्रयोग पूर्व निर्णय/कार्रवाई की सूचना देने/प्रस्तुतीकरण आदि के लिए किया जाता है । उदाहरण स्वरूप :

1. यह निर्णय लिया गया है कि—

It has been decided that—

2. आवेदन पर विचार किया गया किन्तु दर्शाये हुए कारणों से स्वीकार नहीं किया गया है ।

The application has been considered but it is not accepted for stated reasons.

3. पुस्तकें प्राप्त हुई की एवं अधिग्रहण रजिस्टर में प्रविष्ट की गई ।

Received the books and entered into Acquisition Register.

4. बिल की जाँच की गई है और उसे सही पाया गया है ।

Bill has been examined and found correct.

दिया गया/दी गई/किए गए

इसका प्रयोग अनुमोदन/अनुमति की सूचना के लिए किया जाता है । उदाहरण स्वरूप :

1. अनुमोदन दिया गया/अनुमोदित

Approved

2. उपर दिया गया

Cited above

3. अनुमति दी गई

Permitted

4. स्वीकृति दी गई/स्वीकृत

Sanctioned

5. प्रस्तुत किया गया/प्रस्तुत

Submitted

किया गया था/की गई थी/किए गए थे

इसका प्रयोग पूर्व में किए हुए कार्यों के लिए किया जाता है ।

1. इस बिल का भुगतान पहले किया गया था ।

This bill has been paid previously.

2. पिछले साल भी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी ।

The Report has also been submitted last year.

3. बिल स्वीकार नहीं किया गया था ।

The bill was not accepted.

देख लिया/देख ली/देख लिये

1. देख लिया, धन्यवाद ।

Seen, Thanks

2. देखकर वापस किया गया

Seen and returned

3. देख लिया एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए सम्बंधित विभाग को भेजा जाए ।

Seen and may be sent for necessary action to the concerned Department.

रहा था/रहे थे/रही थी

1. परिपत्र भेजा जा रहा था ।

Circular was being sent.

2. आदेश भेजे जा रहे थे ।

Orders were being sent.

3. सूचना भेजी जा रही थी ।

Information was being sent.

4. मिसिलें भेजी रहा/रही थी ।

Files were being sent.

(3) भविष्यत् काल से संबंधित वाक्य साँचा:

निम्नलिखित वाक्य-साँचों का प्रयोग भविष्यत् काल में सम्पन्न होने वाले कार्यों के लिए किया जाता है :—

भेजा जाएगा/भेजी जाएगी/भेजे जाएंगे

1. पुन: पत्र भेजा जाएगा

   Further letter will send.

2. संसद में विधेयक प्रस्तुत किया जाएगा ।

   Bill will place in the Parliament.

3. चिट्ठी शीघ्र ही भेजी जाएगी ।

   The letter will send immediately.

किया जाएगा/की जाएगी/किए जाएंगे

1. निर्देशों का पालन किया जाएगा

   Instruction will be followed.

2. अघोषित किया जाएगा ।

   Disqualify will be declared.

करना होगा/करनी होगी/करने होंगे

1. यह कार्य शीघ्र करना होगा ।

   This work will have to be done immediately.

2. आज रिर्पोट प्रस्तुत करनी होगी ।

   The Report will have to be submitted Today.

3. ये कार्यादेश आज निर्गम करने होंगे ।

   These Work Order will have to be issued To-day.

रखना होगा/रखनी होगी/रखने होंगे

1. पुस्तकों के प्रत्यक्ष सत्यापन का पूरा विवरण रखना होगा ।

   The detail statement for Physical Verification of the books will be kept.

2. अनुसूचित जाति/जनजातियों के लिए क्रमश: 2 एवं 1 पद आरक्षित रखने होंगे ।

   2 and 1 post will be kept reserved for SC/ST respectively.

3. संस्थापन अनुभाग के लिए दो अलमारी सुरक्षित रखनी होगी ।

   Two almirahs will be kept reserve for the Establishment Section.

माना जाएगा/मानी जाएगी/माने जाएंगे

1. देर से कार्यालय आने वाले को अनुपस्थित माना जाएगा ।

   Late comers to office will be treated as absent.

2. छुट्टी लेखा में अर्जित छुट्टी के न रहने पर बाकी छुट्टी असाधारण छुट्टी मानी जाएगी ।

   Balance Leave will be treated as Extra-ordinary Leave, if Earned Leave will not be available in the Leave Account.

3. अपने स्थान पर न पाए जाने वाले कर्मचारियों को अनुपस्थित माने जायेंगे ।

   The employees who are not available on their seats will be treated as absent.

इस प्रकार कार्यालयीन हिंदी की वाक्य संरचना सामान्य हिंदी की वाक्य संरचना के अंदर रहकर भी चयन के सिद्धान्त एवं कर्मवाच्य पर आधारित होती है ।

जितना अधिक करोगे हिंदी में काम ।
उतना ही चमकेगा जग में तुम्हारा नाम ॥

3608 HA/12—3A

उच्चारण, बर्तनी और लिपि के अंतर्सम्बंध

–डॉ अचलानन्द जखमोला*

उच्चारण

ध्वन्योच्चार विषयक अग्निपुराण का निम्न श्लोक दृष्टव्य है –

न करालो, न लम्बोष्टो, नाव्यक्तो, नानुनासिकः
गदगदो, बद्धजिह्वश्च न वर्णान् वक्तुर्महति

अर्थात् जिस व्यक्ति का मुख (बहुत बड़ा या दाँत आदि बाहर निकले होने के कारण) भयानक है, जिसके ओंठ लटके हुए हों, जिसने वर्णों के स्वरूप को स्पष्ट रूप से नहीं समझा हो, जो प्रत्येक वर्ण का उच्चारण नाक से करता हो, जो भावावेश के करण गद्गद हो जाए, जिसकी जिह्वा जकड़ी हुई हो, वह व्यक्ति वर्णों का ठीक-ठीक उच्चारण नहीं कर सकता । फलतः ऐसा व्यक्ति वाग्यंत्र की विभिन्नता तथा सदोषता के कारण भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों का उच्चारण शुद्ध रूप में नहीं कर सकता ।

उच्चारण का यह 'शुद्ध रूप' क्या है, इसका निर्णय करना कठिन है । ज्ञातव्य है कि वर्तमान में लगभग सात अरब की संख्या वाले समस्त विश्व के कोई भी दो व्यक्ति एक ही सूरत और शक्ल के नहीं मिलते । कुछ न कुछ वैभिन्य अवश्य मिलेगा । इसी प्रकार किन्हीं भी दो व्यक्तियों का ध्वन्योच्चारण एक समान होना संभव नहीं है और सिद्धान्ततः किसी के भी उच्चारण को दोषपूर्ण मानना उचित नहीं होगा । उच्चारण में इस विविधता के भाषा-वैज्ञानिकों ने कई कारण बताए हैं । भाषा वाक-यंत्रों द्वारा बोली जाती है । दोषपूर्ण वाग्यंत्र का उल्लेख प्रारंभ में ऊपर किया जा चुका है । दो व्यक्तियों की सभी वाक् इंद्रियाँ भी समान नहीं होती । वस्तुतः भाषा दूसरों के उच्चारण के माध्यम से ही सीखी जाती है, इसलिए यह असंभव सा है कि श्रोता प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण वक्ता के उच्चारण के अनुसार ही करने में पूर्णतः समर्थ हो । फलतः भाषा की ध्वनियों में अंतर अवश्य आएगा ।

उच्चारण वैविध्य के मूल में मुखसुख, क्षिप्र भाषण या प्रयत्नलाघव तथा अशिक्षा प्रमुख कारण हैं जो ध्वनि परिवर्तन की दृष्टि से आगम, लोप, विकार, वर्ण विपर्यय, समीकरण, विषमीकरण, स्वर-भक्ति आदि के रूप में प्रकट होते हैं । विविधता को बढ़ाने में भौगोलिक, ऐतिहासिक, वैयक्तिक, जातिगत, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि कई प्रभाव कार्यरत रहते हैं । उच्चारण में असावधानी का होना एक अन्य कारण है । अनावधानतावश कुछ लोग 'ऋ' और 'र' के उच्चारण में अन्तर नहीं समझ पाते । स्वरों, विशेषतः ह्रस्व और दीर्घ, के उच्चारण में सर्वाधिक व्यत्यव मिलता है । अर्ध स्वर ये-ए और व्यंजन व-ब में मनमाने ढ़ंग से या अज्ञानवश स्थानापन्नता दीखती है । यही वृत्ति ऊष्म ध्वनियों (श, ष, स) के प्रयोग में भी है । अल्पप्राण-महाप्राण तथा अघोष-सघोष व्यंजनों के उच्चार में व्यतिक्रम की प्रवृत्ति अशिक्षित या अर्धशिक्षितों में अधिक लक्षित होती है ।

भौगोलिक स्थितियाँ भी उच्चारण को प्रभावित करती हैं । शीतप्रधान प्रदेशों में ठंड के कारण मुँह पूरा नहीं खुल पाता । फलतः विवृत का उच्चारण अर्थ-विवृत का संवृत सुनाई देता है । यहाँ ओष्टीकरण की भी प्रवृति है । मुंह के अन्दर अधिक ठंडी हवा न जाय इसलिए होठों को सिकोड़ कर गोलाकार कर दिया जाता है । तदनुसार कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में पदादि की 'अ' ध्वनि रोमन 'O' की भाँति 'ओ' और अश्रव्य सी उच्चरित होती है । आचार्य राजशेखर ने उत्तरापथ-वासियों को 'सानुनासिक भाषिणः' बताया था ।

वैयक्तिक कारणों में वाग्यंत्र या उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों में किसी दोष के होने से भी उच्चारण से अन्तर आ जाता है । काकल्य दोष इसका दृष्टान्त है । कभी-कभी क्षेत्रीयता अथवा अन्य भाषा या लिपि के प्रभाव से भी दूसरी भाषा-भाषियों के उच्चारण में वैभिन्य आ जाता है । उदाहरण के लिए गुरमुखी में मूल शिक्षा पाने वाले कुछ व्यक्तियों को हिंदी पदों में आने वाले संयुक्त व्यंजनों, जैसे स्कूल, स्वास्थ्य

*290- II बसंत विहार, देहरादून - 248006

3608 HA/12—3B

का उच्चारण हिंदी भाषियों की भाँति करने में कठिनाई आती है। बंगालाभाषी की 'अ' ध्वनि को बंगला की भाँति 'ओ' ही उच्चारित करेगा। इनमें से किसी उच्चारण को त्रुटिपूर्ण नहीं घोषित किया जा सकता। फिर भी सामाजिक सुविधा और भाषायी समरूपता के लिए एक ही प्रकार का उच्चारण और समान वर्तनी समीचीन समझी जाती है। शिष्ट समुदाय भाषा के रूप का स्थिरीकरण चाहता है। नित नए परिवर्तित उच्चारण को भाषा में तत्काल स्थान देने से न तो उसमें एकरूपता आएगी और न उसे स्थायित्व मिलेगा। तथापि उच्चारण में बदलाव आना भी स्वाभाविक है। उसे रोककर भाषा की गति अवरूद्ध हो जाएगी। उच्चारण में अनेकरूपता अवश्यम्भावी है। भाषा का आदि स्वरूप उच्चारण है। उसको मूर्त रूप देने के लिए ही लिपि और वर्तनी होती है। वर्तनी उच्चारण की अनुगामिनी होती है। बच्चे पहले भाषा उच्चरित करते हैं, बड़ों से बोलना सीखते है। लिखते बाद में हैं।

लिखने का शुभारंभ वर्ण-ज्ञान से होता है। अक्षर में एक या एक से अधिक वर्ण होते हैं। प्रत्येक अक्षर को अंकित करने के लिए परंपरागत चिह्न निर्धारित हैं। इन्ही व्यवस्थित चिह्नों को 'लिपि' कहा जाता है। उनके अक्षरों के मेल से अर्थपूर्ण शब्द बनते हैं। शब्दों में आए वर्णों का एक निश्चित क्रम या विधान होता है जिसे 'वर्तनी' संज्ञा दी गई है। वर्तनी लिपि में अंकित होती है। इनमें से किसका स्थान प्रथम है और किसका द्वितीय इसका निर्धारण करना कठिन है। परन्तु यह निश्चित है कि वर्तनी और लिपि के मूल में उच्चारण है। उच्चारण के अनुरूप ही वर्तनी बनती है और उच्चारण के लिए ही लिपि। उच्चारण पहले है, लिपि और वर्तनी बाद में। परन्तु निश्चिततः इन तीनों का अन्योन्याश्रित संबंध है।

वर्तनी

वर्तनी एक प्रवहमान प्रक्रिया है। मुझे ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में सुरक्षित अंग्रेजी के प्रारंभिक काव्यकार- चौसर, स्पेंसर, शेक्सपीयर आदि के हस्तलिखित मूल कृतियों को टटोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्हीं पुस्तकों के उपलब्ध और कालान्तर में प्रकाशित शब्द-रूपों की वर्तनी का म्यूजियम में रक्षित हस्तलिखित मूल पोथियों से मिलान करें तो लगभग सभी शब्दों में वर्तनी विषयक वैभिन्य मिलता है। हिंदी भाषा का मूलाधार (सब्सट्रैटम या बेसिक डाइलेक्ट) अथवा मूलोद्भव खड़ीबोली को माना जाता है। सन् 1803 के आसपास मुंशी सदासुखलाल (सुखसागर) इंशा अल्लाखाँ (रानी केतकी की कहानी), लल्लूलाल (प्रेमसागर) और सदल मिश्र (नासिकेतोपाख्यान) आदि ने खड़ी बोली-हिंदी में ग्रंथ रचे। वस्तुतः भारतेन्दु युग के पूर्ववर्ती सभी ग्रंथों में प्रयुक्त वर्तनी वर्तमान वर्तनी से कई स्थलों पर भिन्न है। स्पष्ट है कि प्रत्येक भाषा में शोधन, परिष्करण और परिवर्तन वर्तनी का आवश्यक अंग रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी भाषा के वर्तनी पक्ष पर भाषाविदों, विद्वानों और सरकार का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। कई संस्थानों, आयोगों और भाषाशास्त्रियों की संस्तुतियाँ आई। अनेक गण्यमान्य पत्रिकाओं में इस विषय पर लेख भी प्रकाशित हुए। विद्वानों और भाषाविदों ने पथ-प्रदर्शन किया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के तत्वावधान में 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक निःशुल्क वितरणार्थ पुस्तिका प्रकाशित हुई। इन सब प्रयासों के बावजूद अनेक स्थलों पर वर्तनी विषयक द्वन्द्वात्मक स्थिति अभी भी दिखाई देती है।

शब्दकोश का एक प्रमुख कार्य मानक वर्तनी का निर्धारण भी है। अंग्रेजी भाषा में डॉ. सैमुअल जॉनसन और हिंदी में डॉ. श्यामसुंदरदास ने यह दायित्व अपूर्व परिश्रम और निष्ठा से निभाया। परन्तु कोशकारों को जन प्रचलन में आ गए रूपों का भी ध्यान रखना पड़ता है। अभी तक ध्वन्योच्चारण के अनुसार 'चिह्न' ही वर्तनी की शुद्ध रूप माना जाता रहा। परन्तु अब कई हिंदी कोशों में 'चिह्न' भी तद्भव स्वरूप में प्रविष्टि पा चुका है। हलन्त का हल् गिरने लगा है। इसलिए कोशों में हल रहित रूपों को भी वैकल्पिक प्रविष्टि दी जा रही है। कई आर्य भाषाएं 'ऋ' के स्थान पर पहले ही 'रि' का प्रयोग करने लग गई थी। फलतः कुछ कोशों में 'उऋण' के अतिरिक्त 'उरिण' 'उरिन' रूप भी मिलते हैं। अनेकरूपता पर कोश भी पूर्ण अंकुश नहीं रख पाते। इधर शीर्षस्थ अंग्रेजी कोशों के नवीनतम संस्करणों में अमेरिकन वर्तनी भी अंकित मिलती है। वैश्वीकरण के प्रभाव से भाषा को भी मुक्त नहीं रखा जा सकता। इसीलिए कोशों के नए संस्करणों में द्विधा और कहीं कहीं त्रिधा वर्तनी भी अंकित दिखाई देती है।

कौन शब्द शुद्ध या अशुद्ध अथवा मानक या अमानक हैं, इसका निर्धारण करने में सामान्य पाठक या अहिंदी भाषियों को कठिनाई होती है। व्याकरण के अपूर्ण ज्ञान से अन्+अधिकार को 'अनधिकार' के बजाय कई स्थलों पर

अशुद्ध 'अनाधिकार', सशक्त (विशेषण) को शक्ति (संज्ञा) के भ्रमवश शुद्धरूप 'सशक्तीकरण' के स्थान पर अशुद्ध 'सशक्तीकरण' मुद्रित मिलता है । 'प्रस्तुतीकरण' शब्द 'प्रस्तुत' विशेषण से बना है, 'प्रस्तुती' संज्ञा से नहीं । कहीं-कहीं प्रातिपदिक प्रयोग तथा हस्व-दीर्घ भाषाओं में भी विपर्यय दिखाई देता है । 'छ' का स्थान 'छह' ने ले लिया है । विसर्ग अब शब्दांत में ही अधिक प्रयुक्त हो रहे हैं । 'ऋ' तथा 'र' एवं 'ट'/'ठ' के प्रयोग में छात्रगण भ्रमित हो जाते हैं । 'ग्रह' और 'अनुग्रह' में 'र' है और 'गृहीत' और 'अनुगृहीत' में 'ऋ' । कुछ अन्य अति सामान्य उदाहरण यथा -शृंगार-श्रृंगार-श्रिंगार, अनुग्रहित-अनुगृहीत, द्रष्टा-दृष्टा, बृज-ब्रज, द्रष्टव्य-दृष्टव्य, प्रदर्शिनी-प्रदर्शनी भी मिलते हैं । 'चिह्न' के लिए 'चिन्ह' का उल्लेख पूर्व में आ चुका है । ब्रहमा के स्थान पर ब्रम्हा तो कुछ कोशों में भी घुस गया है । कई स्थानों पर कवयित्री के लिए मुख-सुख के कारण कवियत्री मिलेगा । अधिकांश अहिंदी मूल के पाठक इनके उच्चारण और तदनुसार वर्तनी में अन्तर नहीं समझ पाते । मानक कोश देखने के लिए समय और प्रवृति चाहिए ।

'यी' और 'ई' के प्रयोग में अभी भी द्वंद्वात्मक स्थिति बनी हुई है । उल्लेखनीय है कि जहाँ 'य' की श्रुति शब्द का मूल तत्व हो, वहाँ वैकल्पिक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है । इस नियम को समझाने के लिए 'स्थायी', 'अव्ययीभव', 'दायित्व' का उदाहरण दिया जाता है जिनको क्रमशः 'स्थाई', 'अव्यईभाव' और 'दाइत्व' लिखना अपेक्षित नहीं माना जाता । श्रुत उच्चारण के आधार पर यह भी तर्क दिया जाता है कि लाया, खाया, गया में मूल ध्वनि 'य' है अतः 'लायी', 'खायी', 'गयी' वर्तनी का प्रयोग शुद्ध होगा । परन्तु इनमें भी अब 'ई' अधिक स्वीकार्य है । अनुस्वार और अनुनासिकता के प्रयोग में भी भ्रान्ति की स्थिति दिखाई देती है । संस्तुत नियम यही है कि संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो टंकण, मुद्रण और लेखन में सुविधार्थ अनुस्वार का ही प्रयोग होना चाहिए । उदाहरणार्थ गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संबंध, संपादक आदि में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना अपेक्षित है - गङ्गा, चञ्चल, ठण्डा, सन्ध्या, सम्पादक आदि नहीं । परन्तु यह भी नियम है कि यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आता है या वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो वहाँ पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, यथा -अन्न, सम्मान, सम्मेलन, सम्मति ही शुद्ध रूप होंगे । केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित नियमों के पालन से हिंदी की वर्तनी को मानकता और स्थायित्व मिलेगा ।

इस प्रकरण पर एक रोचक प्रसंग उल्लेख्य है । अनुस्वार और अनुनासिकता की उपर्युक्त व्यवस्था हिंदी कोश साहित्य के मुर्धाभिषिक्त, भावी कोशकारों के प्रेरणास्रोत तथा मार्गदर्शक वृहदकाय, ग्यारह खंडो वाले, 'हिंदी शब्द सागर' में भी दी गई थी । परन्तु इसके संपादक डॉ. श्यामसुन्दरदास अपने नाम के अन्तय अंश 'सुंदर' को 'सुन्दर' ही लिखते रहे । वहाँ भी 'हिंदी' शब्द 'हिंदी' ही लिखा गया । 'लागि नहीं छूटे रामा' की वृत्ति से आज भी अधिकांश, मुख्यतः हम जैसे पुरानी पीढ़ी के लेखक पीड़ित हैं । कुछ समय तक दोनों प्रकार की वर्तनी चलती रहेगी ।

लिपि –

'लिप्यते' शब्द से लिपि की व्युत्पत्ति बताई गई है जिसका अर्थ है– लिखावट । भाषा ध्वनि प्रतीकों की समष्टि है और लिपि इन ध्वनि -प्रतीकों का स्वरूप । लिपि की तुलना में भाषा अधिक प्रवहमान, स्वच्छंद, परिवर्तनशील और गतिशील होती है । भाषा ध्वनियों की व्यवस्था है किन्तु लिपि वर्णों का संयोजन है । इस प्रकार कर्णगोचर भाषा को नेत्रगोचर बनाने के लिए जिन प्रतीक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वही चिह्न 'लिपि' है । मूल ध्वनियों को 'स्वन ध्वनि' और फिर 'वर्ण' कहा गया है । तदनुसार स्वर और हलन्त व्यंजन वर्ण है । अक्षर में एक या अनेक वर्ण रहते हैं । शब्द में एक या अनेक अक्षर । दूसरे शब्दों में ध्वनि का लिखित रूप लिपि है । क्रमागत विकास में स्वन, ध्वनि, वर्ण, अक्षर, भाषा और लिपि आते हैं । भाषा के संरक्षण और प्रसार ज्ञान को स्थायी बनाने तथा उसे आगे बढ़ाने एवं भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षणार्थ लिपि का निर्माण किया गया । इसीलिए लिपि को भाषा का आवरण और परिधान माना गया । भाषा भाव-विनिमय और पारस्परिक संपर्क का मुख्यतः उच्चरित और गौणतः लिखित साधन है । उच्चरित माध्यम अधिक प्राचीन और शक्ति संपन्न होते हुए भी, लिखित रूप ही उसे स्थायित्व प्रदान करता है । यह 'लिखित' रूप लिपि के बिना सम्भव नहीं ।

लिपि संस्कृति का विशेष अंग है परन्तु भाषा-विज्ञान की दृष्टि अब उसे किसी धर्म का अंग नहीं माना जाता, भले ही 'देवनागरी' या 'ब्राह्मी' को देवों या ब्रहमा से निष्पन्न बताया गया हो । ई. पू. दूसरी शती में निर्मित 'लिखित विस्तर' में परिगणित 64 लिपियों में अधिकांश को इष्टदेवों

से संबद्ध किया गया परन्तु वर्तमान में इन मान्यताओं का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता ।

भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपि देवनागरी अथवा उससे प्रभावित अन्य लिपि है । देवनागरी को अर्ध-अक्षरात्मक या वर्णात्मक कहा गया है क्योंकि इसकी सभी व्यंजन ध्वनियों में 'अ' स्वर अन्तर्मुक्त है । इस 'अ' स्वर का पदादि, पदमध्य और पदान्त उच्चरित और लिखित रूपों में लोप-अलोप का कोई निश्चित नियम नहीं है । त्रिअक्षरी शब्दों के पदमध्य अकारान्त 'न', 'म', 'ल', 'र' आदि कई वर्णों में निहित 'अ' स्वर अनुच्चरित रहता है यथा- इनसान, कमरा, पालना, गरदन आदि में । परन्तु कमर और कमरा जैसे शब्दों में आए पदमध्य 'म' में 'अ' सुरक्षित है । 'मरा' शब्द का पदादि 'अ' अभी भी मरा नहीं है । इसे स्वर सहित बोला और लिखा जाता है ।

भिन्न लिपि वाली एक भाषा के शब्दों को दूसरी लिपि वाली भाषा में लिप्यंतरित करते समय कठिनाइयाँ आ जाती हैं । प्रत्येक भाषा में स्वरों की महत्ता असंदिग्ध है । भारत में वैयाकरणों ने स्वरों को विस्तार से विवेचित किया । महाभाष्यकार पातंजलि कहते हैं – 'स्वयं राजन्ते स्वरा अन्वग भवति व्यंजनमिति' अर्थात् स्वर स्वतंत्र हैं, व्यंजन उन पर आधारित हैं । परन्तु देवनागरी के सभी स्वरों में विभिन्न उच्चारण- रूपों को निर्दिष्ट करने के लिए अन्य सभी भाषाओं में पर्याय लिपि चिह्न उपलब्ध नहीं हैं । उदाहरणार्थ देवनागरी में स्वरों के लिए ग्यारह लिपि चिह्न है तो रोमन में केवल पाँच । इसी प्रकार फारसी, अरबी, उर्दू आदि भाषाओं के लिए प्रयुक्त नस्ता 'लीक' लिपि में केवल दो स्वर चिह्न हैं जो देवनागरी की सभी स्वर ध्वनियों के लिए पर्याप्त नहीं है । देवनागरी में व्यंजन ध्वनियों के साथ 'अ' स्वर की समाहित स्थिति को विदेशी भाषा-भाषी पूर्णत: नहीं समझ पाते । इसीलिए रोमन आदि लिपियों में बद्ध करते समय उच्चारणगत और वर्तनीगत वैविध्य आ जाता है । गुप्त, शुक्ल, मिश्र, योग आदि असंख्य अकारान्त शब्दों को अंग्रेजी के अनुकरण पर हिंदी में भी 'गुप्ता', 'शुक्ला', 'मिश्रा', 'योगा' आदि लिखा और बोला जाता है । इसी प्रकार कहीं-कहीं अनेक पौराणिक व्यक्तिवाचक और स्थानवाचक अकारान्त नाम आकारान्त व्यवहृत होते हैं जो हिंदी भाषियों को अटपटे से लगते हैं । रामा, कृष्णा, अर्जुना, भीमा को तो कुछ हद तक बर्दाश्त किया जा सकता है परन्तु 'माथुर' का 'माथुरा' और 'भरत' का 'भरता' बन जाने पर क्या होगा?

विश्वभर की समस्त भाषाओं को लिपिबद्ध करने का दावा करने वाली देवनागरी में भी अनेक खामियां नजर आती हैं जिनका पूर्ण निराकरण अस्सी वर्षों के कई प्रयासों द्वारा नहीं हो पाया । सर्वाधिक आलोचना 'इ' की मात्रा के संबंध में होती है, जो लगती तो वर्ण से पूर्व है परन्तु उच्चरित होती है वर्ण के बाद । शिरोरेखा के प्रयोग और आवश्यकता पर भी प्रश्न उठाए जाते हैं । 'र' में 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा को अन्य वर्णों के सदृश नीचे लगाने (–रु, 'रू') का प्रयोग भी अपेक्षित है । 'श्र' को 'थ' के रूप में मान्यता तो प्राप्त है परन्तु प्रयोग-बहुल अभी तक नहीं हो पाया ।

देवनागरी में कुल 11 स्वर और 35 व्यंजनों के लिए स्वतंत्र लिपि चिह्न हैं । फिर भी इसमें कुछ आगत विदेशी वर्णों के लिए उपयुक्त लिपि चिह्नों का अभाव दिखाई देता है । अंग्रेजी के अर्धविकृत 'ओ' (O) वर्ण के लिए उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर उसके 'आ' मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग प्रचलित हो गया है । अंग्रेजी में एक ही 'A' वर्ण हिंदी की 'अ', 'आ', 'ए', 'ऐ' ध्वनियों के लिए प्रयुक्त होता है । परन्तु इसमें 'ए' और 'ऐ' से भिन्न तथा इन्हीं के समान जिह्वा के अग्रभाग से और इनके बीच की जिह्वा की ऊँचाई से उच्चरित –एक अलग स्वर भी है, जिसके लिए देवनागरी में अभी तक कोई सर्वमान्य व्यवस्था नहीं हो पाई । उदाहरणार्थ M.A.या M.L.A में आए M को सामान्यत हिंदी में 'एम' लिखा जाता है और 'A' तो 'ए' है ही । अर्थात् अंग्रेजी के M.के आरंभ में उच्चरित 'A', और 'A' का 'A' इन दोनों वर्णों के लिए देवनागरी में भिन्न-भिन्न वर्ण नहीं हैं ।

देवनागरी लिपि 'वर्णात्मक' है अर्थात् इसमें 'जैसा लिखो वैसा बोलो' के गुण हैं । इस विशिष्टता के रक्षण के लिए उपर्युक्त M में आए 'A' तथा 'E' के लिए कई मूर्धन्य विद्वानों ने बहुत पूर्व में एक नया लिपि चिह्न 'अ॑' अनुशंसित किया था, जैसे 'अ॑म' (am) 'अ॑ग' (egg) 'स्पॅलिंग' (spelling), 'पॅन' (pen) 'वॅस्ट' (west)आदि । इनमें आया 'a' या 'e' न तो 'ए' है न 'य' और न 'ऐ' । स्पष्टत: 'अ॑' है । परन्तु यह प्रस्ताव भी न तो प्रचलन में आया न स्वीकृत हुआ ।

एक भाषा की समस्त ध्वनियों और वर्णों के लिए दूसरी भाषा में भी सभी उपयुक्त लिपि चिह्न उपलब्ध हों यह आवश्यक नहीं है । फारसी के माध्यम से आए और हिंदी में गृहीत जिह्वामूल (हल्क) से उच्चरित कुछ अरबी

3608 HA/12—4A

भाषा की ध्वनियों को अंकित करने के लिए देवनागरी में स्वतंत्र लिपि–चिह्नों की व्यवस्था है । फारसी साहित्य से हिंदी साहित्य में जब ऐसे चिह्नों वाले शब्द आए तो विद्वानों ने इन ध्वनियों को देवनागरी में 'ज्यों–का–त्यों' अपनाने के लिए पाँच व्यंजन वर्णों –'क', 'ख', 'ग', 'ज' तथा 'फ'– के नीचे नुक्ता (बिन्दु) लगाने की व्यवस्था की । नुक्ता लगाने और न लगाने से इनके सूक्ष्म उच्चारण और अर्थ में बड़ा अन्तर आ जाता है, जिसका ज्ञान और पकड़ निष्णात् विद्वानों को ही होता है । कालान्तर में फारसी–अरबी के अल्पज्ञानी नुक्ते का प्रयोग मनमर्जी से करने लगे । 'काजी जलील (प्रतिष्ठित–धर्मनिष्ठ) मोहम्मद' जैसे न्यायकर्ता को 'काजी जलील (भ्रष्ट, अपमानित) मोहम्मद' होते देखकर भाषा शास्त्रियों की चेतना जागृत हुई । पर्याप्त विमर्ष के पश्चात् अब यह व्यवस्था है कि अनावश्यक प्रयोग और आवश्यक अप्रयोग को दृष्टिगत रखते हुए केवल 'ज' वर्ण में वही नुक्ता लगाया जाय जिसके लगानें या न लगाने से अर्थ में घोर अनर्थ होने की संभावना दिखाई दे । तदनुसार अब 'क', 'ख', 'ग' तथा 'फ' इन चार वर्णों के लिपि चिह्नों के नीचे बिंदी देने का प्रचलन कम होता जा रहा है ।

नस्तालीक लिपि में देवनागरी के 'अ' (अलिफ और ऐन) को छोड़कर अन्य स्वर चिह्न, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, 'ड़', 'ञ', समस्त अंतस्थ 'ट' वर्गीय ध्वनियाँ, ऊष्म मूर्धन्य 'ष' उत्क्षिप्त संघर्षी पार्श्विक लुंठित 'ल', महाप्राण आदि कई ध्वनियों के लिए सक्षम प्रतीक चिह्न नहीं मिलते । फलत: फारसी या उर्दू भाषा–भाषियों को देवनागरी की उपर्युक्त ध्वनियों तथा–संध्यक्षरों, संयुक्ताक्षरों आदि को उच्चरित करने अथवा नस्ता लीक लिपि में शुद्ध वर्तनी देने में कठिनाई होती है ।

इस चुनौती का समाधान मिर्ज़ाखाँ नामक हिंदी, संस्कृत तथा फारसी के एक महान् भाषाशास्त्री, व्याकरणविद् और कोशकार ने किया । उनके हस्तलिखित और सन् 1675 ई. के आसपास रचित अनुपम ग्रंथ 'तुहफतुलहिन्द' के खातिम: (परिशिष्ट) भाग में 'लुगत–ए–हिंदी' शीर्षक कोश भी है जिसमें उन्होंने लगभग 3500 ब्रजभाषा–हिंदी के शब्दों की फारसी में लिप्यन्तरण पद्धति, उच्चारण, वर्तनी, अर्थ, पर्याय, विपर्याय, प्रयोग और कोश विषयक अन्य आवश्यक जानकारी दी है । डॉ. अचलानन्द जखमोला की दो पुस्तकों– 'हिंदी कोश साहित्य' (प्रकाशक–हिंदी परिषद् इलाहाबाद वि. वि. सन् 1964, तथा 'कोश विद्या' सन् 2004, में इनका सविस्तार विवेचन किया गया है ।

मिर्ज़ाखाँ ने सूक्ष्म अध्ययन और बड़ी सतर्कता से देवनागरी के उन लिपि–चिह्नों और हिंदी की उन ध्वनियों पर विशेष ध्यान दिया जो फारसी में उपलब्ध नहीं थीं । ऐसे लिपि–चिह्नों को दर्शाने के लिए उन्होंने कुछ फारसी विशेषणों का आश्रय लिया, जैसे–खफीफ (हलका, कम, थोड़ा अल्पप्राण), सकील (भारी, गुरू, बोझिल, बलाघात सहित, महाप्राण), मुश्किल, (अधिक भारी, क्लिस्ट, अधिक बलाघात सहित), अश्कल (अधिक बोझिल सर्वाधिक बलाघात वाला, अतिमहाप्राण), फतह (मात्रा रहित, अकारान्त) आदि । महाप्राण ध्वनियों के लिए मिर्ज़ा ने तीन स्तर निर्धारित किए । सकील, मुश्किल, और अश्कल । तदनुसार देवनागरी का 'आ' लिपि चिह्न 'अलिफे मम्दूद' (दीर्घ 'अ' अर्थात् 'आ'), ट='ता–ए–फौकानी–ए–अश्कल' (फारसी 'त' का गुरुतम महाप्राण रूप), 'छ' =जीम–ए–अजमी–ए–सकील (फारसी 'च' पर अधिक बल या आघात देने से निर्मित वर्ण), 'ण' =नूने मुंसक्किला (फारसी –नून–'न' का क्लिष्ट रूप) आदि आदि । 'लुगत–ए–हिन्दी' में 'ड' तथा 'ढ उत्क्षिप्त (मूर्धन्य) ध्वनियों का कहीं उल्लेख नहीं है । इस कोश में संकलित प्रत्येक शब्द की मिर्ज़ा खाँ ने अपने नायाब तरीके से लिप्यतरण, उच्चारण और वर्तनी दी है । एक उदाहरण दृष्टव्य है –

इन्द्रबधू –(इस शब्द का) प्रथम अक्षर ('अ', जिसका यह अध्याय है) 'इ' मात्रा के साथ (पढ़ा जाय), 'न' अनुस्वार (मात्र) है । (तत्पश्चात) हलका 'द' जिसके साथ 'र' भी संयुक्त (है) । (फिर) हलके (अल्पप्राण) 'ब' में 'अ' स्वर (मिला है) । (तदनन्तर) बलाघात सहित फारसी 'द' (=महाप्राण ध) पर खींचा हुआ 'व' (=व + ऊ = वू ; ध+ऊ = 'धू') (बनाए)[1] ।

रोमन लिपि के पाँच स्वर और 21 व्यंजन वर्ण अंग्रेजी और लगभग समस्त यूरोपीय, तुर्की तथा कई अन्य देशों–प्रदेशों की भाषाओं के लिए प्रयुक्त होती है । परन्तु यह लिपि भी अंग्रेजी सहित सभी भाषाओं के सारे वर्णों को दृश्यमान स्वरूप देने में, वैशिष्टय दर्शक चिह्न (डाइकिटिक मार्कस) के बिना, सक्षम नहीं मानी जाती । देवनागरी के लिए भी पूर्णत: नहीं । देवनागरी वर्णमाला का केंद्रीय हिंदी

[1] इन्द्रबधू "----- ब अव्वले मकसूर व नूने मगनून: व दाले खफीफ मवफूफ व राय मुत्तसिल व फतह बाय मुवहद: खफीफ व जम्मे दाल–ए सकील व वाव मारूफ ---" 1–डॉ. अचलानन्द जखमोला, कोश विद्या पृ. 78 ।

3608 HA/12—4B

निदेशालय ने मानक रूप स्थिर किया है जिसमें मूलतः 11 स्वर और 35 व्यंजन उनके लिपि चिह्न सहित अंकित हैं। इनके अतिरिक्त देवनागरी में संयुक्ताक्षर 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ', 'श्र', अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, हलन्त, विसर्ग के लिए भी स्वतंत्र लिपि चिह्न हैं । उक्षिप्त प्रतिवेष्टित 'क' ध्वनि को कुछ भाषाविद हिंदी का नहीं मानते । परन्तु यह ध्वनि देवनागरी लिपि का प्रयोग करने वाली कई भाषाओं में उपलब्ध है । वैदिक साहित्य, संस्कृत व्याकरण, मराठी, राजस्थानी, गढ़वाली, कुमाउँनी आदि कई भाषाओं में इसका प्रयोग प्रचुरता से होता है । देवनागरी से प्रभावित गुजराती, पंजाबी, लंहदा, सिंधी, उड़िया, भाषाओं की लिपियों में भी यह ध्वनि पदादि में नहीं, परन्तु पदमध्य और पदान्त में मिलती है । इसी ध्वनि का एक अन्य रूप 'ळ' लिपि चिह्न नीचे बिन्दु सहित तमिल और मलयालम भाषाओं में भी मिलता है । रोमन में इसे! के नीचे बिन्दी लगाकर द्योतित किया जाता है ।

देवनागरी के दीर्घ स्वरों तथा 'ऋ' के लिए रोमन में कोई स्वतंत्र लिपि चिह्न नहीं हैं । दीर्घ स्वरों के लिए 'a', 'e', 'i', 'o', 'u' के ऊपर (–) वैशिष्ट्य दर्शक चिह्न देकर काम चलाया जाता है । 'ङ.','ञ' तथा अन्य वर्णों की अनुनासिकता दर्शाने के लिए सबद्ध वर्ण के ऊपर (...) चिह्न तथा समस्त 'ट' वर्गीय तथा अन्य मुर्धन्य ध्वनियों के लिए उस वर्ण के नीचे बिन्दी (.) लगाई जाती है । 'ड', 'ढ़' और 'ण' के लिए क्रमशः नीचे नुक्ते सहित r, rh, तथा n,की व्यवस्था है । अर्ध–स्वर 'य' तथा 'व' के लिए 'y'और 'v/w' लिपि चिह्न हैं । यद्यपि अंग्रेजी में लिप्यंन्तरण शब्दावली पर कई कोश उपलब्ध हैं परन्तु उनका उपयोग भाषा वैज्ञानिक विषयों के अध्येताओं तक ही सीमित रहता है ।

निष्कर्षतः , उच्चारण, वर्तनी और लिपि का घनिष्ठ संबंध स्वीकारते हुए भी हम इस तथ्य की अवहेलना नहीं कर सकते कि मानव के उच्चारण अवयवों से निःसृत प्रत्येक अर्थपूर्ण ध्वनि के लिए ध्वनि प्रतीकों की एकरूपता, निश्चित पद्धति और किसी सर्वमान्य नियम के अनुसार लिपि निर्मित करना एक कठिन कार्य है । प्रत्येक लिपि में विसंगतियाँ और अक्षमताएं तो मिलती ही रहेंगी । रोमन लिपि में बद्ध walk, talk, know, judge, pneumonia, phlegm, Mitterand, Goeth आदि असंख्य शब्दों की वर्तनी उच्चारण की अनुगामिनी नहीं है । एक भाषा के सभी स्वरों के लिए कभी-कभी तो उसी भाषा में भी उपयुक्त लिपि चिह्न और वर्तनी नहीं मिलती । नस्तालीक लिपि में तो स्वरों के लिए 'अलिफ' और 'ऐन' के अलावा कोई अन्य लिपि चिह्न है ही नहीं और इनके लिए निश्चित जेर, ज्वर, पेश आदि मात्रा-द्योतक चिह्नों को अधिकांशतः या तो कोई लगाता ही नहीं और लगा भी ले तो भ्रम की संभावना बनी रहती है । बहुशः अनुमान का आश्रय लेना पड़ता है । मूर्धन्य तथा महाप्राण ध्वनियों के लिए रोमन, नस्तालीक, पुर्तगाली, बल्गार आदि कई भाषाओं की लिपियों में कोई निश्चित व्यवस्था नहीं है । उच्चारण और वर्तनी में पूर्ण सामंजस्य का दावा करने वाली देवनागरी के 'दुःख' शब्द के पदमध्य विसर्ग के उच्चारणगत वैभिन्य को केवल शीर्ष ध्वनि–शास्त्री ही बता सकते हैं । तालिप्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' दोनों ही अघोष संघर्षी हैं परन्तु इनके शुद्ध और सूक्ष्म उच्चारणों के अन्तर को समझने की क्षमता सीमित भाषाविदों में ही होती है ।

इस प्रकार की विशिष्टतागत जिज्ञासा प्रत्येक प्रवहमान भाषा का अभिन्न अंग होता है ।

संदर्भ

1. डॉ. कर्णसिंह : भाषा विज्ञान
2. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : भारतीय प्राचीन लिपिमाला
3. डॉ. नरेशकुमार : भारतीय भाषाओं का विकास
4. केन्द्रीय हिंदी निदेशालय : देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण
5. डॉ. अचलानन्द जखमोला : 1. हिंदी कोश साहित्य 2. कोशविद्या
6. डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा : मानक हिंदी का व्यवहारपरक व्याकरण
7. डॉ. सु. कु. चटर्जी : भारतीय आर्य भाषा और हिंदी
8. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा : हिंदी भाषा एवं नागरी लिपि
9. डॉ. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज
10. डॉ. हरदेव बाहरी : हिंदी : उद्भव विकास और स्वरूप
11. हिन्दुस्तानी जबान अप्रैल–जून 2004 ■

आंशिक पर्यायवाची–सूक्ष्म–अर्थभेदी शब्द

–प्रा. शशिकांत पशीने 'शाकिर'*

'शब्द' वर्णों का वह सार्थक ध्वनि समूह है जिसको सुनकर हमारे हृदय में भावों या विचारों का बोध हो। शब्द में सार्थकता का गुण अनिवार्य है। सार्थकता की दृटि से भाषा की मौलिक अथवा लघुत्तम इकाई शब्द है । अत: सार्थक ध्वनि या ध्वनि समूह को शब्द कहा जाता है । शब्द की सार्थकता अर्थ का ज्ञान कराने में है । अर्थ प्रकट करने की दृष्टि से शब्द इतना विलक्षण है कि कभी वह अकेला ही अर्थ देता है तो कभी एक ही अर्थ के लिए अनेक शब्दों का ताँता लगा देता है । कभी पूरे वाक्यांश को ही अपने में समेट लेता है जो कभी थोड़े से विकार से ही भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करता है ।

समानार्थी शब्दों में सूक्ष्म अंतर अथवा सूक्ष्म अर्थभेद रखने वाले शब्दों को 'अपूर्ण या आंशिक पर्यायवाची' या 'सूक्ष्म अर्थ भेदी' शब्द कहते हैं क्योंकि इस प्रकार के शब्दों में यद्यपि अर्थ की दृष्टि से पूर्ण समानता नहीं होती तथापि देखने-सुनने में ये एक दूसरे के समानार्थी होने का आभास-सा देते हैं, किंतु उनके अर्थ में काफी अंतर होता है। अर्थ की गहराई में जाने पर व्युत्पत्ति तथा प्रयोग संबंधी ऐसे सूक्ष्म अंतर इनमें देखने को मिल जाते हैं जिनसे उनका एक ही अर्थ में प्रयुक्त करना भ्रांतिकारक हो जाता है । ऐसे ही शब्दों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

आंशिक पर्यायवाची अथवा सूक्ष्म अर्थ-भेदी शब्द

1. अनिवार्य – आवश्यक

अनिवार्य – जो अत्यंत आवश्यक हो अर्थात् जिसे टाला या छोड़ा न जा सके ।

आवश्यक – ज़रूरी, लेकिन इसमें अनिवार्य जैसी बाध्यता नहीं होती ।

2. अनभिज्ञ–अभिज्ञ–भिज्ञ–अज्ञ

अनभिज्ञ – अनजान, जिसे किसी विशिष्ट बात की जानकारी न हो ।

अभिज्ञ – जानकार जो अनेक विषयों की जानकारी रखता हो ।

भिज्ञ – जो किसी विशेष विषय की जानकारी रखता हो ।

अज्ञ – अज्ञानी ।

3. अनुभव – अनुभूति

अनुभव – व्यवहार, कर्म, अभ्यास आदि से प्राप्त ज्ञान । यह इंद्रियों द्वारा प्राप्त होता है ।

अनुभूति – चिंतन और मनन से प्राप्त आंतरिक भाव-बोध। अनुभव के बाद अनुभूति होती है ।

4. अध्यक्ष – सभापति

अध्यक्ष – किसी संस्था की बैठक का प्रमुख ।

सभापति – किसी संस्था का स्थायी रूप से प्रमुख व्यक्ति ।

5. अगोचर – अज्ञेय – अज्ञात

अगोचर – जो इंद्रियों द्वारा न समझा जा सके, किंतु प्रयत्न से बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है ।

अज्ञेय – जो किसी प्रकार न जाना जाए ।

अज्ञात – जिसके बारे में कोई जानकारी न हो ।

6. अनुसंधान – आविष्कार

अनुसंधान – ऐसी वस्तु की खोज जो विद्यमान तो है पर जिसका पता अभी तक किसी को नहीं है – हीरे, कोयले की खान का अनुसंधान ।

*नामदेव मंदिर के समीप, गाडगे नगर, अमरावती–444603

आविष्कार – किसी नई वस्तु की खोज-जैसे एक्सरे का आविष्कार। ऐसी चीज का निर्माण जो पहले से विद्यमान न हो।

7. अन्वेषण – **खोज - अविष्कार**

अन्वेषण – पुरानी वस्तुओं को नई दृष्टि से देखने, परखने का प्रयत्न। पहले से विद्यमान वस्तु की खोज।

खोज – गुमी हुई वस्तु की तलाश करना।

8. अनुरोध – **निवेदन - आवेदन - प्रार्थना (अनुनय)**

निवेदन – दूसरों के समक्ष नम्रता के साथ अपने विचारों अथवा माँगों को रखना, अर्थात् विनय।

आवेदन – प्रार्थना करना।

प्रार्थना – अपने से बड़ों के प्रति अथवा ईश्वर के प्रति प्रार्थना निवेदित की जाती है।

9. अपयश – **कलंक**

अपयश – सदा के लिए दोषी बन जाना। अपयश जीवन भर बना रहता है।

कलंक – कुसंगत में पड़कर चरित्र पर दोष लगना। कालांतर में अच्छे कार्यों से कलंक धुल भी जाता है।

10. अभिमान – **अहंकार-दर्प**

अभिमान – सच्चा घमंड अथवा गर्व

अहंकार – झूठा घमंड, मन का झूठ गर्व। स्वयं को ही सब कुछ समझने की भावना।

दर्प – घमंड, जैसे-राम ने रावण के दर्प को चूर-चूर कर दिया।

11. अर्पण – **प्रदान**

अर्पण – अपने से बड़ों को कोई वस्तु भेंट करना।

प्रदान – बड़ों की ओर से छोटों को दी जाने वाली वस्तु या भेंट।

12. अस्त्र – **शस्त्र**

अस्त्र – फेंक कर मारा जाने वाला हथियार-बाण, बम आदि।

शस्त्र – हाथ में पकड़कर मारा जाने वाला हथियार-गदा, तलवार, भाला, लाठी इत्यादि।

13. अज्ञेय – **अज्ञात**

अज्ञेय – जिसके बारे में प्रयास करने पर भी न जाना सके।

अज्ञात – जिसके बारे में कोई जानकारी न हो।

14. अनुग्रह – **अनुकंपा**

अनुग्रह – किसी के मन की इच्छाओं की पूर्ति हेतु उसे कुछ प्रदान करना अथवा ग्रहण करना।

अनुकंपा – हमदर्दी द्वारा किसी के कष्टों का निवारण।

15. अध्ययन – **अनुशीलन**

अध्ययन – पढ़ने व पढ़ाने का सामान्य कार्य।

अनुशीलन – किसी चीज़ को पढ़ने के बाद उसके बारे में मनन-चिंतन।

16. अनुमान – **प्राक्कलन**

अनुमान – बौद्धिक तर्क द्वारा लिया गया निश्चय।

प्राक्कलन – वह निर्णय जो गणना के सहारे लिया जाए।

17. आधि – **व्याधि**

आधि – मानसिक कष्ट (चिंता, भय, असंतोष)।

व्याधि – शारीरिक कष्ट अथवा रोग (बुखार, चोट, दर्द, घाव)।

18. आकार – **रूप**

आकार – किसी वस्तु की बाह्य आकृति से संबंधित।

रूप – अत्यव-संगठन, स्वरूप या सुंदरता से संबंधित ।

19. **आशंका – डर - भय**

आशंका – हानि की संभावना से भय का पूर्वानुमान ।

डर – किसी बाहरी वस्तु से हानि की संभावना ।

भय – मन की व्याकुलता जिससे अनिष्ट होने की संभावना हो ।

20. **आत्मा – अंत:करण**

आत्मा – एक अतीन्द्रिय और अभौतिक तत्व जिसका कभी नाश नहीं होता ।

अंत:करण – विशुद्ध मन की विवेकपूर्ण शक्ति ।

21. **आदि – इत्यादि**

आदि – साधारणत: एक या दो उदाहरणों के पश्चात् आदि का प्रयोग किया जाता है ।

इत्यादि – सामान्यत: दो से अधिक उदाहरणों के बाद इस शब्द का प्रयोग होता है ।

22. **आल्हाद – उल्लास**

आल्हाद – खुशी से फुला न समाना ।

उल्लास – उमंग एवं खुशी के भाव

23. **आलोचना – समीक्षा**

आलोचना – गुण एवं दोषों के बारे में टीका-टिप्पणी ।

समीक्षा – दोष एवं गुणों का वर्णन ।

24. **आतंक – त्रास**

आतंक – बलवान के अन्याय से उत्पन्न भय ।

त्रास – डर से उत्पन्न व्याकुलता ।

25. **आगामी – भावी**

आगामी – आनेवाला ।

भावी – होनेवाला ।

26. **आचार – व्यवहार**

आचार – चाल-चलन एवं चरित्र संबंधी कार्य ।

व्यवहार – वह बर्ताव जो दूसरों के साथ किया जाता है ।

27. **आसक्ति – अनुराग**

आसक्ति – सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण।

अनुराग – नि:स्वार्थ प्रेम ।

28. **ईर्ष्या – स्पर्धा-द्वेष-डाह**

ईर्ष्या – दूसरों की प्रगति अथ्वा उत्कर्ष देखकर जलने का भाव ।

स्पर्धा – दूसरों की प्रगति देखकर वैसा बनने की भावना अर्थात् होड़ ।

द्वेष – दूसरों से कारणवश जलना ।

डाह – जलन, कुढ़न, खीज ।

29. **उपहास – परिहास-व्यंग्य**

उपहास – मज़ाक उड़ाना । अपमानित करने के उद्देश्य से किसी पर हँसना

परिहास – आपस में किया जाने वाला हँसी-मज़ाक ।

व्यंग्य – कटु एवं गूढ़ उक्तियों आदि के द्वारा मर्माघात करके व्यक्ति को नीचा दिखाने या अपमान करने से संबंधित ।

30. **उपहार – भेंट**

उपहार – वह भेंट जो बराबरी वालों अथवा छोटों को दी जाए ।

भेंट – अपने से बड़ों को दिया जाने वाला उपहार ।

31. **उत्साह – साहस-उत्तेजना**

उत्साह – साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है ।

साहस – साधनों के अभाव में भी काम करने की तीव्र इच्छा (आनंद का प्राय : अभाव) ।

उत्तेजना – किसी के द्वारा ज्यादती किए जाने पर उसके प्रति भाव ।

3608 HA/12—5B

32. **उच्छृंखल – उद्दण्ड**

उच्छृंखल – नियमबद्ध न होना । जैसे -- आजकल नवयुवक उच्छृंखल हो रहे हैं ।

उद्दण्ड – वह, जो दण्ड से भी नहीं डरता है ।

33. **उपादान – उपकरण**

उपादन – वह सामान जिसके द्वारा कोई चीज़ तैयार की जाती है ।

उपकरण – किसी कार्य के करने हेतु यंत्र आदि।

34. **उन्नति – प्रगति**

उन्नति – वर्तमान स्थिति से ऊपर उठना, विकास करना ।

प्रगति – पिछड़ेपन की स्थिति से आगे बढ़ना।

35. **उपज – उत्पत्ति - व्युत्पत्ति**

उपज – खेत की पैदावार या बुद्धि की नई सूझ ।

उत्पत्ति – जन्म या आरंभ

व्युत्पत्ति – किसी शब्द की उत्पत्ति का कार्य-कारण सहित पूरा लेखा जोखा ।

36. **कष्ट – दुःख - पीड़ा - क्लेश**

कष्ट – मन और शरीर को सामान रूप से होने वाली असुविधा ।

दुःख – अप्रिय वस्तु आदि को देख, सुन या अनुभव करने से उत्पन्न होने वाला मानसिक कष्ट ।

पीड़ा – किसी रोग या चोट आदि के कारण शारीरिक कष्ट ।

क्लेश – मन के अप्रिय भावों से संबंधित मानसिक दुःख ।

37. **कन्या – किशोरी - बाला - युवती -प्रौढ़**

कन्या – 10 वर्ष की कुमारी कन्या ।

किशोरी – सामान्यत : 10 से 15 वर्ष तक की लड़की ।

बाला – 16 वर्ष की लड़की ।

युवती – 16 से अधिक वर्ष की लड़की लेकिन 30 से कम वर्ष की ।

प्रौढ़ – 30 वर्ष के बाद प्रौढ़ावस्था प्रारंभ हो जाती है ।

38. **काल – युग**

काल – निर्धारित समय, यथा-जीवन काल, वर्तमान काल, भूतकाल ।

युग – 12 वर्ष की समयावधि । व्यापक अर्थ में प्रयुक्त जिसमें अनेक कालों का समावेश हो जाता है, यथा - आधुनिक युग, वैज्ञानिक युग, छायावादी युग ।

39. **कर्तव्य – कार्य**

कर्तव्य – धार्मिक या नैतिक बंधन से युक्त कार्य, जैसे -- माता-पिता की सेवा, राष्ट्र की सेवा ।

कार्य – साधारण काम कार्य कहलाता है ।

40. **खेद – दुःख - ग्लानी - घृणा**

खेद – वह भाव जिसकी अनुभूति किसी काम के न कर सकने पर होती है ।

दुःख – दुर्घटना एवं अन्य प्रकार की हानि द्वारा उत्पन्न मन का भाव ।

ग्लानी – अपने द्वारा किए गए बुरे काम पर होने वाला पश्चाताप ।

घृणा – नफरत, किसी व्यक्ति के अनुचित कार्य के प्रति मन में उत्पन्न भाव अथवा घिन ।

41. **तट – पुलिन - तीर - किनारा**

तट – नदी, तालाब या सागर के निकट की जमीन का हिस्सा ।

पुलिन – नदी आदि के तीर की भीगी हुई जमीन ।

तीर – नदी आदि के जल को स्पर्श करने वाली जमीन ।

किनारा – जलाशयों आदि की पानी से बाहर निकली हुई जमीन का ऊपरी भाग ।

42. **नहीं – मत - न**

नहीं – किसी वस्तु या विचार का पूर्ण निषेध, जैसे--मैं नहीं जाऊँगा ।

मत – विधि क्रिया के निषेधार्थ, जैसे--झूठ मत बोलो ।

न – एक निषेधार्थ अव्यय, जैसे--न आता है, न जाता है, कहीं ऐसा न हो कि एक दिन वह धोखा दे ।

43. **निद्रा - तंद्रा**

निद्रा – सो जाना ।

तंद्रा – नींद की अर्द्ध अवस्था ।

44. **पुरस्कार – पारितोषिक**

पुरस्कार – किसी श्रेष्ठ कार्य करने पर दिया जाने वाला ईनाम (Award) ।

पारितोषिक– विजयी होने पर उत्साह बढ़ाने के लिए दी जाने वाली वस्तु (Prize) ।

45. **पदार्थ – वस्तुएँ**

पदार्थ – प्रकृति से प्राप्त उपकरण, यथा–लाख, शहद, सोना, चाँदी ।

वस्तुएँ – मानव निर्मित--कपड़े, कलम, पुस्तकें ।

46. **परामर्श – मंत्रणा**

परामर्श – सामान्य रूप से सलाह ।

मंत्रणा – किसी विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट व्यक्तियों का परामर्श जो गुप्त रखा जाए ।

47. **पर्यटन – भ्रमण**

पर्यटन – किसी विशेष उद्देश्य से घूमना ।

भ्रमण – विभिन्न दर्शनीय स्थान देखना या सैर-सपाटा करना ।

48. **पवन – समीर**

पवन – अनियमित गति से चलने वाली कोई भी वायु ।

समीर – शीतल, मंद, सुगंध, वायु ।

49. **प्रसिद्ध - ख्यात**

प्रसिद्ध – सामान्य रूप से मशहूर होना ।

ख्यात – विशेष रूप से प्रसिद्ध होना ।

50. **प्रतियोगिता - प्रतिद्वंद्विता**

प्रतियोगिता– जहाँ अपने श्रेष्ठ गुणों को व्यक्त करने का अवसर मिले ।

प्रतिद्वंद्विता – गुणों के अभाव में छल-कपट से श्रेष्ठता प्रदर्शित करना ।

51. **प्रयास-प्रयत्न**

प्रयास – कष्टों की ओर से निश्चिंत होकर किया जाने वाला सामान्य प्रयत्न ।

प्रयत्न – शारीरिक एवं मानसिक रूप से सचेष्ट होकर किया जाने वाला कार्य ।

52. **मित्र - सखा - सुहृद - बंधु**

मित्र – अपनत्व की भावना रखने वाला समवयस्क ।

सखा – दो शरीर एक प्राण माननेवाला व्यक्ति ।

सुहृद – उपकार का बदला न चाहने वाला मित्र ।

बंधु – जिसका वियोग न सहा जा सके ।

53. **भ्रम - संदेह**

भ्रम – असावधानीवश होने वाली भ्रांति, जैसे--रस्सी में सर्प का भ्रम ।

संदेह – निश्चय-अनिश्चय से रहित भ्रम ।

54. **विषाद - शोक - वेदना**

विषाद – उदासी, गम, निराशा ।

शोक – प्रिय के चिर वियोग पर उत्पन्न दुःख का भाव ।

वेदना – मानसिक कष्ट ।

शेष पृष्ठ 19 पर

भाषा बंधन : परिसंवाद

–उमाकांत खुबालकर*

हिंदी एवं मराठी के अंतरसंबंधों की बात करें तो बहुत कुछ समानताएँ भाषायी स्तर पर उभरकर आती हैं । जहाँ भाषा आती है वहाँ संस्कृति सभ्यता, आचार-विचार, साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक परिवेश और इतिहास भी झाँकने लगता है । दिल्ली के अलावा महाराष्ट्र के कुछ शहरों जैसे मुंबई, पुणे, नागपुर, वर्धा, कोल्हापुर, जलगाँव, नासिक, सांगली, सतारा, थाने को इस दृष्टि से टटोलना होगा । यद्यपि इन दो भाषाओं को आपस में जोड़ते हैं तो नजर आता है कि हिंदी की तरह मराठी भी देवनागरी में लिखी जाती है । वर्णमाला लगभग एक सी है । जिस तरह का उच्चारण है, उसी रूप में लिखी जाती है तथा पढ़ी जाती है । सरल है ग्रह्य है उदा. वर्णमाला का 'ळ' व्यंजन हिंदी में ल लिखा जाता है । उच्चारण थोड़ा कठिन है परंतु अर्थ के स्तर पर कोई अंतर दिखायी नहीं देता है । अर्ध 'र' व्यंजन भी है यथा कंप्यूटर, के की बोर्ड में इसे शामिल किया गया है । भूदान यज्ञ आंदोलन के प्रवर्तन राष्ट्रसंत बिनोबा भावे यही चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी हो । जिसे हम आसानी से पढ़ सकते हैं, समझ सकते हैं। इससे हमारी भाषाषी दूरी कम होगी । राष्ट्रीयता, भारतीयता परिपुष्ट होगी । अब मराठी गिनती की थोड़ी बात करें । दस को दहा, बीस को वीस, सोलह को सोळा, तेईस को तेवीस, पचास को पन्नास, तिहत्तर को त्र्याहात्तर तथा सौ को शंभर कहा जाता है । यह भी सच है मराठी भाषी-हिंदी बोलता है, तब पकड़ा जाता है । यहाँ मराठी व्याकरण, लिंग, वचन की बात नहीं करूंगा?

अन्य भारतीय भाषाओं की तरह मराठी की लोक परंपरा काफी समृद्ध है । अनेक ऐसे लोकनायक संत, साधू, महात्मा हुए हैं । जिन्होंने संस्कृति, धर्म, विचार को मजबूत जमीन दी है । शिवाजी ने तो महाराष्ट्र की कल्पना की थी । जिसने एक विराट आकार लिया है । यदि हम राष्ट्रीय आंदोलन की बात करें, महाराष्ट्र के कई शहरों में संयुक्त रूप से चलाए गए । लोकमान्य तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए यह नारा दिया था "स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध अधिकार है ।" वीर सावरकर, गोपाल कृष्ण गोखले, आगरकर, आचार्य अत्रे ने समाचार-पत्रों, जनसभाओं के जरिए वैचारिक क्रांति की । लोकमान्य तिलक ने सार्वजनिक रूप से गणेशोत्सव की स्थापना/आयोजन के माध्यम से आजादी की लड़ाई की व्यापक पृष्ठभूमि तैयार की । जिसे आप सभी जानते हैं । महात्मा गांधी के आव्हान पर सत्याग्रह, स्वदेशी वस्त्र अपनाओ तथा विदेशी/आयातित वस्त्र जलाओ, आंदोलन चला । इन दोनों भाषाओं का प्रयोग अखबारों/सार्वजनिक मंचों पर किया गया । आजादी के पूर्व में स्कूल/कालेज की पाठ्य पुस्तकों में प्रमुख रूप से पढ़ाया जाता है । यह परंपरा आज भी विद्यमान है । इसीलिए वह महाराष्ट्र के घर-घर में पहुँची है । मराठियों ने हिंदी को अपनाया और हिंदी ने भी मराठी को आत्मसात कर लिया । संस्कृति और भाषा, व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ती है । हमारी सभी भारतीय भाषाएं आपस में अंतरग्रंथित हैं । महात्मा गांधी द्वारा वर्धा में स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति देश की सबसे पुरानी संस्था है । इसकी तर्ज पर देश भर में कई उल्लेखनीय संस्थाएं खुली । इन संस्थाओं की हिंदी परीक्षाओं की मान्यता आज भी बरकरार है । हिंदी को ताकतवर भाषा बनाने में मराठियों का बहुत बड़ा योगदान है । हिंदी केवल भाषा ही नहीं ? सार्वभौम राष्ट्र की संस्कृति को अपने आप में समेटने की चेतना है ।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, 1975 में नागपुर में आयोजित किया गया । इससे ज्ञात होता है कि हिंदी को मराठी भाषियों ने कितनी गहराई तक अपनी आत्मा के उपवन में सींचा है । कुछ वर्ष पूर्व का किस्सा है दिल्ली, इलाहाबाद, बनारस हिंदी का गढ़ होते हुए भी मुंबई में धर्मयुग, सारिका, माधुरी, नवनीत जैसी राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाएं प्रकाशित हुई हैं जिसने पूरे हिंदी जगत का ध्यान अपनी ओर खींचा है । ये पत्रिकाएं जो शून्य पैदा कर गई हैं । उनकी कमी अब तक खलती है । मराठी साहित्य में जो

*सहायक निदेशक एवं नियंत्रक अधिकारी, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग, वेस्ट ब्लाक-7, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-66

3608 HA/12—6A

कुछ भी छपा हिंदी में अनूदित होकर आ गया । एक समानधर्मी तत्व देखें ।

जया मनी जैसा भाव तया तैसा अनुभव ।	संत तुकाराम
जाकी रही भावना जैसी प्रभू मूरत देखी तिन तैसी	तुलसीदास

मराठी का समग्र साहित्य प्रगतिशील, क्रांतिकारी एवं आधुनिक चेतना से परिपूर्ण है । मराठी में दलित विचारधारा का जो आंदोलन प्रवर्तित हुआ । दलितों ने सामाजिक उत्पीड़न, शोषण के विरुद्ध कथा-कहानियों में शंखनाद किया । इसी तरह हिंदी में भी दलित लेखन की परंपरा का सूत्रपात किया । इससे साहित्य की मूल धारा में दलितों को आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

देश के दलितों की मुखर व्यथा, पीड़ा, संत्रास उनकी आत्कथाओं में चित्रित हुई है । अब वह साहित्य की अमूल्य धरोहर बन गया है । अगर हम मराठी रंगमंच या नाटकों की बात करें । तब एक ऐतिहासिक सच समक्ष आ खड़ा होगा । मराठी के शीर्षस्थ नाटककार, विजय तेंडुलकर के नाटकों का हिंदी में अनुवाद नहीं हुआ होता तो उनकी राष्ट्रीय पहचान नहीं बन पाती । उनके चर्चित नाटक 'घासीराम कोतवाल' ने भारत के अलावा कई देशों में धूम मचायी । उनके नाटकों में कालजयी, शाश्वत मूल्य हैं । जो भारतीय रंगमंच के लिए गर्व का विषय है । हिंदी नाटककार मोहन राकेश के नाटकों का मराठी में मंचन किया गया है । इसके अलावा शिवाजी सावंत की कृतियों के माध्यम से हिंदी भाषी परिचित होंगे ।

मुंबई में फिल्मोद्योग की नींव को पुख्ता करने वाले दादा साहब फालके थे । हिंदी फिल्मों में अपनी स्वर माधुरी बिखेरने वाली लता मंगेशकर एवं उसके संगीत समर्पित खानदान को कौन नहीं जानता ? यही नहीं ? मराठी फिल्म एवं रंगमंच के कलाकारों ने हिंदी नाटक और फिल्म के अपने बेमिसाल अभिनय कला से नई ऊँचाई दी है । यथा—वी शांताराम, डॉ. जब्बार पटेल, दादा कोंडके, अमोल पालेकर, आशुतोष गवारीकर मधुर भंडारकर, सचिव पिगांवकर इत्यादि प्रभृतियों ने हिंदी सिनेमा को नया धरातल दिया । इसके अलावा ललिता पवार, दुर्गा खोटे, शशिकला, नंदा, सुलोचना, नूतन, राजश्री, जयश्री गडकर, रोहिणी अट्टंगडी, लीना चंदावरकर, माधुरी दीक्षित, स्मिता पाटील, रीमा लागू, ने एक भारतीय नारी की परंपरागत छवि को बनाए रखा । इसी क्रम में गजानन जागीरदार, रमेश देव, अमोल पालेकर, डॉ. मोहने आगाशे, श्रीराम लागू, सदाशिव अमरापुरकर, नाना पाटेकर, सुधीर दलवी, धुमल, सचिन, अरविंद देशपांडे, नीलू फूले, अशोक सराफ, लक्ष्मीकांत बेर्डे, विक्रम गोखले, शिवाजी साटम, मोहन जोशी इत्यादि नामचीन अभिनेताओं ने मराठी रंगमंच के साथ-साथ हिंदी रंगमंच एवं सिनेमा को अपनी अभिनेयता से समृद्ध बनाया है । ऐसे कलाकारों की सूची बेहद लंबी है । जिसे यहाँ देना संभव नहीं है ।

कुछ वर्ष पहले का एक प्रसंग मुझे याद आता है । मैं आकाशवाणी मुंबई में कार्यरत था । रूस और भारत के संयुक्त अंतरिक्ष यात्रा अभियान में भारत के श्री राकेश शर्मा का मुंबई में सम्मान किया गया था । मुंबई फिल्म इंडस्ट्री के महान अभिनेता तथा फिल्म निर्माता, श्री राजकपूर, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । उन्होंने अपना संक्षिप्त व्याख्यान देकर आयोजकों से छुट्टी मांगी । वे कह रहे थे, मुंबई दूरदर्शन पर शाम को एक मराठी फिल्म दिखायी जा रही है । मैं उसे छोड़ नहीं सकता । देखा आपने ? एक बड़े कलाकार का मराठी के प्रति प्रेम । बाद में इसी परंपरा को कई हिंदीभाषी कलाकारों ने बनाए रखा । उन्होंने मुंबई में रहकर मराठी भाषा को सीखा और मराठी भाषियों का दिल जीता । महेंद्र कपूर, मुहम्मद रफी, मन्ना डे, अनंत महादेवन ने मराठी फिल्मों के गीत गाए । जो काफी हिट हुए ।

मराठी फिल्मकारों में वी. शांताराम (दो आँखे बारह हाथ) जब्बार पटेल, अमोल पालेकर तथा मधुर भंडारकर, आशुतोष गवारीकर जैसे युवा निर्देशकों ने हिंदी फिल्मों को विश्वस्तरीय बनाने का अभियान छेड़ा है ।

ज्ञानपीठ पुरस्कृत, वि.स. खांडकर, (ययाति) शिवाजी सावंत को मृत्युंजय तथा वि.वा. शिखाडकर को कृतियों के माध्यम से सभी पहचानते हैं । जब तक हिंदी में समस्त भारतीय भाषाओं का उत्कृष्ट साहित्य अनूदित होकर नहीं आ जाता, तब तक हिंदी पूर्णत्व को प्राप्त नहीं होगी ।

हिंदी के बोलचाल की जो आंचलिक शैलियाँ हैं, बंबईया शैली सबसे रोचक, मधुर एवं सामान्य मराठी भाषी को आपस में जोड़ने वाली है । बंबईया फिल्मों के संवादों में यह जान डाल देती है । यह हिंदी का जनोन्मुखी शैलीगत रूप है ।

ऐसी बात नहीं कि मराठी भाषी साहित्यकार लेखक ही हिंदी के सभा-सम्मेलनों में प्रमुखता से भाग लेते हैं । कुछ

3608 HA/12—6B

वर्षों पूर्व जलगांव के 'मराठी साहित्य सम्मेलन' में हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री, सुश्री महादेवी वर्मा को 'मुख्य अतिथि' के रूप में मंचस्थ होते हुए देखा है । इसी तरह डॉ. धर्मवीर भारती भी मुंबई के साहित्य सम्मेलनों में जाकर अपनी भारतीयता का परिचय देते रहे हैं ।

पिछले दिनों दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा संत तुकाराम की आध्यात्मिक चेतना पर हिंदी के सुप्रसिद्ध समीक्षक, डॉ. नामवर सिंह ने सारगर्भित वक्तव्य दिया तथा संत तुकाराम के मराठी अभंगों को पढ़कर भी सुनाया । यह दो भाषाओं के बीच वैचारिक आदान-प्रदान का अनुपम उदाहरण है ।

मराठी के लोकप्रिय विज्ञान लेखकों श्री जयंत नारलीकर, श्री गुणाकर मुले के शोधपरक लेखों ने हिंदी विज्ञान लेखन में एक कड़ी और जोड़ दी है ।

मराठी में कथा लेखक मंच पर अपने अंदाज में कथा कथन प्रस्तुत करते आ रहे हैं । हिंदी में भी इसकी शुरुआत हो चुकी है ।

यह था एक छोटा सा विश्लेषण जो मुझे अपने अनुभवों से प्राप्त हुआ है । मैंने अपने जीवन में किताबें कम, आदमी ज्यादा पढ़े हैं । मेरी मातृभाषा भले ही मराठी हो मैंने हिंदी को अपनी क्षमता से ज्यादा चाहा है । फिर भी मेरा यह मानना है कि भाषाषी जड़ें आदमी को अपनी ओर खींचती हैं । मातृभाषा मेरी शिक्षा का माध्यम कभी नहीं रही । मुंबई में रेडियो की नौकरी के दरमियान अपनी भाषा को आत्मसात किया है । मराठी साहित्य में अवगाहन करने की इच्छा अधूरी रह गई । विगत 24-25 वर्षों से दिल्ली में निवास कर रहा हूँ । मुंबई से जब कभी मराठी नाटक या लावणी नृत्य का कार्यक्रम दिल्ली में होता है मराठीभाषी उसे देखने के लिए टूट पड़ते हैं । मराठियों ने दिल्ली में कई सांस्कृतिक, शैक्षिक मंच बनाए हैं । उत्सव प्रिय मराठी उसमें सक्रियता से भाग लेते हैं । दिल्ली महानगर में एक लघु महाराष्ट्र बसता है । इस महाराष्ट्र में आपका स्वागत है । अपनी बात समाप्त करने के पहले एक कवि की दो पंक्तियां भारतीय भाषाओं की विधायिका शक्ति को समर्पित करता हूँ ।

अब हवाएं करेंगी
रोशनी का फैसला
जिसमें दम होगा
वही दीपक जलता
रहेगा ।

* इस आलेख को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की संगोष्ठी में पढ़ा गया ।

पृष्ठ 16 का शेष

55. विलाप - प्रलाप

विलाप – विरह अथवा शोकजनित रुदन ।

प्रलाप – मानसिक असंतुलन अथवा व्यर्थ की बातें करना ।

56. विगत - गत

विगत – गत से भी पिछला ।

गत – पिछला गुजरा हुआ ।

57. शंका - अशंका

शंका – संदेह ।

आशंका – खतरा, डर । भविष्य में क्या हो जाए ऐसी कल्पना ।

58. शत्रुता - बैर

शत्रुता – किसी को कष्ट या हानि पहुँचाने की भावना ।

बैर – जब शत्रुता की भावना स्थायी हो जाती है ।

59. श्रम - परिश्रम

श्रम – हाथ-पैरों की मेहनत ।

परिश्रम – मस्तिष्क एवं शरीर से मेहनत करना ।

60. सेवा - सुश्रुषा

सेवा – जरूरतमंद की सहायता ।

सुश्रुषा – रोगी, अपंग लोगों की देखभाल करना ।

61. सनातन - पुरातन

सनातन – जो सदा से चला आ रहा हो । जैसे--भारतीय संस्कृति और धर्म ।

पुरातन – जिसका चलन अब बंद हो गया हो, लेकिन अतीत काल में जिनका चलन रहा है, जैसे--पुराने सिक्के ।

62. स्वतंत्रता - स्वच्छंदता - उच्छृंखलता

स्वतंत्रता – नियम, अनुशासन आदि के साथ कार्य करने की आज़ादी ।

स्वच्छंदता – सभी प्रकार के नियमों तथा अनुशासनों से रहित स्वतंत्रता ।

उच्छृंखलता – उदण्डता के साथ मनमाना व्यवहार करना ।

गंवई गांव गुलाब

(अनुवाद के कुछ सिद्गन्त)

—क्षेत्रपाल शर्मा*

अनुवाद कला है या साइन्स, इस पर एक सार्थक बहस इसलिए हो सकती है चूंकि विदेशों में इस कोर्स को साइन्स में शामिल किया गया है। इसे जो महत्व मिलना चाहिए वह अब तक दिया नहीं गया है। परिणामत: यह अभी भी पिछलग्गूपन में है। श्री सुशील गुप्ता ने कहा है कि अनुवाद करने का अर्थ केवल एक भाषा में दूसरे को बदलना नहीं बल्कि उस रचना में निहित सच्चाई को दूसरों तक पहुंचाना है। (प्रभात खबर, कोलकाता 18 मार्च 12, पृ. 5)

अनुवाद के जरिए रचनाएं उपलब्ध कराने में ननी शूर का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण साझेदारी बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारतीय भाषाओं में ऐसा ही सहकार संबंध काम्य है। श्री शूर के अनुसार (सन्मार्ग, रविवार 18 मार्च 12, साहित्य और संस्कृति) अनुवाद न होता तो कालिदास और अरस्तो को कौन जानता वैसे राबर्ट फ्रोस्ट ने कहा है कि

"Poetry is what is lost in translation"

हिंदी के एक प्रसिद्ध साहित्यकार ने एक समय अनुवाद के बारे में अपने जो विचार व्यक्त किए उन्हें उर्दू के एक शेर के अनुसार इस तरह व्यक्त किया जा सकता है।

> ''असीरे कुंजे कफस का यह हाल है अब तो
> खुद अपने जमजमे सुनता है खुद फड़कता है''

लेकिन ऐसे भी फन के माहिर साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने पद्य का तर्जुमा ही पद्य में करके शोहरत हासिल की।

उनमें एक बिहारी हैं जो एक कहावत को पद्य रूप दिए ''घर का जोगी जोगना······ को उन्होंने इस तरह पद्य रूप द्या

''......फूलो अनफूल्यो रहो, गंवई गांव गुलाब।''

दूसरे कैफी आज़मी हैं जो ''मिलें न तुम तो हम घबराएं···

अनुवाद चाहे वह हिंदी से अंग्रेजी में हो या अंग्रेजी से हिंदी में वह लक्ष्य भाषा के अनुरूप होना चाहिए। इसके लिए उस भाषा की बारीकियां पेचीदगीयां समझनी होंगी।। लार्ड वुढाउस्ली ने अर्थ के अनुवाद को शब्दों के अनुवाद से श्रेष्ठ, मौलिकता की रवानी के कारण, माना है।

ऐसा ही

एक लेख श्री टी ए रंगाचारी (हिंदुस्तान, 10 अप्रैल 2012 के पृ. 12) पर है जिसमें शब्द और इच्छित मंतव्य में भेद समझने को इस तरह लिखा है

''भारत को मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा देने के मामले पर पाकिस्तान में काफी चर्चा हो रही है।''

यह पूछा जा रहा है कि हम भारत को तरजीही मुल्क का दरजा क्यों दें ? हालांकि यहां समस्या तर्जुमे को लेकर ज्यादा है इसमें तरजीह देने जैसा कुछ नहीं है। इसका अर्थ सिर्फ इतना है कि व्यापार में आपके साथ भेदभाव नहीं होगा या दूसरे शब्दों में यह कि व्यापार के मामले में हम आपसे उतना ही प्यार करेंगे जितना दूसरे देशों के साथ करते हैं। लेकिन मामला तर्जुमे में फंसा है। जमीनी हालात यह है कि भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापार के कई प्रस्ताव अभी तक अंटके हुए हैं।

धीरे-धीरे हम अपनी अंक प्रणाली इकाई, दहाई, सैकड़ा, हज़ार, दस हज़ार, लाख, दस लाख, दस करोड़, अरब, दस अरब, खरब, दस खरब, नील दस नील पदम, दस पदम, शंख, दस शंख, जिसकी प्रशंसा अल बरूनी जैसे विद्वानों ने की थी भूलते जा रहे हैं ''मैं और तुम दोनों चलें'', तो इसका अनुवाद करने में भाषा की पृष्ठभूमि एवं

* शान्तिपुरम, सासनी गेट, अलीगढ़ (परामर्शदाता, राजभाषा, स्वास्थ्य मंत्रालय, नई दिल्ली)

प्रकृति दोनों की अच्छी समझ होगी तभी अनुवाद सही होगा, अन्यथा नहीं । अंग्रेजी में सर्वनाम पहले आएगा, you and I, proceed there., कुछ शब्द तो अपने आप में plural है । इस तरह लक्ष्य भाषा का व्याकरण, प्रयोगगत व्यवहार समझना बहुत जरूरी है, जैसे टेढ़ी खीर, हथकन्डे का अनुवाद करना । अनुवाद बहुत ही संवेदनशीलता का काम है । यह प्यार व्यक्त करता है, दर्द व्यक्त करता है एवं आपकी धड़कन की एक खूबसूरत अभिव्यक्ति है । यह एक ऐसी साधना है जिसमें सतत् अभ्यास से ही हाथ का हुनर हासिल हो सकता है । अब black list का सीधे काली सूची अनुवाद भी करने की परंपरा चल गई है, जब कि होना चाहिए निषिद्ध या प्रतिबंधित । सूची कोई काली या पीली नहीं होती अब वैटिन्ग के नाम पर समय भी जाया (बरबाद) करने का तरीका है कि किंतु परंतु, की जगह लेकिन ज्यादा लोक प्रिय है, इसे काटो और उसे लिखो । कई बार तो एक ही विभाग के बाएं हाथ को यह पता नहीं कि दायां हाथ उस शब्द के लिए कोई दूसरा पर्याय तो प्रयोग नहीं कर रहा है ।

physical achievements का उचित हिंदी पर्याय वास्तविक ज्यादा सटीक है न कि भौतिक अथवा शारीरिक । इसी तरह in adequate facilities का अपर्याप्त सुविधाएं (अभाव का बोध) न कि घटिया सुविधाएं (मानक स्तर की नहीं थीं,) लेकिन चीज थीं ।

विमल मित्र के उपन्यास के एक हिंदी शब्द का अनुवाद इस तरह देखा था कि स्त्रीनुमा स्त्रैण पुरुष तो इस तरह भाषाई सामंजस्यता को अपनाकर एक इच्छित भावना को आकार दिया है ।

यदि बार-बार शब्दकोश, थेसारस और एटाइमोलोजी पर गए तो यह श्रम साध्य और समय कथिन काम होगा । निष्कर्ष यह है कि नए पुराने, प्रचलित-अप्रचलित शब्दों का एक पर्याप्त भंडार अनुवादक के पास जरूर होना चाहिए । यह लचीला और आपके काम आए इस लायक हो । जैसे medical care स्वास्थ्य देखभाल लेकिन स्वास्थ्य मंत्रालय में यह चिकित्सा परिचर्या के लिए प्रयोग है । होने को जो चल रहा है उस पर बदलाव की जरूरत है जैसे mother and child के लिए माता और शिशु लिखना गलत नहीं है पर हमारी अपनी बोलचाल में प्रचलित शब्द जच्चा-बच्चा ज्यादा सटीक हैं । इसी तरह universal के लिए सार्वभौमिक ठीक रहेगा, पर नहीं, यह स्वास्थ्य क्षेत्र में "व्यापक" - , टीकाकरण के संदर्भ में है । जब यह बात चर्चा में आई तो कुछ का कहना था कि हम एक विशेष वर्ग के लिए और पेशेवर टच देकर लिखते हैं, यह दलील खोखली है । हम जनता की भाषा का प्रयोग क्यों न जनता के लिए करें, नब्बे प्रतिशत को क्यों अलग रखें जो दस प्रतिशत इसे पढ़ेंगे, वे इतने मेधावी और प्रतिभाशाली हैं कि वे उस सरल भाषा को भी पढ़ लेंगे ।

जो शब्द जहां जैसा प्रयोग हो रहा है वहां अगर बात बन रही है तो वैसा लिखने में कोई हर्ज नहीं । जैसे secular का अर्थ पंथ निरपेक्ष, लेकिन धर्म निरपेक्ष ठीक नहीं जंचा । integration का काफी समय तक समानार्थी नहीं मिल पाया था । एकता शब्द से लोग खुश नहीं थे ।

कुछ शब्द प्रयोग विशेष अर्थ में प्रयोग होते रहे हैं । जैसे to make both ends meet, रोजी रोटी का जुगाड़ करना, from the elephants mouth संबंधित व्यक्ति के मुंह से ही सुनना; it rains cats and dogs, under the belt, blue and play a second fiddle या हिंदी में यह बात तब की है जब मैं विद्यार्थी था, मेरी घड़ी के अनुसार चार बजे हैं, यह वस्तुगत थी । इसी तरह कुछ अलग करने की फिराक में एक व्यक्ति ने land for hospital has been identified का का अनुवाद, जगह अभिग्यात कर ली गई है, किया । उसी तरह "देश को आज़ादी दिलाने में महात्मा गांधी का बहुत बड़ा हाथ था "इस कारनामे में उन का हाथ है, इस पोटरी में जरा हाथ लगा दो, दो हाथ लगे तो सब सच उगल देगा ।

He is professor of wealth इसका भी अनुवाद भाव का ही होगा ।

नीचे अभ्यास के लिए अंग्रेजी के दौ पैरा आप करें :

A Fishy Silence

"whether Prime Minister Manmohan Singh actually took a nibble of a hilsa at a banquet his Bangaladeshi counterpart Sheikh Haseena had hosted for him in Dhaka last week remains a diplomatic secret in an interview Singh had promised to taste the iconic fish during the visit. A Hilsa dish was indeed served for the P. M., but apparently, given he complications of picking the bones, he could not get around to tasting it at the formal banquet. But to admit that he did not have a bite, as he had promised could have proved a bone of contention. So it was decided to scale down the event"

3608 HA/12—7A

2 "sports has an inbuilt age limit. It may be sad to see a 31 year old Roger Federer failing against a younger player, but that is the nature of a beast. Somehow the same rule applied to a airline staff. Part of the problem is that Air India is terribly bureaucratic and same old spark will inevitably question the co-relation between looking good and being young.".

कुछ लेटिन और अन्य भाषा की पदावली इस प्रकार है :

एकिलीज हील्स (कमजोर पक्ष),

नेल्सन्स आई (जानबूझकर उपेक्षा करना)

मेलाप्रोपिज्म (दोष पूर्ण उच्चारण करना)

होब्सन्स चोइस (कोई चोइस न होना)

हर्क्यूलियन टास्क (एक बहुत कठिन काम)

अरथर्स स्वोर्ड (वीरता का परिचायक)

योमेन सर्विस (एक सुन्दर सेवा बहुमूल्य सेवा)

ड्रेकोनिअन ला (क्रूर तानाशाही)

इलेक्ट्रा या इडिपस कम्पलेक्स (अति भावुकता, आत्म मोह)

यूटोपिअन (काल्पनिक)

देमोक्लीज स्वोर्ड (क्रूर के पंजे में)

नाउ फेस थी म्यूजिक (किया भुगतना)

रीड बिट्वीन थी लाइन्स (अव्यक्त को समझना)

फ्लाइंग कलर्स (विजय हासिल करना)

किसी प्रवक्ता की लेखनशैली बड़ी लाजवाब होती है । मैं The Statesman में सी आर ईरानी के केविएट बड़े चाव से पढ़ता था, यद्यपि उसमें विधिक शब्द ज्यादा होते थे । यही हाल मेडिको लीगल शब्दों का है ।

कुशल व्यावसायिक अनुवादकों को www.proz.com. पर विजिट करना चाहिए । hispanic india, indian translators, verbumsoft आदि साइटें भी उपयोगी हैं ।

एक अच्छा हिंदी फोंट एरियल यूनीकोड है, समय की बचत और अनुवाद में करीब साठ प्रतिशत शुद्धता के लिए गूगल का ऑनलाइन ट्रांसलेसन टूल किट एक दिव्य यंत्र है; इस पर आप काम करेंगे तो यह भी उन्नत होता जाएगा । लेकिन इसके बेहतर उपयोग के लिए आप हार्ड कापी के साथ-साथ सोफ्ट कापी की मांग करें । इस तरह उपलब्ध ट्रांसलेसन में indic IME संशोधन 2 से कर सकेंगे । इसे टोगिल करके इच्छित भाषा अदल-बदल कर सकते हैं ।

कुछ अनुवादित अब पैरा देखें और जांचें कि क्या अनुवाद इससे बेहतर हो सकता था कि नहीं :

1. "सी जी एच एस को लाभार्थी हितैषी

बनाने के लिए इसके कार्यकरण को सरल और कारगर बनाया गया है और इसमें सुधार लाया गया है ।"

2. "भारत में संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम 70 प्रतिशत रोगियों का पता लगाने की दर, 85 प्रतिशत रोगमुक्ति की दर से आगे बढ़ गया है, तथा इन दरों में और सुधार करने के प्रयास किए जा रहे हैं"

3. "माता और बच्चे का पता लगाने की प्रणाली का कंप्यूटरीकरण"

4. "जापानी एन्सेफिलाइटिस :

प्रकृति में पारेषण चक्र का अनुरक्षण सुअरों तथा जल पक्षियों जैसे जे ई वायरस के पशु भंडारों द्वारा किया जाता है । मनुष्य इसके लिए घातक होस्ट है अर्थात् जे ई एक संक्रमित व्यक्ति से एक दूसरे व्यक्ति को नहीं फैलता । उन क्षेत्रों में यह रोग अधिक फैलता है जहां पशुओं, पक्षियों तथा मानकों के बीच सन्निकट अंत:क्रिया होती है । जे ई के रोगाणु धान के खेतों जैसे विशाल जन निकायों में पनपते हैं ।"

5. "मनोसामाजिक बहिरंग रोगी विभाग, जैसा कि इसे पुकारा जाता है, उन रोगियों की जरूरतों को पूरी करता है, जो छोटी-मोटी मनोव्यानीय समस्याओं से पीड़ित होते हैं, और जो केवल मनोविग्यानीय विधियों अर्थात् परामर्श, आचरण चिकित्सा अथवा जैव फीड बैक अथवा विश्रान्ति चिकित्सा से ठीक हो सकते हैं ।" ■

3608 HA/12—7B

तकनीकी विषय और राजभाषा-वर्तमान स्थिति

-राकेश कुमार*

भाषा को यदि सीमित रूप में देखा जाय तो यह केवल सम्प्रेषण का माध्यम मात्र होती है । भाषा को यदि राष्ट्र के संदर्भ में देखा जाए तो भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम ही नहीं होती, उस देश की संस्कृति की संवाहिका भी होती है । यह उस देश की राष्ट्रीय पहचान और सभ्यता का भी प्रतीक होती है । राष्ट्र-भाषा का कोई भी राष्ट्र गूंगा होता है और यदि वह अपनी राष्ट्र-भाषा के स्थान पर किसी अन्य भाषा का प्रयोग करता है तो वह अपनी संस्कृति और परम्पराओं से हमेशा के लिए दूर हो जाता है । यह बात, कामकाज की भाषा और बोलचाल की भाषा, दोनों ही स्थितियों में लागू होती है ।

यह आम मानसिकता है कि हिंदी में विज्ञान और तकनीकी विषयों की पढ़ाई तथा अनुसंधान कार्य करना उतना आसान नहीं है जितना अँग्रेजी में । दुर्भाग्य से हमारी मानसिकता अँग्रेजी को ही ज्ञान का प्रतीक मानने की है । हम इस विदेशी भाषा को ज्ञान के भंडार के रूप में देखते हैं । जबकि हम जानते हैं कि भाषा किसी भी ज्ञान को प्राप्त करने का केवल एक माध्यम होती है और उसका ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है । यदि ऐसा होता तो चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, तथा रूस जैसे विकसित देश, जहां अँग्रेजी भाषा का प्रयोग नहीं होता, केवल अपनी भाषा के बल-बूते पर आज इतनी उन्नति नहीं कर सकते थे । इन देशों ने, पूरे विश्व को यह दिखा दिया है कि ज्ञान और विज्ञान के दरवाजे किसी भी देश तथा किसी भी भाषा के लिए खुले हैं और वे अंग्रेज़ी भाषा के मोहताज नहीं हैं ।

कहते हैं कि कोई भी भाषा अथवा बोली यदि प्रचलन में नहीं रहती है तो वह लुप्त हो जाती है । इसलिए अपनी मातृभाषा का परस्पर-व्यवहार और अपनी राजभाषा का सतत प्रयोग नितांत आवश्यक है । वर्ष 1961 की जनगणना में भारत में कुल 1652 मातृभाषाओं की गणना की गई । आश्चर्य की बात तो यह है कि वर्ष 1971 की जनगणना में, केवल 109 मातृभाषियों की ही जानकारी मिली । इनमें से कुछ मातृभाषाएँ तो ऐसी थीं जिनके बोलने वालों की संख्या 5, 10, 20 तथा 25 तक थी । यानि 10 वर्षों में अधिसंख्य मातृभाषाएँ विलुप्त हो गईं । यह स्थिति वास्तव में चिंताजनक है ।

माननीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने जनवरी, 2012 को भुवनेश्वर में, 99वीं विज्ञान-संगोष्ठी के अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर अपने संबोधन में यह कहा कि-

"पिछले कुछ दशकों में भारत, विज्ञान के क्षेत्र में चीन तथा अन्य देशों से पिछड़ गया है । परिस्थितियाँ बदलीं हैं लेकिन हमने जो अर्जित किया है, उतने में संतोष नहीं किया जाना चाहिए । भारत में विज्ञान के स्वरूप को बदलने के लिए अभी भी काफी कुछ किए जाने की ज़रूरत है । उन्होंने कहा कि 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक अर्थात् वर्ष 2017 तक, वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी-खोजों पर खर्च को सकल घरेलू उत्पादन के कम से कम 2% तक बढ़ाया जाना चाहिए जो अभी केवल 0.9% है ।"

डा. सिंह ने इस अवसर पर, सभी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे भारत जैसे विकासशील देश की प्रगति में अपना योगदान दें । माननीय प्रधानमंत्री ने विज्ञान और अभियांत्रिकी की शिक्षा के प्रति छात्रों में रुचि पैदा करने पर भी बल दिया ।

माननीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने बेशक यह बात विज्ञान के संदर्भ में कही थी कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में चीन जैसे देशों से पीछे है, परंतु सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है । भाषा की दृष्टि से देखें तो चीन ने यह तरक्की अपनी भाषा के माध्यम से ही की है । केवल चीन ही नहीं, बल्कि जापान, रूस फ्रांस तथा जर्मनी जैसे देश, जिनकी भाषा अंग्रेज़ी नहीं है, भी आज विज्ञान और तकनीकी

*राकेश कुमार, उप निदेशक (कार्या.), उत्तर क्षेत्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 302, सी जी ओ भवन, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद

अनुसंधान के क्षेत्र में हमसे बहुत आगे हैं । अब सोचने की बात यह है कि विज्ञान का पठन-पाठन तथा अनुसंधान का कार्य यदि केवल अंग्रेज़ी में संभव होता तो ये देश कभी भी इतनी तरक्की नहीं कर सकते थे । इसका सीधा-सा अर्थ है कि किसी भी अनुसंधान, खोज तथा आविष्कार के लिए कोई भी भाषा माध्यम बन सकती है तो वह भाषा अपने देश की भाषा हिंदी क्यों नहीं बन सकती जो संयोग से, इस देश की राजभाषा, राष्ट्र-भाषा, जन-भाषा (Lingua-Franca) और संपर्क-भाषा भी है ।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 राष्ट्रीय भाषाएँ, हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ भी हैं । इन भाषाओं के अतिरिक्त भी ऐसी कई भारतीय भाषाएँ हैं जिन्हें संविधान की अनुसूची में शामिल किए जाने पर बल दिया जा रहा है । स्पष्ट है, कि यह प्रयास अपनी भाषाओं को संवैधानिक पहचान दिलाने के साथ-साथ भाषा की अस्मिता को बचाने तथा इसे सामाजिक स्वीकृति दिलाने की दिशा में भी है । हमारे क्षेत्र विशेष की भाषाएँ--बृज, अवधी, मगही तथा बुंदेलखंडी बोलियाँ होने के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाएँ भी हैं तथा इनमें साहित्य रचना भी हुई है और ये भाषाएँ बहुत से लोगों की मातृभाषाएँ भी हैं ।

विश्वभर में आज लगभग 80 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं । इस भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप बन चुका है । आज हिंदी विश्वभाषा बन चुकी है । फिर भी हमारे बुद्धिजीवी इसे पिछड़े लोगों की भाषा मानते हैं । लोग आज भी अँग्रेजी बोलने में कुलीनता और हिंदी बोलने में हीनता का अनुभव करते हैं । सत्य तो यह है कि संस्कृत जैसी भाषा कंप्यूटर के लिए सर्वथा उपयुक्त भाषा मानी जाती है । इसी कारण इंग्लैंड और आइरलैंड में प्राइमरी कक्षाओं में भी इसे पढ़ाया जाता है । दुर्भाग्य से, यदि हमारे यहाँ इसे अनिवार्य बना दिया जाए तो कई हिंदीतर राज्यों से विरोध के स्वर उठने लगेंगे । यानि हमारी अपनी ही भाषा अपने ही देश में पराई कर दी जाती है ।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम यह भूल गए हैं कि भाषा और साहित्य हमें संस्कार देते हैं । यदि हम चाहते हैं कि हमारी अगली पीढ़ी भी उच्च भारतीय संस्कार प्राप्त करे तो उन्हें भाषा और साहित्य के करीब ले जाना होगा ।

राजभाषा हिंदी का सरोकार व्यावहारिक रूप से कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग से है । हम सबका यह नैतिक कर्तव्य है कि हम इसे अंगीकृत कर, दोयम दर्जे से ऊपर उठाकर इसे यथोचित सम्मान दिलाकर, शीर्षस्थ सोपान पर प्रतिस्थापित कर, संवैधानिक उत्तरदायित्व के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व भी निभाएँ । हिंदी जन-जन की भाषा है तथा देश-विदेश में हम भारतीयों के एक बड़े जन-समुदाय की संपर्क भाषा भी है । अतः राजभाषा हिंदी का क्रमिक संवर्धन करना हमारी मूल-भूत आवश्यकता है जिसे विभिन्न पहलुओं से जोड़कर देखा जाना चाहिए । वास्तव में हिंदी एक सेतु के रूप में काम कर रही है जो भारत की विभिन्न संस्कृतियों, कलाओं, भाषाओं, विधाओं, संप्रदायों, समाजों तथा संस्कारों को एक कड़ी में जोड़ती है ।

हिंदी, **स्व-शासन तथा सु-शासन** का एक सशक्त माध्यम है क्योंकि इस देश का आम नागरिक या तो क्षेत्रीय भाषा समझता है या फिर हिंदी भाषा, और स्व-शासन तथा सु-शासन कभी भी किसी विदेशी भाषा के द्वारा संभव ही नहीं हो सकता । क्या स्थानीय शासन के रूप में गाँव की पंचायती-राज प्रणाली की कल्पना क्षेत्रीय अथवा हिंदी भाषा के बिना की जा सकती है ? आज आम आदमी मजबूरी के साथ हिंदी बोलता है और शिक्षित आदमी संकोच के साथ । यह स्थिति निश्चित रूप से दुर्भाग्यपूर्ण है ।

वर्तमान संदर्भ की बात करें तो हिंदी, चीन की मंदारिन के बाद, विश्व में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है । अँग्रेजी आज भी तीसरे स्थान पर है । आंकड़ों की बात करें तो हिंदी विश्व के लगभग 135 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है तथा दुनिया के 93 देशों में बोली जाती है । कुल 115 करोड़ भारतीयों में से 70 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं । यहाँ तक कि विदेशों में भी जो लोग रहते हैं, उनकी भी संपर्क भाषा हिंदी ही है ।

एक अच्छी खबर यह है कि पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा भारतीय वन सेवा को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए गठित की गई विशेषज्ञ समिति ने यह परीक्षा हिंदी में कराने की सिफारिश की है । पूर्व महा-निदेशक श्री जे.सी. काला की अध्यक्षता में गठित समिति ने सुझाया है कि भारतीय वन सेवा में अधिक से अधिक नौजवानों को अवसर मिलना चाहिए और इसके लिए परीक्षा हिंदी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी होनी चाहिए । अभी यह परीक्षा केवल अंग्रेज़ी में होती है ।

हाल ही में आस्ट्रेलिया में विक्टोरिया प्रांत की सरकार ने अपने विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में हिंदी को शामिल करने की सिफारिश की है । कनाडा में **हिंदी-अब्रोड** सबसे अधिक बिकने वाला हिंदी अखबार है । रेडियो आस्ट्रेलिया द्वारा हिंदी वैबसाइट लाँच की गई है । अमेरिका की पेंसिलवेनिया यूनिवर्सिटी में एम.बी.ए. के छात्रों के लिए हिंदी का दो वर्षीय कोर्स अनिवार्य है । भारतीय विदेश मंत्रालय की संस्था, भारतीय सांस्कृतिक संबद्ध परिषद्, लगभग 60 देशों में वहाँ के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाने के लिए हिंदी के विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त करके भेजती है ताकि अन्य देशों में भी हिंदी फैल सके । ये खबरें निश्चित रूप से सुखद हैं और हिंदी के तेज़ी से बढ़ते वर्चस्व को दर्शाती हैं ।

आज हिंदी माध्यम से विज्ञान, तकनीकी, व्यवसाय, समुद्र-विज्ञान, मौसम-विज्ञान, अन्तरिक्ष-विज्ञान आदि विषयों पर उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की जा रही है । अब तक पर्याप्त हिंदी शब्दावली विकसित की जा चुकी है । हिंदी में मूल शब्दों की संख्या लगभग 2,50,000 है । हिंदी में हर अर्थ के लिए अलग-अलग शब्द हैं । अँग्रेजी में सही उच्चारण के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है परंतु हिंदी में केवल अर्थ देखने के लिए ही शब्दकोश की ज़रूरत पड़ती है । आज अभियांत्रिकी से लेकर चिकित्सा-विज्ञान, परमाणु-ऊर्जा, वैमानिकी और जैव-प्रौद्योगिकी तक जैसे विषयों में हिंदी में पुस्तकें उपलब्ध हैं ।

यह दुर्भाग्य की बात है कि आज़ादी के 64 वर्षों के बाद आज भी हमें **हिंदी की दशा और दिशा** के बारे में सोचने की आवश्यकता पड़ती है । हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता, समृद्धता, सहजता और सुगमता के बारे में जानने के बाद भी हम इसे दिल से अपनाने में असमर्थ रहे हैं । हिंदी के नाम पर आयोजन तो बहुत होते हैं पर इतने आयोजनों के बाद भी हिंदी वहाँ तक नहीं पहुँच सकी है जहां इसे आज होना चाहिए था ।

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री विजय कुमार भार्गव ने वैज्ञानिक विषय पर अपना शोध-प्रबंध हिंदी में लिखा । उनका विश्वास था कि हिंदी में लिखा उनका शोध-प्रबंध ज्यादा प्रासंगिक, अर्थवान और सारगर्भित हो सकता है और इस शोध का फायदा एक बड़े हिंदी-भाषी वर्ग को भी मिल सकता है । यह एक अनुकरणीय शुरूआत थी । साथ-साथ उन्होंने अपना शोध-ग्रंथ अँग्रेजी में भी लिखा और इसे दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया । परीक्षकों को हिंदी में लिखा गया शोध-ग्रंथ अँग्रेजी की तुलना में अधिक बेहतर लगा और उन्हें उपाधि हिंदी में लिखे शोध-ग्रंथ के लिए मिली । क्या इसे हिंदी भाषा के क्षेत्र में एक नई आशा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए ?

पिछले दिनों **टाइम्स ऑफ इंडिया** में सुप्रसिद्ध विचारक श्री रामकरण सिंह का एक लेख छपा । इस लेख में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय भाषाओं के उम्मीदवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है । वर्ष 2004 में इन सेवाओं में 85% उम्मीदवारों ने हिंदी विषय लिया और 20% ने हिंदी माध्यम से परीक्षा दी । 20 सफल छात्रों में से 2 सफल छात्र हिंदी माध्यम के थे । श्री सिंह ने आंकड़े देकर अपने आलेख में यह साबित किया कि भारतीय भाषाओं में उत्तीर्ण छात्रों की संख्या का ग्राफ लगातार ऊपर जा रहा है । और हिंदी माध्यम से परीक्षा देने वाले छात्रों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है । तो क्या यह भाषा की लोकप्रियता, भाषा की क्षमता और भाषा के प्रति हमारे द्वारा दर्शाये जा रहे सम्मान के स्पष्ट संकेत नहीं हैं ?

अपनी भाषा के बारे में इतनी सारी बातें हों और आधुनिक संदर्भ में सूचना प्रोद्योगिकी, संचार-माध्यमों और इंटरनेट की बात न हो तो यह चर्चा अधूरी ही मानी जाएगी । वर्तमान समय और आने वाला समय कंप्यूटर क्रांति का समय है । आज व्यवसाय, दफ्तर का कामकाज, अंतर्राष्ट्रीय-संपर्क और सेवाओं हेतु कंप्यूटर हमारे जीवन से जुड़ गया है । ज़ाहिर है कि जब कंप्यूटर इतना महत्वपूर्ण हो गया है तो कंप्यूटर को हिंदी से जोड़े बिना आप हिंदी के विकास की बात नहीं कर सकते और जब तक दफ्तरों में कार्यरत कंप्यूटर में हिंदी नहीं आएगी तब तक हिंदी के प्रयोग की बात करना बेमानी है ।

कंप्यूटर पर हिंदी तथा अन्य 12 भारतीय भाषाओं में कार्य करने के लिए सी-डेक पुणे की मदद से विकसित यूनिकोड-प्रणाली निश्चित रूप से उपयोगी है । इसके अतिरिक्त, अनुवाद हेतु-मंत्र, श्रुतलेखन हेतु-स्पीच टु टेक्स्ट, हिंदी सीखने हेतु विकसित-लीला-प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा अन्य ई-टूल्स ने आज कंप्यूटर पर हिंदी के काम-काज को अत्यंत सुविधायुक्त और सरल बना दिया है ।

शेष पृष्ठ 33 पर

साहित्यिकी

सहजता के कवि : नागार्जुन

–मनोज तिवारी*

"प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ प्रतिबंद्ध हूँ—
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त-"

उन्नीस सौ पचहत्तर में लिखी नागार्जुन की ये पंक्तियाँ उनके वैचारिक सरोकार एवं जीवन-वास्तव से लगाव का परिचय देती हैं । निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में उत्पन्न नागार्जुन ने अपने चारों ओर गरीबी, दैन्य, अपमान विषमता से तड़पते किसान-मज़दूरों को देखा था इसलिए उनकी कविताओं के विशाल फलक पर जीवन के विविध और मर्मस्पर्शी चित्र अंकित मिलते हैं । साहित्य-साधना के दौरान वे जन-पक्षधर कवि के रूप में सामने आते हैं । कोटि-कोटि जनों के इस कवि में क्रांतिकारी-मन बसता था । इनकी क्रांतिकारी दृष्टि एक तरफ साम्राज्यवाद, सामंतवाद और पूंजीवाद की प्रखर आलोचना में प्रकट होती है दूसरी ओर उनकी कला द्वारा हिंदी जाति के विभिन्न जनपदों की श्रमिक जनता की एकता आकार लेती दिखाई पड़ती है ।

नागार्जुन का दृष्टिकोण आशा-उत्साह से भरा है । इनके लेखन में मुफलिसी और बेचारगी नहीं, संघर्ष के साथ-साथ आशाओं और भविष्य की कामनाएँ जगती हैं । इनके कवि व्यक्तित्व की सफलता की ओर संकेत करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं--"नागार्जुन ने लोकप्रियता और कलात्मकता, सौंदर्य के संतुलन और सामंजस्य की समस्या को जितनी सफलता से हल किया है, उतनी सफलता से बहुत कम कवि हिंदी से भिन्न भाषाओं में भी हल कर पाए हैं ।" नागार्जुन के रचनालोक के केंद्र में गाँव है । कृषक जीवन और उनकी समस्याओं में कवि की सक्रियता गहरे रूप में व्यक्त होती है । वृक्ष की जड़ों की तरह उनकी कविता की जड़ें गहरे रूप में व्याप्त हैं । वे अपनी रचना में ग्रामीण यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं ।

नागार्जुन कथ्य से भंगिमा तक, चिंतन से पहरावे और व्यवहार तक लोकधर्मी थे । अज्ञेय के काव्य में अभिजात्य की एक सूक्ष्म परत दिखाई देती है जबकि नागार्जुन का काव्य जनवादी है । उन्होंने अभावग्रस्त जीवन के कष्टों एवं संघर्षों को स्वयं झेला था-

"आ रहा हूँ
पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से
कवि हूँ दबी हुई दूब का ।"

वास्तव में कवि नागार्जुन दबी हुई दूब के कवि हैं--दिन रात पसीना बहाते किसानों-मजदूरों के प्रति समर्पित । नागार्जुन को इनकी अक्खड़ प्रकृति और खुरदुरी भाषा के कारण आधुनिक कबीर कहा जाता है । इनमें कबीर की तरह ही फक्कड़पन, सादगी, सरलता, बेबाकी व निडरता है । इनकी कविताओं से गुज़रते हुए जो बात स्पष्ट दिखाई देती है वह है इनकी आत्मीयता । मित्र, पत्नी, किसान, मजदूर, छात्र, बच्चे, बस ड्राइवर, पशु-पक्षी आदि सभी के साथ इनकी भावना एकाकार हो गई । कवि त्रिलोचन के अनुसार--"नागार्जुन हिंदी की परंपरा का विकास करने वाले कवि हैं, राजनीति से लेकर प्रकृति तक । इसी अर्थ में नागार्जुन एक जनपक्षधर कवि के रूप में भी प्रभाव छोड़ते हैं । यह उनकी जनवादी चेतना का सूचक है ही साथ ही उनकी समग्र जीवन दृष्टि का भी प्रमाण है । नागार्जुन ने वस्तुत: जन-जीवन को समग्रता में देखने का प्रयास किया है । यही कारण है कि उनकी कविताओं में पर्याप्त विविधता है । वे सामाजिक दुख-दैन्य, शोषण-उत्पीड़न के चित्रण से लेकर मानवेतर प्राणि-जगत के प्रति भी उतने ही गहरे लगाव के साथ अपनी काव्य संवेदना व्यक्त करते हैं ।"

यह सत्य है कि नागार्जुन दीन-हीन-दलित, गरीब-गुरूवा के कवि हैं फिर भी छायावाद के बाद जितनी शिद्दत से

* सेक्टर-15/II, गुडगांव; हरियाणा-122001

3608 HA/12—8B

इन्होंने प्रकृति-चित्रों को अपनी रचनाओं में उकेरा है, वह अन्यत्र दुर्लभ है । इनकी कविता में प्रकृति प्रेम की व्यंजना, प्रकृति के प्रति लगाव व अनुराग स्पष्ट झलकता है । वहाँ न उद्दीपन है, न प्रतीकात्मकता । स्वतंत्र रूप से प्राकृतिक परिदृश्य व उपादान अपनी नैसर्गिक छाटा बिखेर रहे हैं--

"बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जीभर देखी
पकी-सुनहरी फसलों की मुस्कान
बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जीभर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे टटके फूल
बहुत दिनों के बाद"

यहाँ कवि ग्राम्य-प्रकृति के मनोरम दृश्यों पर मुग्ध है । पकी सुनहरी फसलों की मुस्कान, मौलसिरी के टटके फूल, गन्ने, गंवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल ये सारी चीजें कवि को आकर्षित और भाव-विभोर करती है । 'सिंदूर तिलकित भाल में' कवि ने अपनी पत्नी के साथ-साथ अपने गाँव को याद किया है—

"घोर निर्जुन में परिस्थिति ने दिया है डाल !
याद आता तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल ।
कौन है वह एक जिसको चाहिए न समाज ?
कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरों
से काज ?

याद आता मुझे वह तरउनी ग्राम
याद आती लीचियाँ, वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रूचिर भू-भाग"

समाज के प्रति कवि की प्रतिबद्धता यहाँ देखी जा सकती है । मिथिला के 'रूचिर भू-भाग', लीचियाँ आम आदि कवि के गृहनगर और ग्राम की प्राकृतिक संपदा के रूप में यहाँ चित्रित है । ये सिर्फ प्रकृति के अवयव ही नहीं बल्कि वहाँ के निवासियों के जीविका निर्वाह के साधन भी हैं । अपने गाँव के प्रति कवि की आस्था तीव्र है । प्रकृति कवि में आस्था, विनम्रता, सहजता और दृढ़ता भी देती है ।

'वसंत की अगवानी' कविता में लोक-सौंदर्य दृष्टिगत होता है—

"रंग-बिरंगी खिली-अधखिली
किस्म-किस्म की गंधों-स्वादों वाली ये मंजरियाँ
तरूण आम की डाल-डाल टहनी-टहनी पर
झूम रही हैं · · ·। चूम रही हैं—कुसुमाकर को
ऋतुओं के राजाधिराज को ।"

वसंत का आगमन सारी प्रकृति को मोहक बना देता है । लोक और धरती का अटूट संबंध होता है । अपनी चारों ओर की प्रकृति को लोककवि अनदेखा नहीं कर सकता । प्रकृति के साथ उनकी भावना एकाकार हो जाती है ।

'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में कवि प्रकृति के अनुपम निधि शिशु के मनमोहनी मुस्कान पर फिदा है । छोटे बच्चे की हँसी कमल सदृश ही आह्लादकारी होती है--

"तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देती जान
धूरि-धूसर तुम्हारे ये गात
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण"

कवि का सरोकार प्रकृति के कई रूपों से रहा है । वह कहीं पत्नी और बच्चे के माध्यम से प्रत्यक्ष होता है तो कहीं मानवेतर प्राणि जगत के रूप में । इनका जीवन प्रकृति के साहचर्य में ही पला-बढ़ा और प्रौढ़ हुआ । इन्होंने एक तरफ प्रकृति के आह्लादकारी रूप का वर्णन किया है तो दूसरी ओर उसके विध्वंसकारी रूप का भी । 'अकाल और उसके बाद' नामक कविता में नागार्जुन सूक्ष्मदर्शी मनुष्यधर्मिता को अंकित करते हैं । मनुष्य एवं जीव जंतु के जीवन के हर कोणों का स्पर्श करती हुई सी यह कविता लगती है-

"कई दिनों तक चूहा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने अकाल का समग्र एवं पारदर्शी चित्र अंकित किया है । प्रकृति के प्रकोप से कोई भी जीवधारी नहीं बच पाया । डॉ. नामवर सिंह के अनुसार "नागार्जुन के काव्य-संसार का एक बहुत बड़ा भाग अनूठे प्रकृति-चित्रों से सजा है, जिनसे कवि की गहरी एंद्रियता और सूक्ष्म सौंदर्य-दृष्टि का एहसास होता है । · · ·नागार्जुन को परिवर्तन का आभास एक किसान के समान सहज इंद्रिय-बोध के स्तर पर होता है ।"

लग रहा था आज प्रात:काल पानी सर्द
गंगा नहाने का वक्त

आया ख्याल
हिमालय में गल रही है बर्फ
आज होगा ग्रीष्म ऋतु का अंत"

नागार्जुन के यहाँ प्रकृति पूरी गरिमा के साथ प्रतिष्ठित हुई है लेकिन ये प्रकृतिवादी नहीं हैं । यहाँ प्रकृति वर्णन के बहाने व्यंग्य भी हुआ है, इसलिए इनकी प्रकृतिपरक कविताओं में यत्र-तत्र व्यंग्यात्मक स्वर भी उभर आए हैं ।

इनका विपुल लेखन आधुनिक जीवन-दृष्टि, व्यंग्यात्मक शैली और कला दृष्टि से परिपूर्ण है । इनके व्यंग्य चुभते हुए, तिल-मिला देने वाले होते हैं-

"सपने दिखे कार के
गगन-विहार के
सीखेंगे नखरे, समुंदर-पार के
लौटे टिकट मार के
आए दिन बहार के"

इन पंक्तियों में आज़ाद भारत के नेताओं के चरित्र उजागर हुए हैं । 'सत्य' शीर्षक कविता में कवि ने देश की व्यवस्था पर व्यंग्य प्रहार करते हुए लिखा है-

"सत्य को लकवा मार गया है
गले से ऊपरवाली मशीनरी पूरी तरह बेकार हो गई है
सोचना बंद
समझना बंद"

यहाँ तत्कालीन शासन तंत्र और लालफीताशाही पर प्रतीकात्मक व्यंग्य किया गया है । असल में नागार्जुन का मानना था कि आजादी मिलने के इतने वर्षों बाद भी देश में जनता का शासन नहीं आया है । 'भूखी जनता की खातिर आज़ादी हुई हराम' आज भी सत्य प्रमाणित हो रही है । 'आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी' नामक कविता में स्वाधीनता के तुरंत बाद ब्रिटेन की महारानी के भारत आगमन के अवसर पर नेहरू द्वारा उनकी आगवानी में दिखाई गई चुस्ती पर कटाक्ष है-

"जय ब्रिटेन की जय हो इस कलिकाल की
आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी
रफू करेंगे फटे पुराने जाल की
यही हुई है राय जवाहर लाल की ।"

लोकगीत शैली ने व्यंग्य को पैना कर दिया है । इसमें कवि गाते-गाते नाचते से लगते हैं, बिल्कुल नौटंकी शैली में । नेहरू की इस कार्य शैली पर उस समय के अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में व्यंग्य-प्रहार किया था । हिंदी में नागार्जुन शायद सबसे अधिक राजनीति मुखर कवि हैं । रोज़मर्रा की राजनीतिक घटनाओं व प्रकरणों पर वे बेबाक टिप्पणियाँ करने से गुरेज नहीं करते । यही कारण है कि इनके यहाँ व्यंग्यात्मक शैली के विभिन्न रूप हमें देखने को मिलते हैं । इनके लिए विविध शैलियाँ अपनाई गई हैं । इनके व्यंग्य में कबीर की-सी तल्खी और अपने प्रिय कवि निराला की-सी विनोद वक्रता का विलक्षण सामंजस्य है ।

नागार्जुन सहजता के कवि रहे हैं । वे शमशेर या मुक्तिबोध की तरह जटिल काव्य-बिंबों व भाषा के कवि कभी नहीं रहे । उनकी रचना-प्रकृति सीधी व सरल रही है, हालांकि 'बादल को घिरते देखा है' आदि कविताओं में उनकी भाषा के उदात्त-स्वरूप को देखा जा सकता है । संस्कृत, पालि, प्राकृत, मैथिली भाषा पर अधिकार के कारण वे अपनी भाषा के जातीय रूप को पहचानते हैं । इसलिए उनकी भाषा मृदुल-ललित, गूढ़ शब्दार्थों की जगह बोलचाल के सबसे करीब है--बिल्कुल सरल, सहज और सुबोध । बहती सरिता-सी कलकल बहने वाली ग्रामीण बोलचाल में रची-बसी नागार्जुन की काव्य भाषा से धनहर खेतों की माटी की खुशबू आती है । उनकी ठेठ व विलक्षण काव्य रचना के लिए 'पत्रहीन नग्न गाछ' (मैथिली) काव्य संग्रह पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । एक साहित्यकार के रूप में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में नागार्जुन का अमूल्य योगदान है, जो अविस्मरणीय है । ■

जो हिंदी को अपनाएगा ।
वह देश भक्त कहलाएगा ॥

महान समाज सुधारक : संत पीपाजी

—ललित शर्मा*

पौरुष की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल युद्ध करना ही नहीं होता अपितु यह अभिव्यक्ति भक्ति और जनसेवा के माध्यम से भी होती है । मध्ययुगीन भारतीय भक्तिकाल में महान संत पीपाजी ने अपनी सेवाभावना से यह सिद्ध कर दिखाया कि भक्ति और समाज सुधार की कर्म भावना भी ऐसी हो सकती है जिसके करने से व्यक्ति काल, कर्मादि जैसे शत्रुओं के लिये अपराजेय हो जाए । राजस्थान के वीर शासकों की शौर्य गाथाओं से भरपूर इतिहास इस तथ्य का भी साक्षी है कि उनकी परम्परा में एक ऐसा भी पराक्रमी शासक राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि पर हुआ, जिसके कारण राजस्थान का गागरोन दुर्ग जितना अपनी अभेद्यता के कारण प्रसिद्ध हैं उतना ही एक महान तीर्थ के रूप में भी ।

राजस्थान प्रदेश के झालावाड़ जिला मुख्यालय के निकट आहू और कालीसिंध नदी के किनारे बना प्राचीन जलदुर्ग गागरोन संत पीपाजी की जन्म और शासन स्थली रहा है । इसी के सामने दोनों नदियों के संगम पर उनकी समाधि, भूगर्भीय साधना गुफा और मंदिर आज भी स्थित है । उनका जन्म 14वीं सदी के अंतिम दशकों में गागरोन के खीची राजवंश में हुआ था ।[1] वे गागरोन राज्य के एक वीर, धीर और प्रजापालक शासक थे । शासक रहते हुए उन्होंने दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान फिरोज तुगलक से लोहा लेकर विजय प्राप्त की थी,[2] किन्तु युद्धजन्य उन्माद, हत्या, लूट खसौट के वातावरण और जमीन से जल तक के रक्तपात को देख उन्होंने तलवार तथा गागरोन की राजगद्दी का त्याग कर दिया था ।[3] ऐसे त्याग के तत्काल बाद उन्होंने काशी जाकर स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया ।[4] शिष्य की कठिन परीक्षा में सफल होकर वे स्वामी रामानन्द के बारह प्रधान शिष्यों में स्थान पाकर संत कबीर के गुरुभाई बने ।[5]

उनका जीवन चरित्र देश के महान समाज सुधारकों में एक नायाब नमूना है । इसलिए भक्ति आंदोलन के संत ही नहीं अपितु बाद के समाज सुधारक संतों के लिए वे एक उदाहरण बन गए । उनकी ऐसी विचारधारा के कारण ही वे कई भक्त मालाओं के आदर्श चरित्र पुरुष बनकर लोकवाणियों में गाए गए । संत पीपाजी ने अपनी पत्नी सीता सहचरी के साथ राजस्थान में भक्ति एवं समाज सुधार समन्वय का अलख जगाने में विलक्षण योगदान दिया । उन्होंने उत्तरी भारत के सारे सन्तों को राजस्थान के गागरोन में आने का न्यौता दिया ।[6] स्वामी रामानन्द, संत कबीर, रैदास, धन्ना सहित अनेक संतों की मण्डलियों का पहली बार राजस्थान की धरती पर आगमन हुआ और युद्धों में उलझते राजस्थान में भक्ति और समाज सुधार की एक महान क्रांति का सूत्रपात हुआ । पीपाजी और सीता सहचरी ने उसी समय अपना राज्य त्याग कर गागरोन से गुजरात तक संतों की यात्रा का नेतृत्व किया ।[7] उन्होंने समुंद्र स्थित द्वारका तीर्थ को खोजा[8] और परदु:खकातरता, परपीड़ा तथा पख्याधि की पीड़ा की अनुभूती कराने वाली वैष्णव विचारधारा को जन-जन के लिये समान भावों से जीवनोपयोगी सिद्ध किया । कालान्तर में गुजरात के महान भक्त नरसी मेहता ने उनकी इसी विचारधारा से प्रभावित होकर ''वैष्णव जन तो तैने कहिये, पीर पराई जाण रै'' पद लिखा, जो महात्मा गांधी के जीवन में भी प्रेरणादायी सिद्ध हुआ ।[9]

संत पीपाजी को निर्गुण भावधारा का संत कवि एवं समाज सुधार का प्रचारक माना जाता है । भक्त मीराबाई उनसे बहुत प्रभावित थी, तभी तो उन्होंने लिखा ''पीपा को प्रभु परच्यो दिन्हो, दियो रे खजानापुर[10] वही भक्तमाल लेखन की परम्परा का प्रवर्तन करने वाले नाभादास ने पीपाजी के जीवन चरित्र पर देश में सर्वप्रथम ''छप्पय'' की रचना की थी ।[11]

*जैकी स्टूडियो, 13 मंगल पुरा, झालावाड़ (राज.) - 326001

3608 HA/12—9A

संतों की परम्परा एवं भावना के अनुरूप पीपाजी ने गुरु महिमा के साथ ही सामाजिक जीवन मूल्यों तथा धार्मिक विसंगतियों और आचरण के दोषों पर सटीक टिप्पणियाँ की ।

गुरु की महिमा को प्रमाणित करते हुए
उन्होंने कहा :-

पीपा के पंजरि बस्यौ, रामानँद को रूप ।
सबै अन्धेरौ मिटि गयौ, देख्यौ रतन अनूप ॥ तथा
लोह पलट कंचन कर्‌यौ, सतगुरु रामानंद ।
पीपा पद रज है सदा, मिट्‌यों जगत को फंद ॥ [12]

संत पीपाजी बाहरी आडम्बरों, थोथे कर्मकाण्डों और रूढियों के प्रबल विरोधी थे । उनका मानना था कि "ईश्वर निर्गुण, निराकार, निर्विकार और अनिर्वचनीय है । वह बाहर भीतर, घट-घट में व्याप्त है । वह अक्षत है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में व्याप्त है ।" उनके अनुसार "मानव मन (शरीर) में ही सारी सिद्धियाँ और वस्तुएँ व्याप्त हैं ।" उनका यह विराट चिन्तन "यत्पिण्डेतत्ब्रह्माण्डे" के विराट सूत्र को मूर्त करता है और तभी वे अपनी काया में ही समस्त निधियों को पा लेते हैं । फिर किसी बाहरी मन्दिर या तीर्थ, पूजा की उन्हे कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है । गुरु ग्रन्थ साहिब में समादृत इस महान् विभूति का यह पद इसी भावभूमि पर खड़ा हुआ भारतीय भक्ति साहित्य का कण्ठहार माना जाता है ।

अनत न जाऊँ राजा राम की दुहाई ।
कायागढ़ खोजता मैं नौ निधि पाई ॥
काया देवल काया देव, काया पूजा पाँती ।
काया धूप दीप नइबेद, काया तीरथ जाती ॥
काया माँहै अड़सठि तीरथ, काया मांहे कासी ।
काया माँहे कंवलापति, बैकुंठवासी ॥
जे ब्रंह्मण्डे सोई प्यंडे, जो खोजे सो पावै ।
पीपा प्रणवै परमततरे, सद्‌गुरु मिलै लंखावै ॥[13]

संत पीपाजी के वचनों की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे सामाजिक समन्वय का मंगलमय संदेश देते हुए कहते हैं :-

परमारथ के कारणै, जिनको जीवन अंत ।
पीपा सोई सत पुरख, सोई सांचो संत ॥[14] तथा
भलौ बुरौ सब एक है, जाकै आदि न अन्त ।
जगहित हरि जो सेवये, पीपा सोई संत ॥ [15]

वे इसी समन्वय की मिसाल हरेभरे गुलदस्ते से देते हैं । उन्हें अपने देश से बहुत प्यार था । इस देश की मिट्टी को अपनी आंखों का काजल बनाकर उन्होंने सदियों पहले भारत की बहुरंगी छवि को देख कर कहा था :-

फूल बगीचा मे घंणा, सबरों सुन्दर रूप ।
पीपा जद मिल सब छबै, भासै रूप अनूप ॥[16]

सामाजिक समन्वय के अतिरिक्त वे मानवीय कर्म और धर्म में भी समन्वय देखते हैं । इसी क्रम में निर्गुण और सगुण में भी उनकी दृष्टि समन्वय भावों की रही है :-

हिरदै राखै धरम नै, करमाई करम कमाण ।
पीपा सत री ढ़ाल दे, भेदौ निहिच निसाण ॥[17]एवम्
सरगुण मीठौ खाण्ड सौ, निरगुन करुऔ नीम ।
पीपा सद्‌गुरु पुरस दे, निरभय होकर जीम ॥ [18]

उन्होंने अपने विचारों और कृतित्व से भारतीय समाज में सुधार का मार्ग प्रशस्त किया । उन्होंने लोक के कोण से शास्त्र को परखा भी और उसमें परिवर्तन भी किया । सदियों से भारत देश में चली आ रही चतुःवर्ण परम्परा में एक नवीन वर्ण "श्रमिक" नाम से सृजित करने में उन्होंने महत्ती भूमिका निभाई । उनके द्वारा सृजित यह नवीन वर्ण इस प्रकार का था जो हाथों से उद्यम कर्म करता और मुख से "ब्रह्मराम" का उच्चारण करता था जिसमें कर्म और धर्म का अद्‌भुत समन्वय था :-

हाथाँ सै उद्यम करैं, मुख सौ ऊचरै "राम" ।
पीपा सांधा रो धरम, रोम रमारै राम ॥[19]

संत पीपाजी सच्चे अर्थों में लोक मंगल की समन्वयी पद्धति के प्रतीक थे । उन्होंने संसार त्याग कर निरी भक्ति करते हुए कभी पलायन करने का सन्देश नहीं दिया । वे तो अपने लोक के प्रति इतने समर्पित थे कि वे इसी से अपनी भक्ति के लिए ऊर्जा प्राप्त करते थे । सही कारण है कि मध्ययुगीन भारतीय सन्तों में उनकी अपनी प्रतिष्ठा है । वे लोकवाणी के वाहक भी है और लोक को समर्पित व्यक्तित्व भी । उनकी समूची वाणी ही लोक के परिष्कार के लिए है । अपनी वाणी में उन्होंने जो कुछ भी कहा उसकी अपनी व्यंजना है ।

वे सामाजिक समन्वय के महान आख्याता इसलिए हैं कि उन्होंने उस ब्रह्म से साक्षात्कार कराया जिसकी खोज़ में मानव आजीवन भटकता है । उन्होंने सच्चे अर्थों में ब्रह्म के

3608 HA/12—9B

स्वरूप की पहचान पर जोर देते हुए कहा कि "उस ब्रह्म की पहचान मन में अनुभव करने से है ।"

उण उजियारे दीप की, सब जग फैली ज्योत ।
पीपा अन्तर नैण सौं, मन उजियारा होत ॥[20]

अपनी अन्तरदृष्टि के प्रति भी उनका विशेष आग्रह था । देखा जाए तो प्रत्येक सच्चे भक्त की पूँजी उसकी अपनी अन्तरदृष्टि होती है और यह दृष्टि मिलती है सच्च गुरु की अमोघ कृपा से - सच्चे गुरु की पहचान क्या हो ? - पीपाजी इस साखी में उसका उत्तर बताते हैं :-

सतगुरु साँचा जौहरी, परखै ज्ञान कसौट ।
पीपा सूधोई करै, दे अणभैरी चोट ॥[21]

अपने गुरु भाई कबीर का उन्हें बहुत सहारा था, अत: वे उन्हीं की भांति अपने युग के पाखण्ड और आडम्बर के विरुद्ध तनकर खड़े हुए भी दिखाई देते हैं । वे उस सन्त की खुले शब्दों में भर्त्सना करते हैं जो केवल वेषभूषा से संत होता है आचरण से नहीं :-

पीपा जिनके मन कपट, तन पर उजरो भैस ।
तिनकौ मुख कारौ करौ, संत जना के लेख ॥[22]

और इसी के साथ वे बड़े मर्म की बात कहते हैं कि - "सच्चा सूरमा वही है जो अपने अन्दर बैठे हुए शत्रुरूपी विचारों पर पूर्ण विजय प्राप्त करले ।"

अलस अधीर छल, ईष्या काम क्रोध मद क्रूर ।
पीपा जिणई जीतिया, तेई जण साँचा सूर ॥[23]

इसी के साथ उनका मन पर भी जोर है और इसी से वे अपनी आत्मा में ही परमात्मा को देखते हैं :-

मन आप दरसाया ।

आप ही बिच्छ बीजँ अंकूरा, आप फूल फल छाया॥
आप हि सूरज किरन परकास्या, आप ब्रह्म जीव माया ॥
आतम में परमातम दीखै, छाया माहीं माया ॥
छाया माया आपै सबहि, पीपे साँच लखाया ॥[24]

और फिर वे लोक मंगल के लिए आपसी भेदभाव मिटाने पर भी बल देते हैं । उनके इस विचार में एक महान तात्विक चिन्तन छिपा हुआ है । जिसमें एक परात्पर ब्रह्म राम के प्रति आस्था पर बल है उनका मानना है कि जब वह तत्व सर्वव्यापी है फिर विप्र, शुद्र का अंतर कैसा ? इसी भावना पर वे कहते हैं :-

संतौ एक राम सब मांही ।

अपने मन उजियारौ, आन न दीखे कांही ॥
एकै छाय रुधिर अर साँगा । छोट मोट तन मांही ॥
एकौ मात पिता सबही के, विप्र छुद्र कोइ नांही ॥
पीपा जो जन भरम भुलाने, तै ढुलरात सदां ही ॥[25]

संत पीपाजी ने भक्तिमार्ग एवं समाज सुधार की सच्ची भावना को अंगीकार कर जनमत का भेद मिटाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी ।[26] एक बार वे दौसा में श्री रंगजी भक्त के आश्रम में बैठे थे, उसी समय दो शुद्रा (हरिजन) स्त्रियाँ वहाँ आई । वे अति सुन्दर थी । पीपाजी ने उन्हें अपने पास ससम्मान बैठाया तथा उनसे कहा कि "वे अपना रूप रंग राम जी की भक्ति नही करके व्यर्थ गँवा रही है ।" रंगजी ने उनसे कहा कि "ये नीच जाति की है ।" तब पीपाजी ने उनसे कहा "मैं इन्हें दीक्षा दूंगा ताकि इनका यह लोक व परलोक सुधर जायेगा । ऊँच नीच का भेद समाप्त करने के लिये ही मैंने इन्हें बुलाया है ।" अन्तत: उन्होंने दोनों स्त्रियों को दीक्षा प्रदान कर उस युग में ऊँच नीच और जनमत के भेद को समाप्त किया । यहाँ यह तथ्य संज्ञान में लाने योग्य है कि संत कबीर ने जिस ऊँच नींच, छुआछूत का विरोध किया, उसकी पहली क्रियान्विति पीपाजी ने उक्त दोनों शुद्रा महिलों को दीक्षित करके की ।

उस युग में ही पीपाजी ने सामाजिक परदा प्रथा का कठोर विरोध उत्तरी भारत में पहली बार किया । इस बारे में उन्होंने बताया कि "जिसमें सच्ची भक्ति और आत्मबल के भाव है, उन्हें पर्दा करने की कोई आवश्यकता नही है ।" उन्होंने कहा :-

जहाँ पड़दा तही पाप, बिन पड़दै पावै नही ।
जहाँ हरि आपै आप, पीपा तहाँ पड़दौ किसौ ॥[27]

उन्होंने यह बात केवल वैचारिक धरातल पर ही नहीं की, वरन् उन्होंने उस प्रथा का निवारण पहले अपने जीवन में चरितार्थ करके भी बताया और अपनी पत्नी सीता सहचरी को आजीवन बिना पर्दे के ही रखा, जबकि तत्कालीन राजपूत राजाओं में पर्दाप्रथा का घोर प्रचलन था । संत पीपाजी के इस निर्णय पर विद्वान मेक्स आर्थर मैकालिफ ने बहुत सुन्दर टिप्पणी लिखी[28] :-

"Probably the first effort in modern times in India to abolish the tyranny of the parba by Pipa"

उनकी प्रीति की रीति भी बड़ी अनोखी है - इसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं :-

प्रीत की रीति अनोखी जानौ ।

चिन्ता नाई दुख सुख पर देहपै । चरण कमलकर ध्यानौं ॥
जैसे चातक स्वाति बून्द बिन । प्रान समरपन ठानौं ॥
पीपा जैहि राम भजन बिन । काल रूप तेही जानौ ॥

उन्होने लोक समन्वय के लिये ब्रह्म, भक्ति, नामरस, आत्मा, परमात्मा, कर्म, माया, वर्ण, अहिंसा, जीव, इन्द्रिय-निग्रह, अनहद्नाद आदि पर ऐसी अनुपमेय अभिव्यक्ति दी जो सदियों बाद आज भी प्रासंगिक है । उनकी वाणी वास्तव में सुनने सुनाने के लिये नहीं है, वह तो आचरण में उतारने के लिये है । यह वाणी सहज और सम्प्रेषणीय है । इसमें लोक मंगल और समन्वयी भावनाओं की आराधना भी है और समूचे समाज के कल्याण के लिये किये जाने वाला आव्हान भी । ऐसा विराट आव्हान वही पौरुषमय संत या समाज सुधारक व्यक्तित्व कर सकता है जिसमें यह सामर्थ्य हो कि संत पीपाजी की तरह हिंसक सिंह को भी भक्ति का उपदेश दे सके । इसीलिये उनकी अभ्यर्थना करते हुए नाभादास नें भक्तमाल में सही कहा है[29] :-

परसि प्रणाली सरस भई, सकल बिस्व मंगल कियौ ।
पीपा प्रताप जग बासना, नाहर कौ उपदेश दियौ ॥

यह कहना असंगत न होगा कि संत पीपाजी का रचना संसार लोक मंगल के लिये भक्ति एवं सामाजिक समन्वय के सच्चे भावों पर आधारित है । आज जब धर्म, नस्ल, जाति, क्षेत्र जैसे भेदों को गहराकर मानवता विरोधी ताकतें सक्रिय हैं, ऐसे में महान संत पीपाजी की वाणी की राह ही हमें अखण्ड मानवता के पक्ष में ले जा सकती है ।

संदर्भ एवं पाद-टिप्पणी

1. पीपाजी की कथा (हस्तलिखित) क्रम 30671 प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के अनुसार बाड़मेर के समदड़ी ग्राम में पीपाजी मंदिर से प्राप्त सूचना के आधार पर पीपाजी का जन्म वि.स. 1380 एवं देहान्त संवत् 1441 को हुआ था । इसी संवत् को आधार मानकर पीपापंथी समाज आज भी पीपाजी की जयन्ती मनाता है । परन्तु पीपाजी के जन्म वर्ष पर विद्वानों में मतभेद हैं । संत साहित्य मर्मज्ञ बृजेन्द्र कुमार सिंघल के अनुसार संत पीपाजी वि.स. 1400 में गागरोन के शासक थे तथा वि.स. 1420 में वे स्वामी रामानंद के शिष्य बने । राघवकृत भक्तमाल के अनुसार पीपाजी वि.स. 1540-1550 में जीवित थे । सिंघल के मतानुसार पीपाजी का जन्म वि.स. 1400 से पूर्व रहा है । विद्वान हीरालाल माहेश्वरी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ राजस्थान लिटरेचर' (पृ. 147-48) में संत पीपाजी का जीवनकाल वि.स. 1440-1510 बताते हैं । विद्वान दिनेशचन्द्र शुक्ल और ओंकार नारायण सिंह अपनी युस्तक 'राजस्थानी भक्ति परम्परा' में पीपाजी के जन्म वि.स. 1482 लिखते हैं ।

2. निजामी, ए.एच - गागरोन फोर्ट, द सैकण्ड साका, ए मिसिंग लिंक - शोध साधना, सीतामऊ, वर्ष 12, अंक - 2 (1991 ई.), मआसिरे महमूद शाही के पृ. 134-139 के आधार पर ।

3. शाह अमीता - काशी मार्तण्ड (जगदगुरु रामानंद दिग्विजय) पृ. 150

4. पीपा की कथा (ह.लि.), उपरोक्त-वही-

5. शर्मा ललित - रामानंद परम्परा के उद्गायक : संत पीपाजी, पृ. 26-27

6. (1) दाधीच, रामप्रसाद - राजस्थान का संत सम्प्रदाय (सामाजिक भूमिका) पृ. 17

(2) कपूर, अवधबिहारी - नवभक्तमाल (5वां खण्ड) राजस्थान के भक्त, भाग 1, पृ. 7

7. उक्त,-वही-

8. कल्याण संत अंक विशेषांक, संवत् 1994 वर्ष 12, प्रथमखण्ड, पृ. 508-09

9. जुगनू, श्रीकृष्ण - समाज सुधारक पीपाजी, दैनिक भास्कर, दिनांक 09 अप्रैल 2009, पृ. 6

10. सिंघल, बृजेन्द्र कुमार - मेरे तो गिरधर गोपाल (मीरा की मूल पदावलि), पृ. 294, पद 66/307

11. जुगनू, श्रीकृष्ण - उक्त-वही-

12. त्रिपाठी, राममूर्ति- धर्मनिरपेक्षता और संत साहित्य: संत पीपाजी के परिप्रेक्ष्य में, पीपा वाणी (शोध लेख) 2004 ई. इन्दौर, पृ. 1

13. ग्रंथसाहिब (आदिग्रन्थ) राग धनाक्षरी, पद सं. 1, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी, अमृतसर, अगस्त 1951 में पीपाजी का मूल पद इस प्रकार दृष्टव्य है :–

काअऊदेवा काइयऊ देवल, काइअऊ जंगम जाती ।
काइयऊ धूप दीप नेईवेदा, काइयऊ पूजउ पाती ॥
कायआ बहुखंड खोजते, नवनिधि पाई ।
ना कुछ आईबो न कुछ जाइबो, राम की दुहाई ॥
जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे, जो सोधे से पावे ।
पीपा प्रणवे परमतत्तु, सतगुरु होई लषावे ॥

परन्तु परवर्ती साहित्यकारों, विद्वानों ने इसे जन के लिए साधारणतया अपनी भावधारा में लिखा जो लेख में रेखांकित है – इन दो पदों के भाव एक ही हैं, दृष्टव्य – (1) सहगल, पूरनलाल – संत पीपाजी की कृतियों का संकलन एवं सम्पादन, 1972, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, पृ. 172 (2) चतुर्वेदी, परशुराम – संत काव्य संग्रह (हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद), पृ. 111 (3) नाभादास – श्री भक्तमाल, (7वाँ संस्करण, लखनऊ 1993) पृ. 520

14. तंवर सावरलाल – संत पीपाजी : एक अध्ययन, पृ. 66 व 75

15. उक्त-वही-

16 से 23 (1) खीची, रघुनाथ सिंह (इन्द्रोंका), सांवरलाल तंवर – संत पीपाजी एवं साध्वी सीता, स्मृतिग्रंथ, पृ. 257-264

(2) बुधौलिया, हरीमोहन (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन), मालवी भाषा और साहित्य (म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी) संत पीपाजी और उनकी वाणी, पृ 25-26

(3) सहगल, पूरनलाल – उपरोक्त, पृ. 207-210 (सीषी खण्ड)

24. सहगल – उक्त –

25. खीची, रघुनाथ सिंह सांवर लाल तंवर – पूर्वोक्त, पृ 257 व 264

26. उक्त-वही-

27. उक्त-वही-

28. मैकालिफ, मैक्स आर्थर – द सिक्ख रिलीजन (1905 ई.), अंग्रेजी, भाग 5 पृ. 111

29. नाभादास – भक्तमाल (भक्तिरस प्रबोधिनी), टीका, संवत् 2017, व्याख्याकार – रामकृष्ण देव गर्ग, पृ. 426, मूल छप्पय से (साभार – श्रीमती मोहिनी देवी शर्मा, रामनगर जयपुर के सौजन्य से) ■

पृष्ठ 25 का शेष

सरकारी कामकाज हिंदी में करने के संदर्भ में, हिंदी भाषा के मानकीकरण पर चर्चा करना आवश्यक है । जब हम आपसी व्यवहार में अँग्रेजी का प्रयोग करते हैं तो प्रयास करते हैं कि कठिन से कठिन अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करें ताकि हमारे अंग्रेज़ी ज्ञान पर किसी को कोई संदेह न हो । जब हिंदी की बात आती है तो हम सरल, आसान हिंदी की अपेक्षा करते हैं । सरकारी प्रयोग में सरल, सहज, प्रचलित और आसान हिंदी के प्रयोग की छूट हमें उपलब्ध है किंतु फिर भी हम इसके प्रयोग से कतराते हैं । इस दिशा में भी सोचे जाने की आवश्यकता है ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि हिंदी को सही मायनों में सरकारी दफ्तरों की भाषा बनाना है तो इसे वरिष्ठ कार्यपालकों की भाषा बनाना होगा । जब शीर्ष स्तर से हिंदी का प्रयोग शुरू होगा तो इसका असर अधीनस्थ कार्मिकों पर भी पड़ेगा । तभी हिंदी हाशिए से उठकर मुख्यधारा में आ सकेगी । साथ ही यह भी देखना होगा कि कहीं हिंदी, समारोहों, संगोष्ठियों तथा अन्य औपचारिक आयोजनों के बोझ तले दब कर न रह जाए और हम हिंदी के नाम पर औपचारिकताओं के महा-जाल में अपने मूल उद्देश्य को ही भूल जाएँ । भाषा के लिए भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए बल्कि काम के लिए भाषा का प्रयोग होना चाहिए ।

तो आइए, हम भाषा के इस पुनीत राष्ट्रीय दायित्व में मन, वचन और कर्म से अपना योगदान प्रदान करें ।

जय हिन्द !, जय हिन्दी !

*****

3608 HA/12—10A

विज्ञान/तकनीकी

खगोलीय पिंड और हमारा जीवन

–सुरेन्द्र प्रसाद राय*

खगोलीय पिंडों, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहों आदि के महत्व को ध्यान में रखते हुए इनकी पूजा सदियों से प्रचलित है। सूर्य को हम अर्ध्य देते हैं जिसका लाभ आगे स्पष्ट किया गया है । इनके योगदानों पर प्रकाश डालने से पूर्व हम विभिन्न खगोलीय पिंडों पर दृष्टिपात करेंगे ।

असीम ब्रह्माण्ड में 3000 मन्दाकिनियाँ (गैलेक्सीज) विद्यमान हैं । इनमें से ही एक है हमारी आकाश गंगा (मिल्की वे) जिसमें अनगिनत तारे हैं । सूर्य हमारी आकाश गंगा का एक तारा है । इसकी परिक्रमा करने वाले पिंडों को ग्रह कहा जाता है । सौरमंडल के इन ग्रहों की संख्या 9 हैं : पृथ्वी, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण एवं कुबेर से सूर्य से विभिन्न दूरियों पर अपनी-अपनी दीर्घ वृताकार (इलिप्टीकल) कक्षा (ऑरबिट) में अलग-अलग अवधि में सूर्य की परिक्रमा पूरी करते रहते हैं । ग्रह की परिक्रमा करने वाले पिंड को उपग्रह कहा जाता है । इस तरह चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है जो इससे लगभग 4 लाख कि.मी. की दूरी पर अपनी कक्षा में लगभग 29.5 दिनों में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करता है । इसी तरह पृथ्वी अपनी कक्षा में सूर्य की परिक्रमा लगभग 365 दिनों में पूरी करती है । क्षुद्रग्रह (एस्टेरायड) वे पिंड है जो सूर्य की परिक्रमा तो करते हैं किन्तु उनका आकार इतना छोटा होता है कि उन्हें ग्रहों में शामिल नहीं किया जाता । प्रत्येक तारा अर्थात् सूर्य ऊर्जा का स्रोत है जिससे विकिरण (रेडियेशन) उत्सर्जित (एमीट) होते रहते हैं । सौर विकिरण (जिसमें दृश्य प्रकाश भी शामिल होता है) को ही ग्रह एवं उपग्रह परावर्तित कर हम तक भेजते हैं जिससे उन्हें हम देख पाते हैं । ग्रहों, उपग्रहों का अपना प्रकाश नहीं होता । इस तरह हम सूर्य से निकली ऊर्जा को सदियों से प्राप्त करते आ रहे हैं जो हमारे जीवन हेतु वरदान है । यही ऊर्जा सूर्य को पूजनीय बनाती है जिससे लोग सूर्य को भगवान मानते हैं अर्थात् जीवनदाता, जीवन-रक्षक । क्या है यह विशाल ऊर्जा?

(i) सूर्य एवं सौर ऊर्जा : सूर्य का पिंड तथा उससे निरंतर उत्सर्जित ऊर्जा विशाल है । इसीलिए सूर्य को ऊर्जा का अक्षुण्ण स्रोत कहा जाता है । अथर्ववेद के अनुसार सौर ऊर्जा का आधार सोम (हाइड्रोजन) है (अथर्ववेद 14.1.2: सोमेने आदित्या बलिन) । यजुर्वेद (9.3) में भी ऐसा ही उल्लेख है । आधुनिक विज्ञान के अनुसार सूर्य-पिंड में 90 प्र.श. हाइड्रोजन, 8 प्रतिशत हिलियम तथा 2 प्र.श. अन्य द्रव्य हैं । सूर्य के केन्द्र का ताप लगभग 1.5 करोड़ डिग्री सेल्सीयस तथा बाहरी सतह का ताप लगभग 6000 डि.से. होता है । इस अत्यधिक ताप पर वहां उपलब्ध हाइड्रोजन परमाणुओं का संलयन (फ्यूजन) होता रहता है तथा उससे हिलियम परमाणु बनते रहते हैं । इस क्रिया में द्रव्य की कुछ हानि हो जाती है जो ऊर्जा के रूप में परिवर्तित होती है । इसे वास्तविक आंकड़ों द्वारा नीचे के पैरा में स्पष्ट किया गया है ।

हाइड्रोजन परमाणु के नाभिक (न्यूक्लीअस) में केवल एक प्रोटान ही होता है तथा कोई न्यूट्रान कण नहीं होता । हाइड्रोजन का परमाणु-भार 1.008 होता है । किन्तु हाइड्रोजन का एक समस्थानिक (आइसोटोप) है जिसके नाभिक में एक प्रोटान तथा एक न्यूट्रान होते हैं । इसको डयूटेरान या भारी हाइड्रोजन कहा जाता है । इसका परमाणु-भार 2.01473 होता है जो हाइड्रोजन से लगभग दोगुना है । सूर्य पर निरंतर हो रही संलयन क्रिया में ये डूयूटेरान परमाणु ही

*25,26, राजपुर खुर्द एक्टेंशन, पो. मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

3608 HA/12—10B

भाग लेते हैं । दो ड्यूटेरान परमाणुओं का संलयन होने पर जो परमाणु बनता है उसके नाभिक में दो प्रोटान तथा दो न्यूट्रान कण होते हैं जो हीलियम तत्व के परमाणु की संरचना है । इस तरह दो ड्यूटेरान परमाणुओं के संलयन से हीलियम का एक परमाणु बनता है । ज्ञातव्य है कि हीलियम का परमाणु भार 4.00387 होता है जबकि इस क्रिया में शामिल दो ड्यूटेरान परमाणुओं के संलयन से उत्पन्न हीलियम परमाणु-भार 2×2.01473 = 4.02946 होना चाहिए । इस तरह भार में 0.02559 (4.02946-4.00387) की कमी आ जाती है । पदार्थ (द्रव्य) की यह क्षति, आइंसटीन के संहति-ऊर्जा (मास-इनर्जी) सूत्र $E=mc^2$ के अनुसार ऊर्जा (E) में परिवर्तित हो जाती है जिसे हम निरंतर प्राप्त करते रहते हैं । इस सूत्र में E ऊर्जा, m पदार्थ की संहति (मास) तथा C प्रकाश (विद्युत चुम्बकीय विकिरण) का निर्वात (वैकुम) में वेग (3×10^{10} से.मी/प्र.से. या 1,86,000 मील प्र.से.) है ।

उपर्युक्त संलयन-क्रिया हाइड्रोजन-बम में भी होती है । सूर्य में निरंतर हो रही इस क्रिया के फलस्वरूप इसके पिंड का लगभग 50 लाख टन पदार्थ प्रत्येक सैकेंड में ऊर्जा में परिवर्तित होता रहता है । सदियों से लगातार हो रही सूर्य-पिंड में यह कमी एक दिन सूर्य के अस्तित्व को ही समाप्त कर देगी । किन्तु अभी चिंतित होने की जरूरत नहीं है । कारण यह है कि सूर्य-पिंड की त्रिज्या (रेडिअस) लगभग 7 लाख कि.मी. है जिससे यह इतना विशाल है कि हम लोग 30 अरब ($3x10^{10}$) वर्षो तक सौर ऊर्जा प्राप्त करते रहेंगे ।

सूर्य से लगभग 15 करोड़ कि.मी. दूर पृथ्वी पर हम तीन मिनट में जितनी सौर ऊर्जा प्राप्त करते हैं वह संसार के कल-कारखानों को महीनों तक चलाने हेतु पर्याप्त है । इसे हम प्रकाश तथा उष्मा (हीट) के रूप में पृथ्वी पर सीधे प्राप्त करते रहते हैं । किन्तु परोक्ष रूप में जो ऊर्जा हम लकड़ी, कोयला, पेट्रोलियम पदार्थों आदि से प्राप्त करते हैं वह भी सौर ऊर्जा का ही परिवर्तित रूप होती है । पेड़-पौधे प्रकाश-संश्लेषण (फ़ोटोसिन्थेसिस) विधि से जो सौर ऊर्जा प्राप्त करते हैं वही हमें पेड़ों की/लकड़ी, पत्ती आदि को जलाने से मिलती है । इसी तरह पेड़ों द्वारा धारित यह ऊर्जा, भूकम्प आदि के कारण, जंगलों के जमीन के नीचे दब जाने से, कालान्तर में उनसे ही बने कोयले तथा पेट्रोलियम पदार्थों मे संरक्षित रहती है जिसे हम इन पदार्थों से परोक्ष रूप में प्राप्त करते हैं । किन्तु परोक्ष रूप में इन पदार्थों से प्राप्त सौर ऊर्जा की तुलना में नित्य सूर्य से सीधे प्राप्त ऊर्जा अत्यधिक होती है । एक अनुमान के अनुसार, संसार में उपलब्ध लकड़ी, कोयला, पेट्रोलियम पदार्थ तथा साथ ही यूरेनियम, थोरियम के सम्पूर्ण भंडार से जितनी ऊर्जा पैदा हो सकती है, उतनी हम सूर्य से केवल तीन दिनों में प्राप्त करते हैं ।

सौर ऊर्जा के लिए जो विद्युत चुंबकीय विकिरण (इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडियेशन) उत्तरदायी हैं वे 0.15 से 120.0 माइक्रान (1 माइक्रान = 10^3 मि.मी) तरंगदैर्घ्य (वेवलेंग्थ) के बीच होते हैं । इसमें सम्पूर्ण दृश्य प्रकाश (विजिबुल लाइट:बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल) तथा पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) एवं अवरक्त (इन्फ्रारेड) विकिरणों के कुछ अंश भी शामिल होते हैं । ज्ञातव्य है कि सौर ऊर्जा का 99 प्र.श. भाग 0.15 से 4.0 माइक्रान के तरंगदैर्घ्य के विकिरणों से प्राप्त होता है । मोटे तौर पर आधी ऊर्जा दृश्य भाग (0.38 से 0.7 माइक्रान), अर्थात् उपर्युक्त 7 रंगों में निहित होती है तथा आधी ऊर्जा अदृश्य पराबैंगनी (0.15 से 0.38 माइक्रान) तथा अवरक्त (0.7 से 120 माइक्रान) विकिरणों में । सौर ऊर्जा का सम्पूर्ण भाग हमारी पृथ्वी पर नहीं पहुंच पाता । वायुमंडल की ओजोन गैस, जलवाष्प, बादल, कुहासा (मिस्ट), कुहरा (फौग) और धूलकण आदि द्वारा अवशोषण (ऐबजार्बशन) तथा प्रकीर्णन (स्कैटरिंग) के कारण लगभग 80 प्र.श. भाग ही हम प्राप्त कर पाते हैं । ऊपर दिए गए आंकड़ों के अनुसार इतनी ऊर्जा भी कम नहीं है ।

उपयोग: बिना प्रयास के ही प्राप्त इस सौर ऊर्जा का उपयोग हम सदियों से विभिन्न कार्यों हेतु करते आ रहे हैं । वनस्पतियां इसके बिना विकसित हो नहीं सकतीं, और ये ही हमें भोजन तथा प्राणवायु (ऑक्सीजन) उपलब्ध कराती हैं । शरीर पर सीधे प्राप्त करने से इसके प्रकाश-रासायनिक प्रभाव के कारण हमें विटामिन डी प्राप्त होता है । हानिकारक दृश्य एवं अदृश्य कीड़े-मकोड़े इससे मर जाते हैं । घर के भीतर की नमी इससे दूर होती है । यह प्रदूषण-नाशक है तथा वायुमंडल का शोधक एवं जीवन-रक्षक भी । इन खूबियों का उल्लेख अथर्ववेद (8.02.15 तथा 5.2.3.6) एवं यजुर्वेद (4.4) में मिलता है । प्रात:कालीन सूर्य की किरणों में पराबैंगनी विकिरण अधिक मात्रा में पाया जाता है जो शरीर को पर्याप्त विटामिन 'डी' प्रदान करने के साथ-साथ

विषाणुओं को नष्ट करता है । इस तरह प्रात: होते ही यह वातावरण में विद्यमान रात्रि के प्रदूषण एवं विषाणुओं को नष्ट कर वातावरण को शुद्ध करता है । यही कारण है कि मकान का मुख्य द्वार पूरब की ओर रखना अच्छा माना जाता है ताकि प्रात: होते ही पर्याप्त मात्रा में पराबैंगनी विकिरण घर में प्रवेश कर वातावरण को शुद्ध कर दे । अन्य उपयोगों में शामिल हैं : सौर कुकर द्वारा भोजन पकाना, सौर ऊर्जा से पानी गर्म करना, कपड़े, अन्न, ईंधन आदि सुखाना, सिलिकन सौर सेलों द्वारा इसे विद्युत में परिवर्तन के बाद सौर लालटेन से रात में प्रकाश की प्राप्ति; सौर सेलों का उपग्रहों तथा अन्य प्रयोजनों हेतु प्रयोग, सोलर थर्मल पावर स्टेशन से बिजली की प्राप्ति आदि ।

प्रात:काल की सूर्य-रश्मियों के परोक्ष एवं नियंत्रित रूप से नेत्रों पर पड़ने से रेटिना [नेत्र के भीतर वह पर्दा/परत जिस पर वस्तुओं का प्रतिबिम्ब (इमेज) बनता है] की सेंकाई होती है । सूर्य को अर्घ्य देने के पीछे यही रहस्य छिपा है । अर्घ्य के समय लोटे में जल भर कर छाती के बीच में रखते हुए सूर्य की ओर धीरे-धीरे गिराया जाता है तथा लोटे के जल की ऊपरी सतह से परावर्तन के बाद बना सूर्य का प्रतिबिम्ब-बिन्दु लोटे के उभरे भीतरी किनारे पर देखा जाता है । अनेक व्यक्ति स्नान के बाद अर्घ्य देते हैं किन्तु यहाँ वर्णित विधि का पालन नहीं करते । कार्तिक शुक्ल षष्ठी को होने वाले छठ (सूर्य षष्ठी) व्रत में भी प्रात: एवं सान्ध्य वेला में सूर्य को अर्घ्य देने की परम्परा है । ज्ञातव्य है कि अर्घ्य वाले सूर्य को ही विधिवत देना चाहिए, क्योंकि उस समय ऊर्जा सीमित एवं नियंत्रित होती है । अनेक व्यक्ति जब कभी भी स्नान करते हैं, चाहे वह दोपहर ही क्यों न हो, परंपरा का निर्वाहन करते हुए अर्घ्य दे देते हैं । चूंकि उस समय सौर ऊर्जा की मात्रा अधिक होती है, अत: परोक्ष (परावर्तित) ऊर्जा से भी रेटिना का जलना संभव है । आँख पूरी तरह खुल नहीं पाने के कारण इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति भी नहीं हो पाती । कुछ लोग सीधे सूर्य की ओर देखने का प्रयास करते हैं जो अत्यन्त हानिकर है ।

प्राकृतिक चिकित्सा में सौर विकिरण का उपयोग सौर स्नान (सोलर बाथ) हेतु किया जाता है । इस उपचार में मरीज को बाहर खुले धूप में सुलाकर शरीर के संबंधित भाग पर सौर विकिरण पड़ने दिया जाता है जो भीतरी शारीरिक क्रियाओं को प्रभावित कर विभिन्न रोगों में अपेक्षित लाभ पहुंचाता है । अब 'क्वान्टेरा' नामक चिकित्सा-उपकरण से भी विभिन्न रोगों के इलाज हो रहे हैं । यह सौर विकिरणों आदि पर आधारित है । इससे पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के समान स्थिर कमजोर चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है । साथ ही, सौर विकिरण में शामिल अवरक्त किरणों, लाल प्रकाश तथा हरे प्रकाश के गुणों से सम्पन्न ऐसे ही विकिरण लेसर क्रिया द्वारा निकलते हैं । इनके सम्मिलित प्रभाव के फलस्वरूप शरीर की भीतरी क्रियाएं, जैसे रक्त-संचार, चयापचय (मेटाबोलिज्म) आदि सक्रिय रूप से कार्य करने लगती हैं तथा उनमें तालमेल बैठता है । इससे रोग-निरोधक तत्व सक्रिय हो जाते हैं तथा जीवनी शक्ति में वृद्धि होती है । इस उपकरण का उपयोग मरीज के साथ कुछ मिनटों तक किया जाता है तथा कुछ बैठकों के बाद अनेक बीमारियों, जैसे आन्त्रशोथ, हृदय-रोग, स्त्री-रोग, ओस्टिओं आर्थराइटिस, मनोविक्षेप आदि ठीक होने का दावा किया जाता है । 'क्वाँटेरा' (QUANTTERRA) अर्थात् क्वाँटम थिरैपी डिवाइस (उपकरण) का आविष्कार रूस में 1980 में किया गया जिसका उद्देश्य था अन्तरिक्ष में यात्रियों की चिकित्सा । इसका सर्वप्रथम उपयोग रूसी अन्तरिक्ष यात्री जार्जी मिखेलोविच ग्रेच्को ने किया । आई.एस.ओ. 9002 से सम्मानित इस उपकरण का उपयोग अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इंग्लैड, फ्रांस आदि देशों के अतिरिक्त भारत में भी संभव हुआ है । सौर विकिरण से मानव को प्राप्त ये लाभ सूर्य को पूजनीय बनाते हैं ।

मानव हेतु सौर विकिरण के उपर्युक्त उपयोगों की कड़ी में अब 'सौर शल्य चिकित्सा' भी जुड़ गई है । रक्त-विहीन शल्य चिकित्सा हेतु आजकल 'लेसर' का उपयोग जारी है किन्तु यह महंगा है जिससे आम व्यक्ति की पहुंच से दूर बना हुआ है । किन्तु इजरायल के बैनगुरियन विश्वविद्यालय के जैफरी एम. गोर्डन ने सौर विकिरण की मदद से अब शल्य चिकित्सा की विधि विकसित की है । इसमें सूर्य की बिखरी हुई किरणों को एक परावर्तक द्वारा एकत्र कर केन्द्रित कर लिया जाता है तथा प्राप्त सौर ऊर्जा की उष्मा (गर्मी) से रोगी के ऊतकों (टिसूज) का उपचार लेसर शल्य चिकित्सा की ही तरह किया जाता है । इसके लिए बने प्रकाशीय व्यवस्था में केन्द्रित किरणों को प्रकाशीय तन्तु (फाइबर) तार द्वारा 20 मीटर दूर तक रोगी के पास पहुँचा कर शल्य चिकित्सा हेतु उपयोग में लाया जा सकता है । इस विधि को पूर्णरूपेण विकसित करने का प्रयास जारी है ।

केवल सूर्य की रोशनी से ऊर्जा लेकर तथा कई महीने बिना भोजन एवं पानी लिए जिन्दा रहने का दावा मिदनापुर के सनयोगी कहलाने वाले श्री उमाशंकर ने किया है । उनके अनुसार वे सीधे सूर्य की ओर देखकर शरीर की कोशिकाओं को रिचार्ज कर लेते हैं । यह आश्चर्यजनक ही है, क्योंकि सीधे सूर्य को देखने से आँख के पर्दा (रेटिना) के ही जल जाने की संभावना प्रबल होती है जिससे ऐसा करना वर्जित किया गया है ।

अब नेनो एंटीना से सौर ऊर्जा को वैसे ही सीधे विद्युत में बदला जा सकता है जैसे रेडियों तरंगें धातु के एंटीना पर पड़ने से विद्युत पैदा करती हैं । आम तौर पर एंटीना की लम्बाई तरंगदैर्ध्य (तरंग की लम्बाई: वेव लेंग्थ) के बराबर होती है । सौर विकिरण की तरंगों की लम्बाई चूँकि नैनोमीटर (10^{-9} मीटर अर्थात् एक मीटर का अरबवां भाग) के स्तर की होती है, अत: अब तक इतने छोटे एंटीना बनाना संभव नहीं था । किन्तु नैनो प्रौद्योगिकी में विकास से अब यह संभव हो गया है । मैसाचुसेट्स स्थित बोस्टन कॉलेज के भौतिकविद् यांगवांग ने 50 नैनोमीटर चौड़ी सुचालक कार्बन ट्यूब के एरियल पर प्रकाश डालने से विद्युत धारा उत्पन्न की । अलग-अलग आकारों के नैनो ट्यूबों को समायोजित कर उन पर सौर विकिरण (जिसमें लगभग 150 से 1200 नैनोमीटर के तरंगदैर्ध्य के विकिरण शामिल होते हैं) डालने पर विद्युत धारा उत्पन्न की जा सकती है । यह फोटो इलेक्ट्रिक सिद्धांत से अलग प्रक्रिया है । फोटोइलेक्ट्रिक सिद्धांत का उपयोग कर अभी सेलों द्वारा सौर ऊर्जा को विद्युत में बदला जाता है । नैनो एंटीना द्वारा सौर बैटरियां भी बनाई जा सकेंगी ।

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो के वैज्ञानिकों ने फ्लेक्सिबल प्लास्टिक सौर सेल बनाया है जो परम्परागत सौर सेल से पांच गुना अधिक दक्ष है । यह एक पतली झिल्ली के रूप में होता है तथा कपड़े, कागज आदि पर लगाया जा सकता है । कमीज पर चिपके इस सौर सेल से प्राप्त बिजली से सेलफोन आदि चार्ज कर सकते हैं । यह 30 प्र.श. सौर ऊर्जा को विद्युत में बदलता है जो परंपरागत सेलों से अधिक है ।

सूर्य से प्राप्त ऊर्जा के अतिरिक्त हम उसकी चुम्बकीय तथा आकर्षण शक्ति से भी प्रभावित होते हैं; क्योंकि पृथ्वी सूर्य से ही निकली है । सूर्य से उत्सर्जित एक्स एवं गामा किरणों तथा विद्युत आवेशित कणों, सौर धब्बों (स्पॉट्स), तूफानों (स्टॉर्म्स), वायु (विंड) तथा ज्वालाओं (फ्लेअर्स) के समय पृथ्वी के चुम्बकीय तथा आयनमंडलीय (आयनोस्फेरिक) गुणों में तीव्र परिवर्तन होते पाए जाते हैं । वास्तव में इन घटनाओं के समय सूर्य के चुम्बकीय क्षेत्र की शक्ति में परिवर्तन होता है जिसका प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है । ऐसा विश्वास है कि सौर धब्बे आदि सूर्य के चुम्बकीय क्षेत्रों और सौर गैसों यानी प्लाज्मा की अन्तर्क्रिया से पैदा होते हैं । इनका जैव भौतिकीय, जैव रासायनिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव मानव-शरीर पर पड़ता है । ऐसा विश्वास किया जाता है कि सौर विकिरण द्वारा मावन-कोशिकाओं के किरणीयन (इरैडियेशन) से जीवन की मूलभूत इकाई 'जीन' में भी परिवर्तन संभव हो सकता है जिससे हमारा स्वभाव, गुण आदि प्रभावित हो सकते हैं । वास्तव में इस विकिरण द्वारा शरीर के भीतर अणुओं के रासायनिक बाण्ड टूट जाते हैं तथा कोशिकाओं को नुकसान पहुँचता है । ऐसे अणु (आयन) स्थिरता हेतु दूसरे अणुओं से जुड़ने की कोशिश करते हैं जिससे तीव्र रासायनिक क्रियाएं प्रारंभ हो जाती हैं । फलस्वरूप, कोशिकाओं की सामान्य कार्यप्रणाली में व्यवधान पड़ता है तथा डी.एन.ए. एवं मुख्य एन्जाइम प्रभावित होते हैं । ज्ञातव्य है कि डी.एन.ए. में ही आनुवंशिक (जनेटिक) सूचनाएं जमा रहती हैं ।

रूसी वैज्ञानिकों के मतानुसार सौर धब्बों आदि प्रक्रियाओं का संबंध हृदय रोग, पृथ्वी पर कीटाणुओं में वृद्धि तथा महामारियों आदि से होता है । ऐसा देखा गया है कि इन प्रक्रियाओं के 11 वर्षीय चक्र (साइकल) के अनुसार (अर्थात् जब प्रति 11-12 वर्षों पर ये प्रक्रियाएं अधिकतम स्तर पर होती हैं), उपर्युक्त आपदाओं की भीषणता भी बढ़ जाती है । नवम्बर 2003 ऐसा ही वर्ष था जब इन बवंडरों के कारण अन्तरिक्ष में करोड़ों परमाणु बमों जितनी ऊर्जा सूर्य ने उड़ेल दी । इससे एक जापानी उपग्रह का सम्पर्क टूट गया तथा कई हवाई सेवाओं को रास्ता बदलना पड़ा । अत: इन कुप्रभावों के शमन हेतु समय पर रक्षात्मक उपाय करने चाहिए ।

किन्तु सौर धब्बों में वृद्धि से गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि पाई जाती है । वर्ष 1958 तथा 1968 में विश्व में ऐसा ही हुआ । 1957 एवं 1968 वर्ष ऐसे थे जब सौर धब्बों आदि की तीव्रता सर्वाधिक रही; अर्थात् 11 वर्षीय चक्र की स्थिति।

भारतीय मुनियों, ऋषियों एवं महर्षियों ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर सूर्य की महत्ता स्थापित की । ये

3608 HA/12—11A

ज्ञानी-विज्ञानी एवं शोध-कर्त्ता थे । उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि सूर्य हमारा जीवन-रक्षक है और इसीलिए यह सदियों से पूजनीय रहा है ।

(ii) ग्रह सौरमंडल में पृथ्वी के अतिरिक्त 8 और ग्रह हैं जिनकी पूजा अनेक अवसरों, जैसे ग्रह-प्रवेश आदि, पर की जाती है ।

भारतीय फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसी धारणा है कि विभिन्न ग्रह भी अपनी आकर्षण एवं चुम्बकीय शक्तियों के सहारे पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करते हैं, यद्यपि कि इस संबंध में पुष्ट वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं । स्वयं पृथ्वी भी इससे अछूती नहीं है । हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय भू-भौतिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने हैदराबाद तथा सिकन्दराबाद में जनवरी 1965 से मार्च 1969 के बीच भू-चुम्बकत्व में दिन-प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों तथा उसी दिन वहाँ की सड़क दुर्घटनाओं एवं हृदय रोगों में गहरा संबंध पाया । उनके अध्ययन के अनुसार 81 प्रतिशत तूफानी अर्थात् भू-चुम्बकत्व में अत्यधिक उतार-चढ़ाव वाले दिनों में दुर्घटनाओं और हृदय रोगों में अत्याधिक वृद्धि हुई जबकि 83 प्रतिशत शान्त दिनों में ये घटनाएँ हुई ही नहीं । इससे स्पष्ट है कि पृथ्वी का चुम्बकीय क्षेत्र हमारे जीवन को प्रभावित करता है तथा इसमें अप्रत्याशित परिवर्तन से हमारा मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है एवं हृदय पर भी असर पड़ता है ।

पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में लगातार रहने के कारण यह हमारे शरीर की भीतरी क्रियाओं, जैसे रक्त-संचार, चयापचय (मेटाबोलिज्म) आदि को प्रभावित करता है । यह कमजोर क्षेत्र भी अनुकूल शारीरिक स्थितियों में इन क्रियाओं में तालमेल बैठाता है तथा रोग.निरोधक कारकों को सक्रिय कर जीवनी शक्ति में वृद्धि करता है । सोने, खाने आदि की दिशा का संबंध इसी चुम्बकीय क्षेत्र (चुम्बकीय बल-रेखाओं की दिशा) से है । इस पक्ष पर विश्वास करने के अनेक कारण है, जैसे चुम्बकों द्वारा चिकित्सा, चुम्बकीय जल-चिकित्सा, आदि । चुम्बकीय अनुनाद प्रतिबिम्ब-चित्रण (मैग्नेटिक रेजोनेन्स इमेजिंग: एम.आर.आई.) शरीर पर चुम्बकीय प्रभाव की पुष्टि करता है । अब तो 'क्वाँटेरा' नामक चिकित्सीय उपकरण भी उपलब्ध है । यह पृथ्वी के क्षेत्र की तरह ही स्थिर कमजोर चुम्बकीय क्षेत्र तथा कुछ विकिरण भी उत्पन्न करता है जिनके प्रभाव से आन्त्रशोथ, हृदय-रोग, स्त्री-रोग, मनोविक्षेप आदि अनेक बीमारियों की चिकित्सा संभव हो गई है इस पर 'सूर्य एवं सौर ऊर्जा' के अन्तर्गत पृष्ट पर प्रकाश डाला गया है । अत: ऐसे चुम्बकीय गुण धारित पृथ्वी की पूजा का भाव स्पष्ट हो जाता है ।

जीवचुम्बकीय विज्ञान के विशेषज्ञ माइकेल गाक्वेलिन ने वर्षों पूर्व यूरोप के पच्चीस हजार व्यक्तियों के जीवन पर भू-चुम्बकीय क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि जन्म के समय ग्रहों की स्थिति एवं जीवन-वृत्ति में आश्चर्यजनक घनिष्ट संबंध होता है । उनके अध्ययन के अनुसार, जन्म के समय शनि एवं मंगल के प्रभाव से व्यक्ति चिकित्सक तथा बृहस्पति का प्रभाव होने पर अभिनेता बनता है । उनके कथनानुसार खगोलीय पिंडों का चुम्बकीय बल हमारे आनुवंशिक कूट 'जीन' को प्रभावित करता है जो स्वभाव, गुण आदि के निर्धारण हेतु उत्तरदायी होते हैं । इसी तरह वृहस्पति तथा मंगल के बीच की कोणीय दूरी 90 अंश होने पर आयनमंडल में गड़बड़ी पैदा होती है तथा सौर ज्वालाएं बढ़ जाती हैं जिससे पृथ्वी पर हृदय-रोगों में वृद्धि होती है । अत: सूर्य के साथ-साथ पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों की पूजा भी की जाती है ।

(iii) चन्द्रमा: यह पृथ्वी का उपग्रह है तथा सभी खगोलीय पिंडों की तुलना में पृथ्वी से नजदीक है । चन्द्रमा की पूजा अनेक अवसरों पर की जाती है, जैसे करवां चौथ व्रत आदि । मुस्लिम सम्प्रदाय के पर्व-त्यौहारों के दिन तो चन्द्रमा के दिखाई पड़ने पर ही निर्भर करते हैं । चन्द्रमा भी हमारे जीवन को अत्यधिक प्रभावित करता है, जिसका कारण है इसकी आकर्षण शक्ति तथा आकर्षक शीतल प्रकाश । ऐसा पाया गया है कि चन्द्रमा के प्रभाव में उत्पन्न व्यक्ति साहित्यकार होते हैं ।

पृथ्वी पर सूर्य और चन्द्रमा की सम्मिलित आकर्षण शक्ति के कारण समुद्र में उठने वाले ज्वार की तरह हमारे शरीर के भीतर उपलब्ध लगभग 70 प्रतिशत जलीय पदार्थ में भी ज्वार-सी स्थिति पैदा होती है जिससे तन्तुओं में तनाव बढ़ता है तथा हम मानसिक संतुलन खो सकते हैं । उल्लेखनीय है कि मानव रक्त में नमक की संरचना वैसी ही होती है जैसी समुद्र-जल में । साथ ही, औरतों के शरीर में जलीय तत्व की मात्रा पुरुषों की तुलना में अधिक होती है; क्योंकि कुछ अतिरिक्त, आन्तरिक क्रियाओं के लिए आवश्यक हार्मोन आदि स्त्रियों में ही होते हैं । पूर्णिमा तथा अमावश्या (खासकर अमावश्या के बाद द्वितीया या दूज) की रातों, जब सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी एक सीध में होते हैं, पृथ्वी पर सूर्य एवं

3608 HA/12—11B

चन्द्रमा की सम्मिलित आकर्षण-बल सर्वाधिक होता है । किन्तु सूर्य की तुलना में चन्द्रमा की स्थिति पृथ्वी से बहुत नजदीक होने के कारण चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति ही विशेष प्रभावी होती है । यही कारण है इन दिनों में समुद्र-तल पर सर्वाधिक आकर्षण होने के कारण उच्च ज्वार उठता है ।

उपर्युक्त प्रभाव हमारे शरीर पर भी इन दोनों तिथियों को सर्वाधिक पड़ता है जिससे रक्त में तनाव के कारण अधिक उत्तेजित हो हम मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं तथा हत्या आदि जैसे कुत्सित कार्य कर बैठते हैं । इसकी संभावना उन व्यक्तियों के साथ अधिक रहती है जो इन तिथियों के पहले से ही मानसिक रूप से असंतुलित होते हैं । तन-मन में पैदा इस विकार से आवेग (एक्साइटमेंट), उद्वेग (डिस्टरबेन्स) एवं संवेग (इमोशन) उत्पन्न होते हैं जो मानसिक रोगों के अतिरिक्त रक्त-चाप एवं नाड़ी रोग (नर्वसनेश) के कारण बनते हैं । दुग्ध-उत्पादकों के कथनानुसार अमावश्या तथा पूर्णिमा को भैंस आदि दुधारू मवेशी भी प्रभावित होते हैं जिससे दूध देने में परेशानी पैदा करते हैं । यही कारण है कि भारत में इन तिथियों की पूजा, ध्यान एवं व्रत-उपवास की परम्परा सदियों से चली आ रही है ताकि शान्त रहकर आत्मशुद्धि द्वारा तनाव पर विजय प्राप्त की जा सके ।

इस संबध में अमेरिका में किए गए एक अध्ययन से उपर्युक्त भारतीय मान्यता की पुष्टि होती है । वहाँ के मियामी विश्वविद्यालय के मनोविकार वैज्ञानिक डा. आर्नल्ड एल. लाइबर तथा डा. कैरोलिन शेरिन ने 1956 से 1970 के बीच अमेरिका के फ्लोरिडा एवं मियामी क्षेत्रों में हुई हजारों हत्याओं का कम्प्यूटर द्वारा विश्लेषण कर पाया कि अमावश्या के बाद दूज तथा पूर्णिमा की रातों में ही सर्वाधिक पागलपन, हत्यायें एवं आत्महत्यायें हुई ।

भारत में विभिन्न व्रत-त्यौहार चन्द्रमा की कलाओं (द्वितीया, एकादशी, पूर्णिमा आदि) के अनुसार ही निर्धारित होते आए हैं, क्योंकि हमारे सम्वत् (विक्रमी, हिजरी आदि) चान्द्र वर्ष (लूनर इयर) पर आधारित हैं । चान्द्र वर्ष का आधार है चान्द्रमास जो चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की एक परिक्रमा की अवधि (29.5 दिन) है । इस तरह चान्द्र वर्ष 354 दिनों (29.X12) का होता है । प्रत्येक तिथि को पृथ्वी के सापेक्ष चन्द्रमा एवं सूर्य की कोणीय स्थिति अलग-अलग होती है जिससे उनकी अलग-अलग मान की सम्मिलित आकर्षण शक्ति पृथ्वी पर सर्वदा अपना प्रभाव डालती रहती है; भले ही पूर्णिमा एवं अमावश्या जैसी सर्वाधिक न हो । उदाहरणार्थ, प्रत्येक माह के शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष की अष्ठमी को पृथ्वी के सापेक्ष सूर्य एवं चन्द्रमा की कोणीय स्थिति 90 अंश होने से यह प्रभाव न्यूनतम होता है । यही कारण है कि अन्य तिथियों, जैसे कार्तिक शुक्ल द्वितीया के भाई दूज, भाद्र शुक्ल तृतिया को हरतालिका तीज, कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को करवां चौथ, श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी, कार्तिक शुक्ल षष्टी को छठ या सूर्य षष्टी व्रत, आश्विन कृष्ण अष्टमी को जीवित पुत्रिका व्रत या जीऊतिया आदि को भी मनाने का विधान है । कुछ तिथियाँ जैसे प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी एवं पूर्णिमा तथा अमावश्या (सोमवती, मौनी) आदि विशेष महत्व रखती हैं । कार्तिक पूर्णिमा को व्रत-कथा तथा शरद (आश्विन) पूर्णिमा की रात की चांदनी में खीर रखकर खाने का विधान है । कुछ व्रतों में चन्द्र-दर्शन एवं चन्द्र-पूजा के बाद ही उसे समाप्त करने की परंपरा है । ऐसा विश्वास है कि चन्द्र-प्रभाव का स्त्रियों के मासिक चक्र से भी संबंध है । निश्चय ही व्रत उपवासों से सूर्य-चन्द्र प्रभाव पर विजय प्राप्त कर शान्त रहने तथा आत्म शुद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है ।

किन्तु क्या चन्द्रमा अन्तरिक्ष में अनन्त काल तक विद्यमान रहेगा? उत्तर 'नहीं' में है । अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों के मतानुसार चन्द्रमा पृथ्वी से प्रतिवर्ष 3.2 से.मी. की दर से दूर होता जा रहा है । इस तरह यह पचास करोड़ वर्ष बाद पृथ्वी से दिखाई ही नहीं देगा । ऐसी स्थिति में, निश्चय ही, हमारा जो तादात्मय चन्द्रमा से बना हुआ है, उससे हम वंचित हो जाएँगे । ■

हिंदी हमारी माता है ।
जन्म भर का नाता है ॥

पत्रकारिता

मीडिया और आम आदमी के सरोकार

–देवेन्द्र उपाध्याय*

स्वतंत्रता से पहले पत्रकारिता एक मिशन थी जो स्वतंत्रता के बाद धंधे में बदल गई । पहले पत्रकारिता पर जूट प्रेस का कब्जा था जो विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ जुड़कर अपने पत्रकारिता से हटकर चलाए जा रहे अन्य धंधों को फलने-फूलने के अवसर हासिल करता रहा । जितने भी बड़े-बड़े पत्रकारिता घराने रहे हैं उन्होंने स्वतंत्रता से पहले जिस पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में योगदान दिया, स्वतंत्रता के बाद इन्हीं घरानों ने अपने दूसरे धंधों को ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए हर तरह की तिकड़में की । इन्हीं के संस्थानों में पत्रकारों एवं गैर-पत्रकारों का सबसे अधिक शोषण हुआ, इनमें तमाम ऐसे संस्थान हैं जिन्होंने अपने संपादकों को जहां पहले आदर दिया वहीं बेइज्जती कर बाहर का रास्ता दिखाने का भी रिकार्ड बनाया ।

ऐसा नहीं है कि केवल चंद अरबपति घरानों का ही मीडिया पर एकाधिकार रहा, धीरे-धीरे उनका एकाधिकार टूटने लगा । पत्रकारिता के लिए समर्पित अनेक लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में भाषायी पत्रकारिता को एक नई पहचान दी । उस भाषायी पत्रकारिता ने उस क्षेत्र के लोगों की आकांक्षाओं को जगाने का काम किया, उनकी समस्याओं को उजागर करने में भूमिका निभायी । धीरे-धीरे भाषायी पत्रकारिता भी धंधा बन गई । ऐसे समाचार-पत्रों ने स्थापित होने के बाद आम आदमी के सरोकारों का अनदेखी करते हुए अपने मुनाफे को बढ़ाने का एकसूत्री कार्यक्रम चलाकर पत्रकारिता के अपने ही मिशन को पीछे धकेल दिया । दिलचस्प बात यह है कि इन भाषायी समाचार-पत्रों ने अपने निहित स्वार्थों के लिए एक ही क्षेत्र को कई-कई उपक्षेत्रों में बांटकर अपना उल्लू तो सीधा किया ही, उन क्षेत्रों के पाठकों को भी दूसरे क्षेत्रों समाचार-पत्रों से वंचित रख कर पत्रकारिता को कलुषित करने का काम किया । और आज भी पूरी निरंकुशता से करते चले जा रहे हैं । इनके मुकाबले कई और समाचार-पत्र सामने आए जिन्होंने क्षेत्र तथा उपक्षेत्र के दायरे को तोड़ते हुए पाठकों को उस पूरे क्षेत्र की खबरों से जोड़ने का काम किया । अपने सीमित साधनों के बावजूद इन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया । हालांकि इजारेदार बन चुके बड़े भाषायी समाचार-पत्रों द्वारा आम पाठक तक पहुंचने से रोकने के लिए कई असफल षडयंत्र भी होते रहे । हाल के वर्षों में कुछ कथित राष्ट्रीय दैनिकों ने अपना विस्तार कर पहले से मौजूद कुछ समाचार-पत्रों की इजारेदारी को गहरा झटका दिया है । भारतीय प्रेस परिषद् को क्षेत्र और उपक्षेत्र में बांटने वाले समाचार-पत्रों पर लगाम लगानी चाहिए क्योंकि उनका असली उद्देश्य अब सिर्फ राजस्व बटोरना है ।

कथित राष्ट्रीय दैनिक का मुखौटा लगाए अनेक समाचार-पत्रों का भी आम आदमी से कोई सरोकार नहीं रह गया है, अधिक से अधिक विज्ञापन बटोरने की इनकी आकांक्षा ने आम आदमी को अपनी ही समस्याओं से जूझने के लिए अकेले छोड़ दिया है । दिल्ली में वर्षों पहले एक दैनिक समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ था । जो पहले तो एकाएक तेजी से बढ़ा और आज वह कुछ हजार में सिकुड़ कर रह गया । प्रायोजित नकारात्मक समाचार छापने में इसका बहुत बड़ा योगदान रहा है । कुछ ऐसे भी क्षेत्रीय भाषायी दैनिक हैं जिन्होंने सर्कुलेशन के मामले में बड़े-बड़े इजारेदारों के दैनिकों को पीछे छोड़ दिया है । इन दिनों क्षेत्रीय भाषायी समाचार-पत्रों में भी अधिक से अधिक स्थानों से अपने समाचार प्रकाशन की होड़ मची हुई है ताकि अधिक से अधिक विज्ञापन बटोरने की हर तरह की तिकड़म के कारण वे मालामाल हो सकें । इसके विपरीत लघु

*सी-8/90ए, लारेंस रोड, दिल्ली-35

समाचारपत्रों-पत्रिकाओं की जो वास्तव में आम आदमी के सरोकारों से जुड़े हुए हैं, पूरी तरह अनेदेखी होती है ।

यह सच है कि इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने आते ही प्रिंट मीडिया को किनारे करने के लिए अघोषित युद्ध छेड़ दिया । उसने यह प्रचार करना प्रारंभ कर दिया कि प्रिंट मीडिया के दिन तो अब गिने-चुने हैं भविष्य उसका ही है । कभी न्यूज चैनल के रूप में सामने आने वाले टीवी चैनल भी अब स्टिंग आपरेशन कर और तरह-तरह की चटखारेदार तथा चरिम हनन की खबरें प्रकाशित कर अपनी रेटिंग बढ़ाने में जुटे हुए हैं । यही नहीं इलेक्ट्रानिक मीडिया के आने के बाद एक-दूसरे की जासूसी कराने की घटनाएं भी तेजी से बढ़ी हैं । इलेक्ट्रानिक मीडिया ने आम आदमी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने में महारत हासिल कर ली है, उसके सरोकारों से उसका कोई लेना देना नहीं है ।

जनसंचार का सबसे बड़ा माध्यम पत्रकारिता है । यह सचाई है कि प्रिंट मीडिया रियल्टी है और इलेक्ट्रानिक मीडिया मिथ बना चुका है, प्रिंट मीडिया का स्थाई महत्व है । इलेक्ट्रानिक मीडिया कुछ घंटों तक रोमांचित करने का काम करता है । इतना जरूर है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपने कार्यक्रमों और विज्ञापनों के माध्यम से निम्न मध्यम वर्ग एवं मध्यम वर्ग के सपनों को बेदर्दी से कुचलने का काम किया है और इनके अधिकांश सीरियलों ने घर-परिवारों के सामंजस्य को बिगाड़ने में महत्वपूर्ण निभायी है ।

रचनात्मक लेखन में भी प्रिंट मीडिया का कोई मुकाबला नहीं है । आम आदमी का जितना अधिक सरोकार प्रिंट मीडिया में लघु समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का रहा है और है उतना बड़े इजारेदार घरानों के समाचारपत्रों का आज कतई नहीं है। कभी इन इजारेदार घरानों ने धर्मयुग साप्ताहिक, हिंदुस्तान, दिनमान, रविवार, संडे, इलेस्टिड वीकली जैसी पत्रिकाएं निकाली थी लेकिन आम आदमी से सरोकार न होने के कारण इनका प्रकाशन बंद कर दिया । आज हिंदी में अनेक ऐसी-पत्र पत्रिकाएं छप रही हैं जिनके पीछे कोई न कोई प्रतिबद्धता तो है ही साथ ही आम आदमी के साथ उनका सरोकार भी है, लेकिन उन्हें आर्थिक संकट झेलना पड़ता है क्योंकि उनके पीछे न तो कोई धनपशु होता है और न उन्हें आसानी से सरकारी या गैर-सरकारी विज्ञापन मिलते हैं । पाठकों पर आखिर वे कब तक निर्भर रह कर निर्बाध प्रकाशन जारी रख सकते हैं ?

मीडिया चाहे प्रिंट हो या इलेक्ट्रानिक, वह अपने मालिक के हितों की रक्षा करता है । अब उनमें काम करने वाले पत्रकारों की अपनी कोई सोच या मानसिकता नहीं होती, वे वही लिखते हैं जिससे मालिक के हितों की रक्षा हो सके । आज कोई यह दावा नहीं कर सकता कि वह स्वतंत्र है । भारत में प्रेस की आजादी है पर वह आजादी सिर्फ मालिक की आजादी है उसमें कार्य करने वालों की नहीं । भारतीय प्रेस परिषद् को ऐसा कानूनी अधिकार नहीं है कि वह किसी समाचार-पत्रिका के खिलाफ कार्रवाई कर सके । इस बात की जरूरत है कि भारतीय प्रेस परिषद् को मानवाधिकार आयोग और महिला आयोग की तरह कानूनी कार्रवाई करने का भी अधिकार मिले ।

देश को जिम्मेदार मीडिया की जरूरत है, चाहे वह प्रिंट हो या इलेक्ट्रानिक । चौथा स्तंभ अपना महत्व खोता जा रहा है, लोकतंत्र में जब उसके सभी स्तंभों की विश्वसनीयता पर सवालिया निशान लग रहे हैं तब मीडिया की विश्वसनीयता भी संदेह के दायरे में आने लगे तो फिर लोकतंत्र को कोई नहीं बचा सकता ।

राजभाषा हिंदी का मत करो मात्र शृंगार ।
इसको बनाओ कार्यालय में प्रतिदिन का व्यवहार ॥

3608 HA/12—12A

स्वास्थ्य

जीवन शैली एवं स्वास्थ्य

–ज्ञानवती धाकड़*

मानव शरीर ईश्वर की एक अमूल्य कृति है जिसे स्वस्थ एवं व्याधियों से मुक्त रखना हमारा कर्त्तव्य है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन जीने का तरीका ही उसकी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक जीवन की गुणवत्ता तथा आयु को बढ़ाने वाला या घटाने वाला होता है। अगर वह स्वास्थ्य के नियमों को अपनी दैनिक दिनचर्या में अपनाता है तो वह एक स्वस्थ एवं सुन्दर जीवन का आनन्द ले सकता है वहीं दूसरी ओर दूषित जीवनशैली अपनाकर व्यक्ति स्वयं का जीवन ही नरक नहीं बनाता है बल्कि अपना, अपने परिवार का एवं समाज का भी बहुत बड़ा अहित करता है। आज के रहन-सहन, खानपान, मानसिक तनाव एवं मशीनरी दिनचर्या के कारण व्यक्तियों की पाचनक्रिया सबसे अधिक प्रभावित हो रही है जिसके कारण व्यक्ति अनेकानेक रोगों से ग्रसित होता जा रहा है।

हम हमारी जीवनशैली में अपनाने वाले सकारात्मक उपायों में से जो सर्वप्रथम आवश्यक है वह यह है कि हम प्रकृति के विरुद्ध कृत्य नहीं करें या उन्हें कम से कम करके हम हमारे शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। प्राय: यह वह कृत्य है जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखने या व्याधियों से मुक्त रखने के लिए आवश्यक है। हमें वह जीवन शैली अपनानी होगी जो हमारे शरीर में किसी बीमारी को आने ही नहीं दे। लेकिन अगर हम अपनी जीवन शैली पर एक नजर डाले तो महसूस होगा कि हम तो सब कुछ उल्टा ही कर रहे हैं, हम सामान्यत: अधिक कैलोरी लेते हैं, अधिक चिकनाई, अधिक सोडियम, धूम्रपान, नमक तथा मीठा आदि एवं रसायनिक प्रदूषण युक्त खाद्य सामग्री उपयोग करके हम हमारे स्वास्थ्य को दिनोदिन खराब करते जा रहे हैं व अनेक दूषित आदतों के साथ बेहद तनाव में जीते रहते हैं तो हम कैसे स्वस्थ जीवन की आशा कर सकते हैं। आधुनिक, सम्पन्नता, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण यह स्थिति और भी बदतर होती जा रही है। हमारी नई पीढ़ी अबाध रूप से वह सब खाती हैं जिसमें खासकर आज का प्रचलित नाम फास्टफूड या जंक फूड है जिसे बच्चे खूब शौक से खाते हैं और प्राय: यह देखा जाता है कि उनके माता पिता भी उन्हें इन सबको खाने से रोकते नहीं है बल्कि कभी-कभी तो यहां तक देखा जाता है कि वह स्वयं भी यही सब कुछ खाना पसन्द करते हैं और मन में गर्व महसूस करते हैं कि हम तो आज के फैशन में प्रचलित खाना खा रहे हैं लेकिन वह यह नहीं जानते हैं कि यह उनके लिए कितना दूषित खाना है जो उन्हें तथा उनके बच्चों को अन्दर ही अन्दर एक शान्त तरीके से मार रहा है मालूम तो तब पड़ता है जब कोई भयानक बीमारी सामने आ जाती है, फिर भी वह सब कृत्य कर रहे हैं जो उन्हें अनेक गम्भीर बीमारियों में जकड़ते जा रहे हैं। और इससे भी एक कदम आगे बढ़कर वह आज की नई नई दवाओं का उपयोग कर अपने आपको स्वस्थ मानने का गुमान भी पाल रहे हैं। वह इस बात को स्वीकार करने को तैयार ही नहीं होते हैं कि वास्तव में वह स्वस्थ नहीं है बल्कि एक सीमित समय के लिए ताकत को महसूस कर रहे है, इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव करना पड़ेगा ताकि हम अपने आपको स्वस्थ रख सके। यही कारण है कि आज करोड़ें रुपये की दवाइयों का व्यापार लगातार फल फूल रहा है। क्या कभी हमने इस बारे में सोचने का प्रयास किया है कि आखिर ऐसा क्या कारण है, कि आज एक चिन्ताजनक संख्या में व्यक्तियों में उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा आदि-आदि अनेक रोगों ने अपनी जड़ें जमा ली हैं, क्यों अधिकतर व्यक्तियों को नींद की गोलियों से ही नींद आती है, क्यों जुलाब की गोलियों से ही पेट साफ होता है, क्यों इन्स्युलिन ले लेकर ही हम अपने आपको स्वस्थ महसूस करते हैं, क्यों

*402, प्रेस्टीज अपार्टमेंट, सहदेव मार्ग, सी-स्कीम,जयपुर-302005

3608 HA/12—12B

दर्द निवारक गोलियों खा खाकर स्वस्थ होने का गुमान पालते हैं, क्यों अपने आपको लगातार कार्यरत रखने के लिए अधिक से अधिक ताकत प्राप्त करने के लिये हम टॉनिक पर टॉनिक लिए जाते हैं, फिर भी हम खुश नहीं है, हमारे चेहरे पर सन्तुष्टि की झलक तक नहीं है और जो हम पैसा कमा रहे हैं उसका सदुपयोग कर आनन्द भी नहीं ले पा रहे हैं, क्योंकि शरीर को अनेक व्याधियों ने अपना निवास स्थान बना लिया है, और हम उन्ही की सेवा पूजा में ही अपनी शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक सम्पदा को लगाए जा रहे हैं तब भी क्या हम इसका विश्लेषण सच्चे मन से करते हैं कि आखिर ऐसा हो क्यों रहा है? क्यों हम स्वस्थ नहीं रह पा रहे हैं? जिसका सीधा सा उत्तर है कि हमारी स्वयं की दूषित जीवनशैली के कारण हमारा यह हाल हुआ है, जिसे हम नियमित जीवनचर्या से, संतुलित आहार से, योग, प्रणायाम एवं ध्यान को जीवन शैली में अपनाकर, सकारात्मक विचारों से, सन्तोषी प्रवृति अपनाने से तथा चिन्तामुक्त जीवन जीने से निजात पा सकते हैं एवं ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस अमूल्य शरीर का आनन्द ले सकते हैं । इसके लिए आवश्यक है कि हम हमारी दैनिक दिनचर्या में इस तरह के छोटे-छोटे सहज होने वाले आयाम जोड़ ले या यूं कहे कि धीरे-धीरे इन्हें अपनी आदत में डाल लें ताकि हम बिना बहुत अधिक समय लगाए हुए भी स्वस्थ, शान्त, खुश और सन्तुष्ट रह सके । इसके लिए बहुत ज्यादा समय देने की, या बहुत ज्यादा पैसा खर्च करने की या खाने में बहुत अधिक परहेज करने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है तो सिर्फ अपने आपको स्वस्थ रखने की इच्छाशक्ति की, जिससे आप अपनी ग्रहस्थी की, नौकरी की, व्यवसाय की एवं अनेकानेक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी स्वस्थ रह सकेंगे, इसके लिये हमको अपनी दैनिक दिनचर्या में कुछ छोटी-छोटी बातें, आदतें एवं क्रियाएं शामिल करनी होगी, जैसे स्वस्थ जीवनशैली में सबसे पहले आवश्यक है कि आप हम अपने सोने एवं उठने का समय ठीक करें । हमें रात में जल्दी सोने की आदत डालनी होगी ताकि सुबह ब्रहम मूहर्त में ही (सूर्योदय से कम से कम एक घण्टे पूर्व) उठ सकें क्योंकि जल्दी बिस्तर छोड़ना स्वास्थ्य की पहली आवश्यकता है । उठने के बाद कुछ समय के लिए अपने इष्टदेव का मनन करें और बिस्तर छोड़ दें, जब दांत साफ कर लें (मंजन कर लें) तो उसके बाद मुंह में पानी भरकर हाथों में पानी ले-लेकर कम से कम 20-20 बार दोनों आंखों पर पानी के छीटें मारे यह क्रिया आंखों की नसों में गति प्रदान करती है जो आंखों के लिए अत्यन्त लाभकारी है ।

दांत साफ करने के बाद मटके का पानी या संभव हो तो तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी (किसी-किसी व्यक्ति को तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी नुकसान करता है अतः वह अपने शरीर की तासीर के अनुसार की इसे उपयोग करें, दो चार दिन पीने से यह अनुभव हो जायेगा, कि क्या ठीक है) पीने के बाद थोड़ी देर घूमते रहे उसके बाद शौच के लिए जावें ताकि पेट पूरी तरीके से साफ हो सके । कुछ विशेषज्ञ बिना दांत साफ करे ही पानी पीने को ज्यादा अच्छा मानते हैं, इसे स्वयं की इच्छा के अनुसार अपनाया जा सकता है । फिर नहाते वक्त मुहँ में पानी भरकर नहावे और नहाने के बाद उस पानी को मुहँ से बाहर फेंक दें जिसे आप देखेंगे कि जो पानी आपने पिया था वह कितना चिकना होकर निकलता है यह विधि यह साबित करती है कि इस छोटी सी विधि से भी शरीर की कितनी गन्दगी बाहर निकलती है ।

शौच एवं स्नान आदि से निवृत होकर घूमने जावें, अगर दूब उपलब्ध हो तो उस पर नंगे पांव घूमना अत्यन्त लाभदायक होता है या फिर घर पर की करीब एक घण्टा साधारण आसन एवं प्राणायाम करें (आसन एवं प्रणायाम किसी योग्य शिक्षक से सीखकर ही करें) इसके बाद थोड़ी देर के लिए इष्टदेव की पूजा करें, जो मानसिक शान्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है । उसके बाद नाश्ते में मौसमी फल या अंकुरित अनाज आदि ले या दूध या आंवला, बील का मुरब्बा, च्यवनप्राश आदि किसी योग्य वैद्य से पूंछकर मौसम के अनुसार लें । खाने का एक निश्चित समय तय रखें कोशिश करे कि हमेशा निश्चित किए गए समय पर ही खाना खावें । भोजन सात्विक एवं संतुलित होना चाहिए, जिनमें सभी तत्वों का समावेश होना चाहिए, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाईडेट, खनिज पदार्थ, विटामिन्स, जल, आदि की संतुलित मात्रा होनी चाहिए । संतुलित भोजन में समुचित कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन एवं चिकनाई भी होनी चाहिए, समुचित पोटेशियम, कैल्शियम, मैगनेशियम तथा विटामिन युक्त भोजन लें, भोजन में सोडियम की मात्रा कम रखें, कच्चे फल सब्जियों के सलाद का उपयोग ज्यादा करना चाहिए, शाकाहारी भोजन को प्राथमिकता दें और इसमें रेशेदार चीजों की मात्रा अधिक रखें । विपरीत प्रकृति के भोजन को एक साथ नहीं खावें, क्योंकि जिन खाद्य पदार्थों की प्रकृति आपस में मेल नहीं खाती है उनको एक साथ खाने से वह शरीर में जाकर

आसानी से पचते नहीं है बल्कि कभी-कभी तो बीमारी कारण भी बन जाते हैं जैसे दूध के साथ दही, नमक की वस्तुएं, खट्टी चीजें, खरबूजा आदि नहीं खानी चाहिए। इन बातों का ध्यान रखने से न केवल भोजन स्वास्थ्यवर्धक होता है बल्कि यह संतुष्टिदायक भी होता है। भोजन को बहुत ज्यादा पकाकर उसके पौषक तत्वों को खत्म नहीं करना चाहिए बल्कि आवश्यकतानुसार पकाकर खाना चाहिए। खाना खाते वक्त फालतू चिन्ताओं को दिमाग में नहीं आने दें, बल्कि शान्त मन से खुशी से परिपूर्ण होकर खाने को ठीक से चबा चबाकर खावें। खाना खाने के कुछ समय पश्चात् तक पानी नहीं पीना चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि किसी कारणवश तेज प्यास लगी हो तब भी पानी नहीं पिया जाये, इससे तो उल्टा नुकसान भी हो सकता है, फिर भी यह ध्यान रखना चाहिए कि खाना खाने के बाद कम से कम एक घण्टे तक पानी नहीं पीयेंगे तो भोजन ठीक से पचेगा। रात का खाना जहां तक हो सके सोने के दो घण्टे पूर्व खा लेना चाहिए और यदि सूर्यास्त के पहले ही खा लिया जावे तो अति उत्तम रहेगा, रात्रि का भोजन हल्का होना चाहिए क्योंकि रात में पाचन क्रिया मन्द पड़ जाती है, भोजन के तुरन्त बाद पेशाब करने आवश्यक रूप से जाना चाहिए तथा उसके बाद थोड़ी देर के लिए घूमना चाहिए, भोजन के तुरन्त बाद सोना नहीं चाहिए और अगर संभव हो तो भोजन के बाद थोड़ी देर के लिए वज्रासन में बैठना चाहिए, यही एक आसन ऐसा है जो भोजन के बाद भी किया जा सकता है और जो भोजन को पचाने के लिए बहुत लाभदायक भी है। दिनभर काफी मात्रा में स्वच्छ पानी पीना चाहिए, जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सप्ताह में एक दिन फलाहार करें, यह शरीर के लिए बहुत ही लाभदायक साबित होता है। बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, शराब, मांस, मछली, अण्डा, चाय, काफी आदि का प्रयोग न करें और अगर आदतन मजबूर हैं तो भी इन चीजों का उपयोग कम से कम करने की कोशिश करें। सोते वक्त अपने ईष्टदेव का मनन कर शान्त मन से शयनासन करें जिससे शीघ्र ही गहरी नींद आ जायेगी। अगर सम्भव हो तो योगनिद्रा करनी चाहिए जिससे गहरी एवं सन्तोषप्रद नींद आ सके।

कुछ क्रियाएं ऑफिस में या अपने व्यवसाय स्थल पर रहते हुए भी की जा सकती हैं, जैसे कार्य करते वक्त आंखें बहुत थक गई हों तो दोनों हाथों की हथेलियों को कुछ मिनटों के लिए आँखों पर रखें, इससे बहुत आराम महसूस होगा, हाथों की अंगुलियों को हल्के-हल्के आँखों पर फेरने से भी आँखों को बहुत आराम मिलता है। इसी प्रकार जब आप चैम्बर में हों तब आँखों का व्यायाम भी किया जा सकता है, जिसमें दस-दस बार आँखों को ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं करें और फिर दोनों तरफ गोल-गोल घुमाए, इससे आँखों की ज्योति हमेशा ठीक रहेगी। लेकिन ध्यान रखें कि सभी क्रियाएँ धीर-धीरे करें तभी पूरा लाभ प्राप्त हो सकेगा। इसी प्रकार दिन भर काम करते-करते या पढ़ते-पढ़ते गर्दन की जकड़न का रोग हो गया हो, उसके लिए आप आफिस की कुर्सी पर या व्यवसाय स्थल पर बैठे-बैठे ही दस-दस बार गर्दन को दाएं-बाएं और फिर ऊपर-नीचे तथा उसके बाद दोनों तरफ गोल रूप से घुमाएँ, ऐसा अगर दिन में दो बार भी करते रहें तो गर्दन के रोग पास नहीं आ सकेंगे। और अगर गर्दन में जकड़न का रोग है भी, तो धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा। इसी प्रकार कार्यालय में कुर्सी पर बैठे-बैठे ही आप पैरों के पंजों को नीचे ऊपर करके हल्का खिंचाव देवें तथा दाएँ-बाएँ एवं गोल घुमावें जिससे पैरों की नसों में जकड़न नहीं होगी। तथा हाथों को ऊपर करके अंगड़ाई लेकर शरीर को हल्का खिंचाव देना भी बहुत लाभदायक रहता है। इस तरह अपने कार्यस्थल एवं आफिस चैम्बर में भी छोटी-छोटी क्रियाएँ करके अपने आपको स्वस्थ रखा जा सकता है।

शारीरिक क्रियाओं के साथ-साथ मानसिक स्वच्छता एवं सकारात्मक क्रियाशीलता भी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि मानसिक अस्वस्थता तो सभी शारीरिक एवं मानसिक रोगों का कारण बन जाती है अत: नकारात्मक सोच को पास में ही नहीं आने दें, मन से ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान, अहम्, क्रोध, हिंसा, अन्याय, एवं अनैतिक व्यवहार आदि दुर्गुणों का परित्याग कर मन में शालीनता, सत्यता, करुणा, मैत्री भाव जागृत कर हर्षोल्लास का प्रवाह करते रहने से एवं संतोषी प्रवृति अपनाने से शरीर स्वस्थ एवं सुखमय बना रहता है। क्योंकि इच्छाओं की भूख वह अग्नि है जिसमें ज्यों-ज्यों इच्छा पूर्ति की आहुति दी जाती है त्यों-त्यों वह अधिक प्रज्वलित होती जाती है इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति को किसी चीज की इच्छा ही नहीं करनी चाहिए और बिल्कुल नीरस जीवन जीना चाहिए, इससे तो जीवन निष्क्रिय एवं निरुद्देश्य हो जायेगा, लेकिन असीमित बढ़ती हुई इच्छाओं पर भी एक सीमित प्रतिबन्ध की आवश्यकता होती है ताकि हम संतुष्ट एवं प्रसन्न रह सकें। अपने बोल-चाल से भी वातावरण को सकारात्मक एवं खुशनुमा बनाये रखें क्योंकि मधुर एवं मर्यादित वाणी से आस-पास एक अच्छा स्नेहमयी

माहौल बनाए रखा जा सकता है । इसके अलावा सही ढंग से बैठने, उठने एवं खड़े होने की आदत डालें । हमेशा इस प्रकार से बैठें कि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे, क्योंकि अगर अधिक देर तक गलत पोश्चर में बैठे रहकर कार्य करते रहेंगे तो कमर दर्द, गर्दन दर्द, कन्धों की जकड़न आदि-आदि अनेक रोग हो जायेंगे । लेटकर पढ़ाई नहीं करें इससे आँखों पर जोर पड़ता है । इसके अलावा श्वास लेने की भी सही आदत डालें कि जब श्वास अन्दर खींचते हैं उस वक्त सीना फूलना चाहिए एवं जब श्वास बाहर निकालें तब पेट चिपकना चाहिए अगर कुछ समय तक ध्यान रखकर इस तरह श्वास लेगें तो सही श्वास लेने की आदत पड़ जायेगी और यह आदत शरीर के लिए बहुत लाभदायक है क्योंकि श्वास ही शरीर की जान है । इसके अलावा स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए जहाँ खाने पीने में बहुत ही ध्यान रखना चाहिए वहीं शरीर के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए योगासन, प्राणायाम या ध्यान आदि क्रियाओं को नियमित रूप से करना भी उतना ही आवश्यक है लेकिन इनको करने के लिए भी कुछ बातों की सावधानी रखना आवश्यक होता है जैसे :-

1. अभ्यास के समय शरीर स्वच्छ एवं मन शान्त होना चाहिए, किसी प्रकार की विशेष शारीरिक पीड़ा हो तो अभ्यास नहीं करें या किसी योग्य शिक्षक के सामने धीरे-धीरे शरीर की शक्ति के अनुसार ही करें, अभ्यास करने का स्थान साफ-सुथरा, शान्त एवं खुली हवा का होना चाहिए तथा शरीर पर स्वच्छ, हल्के तथा ढीले वस्त्र पहनें, ताकि शरीर का हर अंग आसानी से मुड़ सके एवं साँस भी पूरी तरह से फेफड़ों में भरकर सीना फूल सके ।

2. अभ्यास शुरू करने का सर्वोत्तम समय सूर्योदय से कम से कम एक घन्टा पूर्व का है, लेकिन अगर सुबह समय नहीं हो तो सारे दिन में कभी भी किया जा सकता है लेकिन खाना खाने से कम से कम चार घन्टे बाद ही या यों कहें कि पेट खाली या हल्का हो तभी किसी तरह का अभ्यास करना चाहिए । जहाँ तक हो अभ्यास एक नियत समय पर ही करना चाहिए । किसी भी अभ्यास को जल्दी-जल्दी नहीं करना चाहिए, हर क्रिया में बताई गई तरह से साँस को अन्दर लेने या बाहर निकालने पर ध्यान देना चाहिए, सभी क्रियाओं को सहज और आसानी से करें और शरीर को उतना ही मोडें जितना सहजता से मुड़ रहा हो, दूसरे साधक को देखकर मुकाबला नहीं करें, क्योंकि सबके शरीर की बनावट अलग-अलग होती है अत: कोई किसी अंग को ज्यादा मोड़ दे सकता है तो कोई कम । योगासन, प्राणायाम या ध्यान करते वक्त आप समग्र रूप से उसमें ही तल्लीन रहने चाहिए, मन कहीं और क्रिया कहीं, तो उसका पूरा लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा । स्थूल रूप से प्राणायाम श्वास-प्रश्वास के व्यायाम की एक पद्धति, जिससे फेफड़े बलिष्ठ होते हैं और सारे शरीर में रक्त संचार उचित रूप से होता है ।

3. अभ्यास करने के लिए दरी की अपेक्षा कम्बल बिछा कर करना ज्यादा उचित रहता है, क्योंकि कम्बल विद्युत का कुचालक है अत: हमारे शरीर की ऊर्जा पर गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है । अगर लकड़ी के तख्त पर कर रहे हों तो दरी का उपयोग किया जा सकता है । अभ्यास करने के तुरन्त बाद कुछ खाएं पिएँ नहीं, आधा घन्टे बाद नाश्ता लेना चाहिए ।

4. सर्वप्रथम थोड़ा योगासन फिर प्राणायाम और उसके बाद ध्यान करने का क्रम रखना सर्वोत्तम रहता है, वैसे इच्छानुसार एवं समयानुसार किसी एक या दो को भी किया जा सकता है । हर आसन के बाद कुछ विश्राम अवश्य करना चाहिए ताकि थकान महसूस नहीं हो । अन्त में हास्यासन अवश्य करें, जो अनेक रोगों के लिए रामबाण औषधि का काम करती है, साथ ही वातावरण को खुशनुमा एवं आनन्ददायक बना देती है । योग को एक जीवन पद्धति के रूप में अपनाना चाहिए, और इसे अपनी क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से जीवन भर के लिए एक आवश्यक आवश्यकता समझ कर करते रहना चाहिए ।

5. आसन-प्राणायाम आदि के अभ्यास के तुरन्त बाद लघुशंका त्याग करने के लिए अवश्य जाना चाहिए, जिसमें अभ्यास के कारण एकत्र हुए विषाक्त तत्व बाहर निकल जाते हैं ।

दिन भर सकारात्मक सोच की प्रवृति विकसित करें एवं खुश रहें, भूतकाल के दुख को सोच कर दुखी न हों एवं भविष्य के दुख की कल्पना करके दुखी न हों, क्योंकि भविष्य किसने देखा है सिर्फ वर्तमान को संवारें, इसी में जीएँ और खुश रहें यही जीवन का सकारात्मक पहलू है जिसे पूरी तरह से उपभोग कर जीवन का आनन्द लें और इस आनन्द को दूसरों के साथ भी बाटें ताकि चारों तरफ खुशी एवं आनन्द का माहौल बना रह सके । अपनी दिनचर्या में थोड़ा समय मनोरंजन के लिए भी अवश्य रखें क्योंकि मनोरंजन ही मानसिक भोजन है एवं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मानसिक स्वास्थ्य अत्यन्त आवश्यक है । आशावादी

शेष पृष्ठ 95 पर

राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

''ग'' क्षेत्र''

पूर्व रेलवे महाप्रबंधक (राजभाषा) कार्यालय, 17, एन.एस.रोड, कोलकाता-700001

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति (क्षेरेराकास) की तिमाही बैठक दिनांक 19-12-2011 को महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे श्री जी.सी. अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री ए. के. सिन्हा ने उपस्थित सदस्यों को नए वर्ष की शुभकामनाएं दी और आशा प्रकट की कि सभी अपने कार्यक्षेत्र में दृढ़ता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ अग्रसर होंगे और पूर्व रेलवे में राजभाषा संबंधी उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर गतिशील रहेंगे। उन्होंने निम्नलिखित निर्देश भी दिए :–

(1) राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत कार्यालयों को अधिसूचित किया जाना एवं अधिसूचित कार्यालयों में जहां हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी नहीं हैं वहां हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों की तैनाती की जाए।

(2) हिंदी भाषा प्रशिक्षण के जनवरी सत्र के लिए कर्मचारियों को नामित करें। ध्यातव्य है कि अगले सत्र से रेल मुख्यालय में हिंदी भाषा का प्रशिक्षण कंप्यूटर पर होगी एवं परीक्षाएं ऑन-लाइन होंगी।

(3) हिंदी कुंजीयन प्रशिक्षण : रेल में कार्यरत आशुलिपिकों/टंककों और लिपिक ग्रेड-II को जो हिंदी टंकण का कार्य जानते हैं उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिलाया जाए।

महाप्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष ने कहा कि महामहिम राष्ट्रपति ने भारतीय संविधान के अनुसार हमें मुख्यत: दो कार्य–पहला, रेल का समग्र परिचालन, उन्नयन और दूसरा कार्य–राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु नियुक्त किया है। मैं चाहूँगा कि आपके सहयोग से हम इस वर्ष एवं आने वाले वर्षों में इसका शत-प्रतिशत अनुपालन करेंगे। महाप्रबंधक महोदय ने निम्नांकित निर्देश भी दिए :

(1) रेलवे बोर्ड का यह निदेश है कि सभी विभाग एक-एक मास्टर फोल्डर बनाएं, इसमें धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले मूल पत्रों को रखें और उसे बैठकों में प्रस्तुत करें।

(2) रेल में हिंदी के काम-काज को जोर जबरदस्ती से नहीं कराया जा सकता है, इसके लिए प्रोत्साहन पुरस्कार योजना लागू है। इन पुरस्कार योजनाओं के तहत पात्र कार्मिकों को पुरस्कृत करने के कार्य में तेजी लाई जाए।

(3) हिंदी में प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया जाए। यह भी ध्यान दें कि कार्यशालाओं में प्रशिक्षित कार्मिकों को अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाए।

(4) रेल में मूल रूप से जारी होने वाले पत्रों को वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिंदी में जारी करने का हर प्रयास किया जाए।

(5) कई मंडलों/कारखानों/स्टेशनों आदि में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित नहीं हो रही हैं। कृपया बैठकें नियमित आयोजित की जाएं।

मंडल रेल प्रबंधक पूर्व रेलवे मालदा

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मालदा की वर्ष 2012 की पहली बैठक दिनांक 21-3-2012 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

समिति के अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक ने सभी शाखा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज हिंदी विश्व की नं. 1 या 2 भाषा बनने की ओर अग्रसर है। आने वाले वर्षों में यह विश्व की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा बन जाएगी। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ा है । कंप्यूटर के प्रोग्राम भी अब हिंदी में आने लगे हैं। हिंदी का शब्दकोश वृहत हो चला है। अनुवाद की जटिलता को सूचना प्रौद्योगिकी ने काफी हद तक कम कर दिया है। इंटरनेट के माध्यम से यह अब सुलभ हो चला है। हिंदी का शब्दकोश नेट पर ऑनलाइन उपलब्ध है जिसकी सहायता से अनुवाद कार्य सरलता से हो सकता है। डायनेमिक फाण्ट्स भी आ गए हैं जिनकी सहायता हम ले सकते हैं। उन्होंने आग्रह किया कि बदलते परिवेश में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हिंदी के प्रयोग में अधिकाधिक करें। मालदा मंडल विविधताओं वाला मंडल है इसमें तीन राज्य और 8 जिले समाहित हैं। राजभाषा के प्रसार में भाषायी विविधता के कारण रुकावटें आएंगी लेकिन उन्हें पार कर हमें आगे बढ़ना है। हमारा फर्ज है कि हम हिंदी को तब्ज्जो दें तथा अपने अंतर्गत अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने निदेश दिया कि गर्मी की छुट्टी के दौरान बच्चों की चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित की जाए ।

प्रधान कार्यालय, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद

दक्षिण मध्य रेलवे के प्रधान कार्यालय, सिकंदराबाद में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 134वीं बैठक श्री जी.एन. अस्थाना, महाप्रबंधक/दक्षिण मध्य रेलवे की अध्यक्षता में दिनांक 12-12-2011 को 16.00 बजे महाप्रबंधक सभागृह में संपन्न हुई ।

उप-महाप्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती मंगला अभ्यंकर ने-दक्षिण मध्य रेलवे पर पिछली तिमाही के दौरान हुई राजभाषा संबंधी गतिविधियों के बारे में जानकारी दी ।

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक श्री महेश चंद्र ने उपने संबोधन में सभी विभागाध्यक्षों और मंडलों के सदस्यों से अनुरोध किया कि संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों को ध्यान में रखते हुए हिंदी की कार्यान्वयन की सभी मदों पर विशेष ध्यान दिया जाए । उन्होंने प्रधान कार्यालय के विभागों सहित सभी मंडलों और कारखाने के प्रतिनिधियों से वेबसाइट की सामग्री अनिवार्य रूप से द्विभाषिक रूप में सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

अध्यक्ष तथा महाप्रबंधक ने सभी का स्वागत करते हुए दक्षिण मध्य रेलवे पर राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न मनोरंजक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के लिए राजभाषा संगठन को बधाई दी उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस रेलवे पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में अच्छे प्रयास हो रहे हैं और यहां के अधिकांश अधिकारी और कर्मचारीगण हिंदी में काम करते हैं। उन्होंने प्रधान कार्यालय सहित सभी मंडलों और कारखानों में हिंदी के कार्य के लिए अनुकूल वातावरण बनाने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन पर जोर दिया। उन्होंने दक्षिण मध्य रेलवे की वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री द्विभाषिक रूप में सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया। रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री सैयद हामिद अली ने अपने संबोधन में कुछ सुझाव दिए, जिनमें यूनिकोड के प्रयोग के लिए कार्यशाला का आयोजन, पुस्तकालयों की उपयोगिता पर ध्यान देना। वेबसाइट का द्विभाषीकरण आदि मुख्य थे ।

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 24वीं बैठक श्री महेशचंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी/दक्षिण मध्य रेलवे की अध्यक्षता में दिनांक 15-12-2011 को 15.30 बजे भंडार नियंत्रक सभागृह में संपन्न हुई ।

बैठक के प्रारंभ में उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती मंगला अभ्यंकर समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी तथा सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हर तिमाही में एक बार आयोजित इस बैठक में प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों और यूनिटों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की जाती है और विभिन्न मदों में प्रगति की दृष्टि से आवश्यक निर्णय लिए जाते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित बैठकों में लिए गए निर्णयों पर कार्रवाई करने की जिम्मेदारी भी मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों की है, क्योंकि राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य देखने के लिए हर विभाग/यूनिट में संपर्क अधिकारी के रूप में इन्हें नामित किया गया है। अत: सभी सदस्य राजभाषा कार्यान्वयन की मदों पर सक्रिय होकर कार्रवाई करें, ताकि वे अपने-अपने विभाग की स्थिति अच्छी बनाए रख सकें।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस दिशा में उनका सहयोग प्राप्त होगा।

इसके बाद मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक श्री महेश चंद्र ने अपने संबंधन में सितंबर के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी में सराहनीय कार्य के लिए इस कार्यालय के दो अधिकारियों को रेल मंत्री राजभाषा पदक से सम्मानित किया गया है। उन्होंने सदस्यों से कहा कि संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों को ध्यान में रखते हुए हिंदी की कार्यान्वयन की सभी मदों पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने वेबसाइट की सामग्री अनिवार्य रूप से द्विभाषिक रूप में सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना सबकी जिम्मेदारी है। अत: कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए सदस्यों द्वारा ठोस कार्रवाई अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि सभी विभागों में विभागीय बैठकों का अनिवार्य रूप से आयोजन किया जाए।

इसके बाद, बैठक की मानक कार्यसूची की मदों पर विस्तार से चर्चा की गई। तत्पश्चात् सदस्यों से सुझाव व आश्वासन लिए गए।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, विशाखापत्तनम-II आयुक्तालय का कार्यालय उत्पाद शुल्क भवन, पत्तन क्षेत्र विशाखापत्तनम-530035

वर्ष 2011-12 के लिए केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक विशाखापत्तनम-II, आयुक्तालय सभाकक्ष में 19-3-2012 को 11.00 बजे आयुक्त, सुश्री आर. शकुंतला की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।

अध्यक्षा ने निर्देश दिया है कि सभी खंड के सभी रूपों और रिपोर्ट, जो नियमित कर रहे हैं, अग्रेषण पत्र द्विभाषी बनाया जाए तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाने का अध्यक्षा ने सुझाव दिया है कि ईएल, सीएल, जीपीएफ आवेदन प्रपत्र, वेतन निकल पत्र, अधिनिर्णयन आदेश की प्रस्तावना, विभिन्न मंजूरी आदेश, आदि द्विभाषी होना जाना चाहिए। अध्यक्षा ने निर्देश दिया है कि केवल द्विभाषी पत्र कार्यालय में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। अध्यक्षा ने सभी अनुभाग प्रमुखों को निर्देश दिया है कि सभी नियमित प्रारूपों व अग्रेषण पत्रों को द्विभाषी लगाया जाना चाहिए ताकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके ।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग

राज्य कार्यालय, पोस्ट बाक्स नं. 362, एम.जे. रोड, गांधी भवन, हैदराबाद-500 001

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, राज्य कार्यालय, हैदराबाद की वर्ष 2011-12 की चतुर्थ तिमाही की 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक' दिनांक 21-3-2012 पूर्वाह्न 11.00 बजे संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता उप निदेशक (प्र) डॉ. एम. ए. खुद्दुस जी ने की।

अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों को निदेश दिया कि मूल प्रत्राचार के संबंध में सभी निदेशालयों को भेजे जाने वाले पत्रों के व्याख्या पत्र हिंदी में ही होने चाहिए जिसके लिए एक निर्धारित फार्मेट भी कार्यालय में उपलब्ध है। हिंदी में लिखे जाने वाली टिप्पणियों की संख्या के संदर्भ में अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों को निदेश दिया कि हिंदी में लिखे जाने वाले टिप्पणियों की संख्या को और बढ़ाया जाना चाहिए तथा इस संदर्भ में आवश्यक पड़ने पर कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की सेवाओं को भी लिया जा सकता है।

सभी सदस्यों को संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण को गंभीरता से लेने को कहा। उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के बारे को उपस्थित सभी सदस्यों को अवगत कराया।

पावरग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि., उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, जम्मू

उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, क्षेत्रीय मुख्यालय की 42वीं बैठक श्री एस.सी. सिंह, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 20 दिसम्बर, 2011 को 4.30 बजे (अपराह्न) कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई।

क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू एवं इसके अंतर्गत विभिन्न कार्यालयों में की जा रही राजभाषा विषयक गतिविधियों और प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा

चित्र समाचार

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय केरल और लक्षदीप द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा में पुरस्कार प्रदान करते हुए उप महानिदेशक ब्रिगेडियर सी संदीप कुमार, वी.एस.एम. ।

नाईपर (मोहाली) में आयोजित हिंदी कार्यशाला में विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए संस्थान के संकायगण ।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम कोलकाता में हिंदी दिवस समारोह में भाग लेते अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक श्री जे. सी. जेना (दाएं से प्रथम) तथा संभाषण देते हुए चिन्मय बोस, (निदेशक वित्त)।

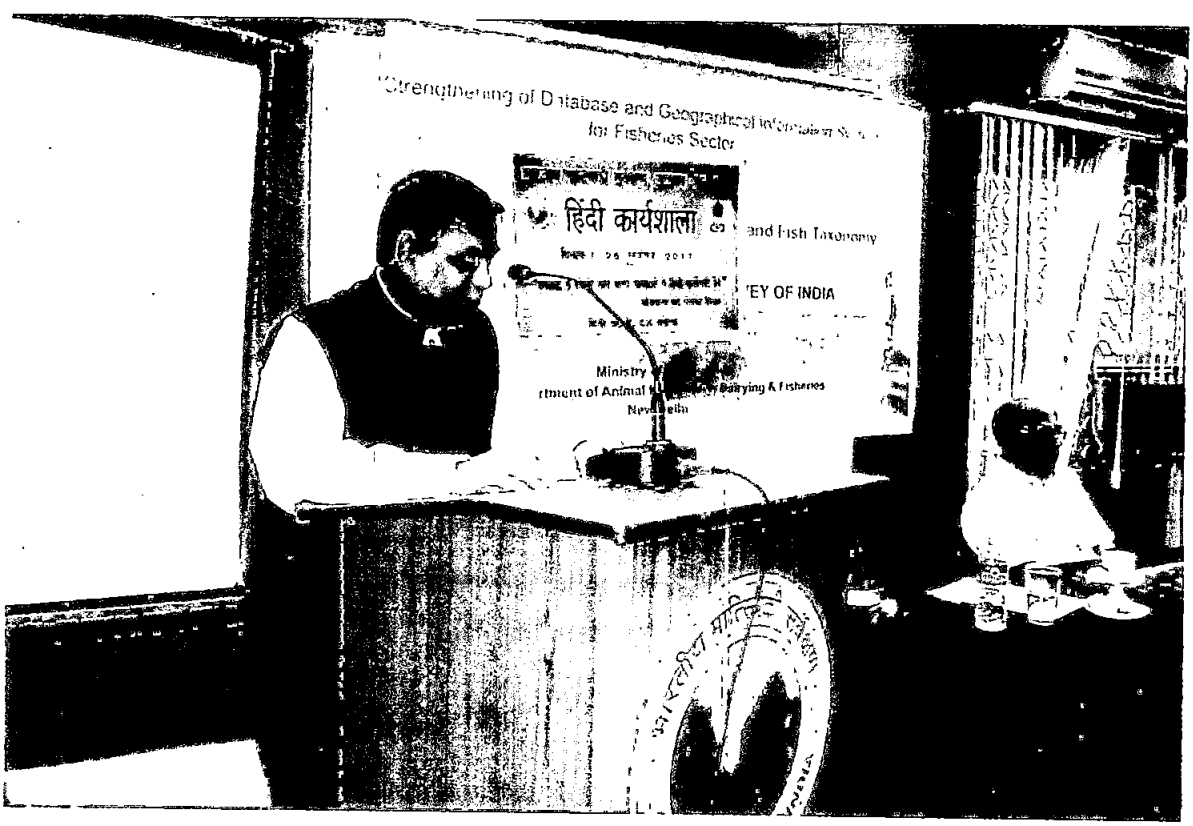

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव बेस, गोवा में संपन्न हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए अतिथि वक्ता श्री प्रमोद मोहन जौहरी, महाप्रबंधक (प्रशा. व कार्मिक) गोवा शिपयार्ड लि. वास्को।

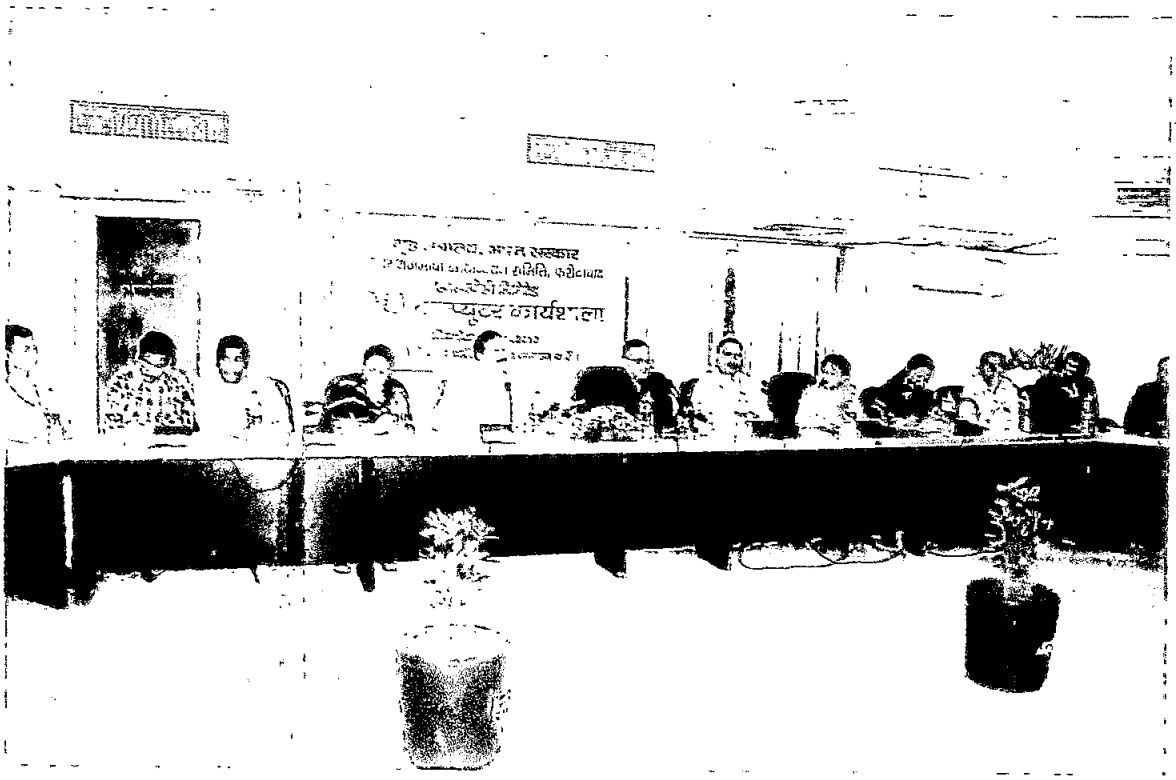

नराकास फरीदाबाद द्वारा आयोजित 'हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला' का एक दृश्य ।

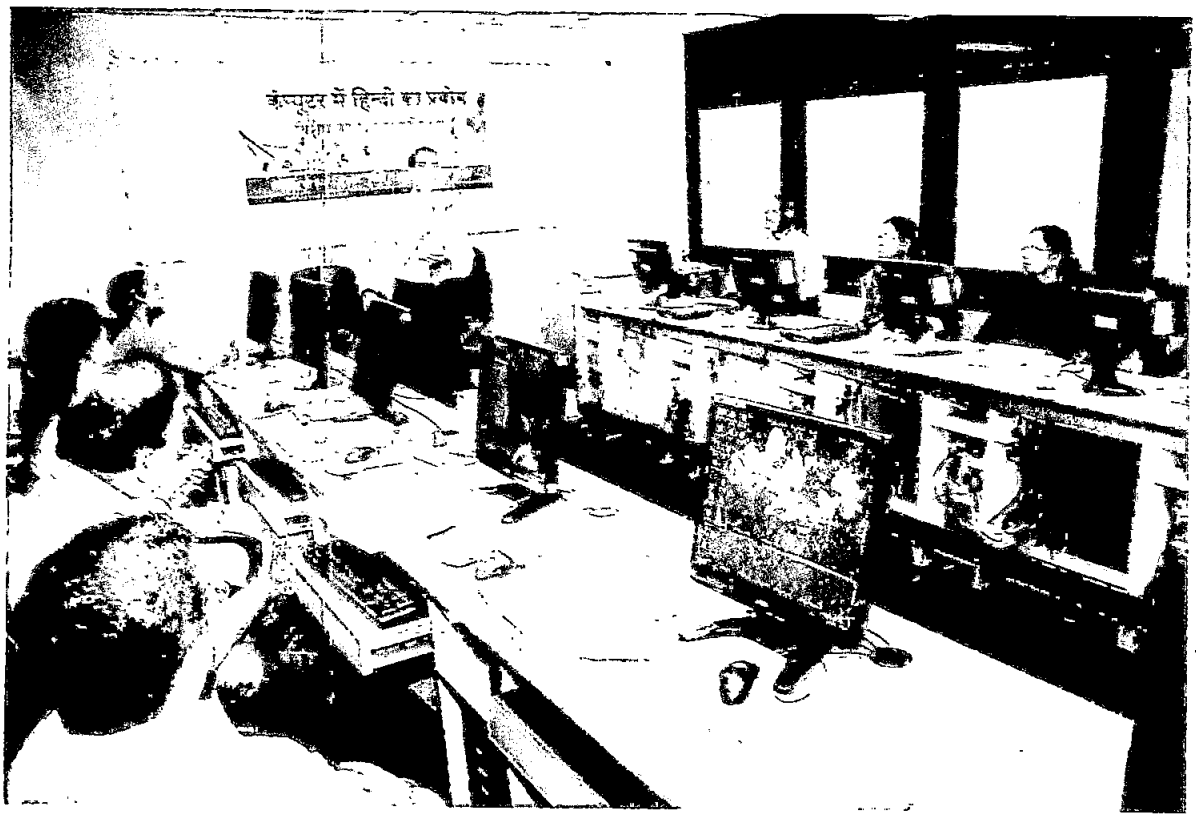

कार्पोरेशन बैंक, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय मंगलूर द्वारा आयोजित कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग विशेष कार्यशाला प्रशिक्षण का एक दृश्य ।

अंबाला रेल मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 20-3-2012 को आयोजित तिमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार सांघी ।

पश्चिम मध्य रेल मंडल कोटा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य ।

दूरसंचार जिला गुलबर्गा में आयोजित हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार समारोह की एक झलक ।

उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर में आयोजित 'हिंदी कार्यशाला' का एक दृष्य ।

एन टी पी सी लि. दादरी में 18-11-2011 को संपन्न हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए अपर महाप्रबंधक (इंधन प्रबंध) श्री दिनेश कुमार एवं फैक्टरी तथा श्री राकेश कुमार, उप निदेशक (कार्यान्वयन) उत्तर गाजियाबाद ।

कर्षण मशीन कारखाना, नासिक रोड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 31-12-2011 को समाप्त तिमाही बैठक दिनांक 21-03-2012 को मुख्य कारखाना प्रबंधक, श्री आर. पी. शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

नराकास बालाघाट की बैठक में श्री देवाशीष पाल भाषण देते हुए ।

आकाशवाणी जमशेदपुर द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह की एक झलक ।

आकाशवाणी, जयपुर में आयोजित संयुक्त हिंदी कार्यशाला में मंचासीन अतिथिगण एवं संबोधित करती हुई श्रीमती सस्मिता दास, हिंदी अनुवादक ।

नराकास पुणे की बैठक में पुरस्कार प्रदान करते हुए मरेप्र श्री विशाल अग्रवाल एवं वरिष्ठ राजभाषा श्री विपिन पवार ।

विभाग द्वारा जारी वर्ष 2011-12 के वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की गई एवं भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर जोर दिया गया।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रावधानों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति का निरीक्षण करने हेतु दिनांक 16 नवम्बर, 2011 को पावरग्रिड, मनीमाजरा कार्यालय (चण्डीगढ़) का श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा हिंदी संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मनीमाजरा कार्यालय में राजभाषा संबंधी गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए अब तक किए गए प्रयासों का विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर निर्धारित प्रश्नावली भर कर श्री सिंह को प्रस्तुत की गई। श्री सिंह ने पावरग्रिड, मनीमाजरा कार्यालय में हिंदी संबंधी कार्यों को देखते हुए प्रसन्नता व्यक्त की एवं हिंदी में कार्य बढ़ाने हेतु आवश्यक सुझाव भी दिए।

दिनांक 22 नवम्बर, 2011 को सोनीपत उपकेंद्र में श्रीमती सी. डी. मलिक, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा राजभाषा नीति के अनुपालन में किए जा रहे कार्यों से संबंधित गतिविधियों की समीक्षा हेतु निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सोनीपत कार्यालय में हिंदी संबंधी गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु अब तक किए गए प्रयासों का विवरण प्रस्तुत किया।

आकाशवाणी, कटक

डॉ. सुधा मिश्र, केंद्र निदेशक, की अध्यक्षता में दिनांक 10 जनवरी, 2012 को अपराह्न 3.30 बजे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संपन्न हुई। 11 अक्तूबर, 2011 को हुई तिमाही बैठक के कार्यावृत्त को सर्वसम्मति से पुष्टि के बाद विचार विमर्श किया गया।

अक्तूबर-दिसम्बर, 2011 तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। हिंदी अधिकारी ने बताया कि मूल पत्राचार की स्थिति में प्रगति हुई है, फिर भी हम निर्धारित लक्ष्य से पीछे हैं । अध्यक्ष महोदया ने सभी अनुभाग प्रधानों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक पत्र हिंदी में भेजें। फाइलों में हिंदी नोटिंग को और अधिक बढ़ाने के लिए उन्होंने सुझाव दिया कि कार्यालयाध्यक्ष एवं निदेशक अभियांत्रिकी भी फाइलों में नोटिंग हिंदी में करेंगे जिससे कार्यालय के सभी कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी।

"ख" क्षेत्र

कार्यालय मुख्य कारखाना प्रबंधक, कर्षण मशीन कारखाना, नाशिक रोड-422101 (महाराष्ट्र)

अध्यक्ष महोदय जी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे हिंदी में लिखते समय सरल तथा सुबोध भाषा का प्रयोग करें। कर्मचारियों को भाषा समझने में कोई कठिनाई न हो।

उन्होंने यह भी बताया कि संसदीय समिति सरकारी कार्यालयों के हिंदी कामकाज संबंधी निरीक्षण करती है, जिसमें यह देखा जाता है कि राजभाषा के अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन के अंतर्गत आने वाले कागजात द्विभाषी में जारी किए गए हैं या नहीं। यदि राजभाषा के अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन पूर्णत: नहीं किया गया तो संबंधित कर्मचारियों/अधिकारियों पर समुचित कार्यवाही भी की जा सकती है।

मुख्यालय के दिए गए दिशा-निर्देश के अनुसार ही उनके आदेशों का अनुपालन करें। अपने भाषण में कहा कि सभी सेक्शनों द्वारा यह सुनिश्चित करें कि आप जो कार्य करते हैं, उनकी सत्यता के आधार पर आंकड़े दिए जाएं।

कारखाना में प्रोत्साहन पुरस्कार संबंधी जानकारी फ्लेक्स बोर्ड पर लगाई गई है। जिसका उपयोग अधिक से अधिक करें। कारखाना में जो फॉर्म रूटीन प्रकार के हैं उसे द्विभाषी या हिंदी में बनाए जाए।

पश्चिम रेलवे, कार्यालय मुख्य कारखाना प्रबंधक, दाहोद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति कारखाना दाहोद की सितंबर, 2011 को समाप्त तिमाही की बैठक मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री संजय अग्रवाल जी की अध्यक्षता में दिनांक 30-11-2011 को संपन्न हुई। बैठक में 30-9-2011 को समाप्त तिमाही अवधि में हुई प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी सदस्यों का

स्वागत करते हुए अध्यक्षक जी ने कहा कि पिछली बैठक में जिन मदों पर ध्यान देने के लिए कहा गया था उनमें सुधार हुआ है तथा सुधार की और गुंजाईश है। प्राप्त जानकारी के अनुसार दाहोद कारखाने में राजभाषा का कार्य संतोषजनक है इस संबंध में गृह मंत्रालय, से प्रेक्षक के रूप में दिनांक 28-9-2011 को आयोजित नराकास की दूसरी बैठक के फलस्वरूप पधारी अनुसंधान अधिकारी श्रीमती साधना त्रिपाठी, ने कारखाने एवं संबद्ध कार्यालयों की प्रगति का जायजा भी लिया तथा हो रहे कार्य की सराहना की । राजभाषा अनुभाग के अथक प्रयासों से दाहोद कारखाने की गृह पत्रिका रेल राजभाषा सृजना के तिमाही अंक का विमोचन गत माह किया जा चुका है। जिसकी प्रतियां क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान सभी उपस्थित सदस्यों को भी वितरित की गईं। मैं पत्रिका के संपादन से संबंधित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूं। फिर भी मैं चाहूंगा कि निम्नलिखित बिन्दुओं पर और ध्यान देने की आवश्यकता है ।

1. कंप्यूटरों में आकृति विस्तार/आकृति लोड कर दी गई है। अत:कंप्यूटरों में अधिक से अधिक कार्य सरल एवं आम बोलचाल की हिंदी भाषा में किया जाए। फाईलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां तथा अधिकारियों द्वारा आदेश हिंदी में ही दिए जाएं। एवं पास, पीटीओ एवं छुट्टियों के आवेदन तथा यात्रा भत्ता एवं फुटकर बिल आदि हिंदी में ही प्रस्तुत किए जाएं ।
2. सभी अधिकारी अपना दौरा कार्यक्रम हिंदी में ही बनाएं तथा निरीक्षण रिपोर्ट हिंदी में तैयार करें, और इसमें निरीक्षित कार्यालय में हिंदी प्रगति के संबंध में एक टिप्पणी अवश्य लिखें।
3. कारखाने से निकलने वाली रेल राज़भाषा सृजना के लिए तकनीकी गैर तकनीकी, कहानी, निबंध कविताएं आदि समय पर उपलब्ध कराएं जिससे पत्रिका का संपादन समय से हो सके।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि संघ की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है। इस संकल्पना को तभी मूर्तरूप दिया जा सकेगा जब हम अधिकाधिक लोगों को हिंदी के साथ जोड़कर हिंदी में कार्य करने की भावना जागृत करेंगे। इस जागृति में आप सब का सहयोग अपेक्षित है। इस अवसर पर सदस्य सचिव एवं उप मुख्य परियोजना प्रबंधक (बिजली) श्री दिनेश जैन वार्षिक कार्यक्रम के तहत दिए दिशा-निर्देशों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया। अंत में सह सचिव एवं राजभाषा अधीक्षक श्री वी. पी. शर्मा ने आभार व्यक्त कर बैठक समाप्ति की घोषणा की।

सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय आईस हाउस, ई.डी.सी. कांप्लैक्स, पाटो प्लाजा, पणजी-गोवा

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय पणजी गोवा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 112वीं तिमाही बैठक गुरुवार दिनांक 28-12-2011 को सभा भवन में अपराह्न 4.30 बजे माननीय आयुक्त श्री वी.पी.सी. राव की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।

आयुक्त महोदय ने बैठक को संबोधित करते हुए तथा अन्य आयुक्तालयों में अपने कार्य अनुभव को व्यक्त करते हुए कहा कि जहां तक राजभाषा हिंदी के प्रयोग का प्रश्न है, इस आयुक्तालय में हिंदी कार्य की मात्रा व माहौल दोनों बड़ा उत्साहवर्द्धक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह माहौल आगे भी बरकरार रहे इसके लिए पूर्वत सामूहिक सहयोगपूर्वक हिंदी के प्रयोग के प्रति सकारात्मक रहा जाए। अध्यक्ष महोदय ने आगे कहा कि इस समिति की तिमाही बैठक समय से कर लिया जाए। ताकि बैठक में लिए गए निर्णयों पर समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करने में सुविधा हो ।

आयकर आयुक्त कार्यालय, आयकर भवन, अमृतसर-147001

पटियाला प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक श्री कुलविन्दर सिंह, आयकर आयुक्त, पटियाला की अध्यक्षता में दिनांक 2-11-2011 को प्रात: 11.30 बजे आयोजित की गई। बैठक में पटियाला प्रभार के पटियाला संगरूर रेंज तथा गोविन्दगढ़ के आयकर संयुक्तों, आयुक्तों सहित सभी आयकर अधिकारियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई एवं 30-9-2011 को समाप्त तिमाही की रिपोर्टों की समीक्षा की गई तथा

उत्तर-पश्चिम क्षेत्र रा.भा. समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों पर विचार-विमर्श किया गया। चर्चा के बाद निम्नलिखित निर्णय लिए गए ।

सभी रेंजों से रिपोर्टों की प्रतियां नियमित रूप में मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय को भी अवश्य भेजी जाएं ताकि इन रिपोर्टों की समीक्षा करके उनकी कमियों को दूर किया जा सके।

सभी रेजों/आयकर अधिकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की नियमित बैठकें आयोजित की जाएं एवं इनका रिकार्ड रखा जाए तथा इनकी कार्यवाही की प्रतियां आयकर आयुक्त कार्यालय एवं सहायक निदेशक (रा.भा.) को भेजी जाएं ।

यदि किसी कार्यालय में अभी भी अंग्रेजी की कोई मोहर प्रयोग में लाई जा रही है तो यह तुरंत हटा ली जाए। केवल द्विभाषी मोहरें ही प्रयोग में लाई जाएं। यह सुनिश्चित करना मोहर बनवाने वाले अधिकारी तथा उनका प्रयोग करने वाले अधिकारियों की होगी ।

अधिकतर नोटिस द्विभाषी हैं। अत: इन पर निर्धारिती का नाम हिंदी में लिखकर इन्हें हिंदी पत्राचार में शामिल किया जाए तथा पृष्ठांकन (Endorsement) का सारा कार्य केवल हिंदी में ही किया जाए ।

धारा 132(8) एवं 131(3) के अधीन लेखाबहियों को रोकने अथवा वापस करने संबंधी आदेश, धारा 80जी के अधीन आदेश इत्यादि केवल हिंदी में ही जारी किए जाएं। इनसे संबंधित प्रस्तावों के अग्रेषण पत्र भी हिंदी में ही भेजे जाएं ।

तिमाही समाप्त होने के बाद सभी आयकर अधिकारी पहली तारीख को हिंदी की रिपोर्टें अपनी रेंज को भेजें। रेंज से रिपोर्टें 3 तारीख को आयकर आयुक्त कार्यालय को भेजी जाएं और 5 तारीख को आयकर आयुक्त कार्यालय से मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय को रिपोर्ट भेजी जाएं ।

हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी सुनिश्चित करें कि रिपोर्टों के आंकड़े ठीक भरे गए हैं। रिपोर्ट का कोई कालम न तो खाली छोड़ा जाए और न ही अधूरा भरा जाए ।

पत्राचार के कालम में रिटर्नों की पावती संख्या तथा धारा 143(1) के अधीन रिटर्नों की प्रोसैसिंग के आंकड़े भी शामिल किए जाएं। ये आंकड़े केप से लिए जाएं। प्रोसैसिंग की मोहर हिंदी में लगाकर इन्हें हिंदी पत्राचार के आंकड़ों में शामिल किया जाए ।

रेंजों की रिपोर्टों पर रेंज प्रमुखों द्वारा ही हस्ताक्षर किए जाएं और यह सुनिश्चित किया जाए की आंकड़े ठीक प्रकार से भरे गए हैं।

''क'' क्षेत्र

कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 26-3-2012 को संपन्न हुई। इसमें 31-12-2011 को समाप्त तिमाही अवधि की समीक्षा की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, श्री आर. पी. निबारिया ने की।

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, श्री आर. पी. निबारिया ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हमने जिस मुकाम को हासिल कर लिया है, उस पर निरंतर बने रहने के लिए प्रत्येक तिमाही में अपने-अपने विभाग में राजभाषा समीक्षा बैठक आयोजित करें और इस पर नियमित रूप से निगरानी रखें, इससे जिन क्षेत्रों में अभी कमी रह गई है, उस पर भी सार्थक समीक्षा हो सकेगी और आगे चलकर उन क्षेत्रों में भी हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि मुख्यालय में जहां-जहां हिंदी ग्रंथालय हैं उसे सक्रिय किया जाए। इसे नियमित रूप से खोला जाए ताकि कर्मचारी इसका भरपूर लाभ उठा सकें। अधिकारीगण सवयं भी कभी-कभी इसकी जांच करें। ग्रंथालयी को इसके लिए सीधे जिम्मेदार बनाया जाए।

कार्यालय मंडल रेल प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल, कोटा

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की बैठक दिनांक 6-2-2011 को मंडल रेल प्रबंधक श्री एन. मधुसूदन

राव की अध्यक्षता में आयोजित हुई। उन्होंने बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि रेल कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग-प्रसार बढ़ाना हमारा दायित्व है। उन्होंने सदस्यों को आह्वान किया कि वे अपने-अपने विभागों में चैक प्वाइंट को सक्रिय करें तथा यह सुनिश्चित करें कि हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर निश्चित रूप से हिंदी में किया जाए। आपने यह भी कहा कि धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी होने वाले कागजात निश्चित रूप से द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं। अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री आर.पी. जींगर ने सदस्यों को निदेश दिया कि वे अपने हस्ताक्षर से हिंदी के प्रयोग-प्रसार की रपट भेजें। बिना शाखा अधिकारी के हस्ताक्षर से हिंदी की रपट राजभाषा विभाग द्वारा स्वीकार नहीं की जाएगी।

मंडल कार्यालय उत्तर रेलवे, अंबाला छावनी

अंबाला मंडल पर दिनांक 20-3-2012 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार सांधी द्वारा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक ने मंडल की सभी शाखाओं में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में हो रही प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने मंडल के सभी अधिकारियों को राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2011-12 में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप सभी मदों में हिंदी का प्रयोग एवं प्रसार करने के लिए कहा । अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान की मूल भावना के अनुसार सरकारी कामकाज आम जनता की भाषा में करने से जहां रेल प्रशासन के विकास में गति आएगी वहीं प्रशासन की कार्य-प्रणाली में भी पूर्ण पारदर्शिता आएगी।

इस बैठक में हिंदी में मूल पत्राचार करना, हिंदी में टिप्पण, हिंदी में डिक्टेशन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी खरीद आदि संबंधी विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव डॉ. सुशील कुमार शर्मा ने मंडल की शाखाओं में हिंदी के प्रयोग संबंधी आंकड़ों को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया और राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2011-12 में मंडल के लिए राजभाषा के प्रयोग संबंधी निर्धारित लक्ष्यों के बारे में मंडल के सभी अधिकारियों को अवगत कराया। इस बैठक में मंडल के सभी शाखाओं के अधिकारियों ने सहभागिता की। बैठक के दौरान श्री प्रमोद कुमार, अपर मंडल रेल प्रबंधक ने समिति के सभी शाखा अधिकारियों को राजभाषा नियमों के अनुसार सभी मदों में राजभाषा का प्रयोग करने का आग्रह किया ।

शहरी विकास मंत्रालय, संपदा निदेशालय, निर्माण भवन, नई दिल्ली

संपदा निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 124वीं बैठक संपदा निदेशक, श्री एम.के. गर्ग की व्यस्तता के कारण दिनांक 22 मार्च, 2012 को अपराह्न 4.00 बजे संपदा निदेशालय के सम्मेलन कक्ष में श्री अशोक कुमार, संपदा उपनिदेशक (स्था.) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के प्रारंभ में सहायक निदेशक (राजभाषा) ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। तदुपरांत पिछली बैठक (123वीं) के कार्यवृत्त की पुष्टि के पश्चात् 31-12-2011 को समाप्त तिमाही में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई।

चर्चा में भाग लेते हुए उप निदेशक (रा.भा.) ने बताया कि हिंदी सरल और सहज भाषा है। यद्यपि शुरुआत में हिंदी के प्रयोग में कुछ झिझक हो सकती है तथापि इसकी शुरुआत हम फाइलों में छुट-पुट टिप्पणियों से कर सकते हैं। धीरे-धीरे बड़ी टिप्पणियां लिखी जा सकती हैं। हालांकि सभी रजिस्टरों में प्रविष्टियां हिंदी में करनी अपेक्षित हैं, तथापि इस पहल की शुरुआत के रूप में हमें हाजिरी रजिस्टर में प्रविष्टियां अनिवार्यत: हिंदी में करनी चाहिए।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई

श्री दिलीप कुमार पाण्डेय, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग के मुख्य आतिथ्य, श्री मानस कुमार बिंदु, कार्यकारी मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र की अध्यक्षता एवं श्री विनोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), मध्य क्षेत्र, भोपाल के विशिष्ट

आतिथ्य में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 100वीं बैठक 26 मार्च, 2012 को सी.ई.ओ. सभागार, इस्पात भवन में सम्पन्न हुई। कार्यसूची के बिंदुओं पर मदवार चर्चा की गई जिसकी प्रस्तुति हाईटैक रही।

मुख्य अतिथि श्री दिलीप कुमार पाण्डेय ने अपने सारगर्भित सम्बोधन में कहा कि राजभाषा बैठक की आप लोगों ने शतक बनाई है इसके लिए बधाई। हिंदी को राजभाषा के रूप में संविधान में प्रावधान किया गया है जिसके तहत हर भारतीय नागरिक को अपने कामकाज में हिंदी का भरसक प्रयोग करना चाहिए। यह हमारा नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी देश की पहचान तीन चीजों से होती है जिसमें राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान एवं राष्ट्रभाषा प्रमुख हैं। आज दुनिया में वही राष्ट्र विकास के नित नए सोपान गढ़ रहे हैं, जिसने अपनी भाषा को माध्यम बनाकर कार्य किया है जैसे जापान, जर्मनी, चीन, इजराइल आदि प्रमुख देश हैं। जिसमें जनता की भागीदारी अधिक से अधिक हो ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो केवल हिंदी ही है। भिलाई बिरादरी द्वारा उत्पादन एवं अन्य क्षेत्रों में नए-नए कीर्तिमान गढ़े हैं उसी भांति हिंदी में भी हो। उन्होंने आगे कहा कि मैंने प्लांट भ्रमण में देखा कि पूरा संयंत्र हिंदीमय है अधिकांश बोर्ड हिंदी में ही लिख गए हैं जो यहां के कार्मिकों के हिंदी प्रेम को दर्शाता है। कंप्यूटर हिंदीमय वातावरण तैयार करने में सहायक है। उन्होंने अपील की कि आज संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करें।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री मानस कुमार बिंदु ने कहा कि हिंदी हमारी ऑफिस के कामकाज की भाषा है, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। भिलाई इस्पात संयंत्र वर्ष 1991 में भारत सरकार द्वारा हिंदी में कामकाज करने के लिए अधिसूचित संस्थान घोषित कर दिया गया है तब से हमने हिंदी को अपने संयंत्र के उत्पादन का हमसफर के रूप में अपना लिया हैं। ई-बिजनेस के क्षेत्र में भिलाई संभवत: पहला औद्योगिक संस्थान है, जिसने ई.आर.पी. जैसे जटिल तकनीक में भी हिंदी को लागू किया है । इसके लिए मैं अपनी टीम को बधाई देता हूं। आज तकनीकी विषयों पर हिंदी में पुस्तक लेखन का भी कार्य किया गया है जिसमें सिंटर प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, विद्युत प्रशिक्षण, मैनुअल ई.एम.ई. ट्रांसमिशन सिस्टम पुस्तिका तथा सुरक्षा मैनुअल आदि प्रमुख हैं जो सराहनीय है।

श्री मधुरेंद्र अखौरी, कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने अपने संबोधन में कहा कि संयंत्र के लिए हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में आज का दिन अहम है, क्योंकि हमने इस दिशा में अनेकों कीर्तिमान कायम करते हुए 100वीं बैठक का आयोजन किया है। हम हिंदीभाषी राज्य 'क' क्षेत्र में स्थित हैं। इस लिहाज से हमें अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में ही करना है। इस दिशा में भिलाई इस्पात संयंत्र बिरादरी ने कई मिशाल कायम किए हैं। उन्होंने आगे कहा कि संयंत्र के अंदर का कामकाज पूर्णत: तकनीकी प्रकृति का है, फिर भी शिफ्ट रिपोर्ट, ऑनलाइन उत्पादन प्रतिवेदन एवं अन्य पत्र व्यवहार हिंदी में ही किए जाते हैं। संयंत्र बिरादरी अपनी पूरी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी से हिंदी को उत्पादन की भाषा के रूप में अपनाकर अपनी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति को मुखरित किया है।

श्री विनोद कुमार शर्मा, उप निदेशक(कार्यान्वयन), मध्य क्षेत्र, भोपाल ने अपने संबोधन में कहा कि देश के विकास में भाषा की अहम् भूमिका रही है इसमें इस्पात उत्पादन रीढ़ की हड्डी है वहां हिंदी प्रयोग एक चुनौती है। आप तकनीकी क्षेत्रों में जो हिंदी प्रयोग कर ऐतिहासिक पहल की है इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

आकाशवाणी मथुरा

आकाशवाणी मथुरा की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित त्रैमासिक बैठक मास अक्तूबर-दिसंबर, 2011 की तिमाही हेतु, केंद्र के सभागार में दिनांक 8-12-2011, दिन गुरुवार को संपन्न हुई।

बैठक में केंद्र पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग की समीक्षा की गई। हिंदी के कार्यालयीय व्यवहार को संतोषजनक पाया गया। केंद्र पर लगभग शतप्रतिशत मूल कार्य हिंदी में हो रहा है। अन्य निर्धारित क्षेत्रों से पत्राचार निर्दिष्ट लक्ष्य से काफी ज्यादा प्रतिशत में चल रहा है।

बैठक में राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश प्रकाश गोस्वामी ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मथुरा की ओर से उपलब्ध कराया गया 'हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2011-2012 का वार्षिक कार्यक्रम' उपस्थित सदस्यों के समक्ष रखा। उक्त कार्यक्रम के सापेक्ष केंद्र श्रेष्ठता के साथ कार्य संपादन कर रहा है। श्री गोस्वामी ने सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 26 सितंबर, 2011 को परिचालित 'सरकारी कामकाज में सरल और सहज हिंदी के प्रयोग के लिए नीति निर्देश' विषयक परिपत्र को भी सदस्यों के संज्ञान हेतु पढ़कर सुनाया और सदस्यों से उनका अनुपालन करने का आग्रह किया।

केंद्र प्रमुख श्री यतीन्द्र चतुर्वेदी ने उद्घोषकों और कॉम्पेअरों के प्रशिक्षण हेतु उपलब्ध 'वाणी प्रशिक्षण' पुस्तिका को अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता रेखांकित की, जिस पर सभी सदस्य सहमत थे। केंद्र प्रमुख द्वारा राजभाषा के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने के आह्वान के साथ बैठक संपन्न हुई। राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश गोस्वामी ने बैठक में उपस्थित सदस्यों का आभार प्रकट किया।

आकाशवाणी, राजकोट

आकाशवाणी राजकोट की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन दिनांक 22-12-2011 को 15:30 बजे को कार्यालय प्रमुख श्री राजेश जैन, उप-महानिदेशक (अभियांत्रिकी), की अध्यक्षता में किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने समिति को संबोधित करते हुए बताया कि कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की जिम्मेदारी हम सबकी सामूहिक रूप से है। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 24-9-2011 को किया गया निरीक्षण इस बात का प्रमाण है कि हम समिति के सामने अच्छी प्रकार से अपना पक्ष रख सकें। मुझे इस बात का भी संतोष है कि हमारे कार्यालय में राजभाषा संबंधी कार्य सुचारू रूप से हो रहा है परंतु हमें इसमें और सुधार करने की जरूरत है ताकि इस प्रकार के निरीक्षण के लिए हम सुव्यवस्थित ढंग से तैयारी रख सकें। उन्होंने सभी सदस्यों से राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्य को गंभीरता से लेने की भी अपील की। इसके पश्चात् सदस्य सचिव को निर्देश दिया कि वे बैठक की आगे की कर्रवाई शुरु करें।

दूरदर्शन केंद्र, राजकोट

दूरदर्शन केंद्र के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 14-12-2011 बुधवार को दोपहर 12 बजे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की (अक्तूबर-दिसंबर, 2011) तिमाही बैठक श्री अनिल भारद्वाज उपनिदेशक (अभियांत्रिकी) और कार्यालय अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

सर्वप्रथम हिंदी अधिकारी ने समिति को राजभाषा के रूप में हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, संवैधानिक व्यवस्था, हिंदी प्रयोग के कार्यान्वयन संबंधी नियम-अधिनियमों के अनुपालन की और कार्यालय में हिंदी प्रयोग की अनिवार्यत की जानकारी दी।

अध्यक्ष महोदय ने निर्णय लिया कि विधिक या अपरिहार्य स्थिति में बिना प्रतीक्षा किए तुरंत भेजे जाने वाले पत्रों को छोड़कर बाकी सभी पत्र हिंदी में भेजे जाएं। मूलत: पत्र का मसौदा हिंदी में बनाकर सुधार हेतु हिंदी अधिकारी को दें। अगर कोई कठिनाई आए तो जारी करने से पूर्व हिंदी अधिकारी से हिंदी अनुवाद करवा लें। इस संबंध में हिंदी अधिकारी को कार्यालय आदेश जारी करने का निर्देश दिया।

राजभाषा विभाग एवं दूरदर्शन महानिदेशालय से प्राप्त राजभाषा नीति अनुपालनार्थ सभी आदेशों को हिंदी अधिकारी ने मदवाद पढ़कर सुनाया जिस पर बैठक में विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। इस संबंध में व हिंदी प्रयोग के लिए जांच-बिंदु बनाकर कार्यालय आदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं। अध्यक्ष महोदय जी ने इन सभी आदेशों पर गंभीरतापूर्वक उचित कार्रवाई करके स्वयं एवं अपने अधीनस्थ कार्यरत स्टाफ से पूरा-पूरा अनुपालन करने की समिति-सदस्यों से अपील की।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

'ग' क्षेत्र

गुवाहाटी

नराकास(कें.का.)गुवाहाटी की वर्ष 2011-2012 की छमाही बैठक दिनांक 29 मार्च, 2012 को 11.00 बजे (पूर्वाह्न में) नया आयकर भवन, क्रिश्चियन बस्ती, जी.एस. रोड, गुवाहाटी के प्रथम तल स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री आर. के. गुप्ता, भा.रा. से., मुख्य आयकर आयुक्त (सं. नि. प्रा.) पूर्वोत्तर क्षेत्र एवं अध्यक्ष, नराकास(कें.का.)गुवाहाटी ने की ।

श्री आर. के. गुप्ता, भा.रा. से.,मुख्य आयकर आयुक्त (सं. नि. प्रा.)पूर्वो क्षेत्र एवं अध्यक्ष, नराकास(कें.का.)गुवाहाटी ने बताया कि पिछली छमाही बैठक की अपेक्षा आज की बैठक में सभी कार्यालय के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया और खुलकर चर्चा की । लेकिन कुछ कार्यालयों से कार्यालय प्रमुख या उनके समकक्ष अधिकारी का अनुपस्थित रहने पर असंतोष व्यक्त किया और कहा कि चूँकि यह बैठक कार्यालय अध्यक्षों की है अत: बैठक की गरिमा एवं परिणामपरक चर्चा हेतु संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाओं का हवाला देते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अगली बैठक में कार्यालय प्रमुख स्वयं आएं । आवश्यकतानुसार वे राजभाषा प्रभाग के हिंदी अधिकारी या सहयोगी को अपने साथ ला सकते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी प्रशिक्षण के लिए नामित कर्मचारी प्रशिक्षण के अंत में ली जाने वाली परीक्षाओं में अवश्य बैठें तभी वर्ष 2015 तक प्रशिक्षण का लक्ष्य पूरा हो सकता है । प्रशिक्षण के बाद परीक्षा पास करने वाले कर्मचारियों को समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं में प्रशिक्षण दिलाकर उन्हें हिंदी में कार्य करने में सक्षम बनाया जा सकता है और लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

तृश्शूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तृश्शूर की47वीं बैठक 15-12-2011 के 3.00 बजे अपराह्न इस संस्थान के निदेशक महोदय श्री सव्यसाची पणिक्कश्शेरी (अध्यक्ष, तृश्शूर न रा का स) के अध्यक्षता में स्वर्ण जयंती कक्ष में संपन्न हुई ।

अध्यक्षीय उद्बोधन में, इस संस्थान के निदेशक महोदय एवं इस समिति के अध्यक्ष श्री सव्यसाची पणिक्कश्शेरी ने दैनिक सरकारी कार्य में हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं तदनंतर राजभाषा कार्यान्व्यन विषयक वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों पर दिया ।

समिति की सर्वप्रथम हिंदी पत्रिका "अरूणोदय" के प्रकाशन में उपसमिति के सदस्यों के महत्वप्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने अपेक्षा की कि प्रतिवर्ष इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाए । पत्रिका में प्रकाशनार्थ, लेख, चुटकुले, चित्र इत्यादि प्रदान करने वाले सभी को उन्होंने हार्दिक बधाई दी ।

वर्ष 2010-2011 के राजभाषा कार्यान्वयन विषयक वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई, तथा किसी प्रकार की कमी दृष्टिगोचर नहीं हुई । वर्ष 2011-12 के वार्षिक कार्यक्रम की कुछ प्रतियाँ क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचीन के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री पी. विजयकुमार द्वारा कुछ सदस्यों को वितरित की गई, तथा उन्होंने समस्त सदस्यों से अनुरोध किया कि इसमें निहित लक्ष्यों का भरपूर प्रयास करें । तथापि, सचिव महोदय ने अभिप्रेत किया कि यदि कार्यालयों के कुछ फॉर्म आदि यदि केवल अंग्रेजी में उपलब्ध हों, तो यह कार्यालय उसे द्विभाषी रूप में तैयार करके देने के लिए तैयार है।

श्री पी विजयकुमार ने 30-9-2011 को समाप्त अवधि की राजभाषा कार्यान्वयन विषयक अर्द्धवार्षिक रिपोर्टों की विस्तृत समीक्षा की उन्होंने निर्धारित प्रपत्र में अर्द्धवार्षिक रिपोर्टों की अनिवार्यत: प्रस्तुत करने पर जोर देते हुए, निम्नांकित बिंदुओं को नोट किया–

1. वार्षिक कार्यक्रम के तहत हिंदी पत्राचार के प्रतिशत को प्राप्त किया जाए।

2. फाइलों में हिंदी में टिप्पण तैयार किए जाएँ ।

3. समयद्धि कार्यक्रमानुसार हिंदी/हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण पूर्ण किया जाए ।

4. समस्त फॉर्म/कार्यविधिक साहित्य द्विभाषी रूप में तैयार किए जाएं ।

5. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन नियमितत: किया जाएं ।

6. हिंदी में मूलकार्य हेतु प्रोत्साहन योजना का कार्यान्वयन किए जाए । इस योजना में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या में अभिवृद्धि की जाए ।

7. धारा 3 (3) का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए ।

फरक्का

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरक्का (पश्चिम बंगाल) की तृतीय बैठक का आयोजन महाप्रबंधक (प्रभारी), एनटीपीसी, फरक्का एवं अध्यक्ष नराकास, फरक्का श्री कृष्ण कुमार शर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 29-11-2011 को प्रात: 11.30 बजे महाप्रबंधक सम्मेलन कक्ष प्रशासनिक भवन, एनटीपीसी, फरक्का में किया गया ।

अध्यक्ष महोदय ने बैठक को संबोधित करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों से आह्वान किया कि हमें राजभाषा हिंदी को अपने-अपने कार्यालयों में पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्यान्वित करना है । हिंदी प्रयोग के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान नराकास के इस मंच के माध्यम से करना है ।

इस बैठक में फरक्का नगर में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु कई निर्णय लिए गए, जिनमें एक महत्वपूर्ण निर्णय नराकास की हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से संबंधित था । इस विषय में अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि एनटीपीसी, फरक्का द्वारा वार्षिक स्तर पर 24 पृष्ठों की एक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए । सर्वसम्मति से इस पत्रिका का नाम फरक्का जागृति रखने का निर्णय लिया गया । अध्यक्ष महोदय ने घोषित किया कि पत्रिका पर होने वाले व्यय का वहन एनटीपीसी, फरक्का द्वारा किया जाएगा। अध्यक्ष महोदय के इस घोषणा का समिति सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया ।

'ख' क्षेत्र

चण्डीगढ़

समिति ने दिनांक 2-2-2012 को टैगोर थियेटर, सैक्टर -18 बी, चण्डीगढ़ में अपना वार्षिक राजभाषा समारोह आयोजित किया । समारोह की अध्यक्षता श्री जसपाल सिंह, मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष, नराकास ने की । अध्यक्ष महोदय के विधिवत स्वागत के बाद अध्यक्ष महोदय ने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह का शुभारंभ किया ।

नराकास सचिव, डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने समिति की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की । उन्होंने सूचित किया कि इस वर्ष समिति स्तर पर हिंदी निबंध, हिंदी शब्दज्ञान, कम्प्यूटर पर हिंदी टाइप, हिंदी आशुलिपि व स्वरचित हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है ।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री जसपाल सिंह ने कहा कि "हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है । यह हमारे विचारों और संस्कारों की भाषा है । हिंदी में काम करना और इसका प्रचार-प्रसार करना हर अधिकारी/कर्मचारी का कानूनी और नैतिक दायित्व है । समाज का हर वर्ग आज हिंदी का प्रयोग करता है । भारत सरकार की नीति के अनुसार कार्यालयों में सरल और बोल-चाल की हिंदी का प्रयोग करना चाहिए ताकि हर आदमी इसे समझ सके । बोल-चाल में प्रचलित दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग वैसे ही हिंदी में करने से न केवल हिंदी का शब्द भंडार बढ़ेगा बल्कि इससे कम हिंदी जानने वालों को भी हिंदी का प्रयोग करना आसान लगेगा । उन्होंने कहा कि सरल हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके सरकारी नीतियों को आम आदमी तक पहुंचाने और प्रशासन में पारदर्शिता लाने में भी मदद मिलेगी । उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से अपील की कि वे स्वयं हिंदी में कार्य करके अपने कर्मचारियों को हिंदी में कार्य के लिए प्रेरित करें । उन्होंने पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्यालयाध्यक्षों और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी तथा कहा कि समिति इस वर्ष भी हिंदी की कई प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगी ।"

राजकोट

दिनांक 2-2-2012 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोठी कंपाउन्ड, राजकोट के सभाकक्ष में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 64वीं बैठक का आयोजन किया गया । बैठक में राजकोट शहर के सरकारी कार्यालय, निगमों/उपक्रमों के कार्यालय प्रमुख उपस्थित रहे । बैठक की अध्यक्षता अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री दयानंद गांधी ने की ।

सदस्यों के परिचय के पश्चात् श्री दयानंद गान्धी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि राजकोट नराकास में हिंदी का एक बहुत ही अच्छा माहौल देखने को मिल रहा है । हिंदी में कार्य बढ़ाने के लिए सभी कार्यालय यदि एक कार्ययोजना बनाएं और इसके कार्यान्वयन में प्रत्येक कार्यालय के प्रमुख स्वयं शामिल हों और अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने और करवाने की जिम्मेदारी सौंपे तो निःसंदेह हिंदी की प्रगति होगी । अभी हाल ही में नराकास के अधीन गठित अंविरास द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें 100 से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया गया और आज इस बैठक के दौरान वर्ष 2011 में हिंदी की प्रगति में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए आयकर एवं महालेखाकार (लेखा एवं हक) कार्यालयों को केन्द्रीय कार्यालयों के तहत् तथा इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन-गौरीदड़ तथा दूरदर्शन कार्यालयों को निगम कार्यालयों के तहत् शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया जा रहा है । मुझे आशा है कि इससे प्रेरणा लेकर अन्य कार्यालय भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाएंगे । पश्चिम क्षेत्र राजभाषा विभाग के उपनिदेशक डॉ. एम एल. गुप्ता भी बैठक में उपस्थित हुए और सदस्यों को कंप्यूटर पर हिंदी में आसानी से कार्य करने हेतु यूनीकोड के कुछ सरल प्रयोग बताए ।

तत्पश्चात् समिति के सचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री पी. बी. सिंह ने सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त तुलनात्मक प्रगति रिपोर्ट संबंधी आंकड़ों पर मदवार समीक्षा की । सदस्यों ने भी अपने विचार व्यक्त किए । अंत में सचिव महोदय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक सम्पन्न करने की घोषणा की गई ।

'क' क्षेत्र

कोटा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की जून, 2011 को समाप्त अवधि की बैठक दिनांक 23-9-2011 को एनटीपीसी अन्ता के सभागृह में आयोजित की गई ।

श्री एन. मधुसूदन राव अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मंडल रेल प्रबंधक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में उपस्थित सभी कार्यालयाध्यक्षों से कहा कि आपका राजभाषा के प्रति सकारात्मक रुख हमारे उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा । हमें किसी अवसर की प्रतिक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, बस जरूरत है तो थोड़ी सी अपनी मानसिकता बदलने की हमें नियमों का अनुपालन कर्तव्य समझकर करना होगा । हमें राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेजों को द्विभाषी में जारी करना है साथ ही हिंदी में प्राप्त सभी मदों के उत्तर भी अनिवार्य रूप से हिंदी में देना है ।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सरकारी कार्य में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वार्षिक वृद्धि हुई है परंतु इसमें और प्रयास किए जाने की गुंजाइश है, यदि अधिकारीगण इस सहज-सरल राजभाषा हिंदी को अनिवार्य रूप में सरकारी प्रयोग में लेने का संकल्प कर लें तब वह दिन दूर नहीं जब समस्त कार्य जन-जन की इस भाषा में होने लगेगा ।

श्री आर. डी. मीना, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रपटों की समीक्षा की तथा रपटें यथासमय भेजने और उपस्थिति में बढ़ोतरी कराने का अनुरोध किया ।

बैठक में बैंकों, केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों व निगमों/उपक्रमों के हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले कार्यालयों को निम्नानुसार अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री एन. मधुसूदन राव ने चल राजभाषा शील्डों से सम्मानित किया । 1. उपक्रमों व निगमों में एनटीपीसी, अन्ता 2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में भारी पानी संयंत्र एवं 3. बैंकों में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर ।

बैठक के दौरान उपनिदेशक गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग श्री ए. के. शर्मा ने बैठक में अपने विचार व्यक्त किये तथा हिंदी अपनाने में अपनी गति बढ़ाने का अनुरोध किया ।

अंबाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अंबाला छावनी की इस वर्ष की पहली बैठक अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार सांघी की अध्यक्षता में दिनांक 14-5-2012 को कमेटी रूम, मंडल कार्यालय, रेल विहार, अंबाला छावनी में सम्पन्न हुई ।

सर्वप्रथम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आप सभी जानते हैं कि समिति की इस बैठक में हम भारत सरकार के राजभाषा विभाग से समय-समय पर प्राप्त विभिन्न आदेशों के कार्यान्वयन और राजभाषा नीतियों को सुचारू ढ़ंग से लागू करने की स्थिति तथा इसमें आ रही कठिनाइयों पर विचार-विमर्श करते है । अंबाला में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/ बैंकों / निगमों/ संस्थाओं आदि में हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के लिए सभी सदस्यों के सहयोग से अक्टूबर में विभिन्न कार्यालयों में हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था ।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, परंतु हमारा क्षेत्र 'क' क्षेत्र में आता है इसलिए राजभाषा को लागू करने की हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, यदि किसी मद में लक्ष्य प्राप्ति में किसी कार्यालय को समस्या आ रही हो तो वह कार्यालय समिति से कभी भी संपर्क कर सकता है । हिंदी का पूरे भारत में एक विशेष स्थान है इसलिए भारतीय संविधान में भी केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग करने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं ।

सरकारी काम-काज में आम बोलचाल के सरल, सुबोध और स्वाभाविक प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने से राजभाषा का काफी विकास संभव है । सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा की धारा-3 (3) के तहत जारी किए जाने वाले सभी पत्रों/दस्तावेजों को अनिवार्य रूप से हिंदी में अवश्य जारी करना चाहिए । सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि अंबाला में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/निगमों आदि में हिंदी में निष्पादित किए गए कार्यों के प्रतिशत में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है परन्तु फिर भी प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान एवं प्रमुख को उदाहरणीय पहल करने की जरूरत है । कंप्यूटरों पर हिंदी के प्रगामी प्रयोग बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं । इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक कार्यालय के कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा अवश्य होनी चाहिए । मैं सभी सदस्यों से अपेक्षा करता हूँ कि वे हिंदी फोंट संबंधी अनावश्यक समस्या से निजात पाने के लिए सभी प्रकार की सामग्री/दस्तावेजों को मानक भाषा यानी यूनिकोड में टंकित करें और इसी फोंट में वेबसाइट पर उपलब्ध करवाएं । श्री शैलेश कुमार सिंह, उपनिदेशक/राजभाषा ने अपने सम्बोधन में संसदीय राजभाषा समिति का उल्लेख करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों/ बैंकों/निगमों/संस्थाओं के प्रशासनिक प्रमुखों के लिए इस बैठक में शामिल होना अनिवार्य बताया । उन्होंने राजभाषा विभाग की अद्यतन गतिविधियों/प्रोत्साहन योजनाओं का उल्लेख करते हुए सभी सदस्यों को अपनी रिपोर्ट ऑन लाइन भेजने का आग्रह किया । उन्होंने कहा कि समिति एक उप समिति का गठन करके सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति को समय-समय पर प्रस्तुत की जाने वाली राजभाषा प्रगति रिपोर्ट में दर्ज आंकड़ों की प्रत्यक्ष जांच करके राजभाषा पुरस्कार प्रदान कर सकती है और हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने के लिए सर्वसम्मति से सहयोग राशि भी लेने का निर्णय कर सकती है ।

बालाघाट

आकाशवाणी के सभाकक्ष में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय : भारत सरकार, बालाघाट की चालू वित्तीय वर्ष 2011-12 की द्वितीय छः माही बैठक श्री देबाशीष दास, वैज्ञानिक-डी, केन्द्रीय रेशम बोर्ड की अध्यक्षता, श्री विनोद कुमार शर्मा, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के मुख्य आतिथ्य श्री एस. एम. टेंभुर्णेकर, प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, वारासिवनी एवं श्री देवाशीष पाल, मुख्य प्रबन्धक, एक्सिस बैंक, बालाघाट के विशेष आतिथ्य में आयोजित की गई । पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलित कर छःमाही हिंदी बैठक/कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया । इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा अपने उद्बोधन में उपस्थित सभी सदस्यों/प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा गया कि इस प्रकार के मंच से हमें अपने शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के उपयोग को सार्थक करने में मदद मिलती है । राजभाषा की प्रगति एवं राजभाषा विभाग के लक्ष्यों की प्राप्ति पर सदस्यों के प्रयासों की सराहना करते

हुए उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे अपने-अपने कार्यालयों के प्रमुख होने के नाते प्रत्येक तिमाही के पश्चात् हिंदी बैठक आयोजित कर कार्यालय में हिंदी की प्रगति की निरंतर समीक्षा करते रहें । मुख्य अतिथि श्री शर्मा द्वारा सदस्यों से अपेक्षा की कि दैनिक प्रकृति वाले पत्रों के लिए मानक मसौदे हिंदी में भी तैयार करें जो कि निर्धारित प्रारूप में कार्यालय की आवश्यकता के अनुसार हो । राजभाषा नीति का कार्यान्वयन के लिए मात्र हिंदी अधिकारी की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है तथा इसके कार्यान्वयन में हुई कमी के लिए हम सब समान रूप से जिम्मेदार हैं । आगे उनके द्वारा सदस्यों से आग्रह किया कि वे कम्प्यूटर में आसानी से कार्य करने हेतु यूनिकोड को अपने कार्यालय के सभी कम्प्यूटर्स में डब्ल्यूडब्ल्यडब्ल्यु. राजभाषा.गव.इन की वेबसाईट से यूनिकोड डाउनलोड करवा लें, ताकि मेल द्वारा प्रेषित पत्र/रिपोर्टस प्राप्तकर्ता कार्यालय भी आसानी से पढ़ सकें, उन्होंने कहा कि इसके प्रयोग के लिए वे इस समिति के माध्यम से शीघ्र ही यूनिकोड पर यूनियन बैंक के माध्यम से कार्यशाला आयोजित करवाएंगे। समिति के माध्यम से राजभाषा विभाग द्वारा जनता से सीधे जुड़े कार्यालयों/कालोनियों पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु डिस्पले/पोस्टर आदि लगवाएगा । समिति के सदस्य कार्यालयों से अपेक्षा की गई कि वे 12वीं एवं स्नातक स्तर पर हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ता विद्यार्थी को पुरुस्कृत करने की योजना बनाकर पुरुस्कृत करें ।

सोनीपत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सोनीपत की बैठक दिनांक 30-8-2011 को श्री एस. बी. काजल, पुलिस उप महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, सोनीपत की अध्यक्षता में आयोजित की गई । इस बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर केन्द्रीय गृह मंत्रालय की राजभाषा समिति के श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी ने शिरकत की ।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी ने कहा कि सभी कार्यालयों में धारा-3(3) का अवश्य अनुपालन होना चाहिए । राजभाषा संबंधी नियमों का किसी भी स्थिति में उल्लंघन नहीं होना चाहिए । इस बार वार्षिक कार्यक्रम में लक्ष्यों की एक रेंज निर्धारित की गई है ताकि रिपोर्टों में वास्तविक आंकड़े दिखाए जाएं । उन्होंने सदस्यों से कहा कि सितम्बर, 2011 को समाप्त तिमाही की रिपोर्टों की प्रतियाँ क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली को ही भेजें ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में समिति अध्यक्ष श्री एस. बी. काजल, पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने कहा कि "आज की बैठक में उपस्थित होने के लिए आपका धन्यवाद । नराकास-सोनीपत की प्रथम बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुझे बहुत खुशी हुई । वास्तव में इस समिति का अध्यक्ष बनना मेरे लिए गौरव की बात है । बेशक मैंने समिति की अध्यक्षता पहली बार की है लेकिन एक सदस्य के तौर पर मैं इसकी बैठकों में हमेशा शामिल होता रहा हूँ और इसके निर्णयों और कार्यक्रमों में भागीदार रहा हूँ । इसके परिणामस्वरूप केन्द्रीय सरकार के सभी हरियाणा क्षेत्र स्थित कार्यालयों में हिंदी में काफी कार्य बढ़ेगा । समिति की बैठकों में हम राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए विचार-विमर्श करते हैं । कमियाँ बताई जाती हैं । आप अपनी कमियों को कमी के तौर नहीं बल्कि एक चुनौती के तौर पर लें । इससे निश्चय ही हमारे कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में मदद मिलेगी । आज की बैठक में लगभग 20-30 कार्यालयों की रिपोर्टों की समीक्षा की गई । जिन कार्यालयों में अच्छा कार्य हो रहा है, उन्हें मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ । मुझें आशा है कि वे भविष्य में भी वे अपने प्रयास जारी रखेंगे । जिन कार्यालयों में अभी भी कुछ कमी है वे उसे दूर करने के लिए कुछ ठोस प्रयास करें । इस वर्ष के कार्यक्रम में लक्ष्यों में कुछ ढील दी गई है लेकिन प्रयासों में ढील नहीं देनी है बल्कि अपने आंकड़ों को सही-सही दिखने का प्रयास करना है । हमारे कई कार्यालयों में बहुत काम हो रहा है लेकिन सही-सही दर्शाया नहीं जा रहा है । आज की बैठक में समिति स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित करने के निर्णय लिए गए हैं । आप समिति के इन कार्यक्रमों में अपना पूरा योगदान दें तथा अपने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को इनमें बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित करें । हमारे कार्यालयों में सरकार के आदेशों और लक्ष्यों के अनुसार कार्य होना चाहिए । गलत रिपोर्टिंग नहीं होनी चाहिए । संसदीय राजभाषा समिति कभी भी किसी भी कार्यालय का निरीक्षण कर सकती है । हमें भी इसके लिए तैयार रहना है । हमारे कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाना हम

सबकी अधिक जिम्मेदारी हैं केवल इच्छा शक्ति की आवश्यकता है । हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए । इसके लिए केवल हम सीनियर अधिकारियों को शुरुआत करने की जरूरत है और लगातार मॉनीटरिंग की जरूरत है । जहां हमें महसूस होता है कि यह कार्य हिंदी में आसानी से हो सकता है, हम अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को उसे हिंदी में ही करने के लिए कहें । हिंदी के प्रयोग के लिए हम अपने कार्यालयों के लिए कोई वार्षिक कार्य योजना भी बना सकते है । हम यह कोशिश करें कि जो काम एक बार हिंदी में आरंभ हो गया है, वह दोबारा अंग्रेजी में शुरू न हो । आदेशों और नियमों का उल्लघंन नहीं होना चाहिए । हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आपको मेरे कार्यालय से हर प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा ।

मैं आशा करता हूँ कि समिति के कार्यों में आप सबका सक्रिय सहयोग मुझे लगातार मिलता रहेगा । बैठक में उपस्थित होने और चर्चा में सक्रिय तौर पर भाग लेने के लिए मैं आप सबका पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ ।''

अलीगढ़

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीगढ़ की वर्ष 2011-12 की द्वितीय छमाही बैठक दिनांक 14-12-2011 को अपरांह्न 3.30 बजे आयकर कार्यालय, मैरिस रोड, अलीगढ़ पर श्री वीरेन्द्र सिंह, आयकर आयुक्त महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।

समिति सचिव, पंकज कुमार शर्मा ने दिनांक 29-6-2011 को सम्पन्न हुई वर्ष 2011 की प्रथम छमाही बैठक का कार्यवृत्त पढ़कर सुनाया जिसकी सदन द्वारा एवं अध्यक्ष महोदय द्वारा सर्वसम्मति से पुष्टि की गई ।

श्री प्रमोद कुमार जी, सहा.आ.आयुक्त ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन में बताया कि हिंदी का प्रयोग करने में हमें किसी भी हीनता का बोध नहीं करना चाहिए, अपितु हिन्दुस्तान के निवासी होने के कारण अपनी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में गर्व का अनुभव करना चाहिए । हर राष्ट्र की अपनी भाषा होती है, हमें भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के स्तर तक ले जाना होगा, तभी हिंदी का समग्र विकास सम्भव हो पायेगा ।

समिति अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्‌गार इस वाक्यांश से प्रारम्भ किये ''है भव्य भारतीय भूमि हरी-भरी, हिंदी है राजभाषा हमारी'' । आपने बताया कि हमें अपनी राजभाषा को सम्मानित करना होगा, तभी हमें सम्मान मिलेगा ।

फरीदाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद की वर्ष 2011-12 की दूसरी बैठक श्री ए. बी. एल. श्रीवास्तव अध्यक्ष , नराकास एवं अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनएचपीसी लिमिटेड की अध्यक्षता में दिनांक 24-11-2011 को पूर्वाह्न 11.00 बजे सम्मेलन कक्ष प्रथम तल, एनएचपीसी लिमिटेड कार्यालय परिसर में आयोजित की गई ।

बैठक की निर्धारित कार्यसूची पर कार्यवाही शुरू करने से पूर्व नराकास के तत्वावधान में आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के 25 विजेता प्रतिभागियों को अध्यक्ष, नराकास महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार स्वरूप चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए ।

बैठक में अध्यक्ष, नराकास महोदय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी । उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि मुझे इस बैठक में उपस्थित होकर बहुत ही गौरव का अनुभव हो रहा है । उन्होंने कहा कि अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है । उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी का प्रयोग करने का आग्रह किया । उन्होने नराकास, फरीदाबाद के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी प्रयोग की स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि कुछ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन का बहुत अच्छा कार्य हो रहा है, किन्तु कुछ कार्यालय लक्ष्य से बहुत पीछे हैं । उन्होंने कहा कि राजभाषा की प्रगति के लिए हमें सभी संभव प्रयास करने होंगे ।

बैठक में उपस्थित एनएचएफडीसी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री हर्ष भाल ने हिंदी के विकास को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि हमें स्वेच्छा से सहज और सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । साथ ही हमें हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी शामिल करके हिंदी के विकास को बढ़ावा देना चाहिए ।

बैठक में श्री आर.एस.मीना, निदेशक (कार्मिक), एनएचपीसी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति के लिए बहुत गंभीर और ठोस उपाय करने चाहिए । उन्होंने नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाएं तथा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपाय अपनाने पर जोर दिया ।

(ग) कार्यशालाएं

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर कार्यालय में दिनांक-23-3-2012 एक-एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में इस कार्यालय के 4 अधिकारी एवं 6 कर्मचारी जिन्हें हिंदी का कार्यशाधक ज्ञान प्राप्त है, भाग लिया ।

दिनांक 23-3-2012 को समय 10.30 बजे कार्यशाला का उद्घाटन प्रधान महालेखाकार श्रीमान अरुण कुमार सिंह महोदय द्वारा किया गया ।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय ने प्रसन्नता व्यक्त की कि 'ग' क्षेत्र होने के बावजूद कर्मचारियों का हिंदी के प्रति निष्ठा एवं रुचि की सराहना की कार्यशाला की उपयोगिता के बारे में समझाते हुए उन्होंने कहा कि, कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करने के लिए ऐसी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं । उन्होंने और भी कहा कि हिंदी में काम करना आसान है एवं कार्यशाला में कार्यालय से संबंधित पाठ बताए जाते हैं, जैसे टिप्पण, मसौदा लेखन, पत्राचार आदि का अभ्यास किया जाता है ।

इस कार्यशाला में अधिकारी एवं कर्मचारियों को कार्यालय के हिंदी अधिकारी श्री नूर अहमद एवं वरिष्ठ लेखाकार श्री आर. एन. चांद द्वारा, टिप्पण/प्रारूप लेखन, पत्राचार के विविध रूप, अनुवाद कला आदि पर विस्तार से समझाया गया ।

दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद
कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला

दक्षिण मध्य रेलवे के प्रधान कार्यालय में, विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए दिनांक 12-3-2012 से 16-3-2012 तक पांच दिवसीय गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में 35 कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । इस पांच दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विभागों में प्रयुक्त हिंदी शब्दावली, टिप्पणियां/पत्र,रजिस्टरों/सेवापंजियों में प्रविष्टियां, पास/पीटीओ आदि हिंदी में लिखने का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया । इसके अलावा, राजभाषा नीति/नियम, हिंदी वाक्य संरचना, कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य, यूनिकोड का प्रयोग, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं आदि से संबंधित जानकारी भी दी गई । समापन समारोह के अवसर पर संबांधित करते हुए श्रीमती मंगला अभ्यंकर, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कर्मचारियों से कहा कि वे इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए अपने दैनिक कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें, इसके बाद कार्यशाला में प्रशिक्षित कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए ।

अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला

दक्षिण मध्य रेलवे के प्रधान कार्यालय में अधिकारियों के लिए दिनांक 7-12-2011 से 9-12-2011 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर संबोधित करते हुए श्री महेश चंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी और भंडार नियंत्रक ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने बड़ी सक्रियता से भाग लिया, उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए वे अपने दैनंदिन कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें ।

श्री मंगला अभ्यंकर, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रारंभ में हिंदी कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि रेलवे बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया । जिसमें राजभाषा नीति व नियम, हिंदी में पत्राचार, आदेश/पृष्ठांकन हिंदी में देना और कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आदि के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन दिया गया । उन्होंने कहा कि "ग" क्षेत्र में होने के बावजूद इस रेलवे पर अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिंदी में प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है । हमारा यही प्रयास रहा है कि इस प्रकार के आयोजनों के जरिए उन्हें हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करें ।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 10 व 11 नवम्बर, 2011, को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी एवं नराकास, तूतीकोरिन के अध्यक्ष श्री एस. परमसिवम ने किया । सहायक कार्मिक अधिकारी श्री पी.टी. मणि ने विशेष कार्याधिकारी एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागता किया । उद्घाटन के अवसर पर श्री एस. परमसिवम ने आह्वान किया कि केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में कार्य करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान अनिवार्य रूप से होना चाहिए क्योंकि केंद्रीय सेवा में स्थानातंरण देश में कहीं भी हो सकता है । यहाँ भी हिंदी में काम करने का मौका मिलने पर अपनी टिप्पणी हिंदी में अवश्य दें । उन्होंने कहा कि हिंदी सीखने के लिए प्रति व्यक्ति की ओर से भरपूर प्रयास होना चाहिए । उन्होंने कहा कि कार्यालय के काम करने के साथ-साथ हिंदी को सीखने में मुश्किलें तो आएंगी ही लेकिन कोशिश करने पर सब आसान हो जाता है । उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को हमें 2014 तक प्राप्त करना है ।

कार्यशाला में कुल 19 प्रतिभागी थे । कार्यशाला में हिंदी व्याकरण, पत्र लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों की जानकारी, अनुवाद, राजभाषा नियम के साथ-साथ कुछ प्रशासनिक विषयों जैसे छुट्टी नियम एवं यात्रा भत्ता, सुरक्षा जागरूकता विषय पर भी व्याख्यान दिए गए ।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, पी.बी. 66, हासन-573 201

31 दिसंबर, 2011 को समाप्त होने वाली तिमाही के दौरान मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन में वैज्ञानिक/अभियंता - एससी के एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया । जिसमें 50 कर्मचारियों को नामित किया गया । जिन्हें राजभाषा के क्रियान्वयन के संबंध में राजभाषा से संबंधित नीति व नियमों के साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के बारे में प्रशिक्षण दिया गया । कार्यशाला में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वैकल्पिक अध्यक्ष श्री बी. वी. कानडे, समूह निदेशक - पीयूसी, एमसीएफ एवं श्री पी. जी. विजयकुमार, प्रधान लेखा एंव ऑविस/कासाप्र, एमसीएफ भी उपस्थित थे । कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु व सत्र संचालन के लिए श्रीमती एस. एन. भाग्यलक्ष्मी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईसेक, को आमंत्रित किया गया । श्रीमती भाग्यलक्ष्मी जी ने बड़े ही परिश्रम व लग्न से कर्मचारियों को राजभाषा के नीति व नियम को समझाया तथा वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का हिंदी का प्रशिक्षण दिया । सभी कर्मचारियों ने भी बड़े उत्साह के साथ कार्यशाला में भाग लिया । कार्यशाला के दौरान इस बात पर बल दिया गया कि तकनीकी क्षेत्र में कार्य करने वाले स्टाफ को हिंदी तकनीकी शब्दावली तो कम से कम लिखना व बोलना चाहिए । उन्हें बताया गया कि तकनीकी क्षेत्र में टिप्पण और प्रारूपण का ज्यादा काम नहीं है फिर भी हिंदी में आकस्मिक अवकाश/अर्जित अवकाश आदि के फार्म भरकर तथा उपस्थिति पंजी में हिंदी में हस्ताक्षर करके राजभाषा के कार्यान्वयन में योगदान दिया जा सकता है साथ ही आपस में वार्तालाप के द्वारा भी हिंदी को बढ़ावा दिया जा सकता है । कार्यशाला के अंत में एक बोधात्मक परीक्षा का आयोजन किया गया जिसके आधार पर कर्मचारियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार के रूप में नगद राशि का वितरण किया गया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् 12, रीजेन्ट पार्क, कोलकाता -700040

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कोलकाता में दिनांक 18-2-2012 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 1.00 बजे तक संस्थान के हिंदी सेल के प्रभारी अधिकारी श्री आर. डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में "हिंदी टिप्पण एवं मसौदा" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था । कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया था ।

हिंदी विशेषज्ञ श्रीमती श्रुति मिश्रा, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा नीति के स्वरूप एवं पृष्ठभूमि पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए तथा राजभाषा हिंदी और हिंदी के विविध रूपों को सोदाहरण बतलाया और प्रतिभागियों की भाषा संबंधी अड़चनों से अवगत होते हुए उनकी वैयाकरणक कमियों को दूर करने के हर संभव प्रयास किए । इसके साथ ही साथ विशेषज्ञ श्रीमती श्रुति मिश्रा ने प्रतिभागियों को प्रशासनिक कार्यों में दैनिक उपयोग होने वाले नियमित टिप्पणियों की भाषा में लिंग वचन की आने वाली समस्या का उदाहरण दे कर समाधान किया । उन्होंने हिंदी व्याकरण में वर्तमान, भूत एवं

भविष्य तीन कालों के बारे में सविस्तार बतलाया । सभी प्रतिभागियों ने पूरे सत्र में शांति एवं उत्साहपूर्वक ज्ञानार्जन किया । प्रतिभागियों ने विशेषज्ञ से राजभाषा नीति विषयक एवं व्याकरण में आने वाली दिक्कतों पर सवाल उठाए, विशेषज्ञ ने उनके उत्तर देकर समाधान किया ।

न्यूक्लियर पॉवर कार्पोरेशा आफ इंडिया लि., कैगा स्थल

कैगा स्थल में दिनांक 23 व 24 फरवरी, 2012 को क्रमश: अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए दो एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । दोनों कार्यशालाओं में प्रथम सत्र में श्री महावीर शर्मा ने प्रतिभागियों को हिंदी भाषा की पृष्ठभूमि, राजभाषा नीति, नियम व अधिनियम और प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी । तदोपरांत श्री सूर्यकांत ने हिंदी में पत्राचार और टिप्पण आलेखन विषय पर चर्चा कर अभ्यास कराया । दोनों कार्यशालाओं में दोपहर सत्र में श्री महावीर शर्मा ने हिंदी वर्तनी व देवनागरी लिपि के मानकीकरण पर अपना व्याख्यान दिया तथा श्रीमती अफरोजा बेगम एम. के., कनिष्ठ हिंदी अनुवादक शब्दावली अभ्यास कराया तथा कैगा बिजली उत्पादन केंद्र में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी । दोनों दिन ईश्वर सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सभी प्रतिभागियों को यूनिकोड डाउन लोड करने व उसे प्रयोग करने की सामान्य जानकारी प्रदान की ।

उप रेशमकीट प्रजनन केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कुन्नूर

उप रेशमकीट प्रजनन केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कुन्नूर में दिनांक 12-12-2011 को एक पूर्ण दिवसीय राजभाषा कार्यशाला आयोजित किया गया । कुल 18 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया । कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में तीन राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया ।

हिंदी अधिकारी एवं सचिव नराकास ऊटी-कुन्नूर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया । उन्होंने एक सामान्य अनुवाद अभ्यास द्वारा कार्यालयीन हिंदी में कार्य करने को इस्तेमाल किए जा रहे सभी शब्द, वाक्य अनुवाद-दोनों तरफ से -हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी-आदि के बारे में प्रतिभागियों द्वारा अभ्यास करवाया । डॉ. प्रणव ज्योति भूथन, चिकित्सा अधिकारी, राष्ट्रीय संचारित रोग नियंत्रण केन्द्र ने कहा कि रेशम बोर्ड में स्थानीय केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों को भी आमंत्रित करके आयोजित चार कार्यशालाओं में उनको एवं उनके कार्यालय के अन्य कई कर्मचारियों को मिले प्रशिक्षण से उस केन्द्र में राजभाषा कार्यान्वयन शुरू कर दिया है । इस प्रावधान केवल रेशम बोर्ड से दिया है, इसलिए रेशम बोर्ड के कार्यालय प्रमुख और प्रशिक्षण दिए राजभाषा अधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद दिया ।

अंत में कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्रीमती ई. राजनदिया वैज्ञानिक-सी ने हिंदी कार्यशाला सफल बनाने को प्रशिक्षकों के रूप में आए श्री बीरेन्द्र साह, श्री अ.प. भटट् और श्री लुईस एम. खाखा को हार्दिक धन्यवाद प्रस्तुत किया ।

बी ई एम एल लिमिटेड, 23/1, चौथा मेन रोड, एस. आर. नगर, बैंगलौर-560 027

दिनांक 23-1-2012 को बी ई एम एल लिमिटेड, के. जी. एफ. कॉम्प्लेक्स कार्यालय के प्रशासनिक एवं तकनीकी वर्ग के पदधारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्याशाला में कुल 24 पदधारीगण प्रशिक्षित किये गए । कार्याशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कॉम्प्लेक्स के उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री कमलाकर विट्ठल रेड्डि ने की । इस अवसर पर उन्होंने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में पदधारियों को इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए सरकारी कामकाज में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करने तथा राजभाषा हिंदी को उनका यथोचित स्थान दिलाने में अपना योगदान देने का आह्वान किया ।

डॉ पी. एस. आर. मूर्ति, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रयोगशालाएँ, बेंगलूर ने अपना उद्गार व्यक्त करते हुए यह कहा कि इस बहुभाषी देश में एक संपर्क भाषा का होना आवश्यक है तथा हिंदी उक्त भूमिका बखूबी निभा रही है । उन्होंने यह भी कहा कि आज के सूचना प्रौद्योगिकी के परिवेश में हमें कंप्यूटरों में राजभाषा हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग करना अनिवार्य हो रहा है । उन्होंने कार्यशाला में हिंदी से संबंधित ई-टूल्स, ई-शब्दकोश, आदि के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए यूनिकोड फान्ट का प्रयोग करने के तरीके तथा उसकी सरलता पर अभ्यास के साथ प्रतिभागियों को सिखाया । कार्यशाला के द्वितीय सत्र में उन्होंने राजभाषा हिंदी का प्रयोजनमूलक स्वरूप एवं नेमी कार्यालयीन पत्राचार कंप्यूटर द्वारा करना आदि से संबंधित जानकारी सहित टिप्पण व आलेखन पर भी विचार किया ।

बी. एस. एन. एल. महाप्रबंधक का कार्यालय, सेलम-636007

वर्ष 2011-2012 के लिए सेलम एसएसए की दूसरी हिंदी कार्यशाला दिनांक 23-12-2011 और 24-12-2011 को सम्मेलन कक्ष, सेव्वापेट्टै दूरभाष केंद्र, सेलम-2 में चलायी गयी । इस दो दिवसीय कार्यशाला में 15 कर्मचारी ने भाग लिया । दिनांक 23-12-11 के उदघाटन सत्र में डॉ. एन. चंद्रशेखर, राजभाषा अधिकारी सेलम ने बोल-चाल हिंदी का परिचय करके अभ्यास कराया । दोपहर के सत्र में श्रीमती आर. राधा. हिंदी अनुवादक, वेल्लूर ने हिंदी में तकनीकी शब्दावली पर व्याख्यान दिया । दिनांक 24-12-11 के पूर्वाह्न के सत्र में श्री आर. तणिकाचलम, राजभाषा अधिकारी धर्मपुरी ने हिंदी व्याकरण का अभ्यास कराया । दोपहर के सत्र में श्री आर. प्रभाकरन, राजभाषा अधिकारी, कडलूर ने हिंदी टिप्पण का परिचय करके अभ्यास कराया ।

समापन समारोह दिनांक 24-12-2011 को 17.00 बजे को हुआ । डॉ एन. चंद्रशेखर राजभाषा अधिकारी ने सभा का स्वागत किया । श्री वी. सेल्वम, मंडल अभियंता, सेव्वापेट्टै सेलम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी में बात करने पर बल दिया और सेलम एस एस ए द्वारा हिंदी कार्यान्वयन कार्यों में आगे की जाने वाली प्रगति पर जोर दिया ।

सभी सहभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र दिये गये । सभी प्रतिभागियों का हिंदी ज्ञान बढ़ाने के लिए उपयोगी शैक्षिक सामग्री दी गयी ।

दूरदर्शन केंद्र, बेंगलूर

केंद्र में दिनांक 31 अक्तूबर, 2011 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कुल 20 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया । हिंदी के विद्वान और आंध्र प्रदेश दूरसंचार के सेवानिवृत्त उपनिदेशक (रा.भा.) डॉ. वाई. एन. राव ने कार्यशाला में व्याख्यान दिया । मुख्य रूप से लिंग, वचन, क्रिया, काल तथा अन्य व्याकरणिक समस्याओं का उन्होंने निदान किया । अधिकारियों और कर्मचारियों ने इसका भरपूर लाभ उठाया । विशेषकर कार्यालयीन कार्यों के लिए उनका व्याख्यान प्रेरणाप्रद रहा । कार्यशाला अत्यंत सफल व उपयोगी रही ।

दूर दर्शन केंद्र, हैदराबाद

दूरदर्शन केन्द्र, हैदराबाद में दिनांक 5 सितम्बर तथा 6 सितम्बर 2011 के मध्याह्न 3.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक दो दिवसीय कार्यालय का आयोजन किया गया ।

कार्यशाला का आयोजन दिनांक 5 सितम्बर 2011 को मध्याह्न 3.00 बजे किया गया । इसके वक्त श्री कमालोद्दीन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना थे । इस कार्यशाला में अभियांत्रिकी, कार्यक्रम, प्रशासन एवं लेखा आदि अनुभागों से 24 कर्मचारियों को दैनिक कार्यालय के कार्य के प्रयोग में आने वाले शब्दों का अभ्यास करवाया और हिंदी व्याकरण से संबंधित लिंग, छोटी तथा बड़ी मात्राओं के प्रयोग के बारे में जानकारी दी ।

दूसरे दिन की कार्यशाला दिनांक 6 सितम्बर 2011 को मध्याह्न 3.00 बजे से 5.30 बजे तक रखी गई इस दिन के वक्ता श्री नवीन कुमार, प्राध्यापक हिंदी शिक्षण योजना थे । वे कार्यशाला के प्रतिभागियों को सेवा पंजियों में किए जाने वाली प्रविष्टियां तथा हिंदी पत्राचार के बारे में बताया और अभ्यास भी करवाया ।

अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) का कार्यालय उत्तर पूर्व क्षेत्र, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन : गुवाहाटी

अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) का कार्यालय (उत्तर पूर्व क्षेत्र), आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी में दिनांक 21-3-2012 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला का औपचारित उद्घाटन श्री एन ए खान, अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में राजभाषा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए अपर महानिदेशक (अभि.) महोदय ने कहा कि इस कार्यालय में राजभाषा का काम शून्य से आरंभ किया गया है और धीरे-धीरे इसमें प्रगति हो रही है । इसी कड़ी में कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है ताकि कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी लिखने-पढ़ने का कुछ अभ्यास हो सके । उन्होंने कहा कि आज विदेशों में भी हिंदी सीखने पर जोर दिया जा रहा है तो हम क्यों नहीं सीख सकते? यह तो हमारी अपनी भाषा है । उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में सभी प्रकार के लोगों को शामिल किया गया है । कुछ लोग अच्छी हिंदी जानते हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें हिंदी बिलकुल भी नहीं आती है । राजभाषा नीति के अनुसार सभी को हिंदी में प्रशिक्षित करना है और इस कार्यशाला का उद्देश्य यही है कि इसके जरिए उन्हें हिंदी जानने और सीखने के प्रति रुचि

पैदा हो । उन्होंने सभी प्रतिभागियों से निवेदन किया कि वे अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का प्रयास करें । उन्होंने कहा कि यह हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है और इसका अनुपालन हर हाल में किया जाना चाहिए ।

कार्यशाला में व्याख्याता के तौर पर श्री एल. आर. लाम्बा, सहायक निदेशक एवं सदस्य सचिव (नराकास) मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यलय, गुवाहाटी, में "हिंदी में काम क्यों करें?" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए राजभाषा नीति, राजभाषा संबंधी आदेशों की विस्तार पूर्वक चर्चा की ।

आकाशवाणी, जयपुर, ओड़िशा संयुक्त हिंदी कार्यशाला

आकाशवाणी, जयपुर में दिनांक 24 और 25 नवम्बर, 2011 को दो दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में ओड़िशा के विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों के अधिकारी तथा कर्मचारियों ने भाग लिया । 24 नवम्बर को सुबह 10.30 बजे कार्यशाला का उद्घाटन सत्र शुरू हुआ । सबसे पहले कार्यक्रम निष्पादक श्री अर्जुन भूयाँ ने सभी अधिकारी कर्मचारियों का स्वागत किया । तत्पश्चात आकाशवाणी, कटक के हिंदी अधिकारी श्री सुरेन्द्रनाथ सामल ने हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य के बारे में सभा को अवगत कराया । सहायक निदेशक (अभि.) श्री सुशान्त कुमार महान्ति ने अपने अभिभाषण द्वारा कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन किया एवं कहा कि ऐसे कार्यशालाओं के आयोजन से ही हमे अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिलती है । उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों से कार्यशाला के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए आग्रह किया । आकाशवाणी, कटक की हिंदी अनुवादक श्रीमती सस्मिता दास के धन्यवाद ज्ञापन के उपरान्त उद्घाटन सत्र समाप्त हुआ ।

उद्घाटन सत्र के तुरंत बाद कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ । इस सत्र का विषय था "राजभाषा नीति, नियम और अधिनियम" इस विषय पर आकाशवाणी, कटक, के हिंदी अधिकारी श्री सुरेन्द्रनाथ सामल ने विस्तार से चर्चा की । कार्यशाला के प्रथम दिवस का अपराह्न सत्र का विषय था "कार्यालयीन टिप्पण एवं पत्राचार" । व्याख्याता थे अपर कोलाब प्रोजेक्ट हाई स्कूल, जयपुर के हिंदी प्राध्यापक श्री राधा मोहन पण्डा । उन्होंने इस विषय को आकर्षक ढंग से समझाया और अभ्यास करवाया ।

द्वितीय दिवस अर्थात् 25 नवम्बर, 2011 को प्रथम सत्र में चर्चा के लिए विषय रखा गया था "व्यावहारिक हिंदी व्याकरण" । इस विषय पर अपर कोलाब प्रोजेक्ट हाई स्कूल, जयपुर के हिंदी प्राध्यापक श्री राधा मोहन पण्डा ने सविस्तार प्रकाश डाला । उन्होंने हिंदी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को अत्यन्त आकर्षक ढंग से समझाया । द्वितीय सत्र का विषय था "कार्यालयीन हिंदी एवं अनुवाद" । हिन्दुस्तान एरोनटिक्स लि., सुनाबेड़ा, कोरापुट के उप प्रबंधक (रा.भा.) श्री ओंकार दास माणिकपुरी ने इस विषय पर चर्चा की एवं उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रोचक ढंग से समझाया ।

सम्मानित अतिथि श्री ओंकार दास माणिकपुरी और श्री राधामोहन पण्डा ने राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया । सम्मानित अतिथियों ने समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये । कार्यालयाध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि केंद्र सरकार के कार्मिक होने के नाते कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारा कर्त्तव्य है । उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों से आग्रह किया कि वे कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें । आकाशवाणी भवानीपाटणा के कार्यक्रम निष्पादक श्री नरेन्द्रनाथ पटनायक ने उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद अर्पित किया । दो दिवसीय इस कार्यशाला का संचालन आकाशवाणी, कटक की हिंदी अनुवादक श्रीमती सस्मिता दास ने किया ।

आकाशवाणी, कडपा केंद्र

आकाशवाणी, कडपा केंद्र में दिनांक 29-12-2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । उद्घाटन समारोह में प्रभारी हिंदी अधिकारी एस सुब्बशेखर ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता, एस.के. महबूब बाशा, हिंदी अनुवादक कर्मचारी भविष्य निधि कार्यालय, कडपा को परिचय कराया ।

अध्यक्ष महोदय श्री बी.वी. रमण राव ने कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए यह बताया कि हिंदी राजभाषा की उन्नति को दृष्टि में रखते हुये राजभाषा नीति का पालन करने हेतु हर तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन करते हैं । इस कार्यशाला में भाग लिये सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन दिये हैं ।

आमंत्रित अतिथि वक्ता, एस. के. महबूब बाशा, हिंदी अनुवादक, कर्मचारी भविष्य निधि कार्यालय, कडपा ने हिंदी भाषा नीति और कार्यालय मसौदा पर पूर्ण रूप से विश्लेषण किया ।

आकाशवाणी : हैदराबाद - 500 004

आकाशवाणी, हैदराबाद में दिनांक 25-11-2011 को मल्टि टास्क फोर्स कर्मचारियों (पूर्व समूह 'घ' स्टाफ) के लिए प्रथम बार एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई।

कार्यशाला में श्री के.पी. श्रीनिवासन, उपमहानिदेशक (कार्यक्रम) ने उपस्थित कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यशालाओं में भाग लेकर आप लोग अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में निपुणता ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि आप में बहुत सारे हिंदी का अच्छा ज्ञान रखते हैं तो अन्य इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए हिंदी भाषा सीख सकते है।

कार्यशाला में श्री मोहम्मद कमालुद्दीन, वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने व्याख्यान दिया। उन्होंने व्याख्यान देते हुए कहा कि सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है अत: हिंदी में बहुत सारे शब्द अन्य भाषाओं से लिए गए हैं। उन्होंने तेलुगु शब्दों को हिंदी में केसे लिख सकते है पर सरल व्याकरण से गहरा प्रकाश डाला। उन्होंने ऐसे समान शब्दों पर भी जानकारी दी जो हिंदी और तेलुगु में है पर उनके अर्थ अलग होते हैं। ऐसे शब्दों को प्रयोग करते समय सावधान रहना आवश्यक है। उन्होंने हिंदी वर्णमाला पर भी प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान भी किया।

कुछ प्रतिभागियों ने कहा कि कार्यशाला बहुत उपयोगी है और भविष्य में ऐसे कार्यशालों के आयोजन के लिए अनुरोध किया।

कार्यशाला में आकाशवाणी के मुख्य भवन में ही स्थित सिविल निर्माण स्कंध और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम), आकाशवाणी कार्यालयों के कर्मचारियों सहित आकाशवाणी, हैदराबाद के कुल मिलाकर 16 मल्टि टास्क फोर्स कर्मचारियों ने सक्रिय भाग लिया।

आकाशवाणी, कोलकाता

आकाशवाणी, कोलकाता केन्द्र द्वारा दिनांक 29-2-2012 को अपराह्न 12.00 बजे से 4.00 बजे तक ग्राउण्ड फ्लोर स्थित वी.आई.पी. कक्ष में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व्याख्याता श्री अनूप कुमार, सहायक निदेशक ने लैपटाप कम्प्यूटर द्वारा यूनिकोड साफ्टवेयर की स्थापना किस प्रकार की जाएगी इस पर क्रमानुसार समझाते हुए अभ्यास कराया। प्रशिक्षणार्थियों ने बहुत ही उत्साह से लिखित अभ्यास किया तथा व्याख्याता के सामने प्रश्न रखे जिनका व्याख्याता द्वारा बहुत ही आसान तरीके से कम्प्यूटर प्रशिक्षण द्वारा हल निकाला गया। आगे श्री अनूप कुमार ने अंग्रेजी हिंदी तथा बंगला भाषा में यूनिकोड साफ्टवेयर का प्रयोग पर प्रशिक्षण दिया एवं उपस्थित प्रशिक्षणर्थियों द्वारा उठाए गए सवालों का शब्द संरचना द्वारा कम्प्यूटर पर अभ्यास कराया।

'ख' क्षेत्र

कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.)

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411 003

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने, सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक को दूर करने हेतु तथा टिप्पणी, प्रारूप/मसौदा लेखन, पत्र-लेखन एवं अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज कम्प्यूटर पर करने के उद्देश्य से दिनांक 19-10-2011 से 20-10-2011 के दौरान छठी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में 15 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यशाला में डॉ. रमाशंकर व्यास, श्री रामप्रसाद सुंद्रियाल, श्री बी.एस. कोरे और श्री नरेन्द्र सिंह ने व्याख्यान दिए। इस दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें से मुख्य हैं :- संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम/नियम, संकल्प, कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य, पत्राचार के विविध रूप, हिंदी-अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, हिंदी भाषा लिपि में सुधार, शुद्ध-अशुद्ध शब्द, हिंदी शब्द कोश का प्रयोग, यात्रा संबंधीं मामले, बैठकें आयोजित करना, एवं लेखा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों को हिंदी में किए जाने संबंधी अन्य व्याख्यान। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला की उपयोगिता एवं इसके उद्देश्य प्राप्ति पर लिखित प्रतिक्रिया ली गई। अधिकांश प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं उत्साहवर्धक थी। कार्यशाला के समापन पर श्री श्रीकांत एस. कारेकर, वित्त एवं लेखा उपनियंत्रक (फै.) द्वारा सभी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

श्री बी.एस. कोरे, हिंदी अधिकारी एवं सचिव राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा इस कार्यशाला के संबंध में जानकारी देते हुए प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के बारे में अनुरोध किया गया।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव जोनल बेस मुरगांव, गोवा बेस

दिनांक 26-11-2011 को "हिंदी माध्यम से व्यक्तित्व विकास - एक संभावना" विषय पर इस बेस कार्यालय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । हिंदी कार्यशाला में श्री प्रमोद मोहन जौहरी, महाप्रबंधक (प्रशासन एवं कार्मिक), गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को ने कार्यशाला का शुभारंभ एक बहुत ही सुंदर पॉवरपाईन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से किया जिसमें "इतनी शक्ति हमें देना दाता · · ·" जैसे मुध र एवं प्रेरणादायक भजन गीत से की जिसमें विविध कार्यकलापों का प्रदर्शन किया गया । उपस्थिति को संबोधित करते हुए उन्होंने व्यक्तित्व विकास के कई टिप्स कर्मचारियों के साथ शेयर किए जिसमें कार्यालय में अपने कार्यालय प्रधान के साथ आपके व्यवहार का स्तर कैसा हो, अपने साथी कर्मचारी के साथ काम करने का क्या तरीका हो, अपना स्वयं का चरित्र कैसा हो जिससे हम अपने कार्य व्यवहार से साथी कर्मचारियों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। कब, कैसे और क्या बोला जाए और क्यों बोला जाए इस विधा पर भी वक्ता ने विशेष प्रकाश डाला श्रद्धावान लभते ज्ञानम, संशयात्मा विनश्वते जैसे गीता उपदेशों का उदाहरण देते हुए महाभारत के युद्ध मैदान में कृष्ण-अर्जुन संवाद पर भी उन्होंने प्रकाश डाला । अच्छे वक्ता के बारे में बताते हुए उन्होंने बताया कि 55 प्रतिशत प्रभाव आपके चेहरे की भाव-भंगिमा, 20 प्रतिशत आप दूसरों को कितना ध्यानपूर्वक सुनते हैं तथा 25 प्रतिशत असर आपके द्वारा व्यक्त शब्दों का होता है और यही किसी व्यक्ति का पूर्ण स्वरूप होता है । भगवान शब्द का अर्थ बताते हुए उन्होंने बताया कि भ अर्थात भूमि, ग अर्थात गगन, व अर्थात वायु और न अर्थात नीर अर्थात भगवान अर्थात पंचमहाभूत जिससे यह शरीर बना है। जीवन में अच्छी चीजें सिखाने वाला व्यक्ति गुरू होता है ।

इस अवसर पर कर्मचारियों के अभिव्यक्ति पक्ष को परखने के लिए "भ्रष्टाचार और नेता" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें श्री राजू एस नागपूरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक ने प्रथम, श्री ए एफ शाहुल हमीद, अवर श्रेणी लिपिक ने दूसरा तथा श्री अमल कृष्ण हलदार, प्रवर श्रेणी लिपिक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया । आमंत्रित वक्ता श्री जौहरी ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए । कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने की दृष्टि से यह कार्यशाला बहुत उपयोगी सिद्ध हुई । कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस आयोजन में सहभागिता की । श्री राजू एस नागपूरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक ने अंत में उपस्थिति का आभार प्रकट किया ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर) सैक्टर-67, एस.ए.एस. नगर (मोहाली) पंजाब-160062

07 मार्च, 2012 को नाईपर में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना था। कार्यशाला में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम प्रतियोगिता का विषय "अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द" तथा द्वितीय प्रतियोगिता "वाद-विवाद" थी जिसका विषय: 'लोकतन्त्र में मीडिया की भूमिका' था । दोनों प्रतियोगिताओं में लगभग 25 से 30 प्रतिभागी सम्मिलित हुये, कार्यशाला के समापन अवसर पर डॉ. सविता सिंह, कार्यकारी हिंदी अधिकारी ने हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो समाज में एक आईने का कार्य करती है । उन्होंने कहा कि मैं अपेक्षा करती हूँ कि आप अपना अधिकतर कार्य हिंदी में करेंगे ।

आकाशवाणी पणजी

आकाशवाणी पणजी के केन्द्र निदेशक श्री बी.डी. मजुमदार ने गोवा मुक्ति की स्वर्ण जयंती के परिप्रेक्ष्य में 15 दिसंबर, 2011 से आयोजित त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में 'गोवा की मुक्ति के बाद हिंदी का विकास विषय पर कहा कि गोवा की मुक्ति के आंदोलन में हिंदी भाषा की विशेष भूमिका रही है । भारत के विभिन्न भागों से आए गोवा-मुक्ति आंदोलन के शहीदों को उन्होंने श्रृद्धा-सुमन अर्पित किए । दो बार साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त श्री वेणि माधव बोरकार सहायक केन्द्र निदेशक ने अपने उद्बोधन में कहा

कि गोवा के स्वतंत्रता सेनानियों की संपर्क भाषा, नारे और क्रांति-गीत मुख्य रूप से हिंदी भाषा में थे। गोवा के कोंकणी भाषी कई साहित्यकार हिंदी में सृजन करते रहे हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायन और हिंदी फिल्म संगीत गायन के क्षेत्र में हिंदी के प्रति गोवा का विशिष्ट योगदान है। श्री बोरकार ने कहा कि आकाशवाणी पणजी से राष्ट्रीय प्रसारण के लिए हिंदी में समाचार प्रेषण और गीतों के प्रसारण के दौरान उद्घोषकों द्वारा हिंदी में कम्पीयरिंग का अपना विशेष महत्व है। आकाशवाणी पणजी हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. शंभु बाबय प्रभुदेसाई वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा, गोवा शिपयार्ड ने कहा कि गोवा-मुक्ति आंदोलन के दौरान डॉ. राम मनोहर लोहिया ने मडगांव आम सभा में पहला भाषण हिंदी में दिया। गोवा की मुक्ति के बाद गोवा राज्य में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, स्वायत्त निकायों, उद्यमों, बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी का प्रयोग और प्रचार-प्रसार हो रहा है। सरकारी और गैर सरकारी तौर पर अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के सम्मेलन, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और विद्यालयीन स्तरों पर हिंदी विषय को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। गोवा की मूल भाषा हिंदी नहीं है कोंकणी, मराठी जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है उससे गोवा वालों को हिंदी पढ़ने एवं बोलने में सुविधा मिलती है। पर्यटकों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर यहां के पर्यटन उद्योग से जुड़े व्यक्तियों ने जैसे टैक्सी चालकों, हॉटेल, दुकानदारों, धार्मिक संस्थानों, चर्च के फादर, मंदिर के पुजारी आदि सभी ने हिंदी को अपनाया है, पाला पोसा है और बढ़ावा भी दिया है। गोवा में हर साल संपन्न अंतराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव इस भारतीय संस्कृति का उदाहरण है। गोवा के हर घर में चाहे वह झोपड़ी अथवा फ्लैट या फिर बंगला हर एक के जबान पर हिंदी होती है। यहां के बाजारों, दुकानों, रेस्टोरेंटों, समुद्री तटों पर भी अब हिंदी भाषा का उपयोग अधिक हो रहा है। यह मानना होगा राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में गोवा में हिंदी स्वीकृत है। इसका प्रचार-प्रसार सराहनीय एवं आनंददायी है।

दूरदर्शन अनुरक्षण केन्द्र भावनगर-364 001

18-1-2012 एवं 19-1-2012 को दो दिवसीय राजभाषा कार्यशाला आयोजित की जिसमें श्री एस. के. शर्मा, हिंदी अधिकारी ने अपने ज्ञानवर्धक, प्ररेणादायी संबोधन में राजभाषा के संबंध में, लाभदायक एवं बहुमूल्य जानकारी प्रदान की, जिससे उपस्थित अधिकारी और कर्मचारियों को राजभाषा प्रयोग के लिए प्रेरणादायी ही नहीं, अपितु अति उपयोगी भी सिद्ध हुई। जिसमें इस डी.एम.सी. के अंतर्गत आने वाले ज्यादातर कर्मीयों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

उन्होंने राजभाषा संबंधी नियम, अधिनियम और भारत के संविधान के विविध अनुच्छेद एवं सभी अनुच्छेदों की, खास करके हिंदी संबंधित जो भी बाते संविधान में लिखी गई है और सरकारी दफतरों में हिंदी का प्रयोग कैसे सरल, सुबोध, सहज और नियमित तौर से किया जाये उस विषय में सभी कर्मचारी गणों को अवगत कराया। सभी कर्मचारीगणों ने उत्साह से उनकी बाते सुनी और समझी और आत्मसात भी की।

कार्यशाला के दूसरे दिन श्री शर्मा साहब ने अपने निजी अनुभव और विपुल ज्ञान से काफी सरलता से हिंदी के प्रचार प्रसार में हमारा योगदान दे के हम कैसे अच्छी तरह से देश सेवा कर सकते हैं, उस विषय में समझाया और प्रकाश डाला।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में सभी कर्मचारियों ने अपने विचार भी आदान-प्रदान करके कार्यशाला को सफल बनाया। इन दोनों ही दिनों में इस कार्यालय ने सभी कर्मचारी एवं अतिथि विशेष के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई। अंत में श्री वी.के. शर्मा साहब ने कार्यालय अध्यक्ष के तौर पे, श्री एस. के. शर्मा साहब को एवं सभी कर्मचारीगण का आभार प्रकट करके कार्यशाला को संपन्न घोषित किया।

आकाशवाणी जालंधर

आकाशवाणी जालंधर के तत्तवावधान में दिनांक 17-11-2011 को केन्द्र पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों से संबंधित 21 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

व्याख्याता श्री भूपिन्दर सिंह ने राजभाषा नीति का कार्यान्वयन व टिप्पण-आलेखन विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए राजभाषा नीति, विभिन्न नियमों, उपनियमों से विस्तार पूर्वक अवगत कराया। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत उन्होंने बताया कि धारा-3 (3) से संबंधित कागजात जैसे-सामान्य आदेश, परिपत्र, ज्ञापन, प्रैस विज्ञप्तियां, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, आदेश, अधिसूचनाएं, संकल्प, विज्ञापन, अधिसूचनाएं, सविदाएं, करार आदि

द्विभाषी जारी होने चाहिएं। उन्होंने सदस्यों से कहा कि हिंदी में काम करना आसान है, जिस तरह भी वे किसी विषय पर सोचते हैं, उसे उसी तरह लिखना आरंभ करें । शब्दों के अनुवाद पर न जा कर देवनागरी लिपि में उसे वैसे ही लिख दें। उन्होंने राजभाषा नीति व टिप्पण-आलेखन के बारे में विभिन्न रोचक उदाहरण देकर सदस्यों को सौहार्दपूर्ण वातावरण में प्रशिक्षण दिया ।

अन्त में, सहायक केन्द्र निदेशक, श्री शमीन्द्र कुमार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वे आशा करते हैं कि कार्यशाला में प्रशिक्षण लेने वाले सदस्य अवश्य ही इसका उपयोग अपने दैनिक कामकाज में करेंगे व राजभाषा विभाग द्‌वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग देंगे। उन्होंने कर्मचारियों को अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा देते हुए श्री भूपिन्दर सिंह को कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में पधारने के लिए धन्यवाद दिया ।

'क' क्षेत्र

कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय, रांची-834001

कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय, क्षेत्र-दो रांची में दिनांक 29 मार्च, 2012 को 3.00 बजे अप. को कार्यालय में कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया ।

श्री ए.के. सिन्हा, अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए अनुरोध किया कि इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ावें। उन्होंने सूचित किया कि भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुसार हिंदी भाषी क्षेत्रों में समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में ही किया जाना अनिवार्य है ।

श्री पी.एम. के. प्रसाद क.हि. अनुवादक ने सभी सदस्यों से अपील की कि कार्यालय से किए जाने वाले हर पत्राचार हिंदी में कम्प्यूटर के माध्यम से ही करने पर जोर दिया है । इस बात पर सभी सदस्यों ने हर संभव पत्राचार हिंदी में कम्प्यूटर के माध्यम से ही करने पर विश्वास प्रकट किया ।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो पूर्वी खण्ड-7, रा.कृ. पुरम, नई दिल्ली-110066

नराकास (दक्षिण दिल्ली) द्‌वारा महानिदेशक राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की अध्यक्षता में दिनांक 27-12-2011 को सदस्य कार्यालयों के लिए एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला का विषय कम्प्यूटर की बुनियादी जानकारी एवं यूनिकोड का इंस्टालेशन तथा प्रयोग था। इस कार्यशाला में आमंत्रित वक्ता श्री टी.एस.विजय, उपनिदेशक (संगणक केन्द्र) द्‌वारा 25 सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया ।

नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन, नई दिल्ली-110002

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नगर एवं ग्राम नियोजन संगठन में 5 सितम्बर, 2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में संगठन के 20 अधिकारियों और 65 कर्मचारियों ने भाग लिया ।

हिंदी कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री प्रेम सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), प्रौद्‌योगिकी मंत्रालय ने संघ की राजभाषा नीति, अधिनियम व नियम पर अपने चिरपरिचित अंदाज में व्याख्यान दिया जिसकी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसा की । कार्यशाला के दूसरे सत्र में श्री ललित मेहता, हिंदी अनुवादक ने कम्प्यूटर पर यूनीकोड में हिंदी में काम करने के बारे में अपना व्याख्यान दिया । इस व्याख्यान की सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भरपूर प्रशंसा की। कार्यशाला के समापन पर श्री धनसिंह वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने प्रभावी व्याख्यान देने के लिए श्री प्रेम सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) एवं श्री ललित मेहता, हिंदी अनुवादक को धन्यवाद दिया एवं कहा कि हमें अपनी मानसिकता बदलने और इच्छाशक्ति बनाए रखने की जरूरत है तभी राजभाषा को उसका स्थान मिलेगा ।

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्‌यम विकास संस्थान, गोशाला रोड, डॉ. रमना मुजफ्फरपुर-842002

दिनांक 29-3-2012 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्‌घाटन संस्थान के निदेशक श्री प्रदीप कुमार ने किया । उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि यह संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी भाषी हैं । इसलिए वे अपना समस्त सरकारी कार्य हिंदी में ही निष्पादित करने का प्रयास करें । ताकि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके । कार्यशाला को

श्री एस.पी.वर्मा, सहायक निदेशक (धातु), श्री बी.बी. सहाय सहायक निदेशक (यांत्रिक) एवं नामित राजभाषा अधिकारी ने भी संबोधित किया । तत्पश्चात् श्री शेषमणि शुक्ल, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी पत्राचार पर व्याख्यान दिया तथा अभ्यास कराया । कार्यशाला में संस्थान के कुल 14 अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, हवाई अड्डा, जयपुर

जयपुर विमानपत्तन पर केवल अधिकारी वर्ग हेतु दिनांक 15-2-2012 से 17-2-2012 तक तीन दिनों की अर्द्धदिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई ।

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमान डी. पॉल मणिक्कम, निदेशक विमानपत्तन, जयपुर द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इसे अवसर पर उन्होंने कार्यशाला का महत्व बताते हुए कहा कि कार्यशाला से कार्मिकों के कार्यो में सुधार आता है। जयपुर विमानपत्तन पर हिंदी कार्य का प्रतिशत 99% तक पहुँच गया है जोकि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है जिसे बनाये रखना है ।

इस अवसर पर प्रथम दिन के प्रथम सत्र में व्याख्याता श्री विभूति कांत शर्मा, प्रबंधक (SBI), जयपुर को आमंत्रित किया गया जिन्होंने "प्रशासनिक पत्राचार" विषय पर अपना व्याख्यान दिया ।

प्रथम दिन के दूसरे सत्र में "प्रशासनिक शब्दावली एवं प्रोत्साहन योजनाएं" पर श्रीमती मंजुला वाधवा, प्रबंधक (राजभाषा), नाबार्ड, जयपुर द्वारा व्याख्यान दिया गया ।

कार्यशाला के दूसरे दिन श्री रोशन चायल, प्रबंधक (OL), ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स, जयपुर ने "राजभाषा नीति तथा सूचना प्रोद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग" विषयों पर प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया ।

कार्यशाला के तीसरे दिन के प्रथम सत्र में श्री रोशन लाल, मुख्य प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा ने "संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण तथा प्रश्नावली तैयार करना" तथा दूसरे सत्र में श्री आदित्य मिश्र, सहायक महाप्रबन्धक SIDBI जयपुर ने "तिमाही रिपोर्ट" विषय पर प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया ।

कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची में 31 जनवरी–01 फरवरी, 2012 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री राघवेन्द्र कुमार राजू, विमानपत्तन निदेशक की अध्यक्षता में 31 जनवरी, 2012 को प्रात: 10.00 बजे उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया ।

श्री इन्ताज अली, कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा) ने हिंदी कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्यों एवं औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्यशाला आयोजन का मुख्य उद्देश्य है - अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने में आने वाली कठिनाईयों एवं झिझक को दूर करना । उन्होंने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं दो दिनों में आनेवाले संकाय सदस्यों के परिचय एवं व्याख्यान के विषयों पर भी प्रकाश डाला ।

विमानपत्तन निदेशक ने अपने संबोधन में सभी नामित कार्मिकों को सलाह दी कि वे दोनों दिन कार्यशाला में उपस्थित रहें एवं कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए अधिक से अधिक अभ्यास करें । उन्होंने कार्यशाला की सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं । मुख्य अतिथि डॉ. हरि हरण महाप्रबंधक (मा.सा. वि.) ने अपने संबोधन में कहा कि तकनीकी एवं प्रबंधन के क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग सरलता एवं सहजता से किया जा रहा है । उन्होंने कहा कि हिंदी में निहित शक्ति ही इस भाषा को विश्वभाषा बनाएगी ।

रांची के विभिन्न विभागों/कार्यालयों से आमंत्रित 7 संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों पर कुल 8 व्याख्यान दिए गए । इस कार्यशाला में कुल 19 कार्मिकों को हिंदी में प्रशिक्षित किया गया । श्री इन्ताज अली, कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा) द्वारा हिंदी कार्यशाला का संचालन किया गया ।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली-110016

संस्थान के उच्च श्रेणी लिपिकों के लिए 18 अप्रैल, 2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

इस कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान के कर्मचारियों को हिंदी में टिप्पण और आलेखन लिखने का अभ्यास कराना और राजभाषा संबंधी नियमों की जानकारी देना था । इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 11 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला के विषय को भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया और सहभागियों को राजभाषा से संबंधित मुख्य नियमों की जानकारी दी गई । श्री जी.बी. श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक (सामान्य सेवा) ने सहभागियों को टिप्पणियों और पत्रादि सरल ढंग से लिखने के बारे में समझाया और सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी । सहभागियों को हिंदी में टिप्पण और आवेदन लिखने का अभ्यास कराया गया । उन्हें राजभाषा नियमों से संबंधित सामग्री भी दी गई ।

सहभागियों ने कार्यशाला की अवधि तथा प्रशिक्षण पद्धति को उपयुक्त माना और उल्लेख किया कि कार्यशाला से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल वे अपने कामकाज में व्यावहारिक रूप से करेंगे ।

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड, निगम मुख्यालय 16वीं मंजिल जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001

"हमारे निगम में हिंदी की बहुत अहमियत है । हमारे निगम में राजभाषा नियम-अधिनियम का पालन पूरी निष्ठा के साथ होता है । सरकारी प्रणाली में राजभाषा की जितनी अहमियत है निगम मुख्यालय में भी उतनी ही अहमियत है।" यह उदगार डॉ. मनोरंजन दास, निदेशक (मा.सं.) ने भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड में हिंदी कार्यशाला (दिनांक 21 एवं 22 दिसम्बर, 2011) के नये सत्र के शुभारम्भ अवसर पर व्यक्त किए । आपने आगे कहा कि निगम का हिंदी विभाग सही ढंग से काम कर रहा है । निगम मुख्यालय ही नहीं इकाईयों की राजभाषा कार्यान्वयन मशीनरी भी पूरी तरह सज्जित और सक्रिय है । हमारे निगम मुख्यालय और इकाईयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अधोसंरचना कारगर तरीके से काम कर रही है । राजभाषा कार्यान्वयन में निगम मुख्यालय सहित सभी इकाईयां की अच्छी छवि है। सभी सुनियोजित ढंग से कार्य कर रहे हैं । हमें नियम-अधिनियम के अलावा भी हिंदी को उसका पूरा सम्मान देना चाहिए। मुझे उम्मीद है आप लोग इस कार्यशाला का पूरा लाभ उठाएंगे और अपने रोजाना के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ाएंगे। डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी, प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सहज, सरल हिंदी का प्रयोग कर हम अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा दे सकते हैं इसके साथ यह अनुरोध भी किया कि राष्ट्र के गौरव को, राष्ट्र के सम्मान को बनाए रखने के लिए उसे बढ़ाने के लिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम राजभाषा हिंदी का भी सम्मान करें, उसका प्रयोग करें, उसे बढ़ावा दें।

शुभारम्भ सत्र के समापन पर श्री संजय महेश्वरी, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) ने निदेशक महोदय का आभार व्यक्त किया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर, देहरादून

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 28-9-2011 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री चंद्र भूषण द्विवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा), भारत संचार निगम लि. देहरादून को मुख्य अतिथि वक्ता ने "हिंदी मानवतावादी दर्शन की संवाहक है" विषय पर अपना व्याख्यायन दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी मात्र हमारी मातृ भाषा नहीं है बल्कि यह हमारी संस्कृति भी है । हिंदी में विश्व मानवतावादी जीवन दर्शन समाहित है । यह देश काल की सीमाओं में बंधी हुई नहीं है । हिंदी ने एक-एक शब्द की उत्पत्ति बड़ी सधाना, तपोनिष्ठ मनोयोग व संस्कृतनिष्ठ स्वरूप से हुई है । हिंदी का हर शब्द किसी न किसी देव का ही बीजमंत्र है इसलिए इसे देवनागरी कहा गया है । भाषा हमारे संपूर्ण मानवोचित संस्कारों को तुष्ठ करती है। संसार में आज जो भी कुपोषण व्याप्त है वह हिंदी की अवहेलना के कारण है । भाषा मात्र अक्षरों में ही नहीं रहती बल्कि वह हमारे संस्कारों का भी विकास करती है । जितने भी विकसित राष्ट्र हैं उनके पीछे उनके विरासतीय मूल्य है । आज यदि हम पूरे मनोयोग से अपनी विरासत की भाषा हिंदी को अपनांए तो हमारा विकास भी और अधिक गति से होगा । हिंदी सर्वधर्मसंभाव, विश्वबंधुत्व की भाषा है। जड़ चेतन वस्तुओं के साथ भी इसका मानवीय व्यवहार है। हिंदी सामासिक संस्कृति की पोषक है । हिंदी न केवल एक भाषा है बल्कि यह चराचर

जगत के हर तत्व को सम्मान देते हुए मानवतावादी जीवन दर्शन की संवाहक है ।

कार्यशाला अवसर पर श्री कमल किशोर बडोला वरिष्ठ अनुवादक हिंदी ने सरकारी कार्यालयों में हिंदी कार्यशालाओं की उपादेयता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशालाएं ही ऐसा मंच हैं जो हमें अपनी कमियों से विज्ञ करवाता है तथा उसमें अपेक्षित सुधार के अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम सब कुछ जानते हैं तथा हमारे लिए कार्यशाला की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति जीवन में हर क्षण कुछ न कुछ सीखता है। हमें सदैव सीखने के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यालय प्रभारी डॉ. पी.के. सिंह, वैज्ञानिक-डी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमें बचकर निकलने की मानसिकता से बाहर निकलना होगा । हमारे अंदर एक जिज्ञासा होनी चाहिए । कार्यशालाएं इसी प्रकार की ज़िज्ञासाओं को शीत करती है। हमें अपने राष्ट्र का राष्ट्रध्वज का और राष्ट्रभाषा का सम्मान करना चाहिए। इसके लिए सभी को दृढ़ प्रतिज्ञ होना पड़ेगा । हमें हिंदी अपनाने के लिए आज ही संकल्प लेना होगा ।

एन एच पी सी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय (नगवाई) मनीकर्ण रोड, भूंतर, जिला-कुललू, (हिमाचल प्रदेश)-175125

क्षेत्रीय कार्यालय (नगवाईं), भूंतर में 29 फरवरी, 2012 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री इंद्रदेव दयाल, कार्यपालक निदेशक ने की । उन्होंने अपने उद्‌बोदन में अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि "हमें अपने कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके अपनी भाषा को बढ़ावा देना चाहिए । इस प्रकार की कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी में कार्य करने के लिए कार्मिकों को प्रशिक्षित किया जाता है और सरकारी कार्य को हिंदी में करने में आने वाली कठिनाइयों को दूर किया जाता है । मैं चाहता हूं कि सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने सरकारी कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे कि राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।"

इस अवसर पर प्रतिष्ठित साहित्यकार, श्री छेरिंग दोरजे ने "राजभाषा हिंदी व स्थानीय भाषा एवं संस्कृति" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया । श्री दोरजे ने कहा कि "हिंदी जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है। हमें हिंदी के विकास के लिए प्रयत्न करने चाहिए ताकि हिंदी भाषा जन-जन की भाषा बन सके ।" इस अवसर पर श्री कंवर सिंह चौहान, सहायक राजभाषा अधिकारी ने "यूनीकोड पर हिंदी में कार्य करना" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया ।

कार्यशाला के तीसरे सत्र में श्री अनुराग भारद्‌वाज, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), पार्वती परियोजना चरण-2 ने "राजभाषा नीति, प्रोत्साहन योजना व हिंदी पत्राचार" पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए । कार्यशाला के चतुर्थ सत्र में राजभाषा अधिकारी, श्री देश राज ने "हिंदी वर्तनी" और "तिमाही प्रगति रिपोर्ट तैयार करना" विषयों पर व्याख्यान दिए और प्रतिभागियों के लिए अभ्यास सत्र का संचालन भी किया ।

एनटीपीसी दादरी

दादरी स्टेशन में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से 18 नवंबर, 2011 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अपर महाप्रबंधक (ईंधन प्रबंध) श्री दिनेश कुमार ने कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए कहा कि रोजमर्रा के कामकाज को अपनी भाषा में ही आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिंदी अपनी विशेषताओं और सरलता के कारण भारत के अलावा दुनिया के तमाम देशों में फैलती जा रही है । श्री दिनेश कुमार ने दैनिक क्रियाकलापों में तकनीकी शब्दों को लिप्यातंरण करके सरल हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रतिभागियों को उत्साहित किया ।

उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय उत्तर कार्यालय, गाजियाबाद श्री राकेश कुमार ने राजभाषा नीति, पारिभाषिक शब्दावली एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर उपयोगी जानकारी देते हुए प्रतिभागियों को अधिकाधिक कामकाज के लिए प्रेरित किया ।

अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री उज्ज्वल बनर्जी के मागदर्शन में स्टेशन के विभिन्न विभागों में कार्य स्थल पर ही कर्मचारियों को हिंदी कार्यशालाएं आयोजित कर हिंदी के प्रयोग को निरंतर गतिशील बनाया जा रहा है । सीएचपी

विभाग में आयोजित इस कार्यशाला में 23 कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों ने भाग लिया । कार्यशाला का समन्वय प्रबंधक (राजभाषा) श्री अतरसिंह गौतम ने किया ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मेन रोड, मोती नगर बालाघाट (म.प्र.)

कार्यालय, बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बालाघाट में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिए गए लक्ष्य के अनुरूप हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । इस अवसर पर केन्द्र प्रमुख श्री देबाशीष दास, वैज्ञानिक-डी एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने उद्‌बोधन में हिंदी साहित्य का जिक्र करते हुए कहा कि समाज में परिस्थितियों एवं मानसिकताओं के आधार पर संस्कृत में पद्य के साथ-साथ गद्य लिखने का प्रचलन तत्कालीन भावुकता एवं बौद्धिकता से आबद्ध रहा।

कार्यशाला के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के शासकीय कार्य में हिंदी के प्रयोग को और भी बढ़ावा देने के लिए विभिन्न वाक्यों के निर्माण में सरल व्याकरण का प्रयोग एवं लिंग-भेद आदि की जानकारी दी गई तथा पत्राचार में आने वाली विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों से परिचित करवाया गया । अंत में श्री राम जी लाल, वैज्ञानिक-सी द्वारा चार शब्दों "मन जीते जग जीत" के साथ उपस्थितजनों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यशाला समाप्ति की घोषणा की ।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान पो. पिस्का नगड़ी रांची

कें. त.अ.व प्र.सं., रांची में दिनांक 3-3-2012 को प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 42 प्रशासनिक/तकनीकी कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला में यूनिकोड के विविध पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

यूनिकोड के संबंध में सुसंगत जानकारी संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) ने उपलब्ध करायी जबकि यूनिकोड को सक्रिय किये जाने, फोंट संस्थापित करने एवं ई-फाइल कनवर्सन आदि के संबंध में प्रशिक्षण संस्थान के कम्प्यूटर प्रोग्रामर श्री अशोक कुमार सैनी ने दिया ।

आकाशवाणी-इंदौर

आकाशवाणी महानिदेशालय और राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुपालन में आकाशवाणी, इंदौर में 22 मार्च, 2012 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री सोधिया के कहा कि केन्द्र द्वारा अब लगभग 92-93 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जाने लगा है। फिर भी शत-प्रतिशत के लक्ष्य को पाने के लिए हमें इस दिशा में थोड़ा और प्रयत्न करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि चूँकि केन्द्र में तकनीकी कार्य तथा कुछ अत्यावश्यक कार्य ऐसे होते हैं, जिन्हें उसी रूप में अर्थात् जिस रूप में उच्चाधिकारियों द्वारा जानकारी चाही गई है, हमें जानकारी तुरन्त प्रेषित करनी होती है। इस वजह से शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करना सम्भव नहीं हो पाता । फिर भी यदि हम कम से कम उन कार्यों को हिंदी में करना शुरू कर दें, जिन्हें एक बार हिंदी में किया जा चुका है तो भी हिंदी पत्राचार के प्रतिशत को और 2-3 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। और ऐसा होने पर हम केन्द्र का अधिकतम अथवा 'शत-प्रतिशत' कार्य हिंदी में हो रहा है, ऐसा मान सकते हैं श्री सोधिया ने इन कार्यशालाओं की प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि यहां हम प्रत्येक तिमाही में भिन्न-भिन्न विषयों के सन्दर्भ में आ रही कठिनाइयों पर आपसी विचार-विमर्श करते हुए उनका हल ढूँढने का प्रयास करते है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस अवसर का पूरा लाभ उठाने का आग्रह किया ।

सत्र के दौरान 'प्रशासन-लेखा सम्बन्धी मामलों में टिप्पण-आलेखन एवं पत्राचार' विषयक श्री प्रमोदचन्द्र मिश्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने पत्राचार के विभिन्न रूपों जैसे कार्यालय ज्ञापन, ज्ञापन, सामान्य पत्र, अर्द्ध-सरकारी पत्र, परिपत्र, आवेदन-पत्र इत्यादि, हिंदी में किस प्रकार तैयार किए जाएँ, इस बारे में व्यावहारिक जानकारी दी। इस सन्दर्भ में उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि वे अपनी टिप्पणियों तथा स्वीकृति आदेश सम्बन्धी प्रारूपण में संगत नियमावली का उल्लेख भी अवश्य किया करें ।

(घ) विश्व हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

परमाणु ऊर्जा विभाग, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद

नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद में दिनांक 10 जनवरी, 2012 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। श्री शरत बाबू, वैज्ञानिक अधिकारी द्वारा प्रस्तुत वंदना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तदुपरांत, श्री प्रणव कुमार बनर्जी, उप मुख्य कार्यपालक (टीएस) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने स्वागत भाषण में कहा कि–'हमें अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। रूस, चीन व फ्रांस ने अपनी भाषा के बल पर चहुँमुखी प्रगति की है। इसी प्रकार, हमें भी राजभाषा हिंदी में काम कर, देश का गौरव बढ़ाना चाहिए क्योंकि हिंदी में काम करना, देश के लिए काम करने के समान है।'

कार्यालय की प्रशासनिक प्रधान श्रीमती ए. रमादेवी ने अपने संबोधन में 'एनएफसी में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर संतोष व्यक्त किया और राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में मन से जुड़ने का आह्वान किया।' इस अवसर पर अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक श्री आर. एन. जयराज द्वारा विश्व हिंदी दिवस पर जारी संदेश का पाठ किया गया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में एनएफसी के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक ने कहा कि 'हिंदी साहित्य, मीडिया व विज्ञापन की भाषा के अलावा वैज्ञानिक लेखन में भी प्रयुक्त हो रही है। विदेशों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है और इसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है फलस्वरूप हिंदी को यूएनओ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता देने की मांग उठने लगी है यह सुखद संकेत है।'

इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में कामिनेनी अस्पताल, हैदराबाद के विख्यात उदर रोग शल्य चिकित्सक डॉ. जी. सत्यनारायण को आमंत्रित किया गया। श्रीमती कुंजन त्रिपाठी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने अतिथि वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया।

डॉ. जी. सत्यनारायण ने 'उदरकोष व्याधियां एवं उपचार' विषय पर व्याख्यान के दौरान अपने अनुभवों द्वारा श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। उन्होंने कहा कि संतुलित आहार और नियमित रूप से व्यायाम आदि की आदत द्वारा हम उदर संबंधी रोगों से अपने को दूर रख सकते हैं।

अंतरिक्ष विभाग, मुख्य नियंत्रण सुविधा पी.बी. नं. 66, हासन-573201

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन में मंगलवार दिनांक 10-1-2012 को विश्व हिंदी दिवस बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती माधुरी, प्राचार्या, नवोदय विद्यालय उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सी. जी. पाटिल, निदेशक, एमसीएफ ने की तथा उनके साथ मंच पर श्री बी.वी. कानडे, समूह निदेशक-पीयूसी एवं श्री पी. जी. विजयकुमार, प्रधान लेखा एवं आंविस/कासाप्र भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती कात्यायिनी, वरि. सहायक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रार्थना गीत से हुई। उसके बाद श्री बी.वी. कानडे जी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी को सरल भाषा बताकर सभी से हिंदी में कार्य करने तथा हिंदी को बढ़ावा देने पर जोर दिया। श्री सी. जी. पाटिल, निदेशक, एनसीएफ ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए हिंदी के कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए कई सुझाव दिए तथा उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिंदी में बात करने तथा अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने की अपील की।

मुख्य अतिथि श्रीमती माधुरी, प्राचार्या, नवोदय विद्यालय ने राजभाषा हिंदी और विज्ञान से संबंधित एक रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किया, साथ ही हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में और अधिक प्रयास करने पर बल दिया तथा उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी कार्यान्वयन से जुड़ी ज्ञानवर्धक जानकारी दी।

तत्पश्चात्, हिंदी अनुभाग द्वारा तैयार पत्रिका राजभाषा दर्पण का विमोचन माननीय निदेशक महोदय, एमसीएफ द्वारा किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक दिन पूर्व दिनांक 9-1-2012 को मुख्य नियंत्रण सुविधा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी में वार्तालाप तथा हिंदी में तकनीकी लेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। हिंदी में वार्तालाप प्रतियोगिता के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार दिए गए तथा हिंदी तकनीकी लेख प्रतियोगिता में प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कारों का वितरण विश्व हिंदी दिवस पर श्री सी. जी. पाटिल, निदेशक, महोदय के कर

कमलों द्वारा किया गया। श्री पी. जी. विजय कुमार, प्रधान, लेखा एवं आंविस/कासाप्र ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कार्यक्रम को समापन की ओर अग्रसर किया।

'ख' क्षेत्र

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा

भारी पानी संयंत्र, बड़ौदा में दिनांक 10-12 जनवरी, 2012 (मंगल-बृहस्पतिवार) को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। विश्व हिंदी दिवस मनाए जाने का निर्णय सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन (पारामारिबो, सूरीनाम) में लिया गया था। चूंकि 10 जनवरी को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था, अत: इसी दिन विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाना निर्धारित किया गया है। इस संयंत्र में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन वर्ष 2006 से किया जा रहा है। इस क्रम में यह छठी कड़ी थी।

इस कार्यक्रम का आरंभ संयंत्र के उप महाप्रबंधक श्री सुरेश चंद्र गुप्ता ने वाग्देवी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर के किया। उप महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश में एक संपर्क भाषा आवश्यक है, और हिंदी भाषा ही सबको एक साथ जोड़ सकती है।

इस अवसर पर हिंदी में राजभाषा वार्ता का आयोजन किया गया। इसका विषय था : स्वामी विवेकानंद की भाषण-शैली (डेढ़-सौवीं जयंती पर विशेष)। इसे प्रस्तुत करने वाली वार्ताकार थीं बड़ौदा की हिंदी साहित्यकार डॉ. गीतांजलि चटर्जी। स्वामी विवेकानंद की डेढ-सौवीं जयंती के अवसर पर उन्होंने विवेकानंद के ऐतिहासिक शिकागो भाषण को पहले अंग्रेजी में विवेकानंद के लहजे में पढ़कर तथा इसके बाद उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए उनकी भाषण-शैली पर प्रकाश डाला। उन्होंने विवेकानंद के कथन : जागो, उठो, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए, के अनुरूप राजभाषा हिंदी के वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने तक प्रयास करने का आह्वान भी किया। अपनी वार्ता के समापन पर उन्होंने विवेकानंद को समर्पित अपनी कविता झरोखे जिंदगी के सुनाकर भी प्रेरणा प्रदान की, जो विवेकानंद द्वारा कन्याकुमारी में समुद्र में छलांग लगाने के बाद मेमोरियल रॉक तक पहुंचने की घटना का दार्शनिक पक्ष प्रस्तुत करता है और राजभाषा हिंदी को उसका यथोचित स्थान दिलाने के लिए भी मनोबल बढ़ाता है :

दिशा अनंत है सुना, फिर भी दिशा भ्रमित नहीं।
डगर कठिन, कठिन सही, क्षितिज के पार जाना है।।
अनंत पथ की हूं पथिक, मृत्यु का नहीं है भय।
जीवन यदि एक सत्य है, तो मृत्यु भी मिथ्या नहीं।।
विचारों के इस शोर में, भले ही वाणी मूक है।
कर्म की परिभाषा है, जीवन तो केवल एक है।।

विश्व हिंदी दिवस समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की शृंखला में, दिनांक 12-1-2012 को हिंदी विज्ञान वार्ता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था : नदियों में छोड़े जाने वाले बहिस्रावों का प्रभाव तथा वक्ता थे : डॉ. सुरेन्द्र नारायण सिंह, सिफरी, बड़ौदा। अपने ज्ञानवर्धक तथा जन-उपयोगी वार्ता में उन्होंने अपने पॉवर-पाइंट प्रस्तुति के माध्यम से बहिस्राव तथा इसके स्रोत, उसके प्रकार, उसके मापन की विधि, उसके दुष्प्रभावों का मूल्यांकन आदि के बारे में बताया।

श्री नरेंद्र देव माथुर, तकनीकी सेवा प्रबंधक, भापासं, बड़ौदा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि बहि:स्राव की समस्या काफी समय से है। कोई भी प्रक्रिया अपनाएं, उसके साथ अवांछित पदार्थ बनता ही है, जिसे बहि:स्राव कहा जाता है। समुद्र-मंथन के समय निकले हालाहल का पान करने का दायित्व महादेव ने उठाया था, लेकिन रासायनिक संयंत्रों से निकलने वाले बहि:स्रावों को धरती माता को पीना पड़ता है, जो वहां से सभी चराचर जगत को प्राप्त होता है। इसलिए इसका निवारण करने का दायित्व हम सभी पर है तथा किसी संयंत्र को लगाने के समय ही उससे निकलने वाले बहि:स्राव के निपटान के बारे में भी विचार किया जाना चाहिए।

अंत में श्री वी.डी. तलाटी, प्रशासन अधिकारी-2 ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रश्मि वार्ष्णेय ने किया।

'क' क्षेत्र

परमाणु ऊर्जा विभाग, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिम क्षेत्र, परवनि सम्मिश्र, प्रताप नगर, सैक्टर-5 बवाला, सागानर, जयपुर-302030

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र में दिनांक 30 जनवरी, 2012 का पर्खान पक्षेत्र, जयपुर में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता हिंदी विद्वान देवर्षि कलानाथ शास्त्री तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. अशोक कुमार नागावत को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप-क्षेत्रीय निदेशक श्री ओ. पी. यादव ने की।

उप-क्षेत्रीय निदेशक श्री ओ.पी. यादव ने आमंत्रित अतिथियों के स्वागत भाषण में राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता हिंदी विद्वान देवर्षि कलानाथ शास्त्री तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. अशोक कुमार नागावत का परिचय प्रस्तुत किया इसके साथ ही उन्होंने उपस्थिति अतिथियों को परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र में राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया। इसके साथ ही उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने विश्व हिंदी दिवस पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए विश्व हिंदी दिवस के महत्व पर भी प्रकाश डाला जिसमें उन्होंने कहा कि हिंदी में विश्व भाषा बनने की पूरी क्षमता है आवश्यकता है तो उस क्षमता को पहचानने की एवं उसे अपने प्रयासों से विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने की।

अतिथि वक्ता राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने अपनी ओजस्वी एवं धाराप्रवाह वाणी में 'आधुनिक विश्व में हिंदी की भूमिका' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में श्री कलानाथ शास्त्री ने हिंदी की शक्ति एवं महत्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि हिंदी को विश्व भाषा के रूप में अलिखित रूप से तो मान्यता मिल ही चुकी है और यदि सकारात्मक प्रयास किए जाएं तो यह शीघ्र ही संयुक्त राज्य की सातवीं आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त कर सकेगी।

अपने व्याख्यान में श्री कलानाथ शास्त्री ने भाषा व संस्कृति के साझा महत्व पर भी प्रकाश डाला उन्होंने इस बात पर चिंता भी व्यक्त की कि आज देश की युवा पीढ़ी अंग्रेजी को अपनाने के कारण अपनी भारतीयता की पहचान को खोती जा रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी का व्याकरण भाषा विज्ञान, शैली व साहित्य हर कसौटी पर अंग्रेजी से उत्कृष्ट है परंतु फिर भी सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर इसे अभी तक वांछित पहचान नहीं मिल सकी है जिसके लिए आवश्यक है कि देश की युवा पीढ़ी हिंदी को ससम्मान अपनाने का बीड़ा उठाए साथ ही उन्होंने हिंदी की प्रगति के लिए विश्व हिंदी दिवस जैसे आयोजनों की सराहना भी की।

तत्पश्चात् द्वितीय अतिथि वक्ता के रूप में पधारे राजस्थान विश्वविद्यालय के भैतिक विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार नगावत ने तकनीकी विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. नगावत ने 'समय व आकाश' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. नगावत ने अत्यंत सहज व सरल भाषा का प्रयोग करते हुए पॉवर पांइण्ट प्रजेंटेशन के माध्यम से समय व आकाश की जटिल संकल्पनाओं को समझाया साथ ही उन्होंने अंतरिक्ष के अनेक गूढ़ रहस्यों पर चर्चा की।

प्रो. नगावत ने समय व आकाश की प्राचीन व नवीनतम संकल्पनाओं पर चर्चा करते हुए न्यूनटन व आईस्टीन जैसे महान वैज्ञानिकों की खोजों व परिकल्पनाओं को समझाया जिसमें उन्होंने प्राचीन काल की सभ्यताओं व दार्शनिकों के सिद्धांतों के आधार पर इस जटिल संकल्पना को समझाने का प्रयास किया। प्रो. नगावत ने भौतिक विज्ञान के इस जटिल विषय को अत्यंत सरल भाषा के माध्यम से एक सहज व सुबोध विषय के रूप में प्रस्तुत किया जिसे उपस्थित सभी श्रोताओं ने बहुत सराहा।

(ङ) हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (वाणिज्यक, निर्माण एवं प्राप्ति लेखा परीक्षा) एवं कार्यालय वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखा परीक्षा एवं लेखा), कार्यालयों द्वारा सम्मिलित रूप से हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह दिनांक 14-9-2011 को कार्यालय के परिसर में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इस के साथ दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक मनाए जाने वाले हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया।

महालेखाकार (सी.डब्ल्यू.आर.ए.) अपने संक्षिप्त भाषण में हिंदी दिवस का तात्पर्य समझाते हुए कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सभी देश वासियों को एक साथ जोड़ कर रखने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि यह हमारा कर्तव्य है कि इसे हम पूर्ण रूप से अपनाएं। उस के बाद आमंत्रित मुख्य अतिथि बी. जे. बी. महाविद्यालय हिंदी विभाग के मुख्य डॉ. शंकर लाल पुरोहित ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी देश के प्रत्येक कोने में पहुंच गई। अब इसे आगे ले जाने का कार्य हम सभी पर है। कार्यालयों में हिंदी के कामकाज को आगे बढ़ाने के लिए कर्मचारियों द्वारा किए गए प्रयासों को उन्होंने सराहा। तदुपरांत अपने संक्षिप्त भाषण में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि संविधान में हिंदी को राष्ट्रीय गौरव प्राप्त हो गया। हिंदी अब हमारे जीवन का मुख्य अंग बन गई है। टी.वी. चैनलों एवं अन्य माध्यमों से हिंदी बहुत आगे बढ़ गई। केवल कार्यालय के प्रयोग में इसकी गति थोड़ी धीमी हो गई है। फिर भी कर्मचारी एवं अधिकारी अपने प्रयासों से इसे और आगे ले जा सकते हैं।

हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं वर्गवार आयोजित किए गए। वरिष्ठ लेखा अधिकारी/लेखा अधिकारी, सहायक लेखा अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए जिस में शुद्ध शब्द चयन, कविता पाठ, वाद-विवाद, निबंध लेखन शामिल है। इसके अतिरिक्त हिंदी प्रश्नमंच एवं अंत्याक्षरी प्रतियोगिताएं भी आयोजित किए गए जिसमें सभी वर्ग के कर्मचारी काफी संख्या में भाग लिए।

दिनांक 28-9-2011 को तीनों कार्यालयों द्वारा समापन समारोह स्थानीय "जयदेब भवन" में पूर्वाह्न 11.00 बजे से 2.00 बजे तक बड़े धूमधान से मनाया गया। उक्त समारोह के मुख्य अतिथि थे ओड़िशा राज्य सरकार ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री एस. एन. त्रिपाठी ने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह पर उन्हें हिंदी में कहने का अवसर प्राप्त हुआ जिससे वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि वे स्वयं हिंदी भाषी हैं एवं हिंदी भाषा का एक पहलू है एवं एक प्रक्रिया है। उन्होंने आगे चलकर कहा कि हिंदी राजभाषा होते हुए भी अंग्रेजी का बोलबाला चल रहा है। यह बड़े दुख की बात है। आंचलिक भाषा के साथ-साथ हिंदी को भी बढ़ावा देना चाहिए। हिंदी देश की प्राण है। रेल यातायात और टेलीफोन के बाद हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो एक राज्य से दूसरे राज्य को जोड़ती है। उन्होंने कहा कि संविधान में हिंदी को पूर्ण रूप से राजभाषा का दर्जा मिल चुका है एवं हमें सहिष्णुता का भाव से उसे मजबूत करना है एवं राष्ट्रभाषा होने के कारण उसे सम्मान करना है। उन्होंने और भी कहा कि भारत की सभी भाषाएं बहने जैसी हैं और भारत के किसी भी कोने में जाएं तो हमें सभी भाषाओं में सामंजस्य नजर आता है। उन्होंने वैश्वीकरण (ग्लोबालाइजेशन) का उल्लेख करते हुए कहा कि विदेशियों ने भारत में अपने माल को बेचने के लिए हिंदी भाषा का सहारा लिया एवं उसी भाषा में अपने माल का विज्ञापन उसे भारत के सभी हिस्से में पहुंचाया क्यों कि वे जानते हैं कि भारत का अधिकांश हिस्सा हिंदी भाषी है।

सीमा-शुल्क आयुक्त (निवारक) का कार्यालय, 110, महात्मा गांधी रोड, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग-793001 (मेघालय)

सीमा एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग में 14 सितम्बर, 2011 से 28 सितम्बर, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

मुख्य अतिथि श्री डी.डी. इंग्टी ने समारोह में उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को कार्यालयीन कामों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया । वही श्री अपलक दास, सीमा-शुल्क कार्यालय मंडल, शिलांग के उपायुक्त ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए वर्तमान में हिंदी के महत्व के बारे में वक्तव्य रखा । दूसरी ओर अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलांग के निदेशक प्रो. वी. एस. शुक्ला ने कई रोचक प्रसंगों का ज़िक्र करते हुए हिंदी सीखने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया । वहीं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, शिलांग के आयुक्त श्री अनिल कुमार गुप्ता ने आयुक्तालय में हिंदी में हो रही प्रगति का एक संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सभी से अनुरोध किया ।

पखवाड़े का समापन 28 सितम्बर, 2011 को हुआ, जिसमें मुख्य आयुक्त श्री डी.डी. इंगटी मुख्य अतिथि के रूप में पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को बधाई देते हुए पुरस्कार वितरित किया ।

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप कोट्टण हिल बंगला, तिरुवनंतपुरम

हिंदी पखवाड़ा दिनांक 19 सितम्बर, 2011 से 30 सितम्बर, 2011 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ मनाए गए।

30 सितम्बर, 2011 को हिंदी पखवाड़े के विशेष समारोह के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम भी थे। इस अवसर पर निदेशालय के उप महानिदेशक ब्रिगेडियर सी. संदीपकुमार, वी एस. एम, ने समापन समारोह का उद्घाटन किया।

इस वर्ष के हिंदी पखवाड़ा समारोह के विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में इस निदेशालय के केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारियों ने भाग लिया था । इसी प्रकार राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, केरल और लक्षद्वीप में हिंदी की प्रगति बहुत सराहनीय है। इसके लिए इस निदेशालय के हर अधिकारी व कर्मचारी बहुत दिलचस्पी दिलाते हैं।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इस निदेशालय के उप महानिदेशक, ब्रिगेडियर सी. संदीपकुमार, वी एस एम ने नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र वितरण किए। विभिन्न प्रतियोगिताओं और विजेताओं के पूर्ण विवरण भी इसके साथ हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, आई. एस. ओ., पंचदीप भवन, 5/1, ग्रांट लेन, कोलकाता

दिनांक 1 सितंबर से 14 सितंबर, 2011 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। राजभाषा पखवाड़ा के आयोजन के दौरान सर्वप्रथम राजभाषा शाखा से एक परिपत्र जारी कर इस कार्यालय एवं इस कार्यालय के अधीन सभी शाखा कार्यालयों के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से पखवाड़ा के दौरान अपने अधिकाधिक कार्य हिंदी में निपटाने का अनुरोध किया गया ।

समापन समारोह में हिंदी पखवाड़ा, 2011 के दौरान मुख्यालय कार्यालय के अनुदेशानुसार आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता कार्मिकों की उद्घोषणा की गई तथा मख्य अतिथि श्री शुक्ला एवं अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक सहित उपस्थित प्रमुख अधिकारियों के कर पल्लवों से उन्हें पुरस्कृत किया गया। हिंदी प्रतियोगिताओं में कार्मिकों के उत्साहपूर्ण भागीदारी के लिए शेष सभी प्रतिभागियों की सराहना की गई ।

समारोह के मुख्य अतिथि अत्यंत विनम्र एवं ओजपूर्ण व्यक्तित्व के डॉ. (श्री) अनिल शुक्ला के संबोधन की सरसता से दर्शकदीर्घा की गंभीरता दर्शनीय थी। श्री शुक्ला ने राजभाषा हिंदी के गतिमान वर्तमान एवं सक्षम भविष्य की चर्चा अत्यंत रोचक ढंग से की। उन्होंने कहा कि हिंदी आज सरकारी कामकाज की भाषा ही नहीं देश के कोने-कोने के जनमानस की अभिव्यक्ति की भाषा बन गई है। आज अर्थ-व्यापार के क्षेत्र में भी हिंदी संचार के सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर आ रही है। अतएव देश की शासकीय भाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जन संपर्क की भाषा के रूप में आज हिंदी की पहचान सर्वविदित है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री जी.सी. जेना, अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक का अध्यक्षीय संबोधन अत्यंत ही प्रेरक एवं गत्यात्मक था । उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि वह इस कार्यालय में हिंदी में कामकाज को मुख्यालय द्वारा निर्धारित प्रतिशतता तक संवर्धित करने के प्रति प्रतिबद्ध हैं । इसके लिए सभी से एकजुट होकर प्रयास की अपील करते हुए उन्होंने शीघ्र ही इस क्षेत्र के लिए हिंदी में कामकाज की निर्धारित प्रतिशतता से भी आगे बढ़ने के प्रति आशा व्यक्ति की ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी-21

दिनांक 1 से 14 सितम्बर, 2011 तक राजभाषा पखवाड़ा तथा 14 सितम्बर, 2011 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़े ही धूम-धाम से किया गया। इस दौरान कार्यालय का पूरा वातावरण मानो हिंदीमय हो गया ।

राजभाषा पखवाड़ा का विधिवत् उद्घाटन 1-9-2011 को श्री पी. बरुआ, क्षेत्रीय निदेशक ने किया। उन्होंने सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अपना अधिकतम काम हिंदी में करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यालय के लगभग सभी कार्मिक 'प्राज्ञ' पास हैं इसलिए वे नि:संकोच होकर हिंदी में काम करें। वे गलतियों से घबराऐं नहीं। लगातार हिंदी में काम करने से वे अभ्यस्त हो जाएंगे ।

पखवाड़े के दौरान मुख्यालय द्वारा अनुमोदित चार प्रतियोगिताओं-हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता तथा हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के अंतिम दिन अर्थात् दिनांक 14-9-2011 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हर्षोल्लास से किया गया ।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी 23 विजेताओं को क्षेत्रीय निदेशक व अतिथिगण के कर-कमलों द्वारा नगद पुरस्कार व आकर्षक प्रमाण-पत्र दिया गया ।

भारत संचार निगम नियमित

दूरसंचार जिला महाप्रबंधक, कार्यालय गुलबर्गा

हिंदी पखवाड़ा समारोह के अंतर्गत, दिनांक 1-9-2011 से 12-9-2011 तक न.रा. का.स. के अंतर्गत गुलबर्गा नगर स्तर पर टिप्पण व आलेखन, सुलेख, श्रुतलेख, भाषण स्पर्धा, गायन, निबंध, आशु भाषण, प्रश्न मंच, का भी आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में गुलबर्गा नगर के अधिक केंद्रीय कार्यालय, बैंक, निगम, दूरदर्शन, आकाशवाणी के कर्मचारी एवं अधिकारीगण जोश के साथ भाग लेकर अनेक पारितोषक एवं नकद पुरस्कार प्राप्त किए ।

दिनांक 9-11-2011 को ठीक 4-00 बजे दूरसंचार जिला महाप्रबंधक कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । श्री एस. सबीश, महाप्रबंधक एवं न. रा. का. स. की अध्यक्षता में बहुत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हो गया ।

हिंदी दिवस के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री डी. कल्याणराव, वरिष्ठ अधिक्षक, डाक विभाग, गुलबर्गा, अपने अतिथि भाषण में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन कैसे निभाया जाए, और इसे आगे बढ़ाने के लिए हमारी जिम्मेदारी क्या है इसके संबंधित सविस्तार से बता दे। आगे कहा कि हिंदी को सही मायने में स्वीकार करना है तो सर्वप्रथम अपने मानसिकता को बदलना चाहिए, तभी अपनी हिंदी नौकरानी के पद को न संभालते हुए वह एक मालिक के रूप में कार्य करेगी।

दूरसंचार जिला महाप्रबंधक कार्यालय के महाप्रबंधक श्री एस. सबीश अपने अध्यक्षीय भाषण में यह जिक्र किया कि हिंदी दिल से या मन से अपनानी चाहिए। और हिंदी राजभाषा कार्यन्वयन का कामकाज हिंदी में होना चाहिए ।

बी ई एस एल लिमिटेड, 23/1, चौथा मैन रोड, एस. आर. नगर, बैंगलौर-560027

सामूहिक कार्यालय, सभी कॉम्प्लेक्स कार्यालयों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में 14 सितंबर से 13 अक्तूबर, 2011 तक हिंदी माह बड़े जोर-शोर से मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूर्ण उत्साह से इसमें भाग लिया। राजभाषा के प्रसार के उद्देश्य से इस दौरान हिंदी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वर्ग पहेली प्रतियोगिता तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी तथा चुनें और बोलें प्रतियोगिता, इन 4 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता को छोड़कर अन्य सभी प्रतियोगिताएं हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी वर्गों में आयोजित की गईं और दोनों भाषियों को अलग-अलग पुरस्कार भी दिए गए।

दिनांक 14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिवस प्रतिज्ञा के साथ पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। संबंधित कार्यालयों के प्रमुख सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रतिज्ञा दिलाया तथा सभी अधिकारी/कर्मचारी उसे दोहराए। श्री गणेश नटराजन, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) ने हिंदी माह समापन समारोह की अध्यक्षता की, जिसमें उन्होंने रेखांकित किया था कि 'आज के वैश्वीकरण के युग में हिंदी की जरूरत और भी बढ़ गई है । राजभाषा कार्यान्वयन में सभी कर्मचारी अपना सहयोग केवल हिंदी माह तक सीमित न रखते हुए उसे निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति तक निरंतर बनाए रखें। सभी विभागों के समन्वयकों तथा विभागाध्यक्षों को और भी अधिक प्रयास करके हिंदी को आगे बढ़ाना चाहिए ।' उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अपने करकमलों से पुरस्कार वितरण किया। उन्होंने हिंदी दिवस और हिंदी माह मनाए जाने पर अपनी हार्दिक शुभकामना देते हुए संतोष प्रकट किया।

एच एल एल लाइफ केयर लिमिटेड, पूजप्पुरा तिरुवनंतपुरम-695012

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह पेरुरकड़ा फैक्टरी ज़वाहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में 14 दिसंबर, 2011 को संपन्न हुआ। एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम. अय्यप्पन की अध्यक्षता में गठित इस

समारोह का उद्घाटन केरल के सम्माननीय ग्रामीण विकास, योजना एवं सांस्कृतिक मंत्री श्री के. सी. जोसफ जी द्वारा किए गए। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता पर जोर देकर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए एचएलएल में हो रहे कार्यक्रमों की खूब प्रशंसा की। साथ ही मंत्रीजी ने स्वास्थ्य रक्षा के क्षेत्र में एचएलएल द्वारा दिए जा रहे योगदानों की भी सराहना की।

एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम. अय्यप्पन जी ने हमारी कंपनी में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की आवश्यकता और इसके निष्पादन के लिए कंपनी में लागू की गई प्रोत्साहन योजनाओं को व्यक्त किया।

एचएलएल के निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन), श्री एम.डी. श्रीकुमार की अध्यक्षता में कंपनी की पेरुरकड़ा फैक्टरी में 24 जनवरी, 2012 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह का उद्घाटन केरल के सम्माननीय अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग का कल्याण एवं पर्यटन मंत्री श्री ए.पी. अनिलकुमार जी द्वारा किए गए। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमारी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एचएलएल जैसे एक सार्वजनिक उद्यम का श्रम एकदम स्मरणीय है। हिंदी भारत के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। अत: शासन की व्यक्तता दृढ़ कराने एवं इसका गुण जनता तक पहुंचाने के लिए इस भाषा की सख्त ज़रूरत है। उन्होंने आगे बताया कि हिंदी नौकरी का मात्र नहीं हरेक की जिन्दगी का एक भाग होना चाहिए।

मंत्री महोदय द्वारा हिंदी पखवाड़ा समारोह के बीच कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं भारत सरकार, गृह मंत्रालय, पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा चलाई प्रवीण परीक्षा में उत्तीर्ण हुए कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए।

जवाहर नवोदय विद्यालय फुरत्रो माओ, जिला-सेनापति, मणिपुर

दिनांक 14 से 30 सितंबर, 2012 तक विद्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। विद्यालय की हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हिंदी पखवाड़े में संपन्न होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयारी की गई। कार्यक्रमों के अनुसार विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :-

हिंदी कविता-वाचन प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता, हिंदी समूह-गान प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी कहानी-लेखन प्रतियोगिता।

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद में दिनांक 5-9-2011 सें दिनांक 13-9-2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया तथा हिंदी सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 14 सितंबर, 2011 को शाम 4.00 बजे रखा गया। इसी समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

कार्यालय के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने अनुभव किया है कि सभी जगहों पर अधिक से अधिक लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं और हिंदी एक अच्छी सम्पर्क भाषा है जिसकी सहायता से अपने विचार दूसरों तक पहुंचा पाते हैं। हिंदी बोलते अधिक लिखते कम है। उन्होंने कहा कि अपने सभी आवेदनों पर केवल हिंदी भाषा में हस्ताक्षर करें।

श्रीमती एम. शैलेजा, उप-निदेशक ने बताया कि भाषा का महत्व अधिक है क्योंकि हमें विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का माध्यम भाषा ही है। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है इसे सिखना परमावश्यक है। हमारे कार्यालय में सभी कर्मचारी हिंदी का प्रयोग अपनी फाईलों में करें। धीरे-धीरे कर्मचारियों को पूर्ण अभ्यास हो जाए।

श्री एन. माधव रेड्डी, उप-महानिदेशक (अभि) ने बताया कि सभी कर्मचारी प्रतिदिन अपना कुछ न कुछ कार्य हिंदी में करें और सभी प्रतियोगिता के विजेताओं को शुभकामना दी और सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

'ख' क्षेत्र

केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला केंद्रीय न्यायालयिक संस्थान परिसर, प्लाट नं. 2, दक्षिण मार्ग, सैक्टर-36ए, चण्डीगढ़

1 से 14 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन राजभाषा के व्यापक प्रसार-प्रचार करने के संकल्प

को दोहराते हुए तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा में और अधिक दक्षता हासिल करने के उद्देश्य से किया गया। डॉ. एस. के. शुक्ला, निदेशक के प्रोत्साहनपूर्वक आह्वान के फलस्वरूप हिंदी पखवाड़े की विशेषता यह रही कि हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में इस प्रयोगशाला के 67 अधिकारियों, कर्मचारियों, अनुसंधान अध्येताओं, अनुसंधान वैज्ञानिकों ओर शोधकर्त्ताओं द्वारा छह हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिससे संपूर्ण पखवाड़े के दौरान प्रयोगशाला परिसर में हिंदीमय वातावरण बना रहा।

केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, चंडीगढ़ में 15 सितम्बर, 2011 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए डॉ. एस. के. शुक्ला, निदेशक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आह्वान करते हुए कहा कि वे अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का भरसक प्रयास करें ताकि राजभाषा हिंदी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा सरकारी कामकाज में किया जा सके। हिंदी दिवस समारोह के विशिष्ट अतिथियों : डॉ. गोपाल जी मिश्रा व डॉ. रजनीकांत तिवारी ने प्रयोगशाला कर्मियों को हिंदी दिवस की शुभकामना दी तथा हिंदी के बारे में अपने विचार प्रकट किए।

इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित छह प्रतियोगिताओं के 15 सफल विजेताओं को विशिष्ट अतिथियों के करकमलों द्वारा नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए

पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, जम्मू

उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2 के क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू एवं इसके अधीनस्थ विभिन्न स्थल कार्यालयों एवं उपकेन्द्रों में दिनोक 14 से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़े का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्मिकों हेतु सुलेख प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, बच्चों के लिए काव्यपाठ प्रतियोगिता, कार्मिकों के जीवन साथियों के लिए अन्ताक्षरी प्रतियोगिता एवं कार्मिकों द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। समापन समारोह के अवसर पर क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू में प्रतियोगिताओं के लगभग 60 विजेता प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया।

दूरदर्शन केंद्र मुंबई

दूरदर्शन केंद्र: मुंबई में दिनांक: 1-9-2011 से 30-9-2011 तक "हिंदी माह" का आयोजन किया गया था। इस दौरान कार्यालय अध्यक्ष द्वारा कर्मचारी सदस्यों को अपील, हिंदी में कार्य करने के लिए आदेश/अनुदेश, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों नियमों एवं विनियमों से कर्मचारी सदस्यों को अवगत कराना इत्यादि कार्य किए गए। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरुचि जागृत करने तथा उनके उत्साहवर्धन के लिए हिंदी को विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीतने वाले कर्मचारी सदस्यों एवं पूरे वर्ष हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले कर्मचारी सदस्यों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए दिनांक : 2-2-2012 को अपराह्न 3.30 बजे दूरदर्शन के सभागार में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले तथा हिंदी में पूरे वर्ष कार्य करने वाले 69 अधिकारियों/कर्मचारियों को उप-महानिदेशक (कार्यक्रम) एवं उप-महानिदेशक (अभियांत्रिकी) महोदय ने अपने करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए केंद्र के उप-महानिदेशक (अभियांत्रिकी) श्री थामस ने कहा कि हिंदी राष्ट्र को जोड़ने का कार्य करती है, इसलिए राष्ट्र की एकता में इसकी विशिष्ट भूमिका है। अध्यक्ष पद से अपने विचार व्यक्त करते हुए केंद्र के उप-महानिदेशक (कार्यक्रम) श्री लक्ष्मेंद्र चोपड़ा जी ने कहा कि हिंदी जनभाषा है, जो राष्ट्र को जोड़ने का काम करती है। हिंदी अपरिहार्य है और अब इसके बगैर काम नहीं चल सकता। उन्होंने सभी अपना कार्यलयीय कार्य हिंदी में सम्पन्न करने का आह्वान किया।

दूरदर्शन केंद्र, राजकोट

दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक हिंदी पखबाड़ा मनाया गया। इस दौरान हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतलेखन, प्रश्नोतरी, अधूरी कहानी और 3 व 4 अक्तूबर, 2011 को शीघ्रवाक एवं हिंदी टिप्पण कुल मिलाकर छह हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं में केंद्र के 31 अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखबाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 14-11-2010 सोमवार को सायं 3 बजे केंद्र के

सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अथिति श्री जे. प्रसाद, प्रधानाचार्य केंद्रीय विद्यालय, राजकोट के थे। श्री प्रसाद साहब एवं डॉ. एस. ए. वोरा, कार्यक्रम अध्यक्ष ने अपने कर कमलों से विजेताओं और प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान करके हिंदी प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया।

'क' क्षेत्र

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोटा

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोटा में 8 सितंबर, 2011 से 14 सितंबर, 2011 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन संबोधन में श्री एन. मधुसूदन राव, मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि यह बिडंबना ही है कि हमें अपने ही देश में हिंदी सप्ताह मनाकर लोगों को हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए जागरूक करना पड़ रहा है। मैं तो उस दिन के इंतजार में हूं जिस दिन इस तरह के आयोजन बंद होंगे और पूरे देश का कामकाज हिंदी भाषा में होगा। इसके लिए हम सभी को हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए तभी यह संभव हो सकेगा।

श्री आर. डी. मीना, राजभाषा अधिकारी ने इस अवसर पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सप्ताह का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 14 सितंबर 2011 को आयोजित किया गया।

सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों व सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक श्री एन. मधुसूदन राव के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कार्यालय मुख्य परियोजना प्रबंधक, रेल विद्युतीकरण, अंबाला छावनी

केंद्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन, इलाहाबाद के अधीन कार्यरत अंबाला परियोजना पर 9 सितंबर से 15 सितंबर, 2011 तक राजभाषा सप्ताह मनाया गया।

सप्ताह के मध्य भारतीय रेल, राजभाषा नीति तथा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता संपन्न कराई गई। ज्यादा से ज्यादा कर्मचारियों ने कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भागीदारी सुनिश्चित की।

दिनांक 21 सितंबर, 2011 को संपन्न राजभाषा पुरस्कार वितरण के भव्य समारोह का शुभारंभ "राजभाषा प्रगति प्रदर्शनी" से हुआ, जिसका उद्घाटन मुख्य परियोजना प्रबंधक कर्नल दयाल डोगरा ने किया।

श्री मनोज कुमार पाण्डेय, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य बिजली इंजीनियर ने सभी उपस्थित महानुभावों/प्रतियोगियों/पुरस्कार विजेताओं का हार्दिक अभिनंदन कर वार्षिक राजभाषा प्रगति रिपोर्ट और माननीय रेल मंत्री जी का प्राप्त संदेश पढ़ा। श्री पाण्डेय ने परियोजना पर किए जा रहे हिंदी प्रयोग संबंधी कार्यों का विशेष उल्लेख करते हुए प्रधान कार्यालय से मिली सराहना का भी जिक्र किया।

इसके बाद पुरस्कार वितरित किए गए। हिंदी प्रतियोगी एवं प्रशंसनीय कार्य करने वाले कुल 30 कर्मचारी पुरस्कृत हुए। राजभाषा प्रदर्शनी में बेहतर हिंदी कार्यों हेतु सिगनल एवं दूरसंचार शाखा को प्रथम, इंजीनियरी शाखा को द्वितीय, एवं भण्डार शाखा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय/हाजीपुर में दिनांक 14 सितंबर, 2011 से 23 सितंबर, 2011 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़ा के दौरान राजभाषा से संबंधित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जैसे–विचार गोष्ठी, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण, आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा क्विज (कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए), कंप्यूटर कार्यशाला, क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, राजभाषा प्रदर्शनी, कवि गोष्ठी, गीत-संगीत एवं पुरस्कार वितरण, पखवाड़ा के दौरान विभिन्न अवसरों पर आयोजित कार्यक्रमों में मुख्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

महानिदेशालय, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, निर्माण भवन, नई दिल्ली

महानिदेशालय, के.लो.नि.वि. में 1 सितंबर, 2011 से 30 सितंबर, 2011 तक हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास मनाया गया।

इस मास के दौरान कुल 6 प्रतियोगिताओं यथा टिप्पण और मसौदा लेखन, सरल अनुवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें

महानिदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भारी उत्साह के साथ भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 48 प्रतिभागी विजयी हुए जिन्हें एक लाख चौदह हजार आठ सौ रुपयों के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन मास के पुरस्कार वितरण समारोह का अयोजन महानिदेशक, के.लो.नि.वि. की अध्यक्षता में दिनांक 31-10-2011 को संपन्न हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी भाषा में जितनी आत्मीयता है वह किसी अन्य भाषा में नहीं। इस अवसर पर उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से निष्ठापूर्वक हिंदी के कार्यान्वयन में अपना योगदान देने की अपील की।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर आयुक्तालय, पटना, तृतीय तल, एनेक्सी भवन, केंद्रीय राजस्व भवन, वीरचंद पटेल पथ, पटना

केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, पटना के कार्यालय में दिनांक 14 सितंबर, 2011 से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया।

14 सितंबर, 2011 को कार्यालय के सभा-कक्ष में एक सेमिनार आयोजित की गई जिसमें हिंदी दिवस का विधिवत् उद्घाटन किया गया। इस सेमिनार में कुल 43 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

'श्री उत्कर्ष तिवारी, अपर आयुक्त ने बैठक में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यालय में राजभाषा को आगे बढ़ाना हमारा उत्तरदायित्व है परन्तु किसी भाषा से स्पर्धा करके या नीचे दिखाकर आगे बढ़ना, यह ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि राजभाषा का हमारे जीवन में बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी का कार्य बोझ समझकर नहीं करना चाहिए अपितु दिल से, इच्छा शक्ति से करना चाहिए। लगन से कोई कार्य भी सार्थक हो सकता है।

सेमिनार की सभा को संबोधित करते हुए श्री राजेश्वर सिंघल, अपर आयुक्त-सह-मुख्य अतिथि ने कहा कि टेक्नोलॉजी का विकास हिंदी की लोकप्रियता को काफी बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि देश के कई भागों में जाने का और घूमने का अवसर मिला और सभी जगह यह पाया कि हिंदी सर्वाधिक प्रचलित संपर्क भाषा है। कार्यालय में हिंदी के जटिल शब्दों का नहीं सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, 3 नेहरू प्लेस टोंक रोड, पो. बैग नं. 104, जयपुर-302015

राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय में 14 से 28 सितंबर, 2011 तक 'हिंदी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान स्टाफ के विभिन्न वर्गों के लिए 5 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में स्टाफ सदस्यों ने बड़ी संख्या में सोत्साह भाग लिया। दिनांक 14 व 28 सितंबर, 2011 को विशाल स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। 28 सितंबर, 2011 को 'वार्षिक हिंदी समारोह' आयोजित करके विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए।

कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, सैक्टर-24, नोएडा-201301

दिनांक 1-9-11 से दिनांक 14-9-2011 तक हिंदी पखवाड़ा व दिनांक 14-9-11 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन स्वागत कक्ष, नई-बिल्डिंग में अपराह्न 2-00 बजे किया गया।

निगम व अस्पताल कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार के प्रति अभिरुचि पैदा करने के लिए इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस बार जहां निबंध प्रतियोगिता का विषय था : 'विश्व व्यापार संगठन व भारतीय कृषक' या 'स्वतंत्रता व अनुशासन सहगामी हैं' या 'वैश्विक जलवायु परिवर्तन, चिंतनीय' विषय। वहीं वाक् प्रतियोगिता का विषय था : 'सांसदों व विधायकों हेतु स्नातक स्तर की शैक्षणिक योग्यता का अनिवार्य किया जाना'। टिप्पण एवम् आलेखन प्रतियोगिता तथा अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का भी सफल आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में पर्याप्त संख्या में कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनांक 14-9-11 को क.रा.बीमा अस्पताल, नोएडा में सादगीपूर्ण एवं उत्साहजनक ढंग से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता निदेशक (चिकित्सा) नोएडा डॉ. बी.जे.एस. सारंग ने की।

डॉ. बी. जे. एस. सारंग ने हिंदी पखवाड़े के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान किया एवं अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. बी. जे. एस. सारंग ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अस्पताल कार्मिकों को संबोधित करते हुए कहा कि संसार के सभी स्वतंत्र राष्ट्र अपनी भाषा का प्रयोग करने में गर्व की अनुभूति करते हैं। हमें भी उनसे सीख लेनी चाहिए। सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग सभी सरकारी कार्मिकों का नैतिक दायित्व है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, सरकार की राजभाषा नीति का हवाला देते हुए डॉ. सारंग ने कहा कि सरकारी कामकाज सरल, सहज तथा आम बोल-चाल की भाषा में निपटाया जाना चाहिए। उन्होंने अस्पताल कार्मिकों को अपना अधिकाधिक काम हिंदी में ही निपटाने की अपील की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री ए.एस. पाण्डे, उप निदेशक(वित्त) ने किया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सहसपुर, देहरादून में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखवाड़ा 14-9-2011 से 28-9-2011 तक मनाया गया। दिनांक 14-9-2011 को हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन तथा हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री रविन्द्र सेनी, उप-प्रधानाचार्य, श्री गुरु रामराय इण्टरमीडिएड कॉलेज, सहसपुर को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रतिदिन हिंदी दिवस हो तो आज हमें इस तरह के समारोह आयोजित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। हम उपदेश देते हैं किंतु स्वयं अनुसरण नहीं करते हैं। हमारी मानसिकता इस तरह की हो चुकी है कि हम बदलना नहीं चाहते हैं हम आज एक दूसरे से होड़ कर रहे हैं कि किसे कितना अंग्रजी का ज्ञान है। भूमण्डलीकरण एवं प्रतियोगिता के दौर में अंग्रेजी एक आवश्यकता अवश्य है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम हिंदी का पूर्ण रूप से तिरस्कार कर दें। आज हम सभी को संकल्प लेना होगा कि हम हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. पी.के. सिंह, वैज्ञानिक-डी ने कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने की सामर्थ्य रखती है। मानव स्वभाव है कि जब हम कोई काम शुरु करते हैं तो पहले विचार करते हैं फिर बुद्धि से सोचते हैं तत्पश्चात् उस काम का क्रियान्वयन करते हैं। हिंदी के उत्थान का कार्य करने के लिए भी हमें पहले विचार करना होगा फिर बुद्धि से सोचकर उसका क्रियान्वयन करना होगा। हिंदी ऐसी भाषा है जो भारत की संस्कृति इतिहास व सभ्यता से जुड़ी है। स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने ही इस देश को एक सूत्र में बांधकर स्वतंत्रता दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत दिनांक 14-9-2011 से 28-9-2011 तक कार्यालय में कुल छः हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने पूरे उत्साह से साथ भाग लिया।

आकाशवाणी, जमशेदपुर

आकाशवाणी जमशेदपुर में हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया गया। 14 सितंबर, 2011, दिन बुधवार को अपराह्न 3.30 बजे केंद्र के सम्मेलन कक्ष में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

राजभाषा पखवाड़ा का औपचारिक समापन दिनांक 30-9-2001 को दोपहर 12 बजे समारोह पूर्वक हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार सिंह, सहायक आयकर आयुक्त थे अपने स्वागत भाषण में हिंदी अधिकारी का दायित्व निभाते हुए श्री अजय कुमार राय, कार्यक्रम अधिशासी ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगताओं के सफल आयोजन की जानकारी दी। श्री अजय राय ने यह भी बताया कि हर्ष की बात है कि इस केंद्र के श्री योगेन्द्र प्रसाद, एफ.आर.आर. को आकाशवाणी महानिदेशालय द्वारा 'अखिल आकाशवाणी राजभाषा सम्मान-2009' प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार सिंह ने अपने अभिभाषण में कहा कि हमें हिंदी बोलने एवं लिखने में शर्म नहीं बल्कि गर्व महसूस करना चाहिए।

आकाशवाणी, जयपुर

दिनांक 14 सितंबर, 2011 को हिंदी दिवस के पावन अवसर पर हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में कोलाब हाईस्कूल, जयपुर के हिंदी अध्यापक श्री राधा मोहन पाण्डाजी पधारे थे। सभा की अध्यक्षता आकाशवाणी, जयपुर के कार्यालयाध्यक्ष श्री सुशान्त कुमार महान्ति ने किया। मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हिंदी दिवस में आकाशवाणी, जयपुर में प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। कार्यालयाध्यक्ष श्री महान्ति ने कहा कि कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करना हमारा कर्तव्य है। कार्यालयाध्यक्ष श्री सुशांत कुमार महान्ति ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि अनेकता में एकता की वार्ता प्रदान करने वाला भारत को एक सूत्र में जोड़ने की कड़ी है इसकी "राजभाषा हिंदी" अतः हमें हिंदी में कार्यालयीन कार्य बेझिझक करना चाहिए।

संगोष्ठी/सम्मेलन

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पटना में पूर्व क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन

दिनांक 9 फरवरी, 2012 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2010-11 के लिए पूर्व क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, वित्तीय संस्थाओं व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रगति के लिए पुरस्कार वितरण समारोह व विचार मंथन का आयोजन तारा मंडल सभाग्रह, इंदिरा गांधी साइंस प्रांगण, बेली रोड, पटना में किया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के माननीय सचिव श्री ए.एन.पी. सिन्हा द्वारा की गई । पंजीकरण का कार्य 9.50 बजे से 10.25 बजे तक चला । इसके पश्चात् प्रतिभागियों ने समय से सभागृह में पहुँचकर अपना-अपना स्थान ग्रहण किया । कार्यक्रम का शुभारंभ सम्मानित मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्जवलित कर सरस्वती वंदना से किया गया ।

स्वागत भाषण श्री डी.के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिया गया । कार्यक्रम को डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर, पूर्व निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, श्री भास्कर शर्मा, अध्यक्ष टॉलिक (उपक्रम), पटना तथा कार्यकारी निदेशक (कार्मिक), पावरग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया, श्री कुलभूषण जैन, अध्यक्ष, टॉलिक (बैंक), पटना ने संबोधित किया । डॉ. बी.एन. पाण्डेय, उपनिदेशक(कार्यान्वयन), पूर्व क्षेत्र ने अपने क्षेत्र की राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित स्थिति को विस्तारपूर्वक बताया ।

डॉ. जय प्रकाश कर्दम, निदेशक (कार्यान्वयन), नई दिल्ली ने पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से कार्यान्वयन की समग्र रिपोर्ट प्रस्तुत की । श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, एनआईसी, नई दिल्ली के पावर प्वाइंट के माध्यम से विभिन्न हिंदी साफ्टवेयरों के बारे में बताया । डॉ. एस.एन. सिंह, निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान में वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अनुवाद के सरलीकरण को रेखांकित किया ।

द्वितीय सत्र अपराह्न 2.30 बजे से प्रारंभ हुआ जिसमें राजभाषा नीति के मार्ग में आने वाली अड़चनों पर खुला सत्र का आयोजन किया गया जिस दौरान केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, बैंकों, स्वायत्तशासी निकायों से आए प्रतिभागियों ने राजभाषा नीति संबंधी तरह-तरह के प्रश्न उठाए । माननीय सचिव महोदय श्री सिन्हा ने प्रश्नों पर विचार करते हुए संबंधी अधिकारी को मुख्य बिंदुओं को नोट करने का निदेश दिया ताकि नीति का निर्माण किया जा सके । उन्होंने सुनिश्चित किया कि इस संबंध में अगली कार्रवाई हेतु एक नोट अग्रेसारित किया जाएगा । श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव, कार्यकारी संपादक, हिंदुस्तान, पटना, श्री के.सी. लाकड़ा, कार्यकारी निदेशक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, कोलकाता, ने इस सत्र को संबोधित किया । इन्होंने अपने भाषण में राजभाषा की वर्तमान तथा भावी स्थिति को स्पष्ट किया । श्री ए.एन.पी. सिन्हा, माननीय सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कर कमलों द्वारा संस्था प्रमुखों/प्रतिनिधियों एवं हिंदी अधिकारियों को क्रमशः शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया । डॉ. बी.एन. पाण्डेय, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ । कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात् एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा औरंगाबाद में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 16-03-2012 को औरंगाबाद में सिडको स्थित संत

जगतगुरु तुकाराम नाट्य गृह में पश्चिम एवं मध्य क्षेत्रों का एक दिवसीय पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में पश्चिम एवं मध्य क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले केंद्रीय कार्यालयों, बैंकों व उपक्रमों के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को वर्ष 2010-2011 के लिए पुरस्कृत किया गया ।

एक दिवसीय कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर विद्यापीठ के कुलपति मा. डॉ. विजय पंढरी पांडे जी उपस्थित थे । इस कार्यक्रम में राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों के वरिष्ठ कार्यपालक भी उपस्थित थे । कार्यक्रम में गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा राजस्थान राज्यों व संघ शासित प्रदेश दमण एवं दीव तथा दादरा नगर हवेली से बढ़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

सम्मेलन में विचार मंथन के अंतर्गत राजभाषा विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा संघ की राजभाषा नीति के संबंध में प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया गया । इस कार्यक्रम में कंप्यूटर व इंटरनेट पर हिंदी में कार्य करने की सरल आधुनिक सुविधाओं की जानकारी भी दी गई ।

समारोह के अध्यक्ष श्री डी.के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, भारत सरकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषा संप्रेषण का अनन्य उपकरण के साथ-साथ हमारी सामाजिक अस्मिता का एक सशक्त माध्यम भी है । भारत में अनेक धर्म रीति रिवाज और भाषाएँ हैं परंतु इन विविधताओं के बावजूद भी अद्‌भुत एकता दिखाई देती है । भाषायी एकता की स्थापना हिंदी भाषा के माध्यम से हो रही है । हिंदी भारत की संपर्क भाषा की भूमिका बड़े सहज और सरल ढंग से निभाती आ रही है । संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार राज्य सरकारों को अपना राजकीय कार्य अपनी-अपनी राजभाषाओं में करना है तथा केंद्र सरकार को अपना राजकीय कार्य संघ की राजभाषा हिंदी में करना है । संविधान ने हम सबके ऊपर भारतीय भाषाओं के विकास का दायित्व सौंपा है । इस ज़िम्मेदारी का निर्वाह हमें बड़े ही धैर्य, लगन और विवेकपूर्ण ढंग से करना है । उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिंदी का उत्तरोत्तर विकास इस बात पर निर्भर करता है कि कामकाज में इसका कितना प्रयोग किया जाता है । राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिये प्रशासन में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा का स्वरूप भी सरल होना चाहिए जो सभी की समझ में आसानी से आ सके ।

नराकास, औरंगाबाद के अध्यक्ष डॉ. शरद कुमार चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि महाराष्ट्र में हिंदी को राष्ट्रीयता की दृष्टि से देखा जाता है । जहाँ तक हिंदी के प्रचलन की बात है, मराठी की लिपि भी हिंदी की तरह देवनागरी लिपि है इसलिये पढ़ने लिखने में कोई समस्या नहीं है । हिंदी की शक्ति और महाराष्ट्र की राष्ट्र भक्ति जो मिलकर न केवल हिंदी के प्रसार को बल्कि राष्ट्रीय एकता को निरंतर आगे बढ़ा रही है । मैं महाराष्ट्र की इस भावना को नमन करता हूँ । उन्होंने आगे कहा कि इस क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के माध्यम से यहाँ हिंदी का एक जो दीप जला है वह लंबे समय तक हमें प्रेरणा देता रहेगा और औरंगाबाद में ही नहीं पूरे मराठवाडा में राजभाषा हिंदी की प्रगति तेजी से आगे बढ़ेगी ।

इससे पहले उप निदेशक (कार्यान्वयन), मुंबई के डॉ. एम.एल. गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा होती है । भाषा वह बंधन है जो राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोये रखती है । राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रभाषा किसी भी देश की आवश्यकता और पहचान है ।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विनय पंढरीपांडे, कुलपति, डॉ. भीमराम आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद ने क्षेत्रीय पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुये आशा प्रकट की कि वे हिंदी को बढ़ाने के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे । साथ ही अन्य कार्यालयों को भी हिंदी में अच्छा कार्य करने के लिये प्रेरित करते रहेंगे ।

इस अवसर पर अन्य अतिथि वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये । समारोह में राजभाषा विभाग की ओर से कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों तथा अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसकी सभी प्रतिभागियों द्वारा भूरी-भूरी प्रशंसा की गई ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, गुवाहाटी

पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय, गुवाहाटी में 30 व 31 जनवरी, 2012 को दो दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया । अपने अध्यक्षीय संबोधन में क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक (पूर्वोत्तर क्षेत्र) महोदय ने अपनी हार्दिक शुभकामना

व्यक्त करते हुए प्रतिभागियों से कहा कि वे संगोष्ठी के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा से संबंधित विभिन्न नियमों-विनियमों एवं संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली भरने संबंधी विषयों पर होने वाली चर्चा से भरपूर लाभ उठाएँ । संगोष्ठी की प्रथम घंटी का प्रारंभ भारत सरकार की राजभाषा नीति व राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा के साथ हुआ । इस विषय पर व्याख्यान देने हेतु अंचल कार्यालय, यूको बैंक, गुवाहाटी से श्री अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी, उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा), पधारे थे । भोजनावकाश के बाद निगमित मुख्यालय से पधारे श्री राजेन्द्र प्रसाद, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने दूसरी एवं तीसरी घंटी में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान दिए गए आश्वासनों की स्टेशनवार समीक्षा विषय पर अपने व्याख्यान दिए । दिनांक 31 जनवरी, 2012 को पहली घंटी में श्री राजेन्द्र प्रसाद, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण कार्यक्रम में समन्वयकर्ता कार्यालय के दायित्व पर अपना व्याख्यान दिया । जबकि दूसरी और तीसरी घंटी में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के अवसर पर समिति को प्रस्तुत की जाने वाली निरीक्षण प्रश्नावली भरने संबंधी विषय पर व्याख्यान भी उन्होंने ही दिया । संगोष्ठी के अंतिम सत्र में पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय के सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में कार्यालय अध्यक्षों के दायित्व के विषय पर व्याख्यान दिया तत्पश्चात् राजभाषा संगोष्ठी का समापन किया गया । इस संगोष्ठी का संचालन सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी द्वारा किया गया ।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र में दि. 22 व 23 दिसंबर, 2011 को 'ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात के उपयोग को बढ़ावा' नामक एक समसामयिक विषय पर अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी आयोजित की गई । इसमें आर आई एन एल के अलावा सेल, एन एम डी सी, मेकॉन आदि उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । इसका उद्घाटन समारोह दि. 22 दिसंबर, 2011 को पू. 10.00 बजे संपन्न हुआ । उद्घाटन समारोह के पश्चात् संगोष्ठी के विषय से संबंधित निम्नलिखित उप विषयों पर दि. 22 व 23 दिसंबर को पांच सत्र आयोजित किए गए जिनमें संगोष्ठी के प्रतिभागियों ने अपने-अपने प्रस्तुतीकरण दिए ।

- इस्पात उत्पादन से जुड़ी प्रक्रियाएं और उसकी विशेषताएं
- इस्पात विपणन की सामान्य प्रक्रिया और ग्रामीण व नगरीय परिदृश्य
- देश में मूल संरचनात्मक विकास की संभावना और इस्पात का उपयोग
- ग्रामीण क्षेत्र में इस्पात विपणन की संभावनाएं एवं ग्रामीण आवश्यकताएं
- ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात के उपयोग को बढ़ाने की भावी योजनाएं, अनुसंधान व विकास

उपर्युक्त उप विषयों से संबंधित 24 प्रस्तुतीकरण दिए गए । प्रत्येक सत्र के अंत में इस्पात उद्योग और विपणन से जुड़े वरिष्ठ कार्यपालकों द्वारा प्रस्तुतीकरणों की समीक्षा की गई । तत्पश्चात् दि. 23 दिसंबर, 2011 को सभी प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित करके उन्हें निम्नलिखित तीन मुख्य उप विषय दिए गए जिनपर प्रतिभागियों ने विचार-विमर्श करके अपने-अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए ।

√ ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले इस्पात की कीमतों को कम करना ।

√ ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात विपणन की चुनौतियाँ और समाधान ।

√ ग्रामीण क्षेत्रों में मूल संरचनाओं के विकास में इस्पात उत्पादकों की भूमिका ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, हरिद्वार रोड, मोहकमपुर, देहरादून

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में "36वीं आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी" का आयोजन गत दिवस संस्थान के सर सी.वी. रमन व्याख्यान-कक्ष में किया गया ।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. एस. एम. नानोटी ने कहा कि विगत दस वर्षों से अबाध गति से आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन निश्चित रूप से उपलब्धि का विषय है । किसी कार्य को प्रारंभ करना सहज है, लेकिन उसे अबाध गति से चलाए रखना अत्यंत कठिन है । राजभाषा अनुभाग, इस

कार्य को बखूबी निभाता आ रहा है, इसलिए बधाई का पात्र है ।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए संगोष्ठी के संयोजक एवं संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी डॉ. दिनेश चंद्र चमोला ने कहा कि विज्ञान का लाभ तभी है जब वह प्रयोगशालाओं से अधिक जन समुदाय तक पहुंचे । अधिसंख्य लोगों तक विज्ञान तभी पहुंच सकता है जब वह विशेषत: हिंदी व गौणत: अन्य राष्ट्रभाषाओं में भी अभिव्यक्त होगा । अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों व अनुसंधानों को राष्ट्रभाषा में अभिव्यक्त करते हुए हमें गर्व का अनुभव करना चाहिए । वैज्ञानिक उन्नति में ही राष्ट्र की समग्र उन्नति सन्निहित है । अत: हिंदी में विज्ञान चिंतन व लेखन दोनों ही राष्ट्रीय महत्व के कार्य हैं ।

संगोष्ठी सत्र में सर्वप्रथम डॉ. गौतम दास ने "गुरुतर पेट्रोलियम प्रभाजों के मधुरण हेतु कोबाल्ट थैलोसायनाइन डाइक्लोराइड उत्प्रेरक का विकास" विषय के अंतर्गत परिचय, उत्प्रेरक का विरचन, उत्प्रेरक अभिलक्षणन, कोबाल्ट थैलोसायानाइन डाइक्लोराइड की संरचना, सक्रियता परीक्षण, स्थिरता परीक्षण-प्रचालन शर्तें, स्थिरता परीक्षण-परिणाम तथा निष्कर्ष आदि बिंदुओं पर; श्री पंकज कुमार आर्य ने "प्रयोगात्मक जल तापक में काष्ठ आधारित ताप अपघटन तेल का दहन" विषय पर --पृष्ठभूमि, भौत-रासायनिक गुणधर्म, कुछ प्राथमिक कार्य, डीजल के साथ इमल्सन का विरचन, मिश्रण के साथ स्प्रे-बर्नर पर प्राथमिक परीक्षण तथा जल तापक पर वास्तविक परीक्षण; डॉ. सनत कुमार ने "पी पी डी की दक्षता को बाधित करने वाले अणुओं को ज्ञात करने का योजनाबद्ध अवलोकन: केस अध्ययन उच्च रंध्र तथा उच्च एस्फाल्कि कच्चा तेल" विषय पर--पृष्ठभूमि, लक्ष्य, क्रियाविधि, गमिज कच्चे तेल का प्रवाहिकी व्यवहार, गमिज कच्चे तेल के अभिलक्षण, प्रेक्षण तथा निष्कर्ष; श्री एस एन यादव ने "भारतीय परिवेश में निडिल कोक के उत्पादन की संभावनाएं" विषय पर--लक्ष्य, परिचय, फ़ीड स्टॉक, प्रचालन के प्राचल, प्रयोगात्मक अवसंरचना, निडिल कोक के उपयोग, निडिल कोक के विनिर्देश, भारत में विलंबित कोकर, तथा निष्कर्ष तथा श्री गजेंद्र मोहन बहुगुणा ने "अंतरिक्ष की खोज में स्पेक्ट्रोस्कोपी का अनुप्रयोग" विषय पर--आकाश गंगा, वैज्ञानिक स्टेफेन हॉकिंग शून्य गुरुत्व में, लार्ज हैड्रान कोलाइडर की चुंबकीय कोर, अंतरिक्ष में छोड़े गए मुख्य उपग्रह/वेधशालाएं/यंत्र, नासा का सिप्टजर स्पेस टेलिस्कोप, चंद्रा एक्स-रे वेधशाला, ब्लैक होल का चित्र, ब्लैक होल में घटित परिघटनाएं, ब्रह्मांड उत्पति का दिक्काल प्रतिरूपण, ब्रह्मांड उत्पति का प्रसार का मॉडल तथा विलकिन्सन माइक्रोवेव प्रोब के महत्वपूर्ण अवलोकन आदि पर अपनी-अपनी प्रभावी प्रस्तुतियां दीं । इस अवसर पर श्रोताओं के प्रश्नों तथा वक्ताओं ने जिज्ञासाओं का भी समाधान किया ।

अंत में श्री वी के कौशिक, प्रशासन नियंत्रक ने राजभाषा अनुभाग की इस अटूट शृंखला की सराहना करते हुए सभी उपस्थित वैज्ञानिकों, कर्मचारियों व उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया व इसे अनवरत बनाए रखने की आशा व्यक्त की ।

महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड, जागृति विहार, संबलपुर-768020

दिनांक 11 एवं 12 अप्रैल, 2012 को महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड में कोल इंडिया स्तरीय दो-दिवसीय राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया ।

मुख्य अतिथि श्री ए.के. सिंह ने हिंदी के प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार पर बल दिया । अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी की धारा को हम रोक नहीं सकते । देश के किसी भी भाग में हम लोग जाते हैं तो संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ही एक मात्र माध्यम बनता है, अत: हमें अपनी राजभाषा हिंदी को सीखना एवं अपनाना चाहिए ।

प्रथम दिन मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. शंकरलाल पुरोहित, पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी), वीजेबी कॉलेज, भुवनेश्वर ने अपने गत चालीस वर्षों के हिंदी की सेवा के दौरान प्राप्त अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया । उन्होंने कहा कि भाषा धीरे-धीरे प्रसारित होती है । इसीलिए हिंदी अपनी गति से विस्तृत होगी, बढ़ेगी । यह किसी के सम्मन का मोहताज नहीं । इसमें देश ही नहीं विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता है । हमारे देश भारत को एकजुट रखने हेतु हिंदी में प्रचार-प्रसार आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है ।

अतिथि वक्ता डॉ. वी पी मोहम्मद कुंजु मेत्तर, पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी) केरल विश्वविद्‌यालय, तिरूअनंतपुरम ने 'भारत सरकार के सार्वजनिक उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आ रही बाधाएँ एवं समाधान' विषय पर दिए गए अपने वक्तव्य में कहा कि कोई भी भाषा कानून से नहीं चलती बल्कि भाषा प्रेम और सौहार्द से पल्लवित एवं पुष्पित

होती है । हिंदी का राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में आज तक जितना भी कार्यान्वयन हो रहा है वह काबिले तारीफ है । यह स्वत: एवं अनवरत विकासित होती रहेगी । हिंदी भाषी क्षेत्रों के लोगों को चाहिए कि वे प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा के रूप में सिर्फ अंग्रेजी पर ध्यान न देकर अन्य भारतीय भाषाओं को बोलना, लिखना एवं समझना सीखें ।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार, पुणे, के सहायक निदेशक श्री आर पी वर्मा, सहायक निदेशक ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से कंप्यूटर पर यूनिकोड के प्रयोग के साथ साथ हिंदी में टंकण, अनुवाद करने एवं श्रुतलेखन आदि के प्रयोग को न सिर्फ मौखिक रूप से बताया बल्कि उपस्थित प्रतिभागियों को लैपटाप पर प्रमाणित करके दिखाया, जो अपने-आप में एक अनूठा एवं प्रशंसनीय प्रयास माना गया ।

डॉ. के विजय कुमार, सलाहकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली ने. 'राजभाषा हिंदी में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग : समस्यायें एवं समाधान' विषय पर बड़े ही सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसके तहत उन्होंने हिंदी शब्दों के प्रयोग में आनेवाली छोटी-मोटी कठिनाइयों के समाधान पर प्रकाश डाला ।

डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, संबलपुर ने 'गैर-हिंदीभाषी क्षेत्रों में राष्ट्रीयता की जागृति में राजभाषा की भूमिका' विषय पर बड़े ही सुन्दर ढंग से दृष्टिपात करते हुए कहा कि देश की जनता में सच्ची राष्ट्रीयता पैदा करने में हिंदी भाषा एवं अन्य भारतीय भाषाओं का काफी महत्व है अत: इसे अपनाना आवश्यक है । किसी भी संस्था के निम्न या शीर्ष पदों पर बैठे अधिकारियों के लिए स्वयं कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी को इस्तेमाल करने में सुविधा होती है, वे स्वयं कार्य कर लेते हैं परंतु जब बात अपने मातहतों के द्वारा राजभाषा हिंदी को कार्य में प्रयोग करवाने की होती है तो थोड़ी कठिनाई महसूस करते हैं । इस पर थोड़ा जोर देकर मातहतों के द्वारा कार्यान्वित कराया जाना चाहिए ।

नराकास (उपक्रम) वडोदरा

पश्चिम क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन--वडोदरा

''राजभाषा कार्यान्वयन की पहल स्वयं से करनी होगी'' यह उद्‌गार यहाँ, गुजरात रिफाइनरी टाऊनशिप में नराकास (उपक्रम) वडोदरा द्वारा 13-14 अक्तूबर, 2011 को आयोजित पश्चिम क्षेत्र के राजभाषा अधिकारियों के सम्मेलन में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप समिति के संयोजक श्री राजेंद्र अग्रवाल ने व्यक्त किए । श्री अग्रवाल ने कहा कि जब चीन, जापान जैसे राष्ट्र अपनी भाषा के माध्यम से ही उन्नति के शिखर पर पहुँच सकते हैं तो हम क्यों नहीं ? हममें आत्मसम्मान और आत्मबल की कमी है और जिस दिन यह कमी दूर हो जाएगी, तब हमारा देश भी विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा हो जाएगा ।

अतिथि विशेष राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव श्री डी के पांडेय ने कहा कि नगर राजभाषा समितियों की महता बढ़ती जा रही है और यह संख्या शीघ्र ही 300 से अधिक हो जाएगी । इस तरह के सम्मेलनों से राजभाषा के प्रसार में भारी योगदान मिलता है । इस अवसर पर, अध्यक्ष पद से बोलते हुए गुजरात रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक (प्रभारी) तथा नराकास के अध्यक्ष श्री पी शूर ने कहा कि हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए गुजरात की मिट्‌टी आदिकाल से उर्वरा रही है । हिंदी के सबसे बड़े प्रचारक महात्मा गांधी ही रहे हैं । हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसने भारत को पहले से ही एक सूत्र में बांध रखा है । आजादी की लड़ाई में भी इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गुजरात रिफाइनरी के उप महा प्रबंधक (मानव संसाधन) श्री एस. पांढ़ी ने कहा कि मैंने इंडियन ऑइल की सभी यूनिट देखी हैं और सभी के पास नराकास का संयोजन हैं, लेकिन ऐसा कार्यक्रम नहीं देखा । इस कार्यक्रम में हिंदी अधिकारियों के साथ साथ हिंदी प्राध्यापकों को भी आमंत्रित किया गया है, जिससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में और भी सहायता मिलेगी । प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के संयोजक तथा नराकास के सदस्य सचिव डॉ. माणिक मृगेश ने कहा कि हिंदी अधिकारियों ने जहां एक ओर हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वहीं भारतीय संस्कृति को भी संरक्षित किया है । पूरा देश जान गया है कि 14 सितंबर का मतलब ''हिंदी दिवस'' होता है । यह मनवाना और जनवाना बहुत बड़ी उपलब्धि है जिसका श्रेय हिंदी अधिकारियों को जाता है ।

दूसरे दिन यानी 14 अक्तूबर को पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा कार्यान्वयन : भविष्य की

चुनौतियाँ'' विषय पर अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए राजभाषा विभाग, मुंबई के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. एम एल गुप्ता ने कहा कि ''राजभाषा कार्यान्वियन जन जन की जिम्मेदारी है'' । इस सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन तथा नराकासों के संचालन में आने वाली परेशानियों की चर्चा एवं उनके समाधान पर मंथन किया गया । सत्र में ओ.एन.जी.सी., अंकेलेश्वर के उप मह प्रबंधक (मानव संसाधन) श्री निदेश कालरा ने विशेष अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि यह कहना ठीक नहीं है कि तकनीकी कार्यों में हिंदी का प्रयोग नहीं हो सकता, बल्कि सत्य तो यह है कि ओ.एन.जी.सी. में तेल अन्वेषण जैसे कार्यों की रिपोर्ट तक हिंदी में बनाई जा रही है, सिर्फ़ इरादा पक्का होना चाहिए ।

विशेष वक्ता के रूप में बोलते हुए न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के सहायक प्रबंधक श्री अमरीश सिन्हा ने कहा कि ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत. . . .सब कुछ मन पर टिका है'' ।.यदि हम मन से हिंदी को अपनाएँगे तो सारी समस्याएँ अपने आप हल हो जाएंगी । सत्र का संचालन करते हुए यूको बैंक, नागपुर के वरिष्ठ प्रबंधक--राजभाषा श्री शशि श्रीवास्तव ने राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में आने वाली समस्याओं के विषय में चर्चा की ।

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, जीवन भारती, लेवल-5, टावर-1, 124, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

''बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली अंचल द्वारा शुक्रवार, दिनांक 10 फरवरी, 2012 को राष्ट्रीय स्तर का एकदिवसीय सेमिनार ''अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संकट बनाम भारतीय अर्थव्यवस्था'' विषय पर स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, नोएडा में आयोजित किया गया, जिसमें भारत वर्ष के विभिन्न वर्गों के बैंकरों, बैंकों की प्रशिक्षण संस्थाओं के संकाय सदस्यों द्वारा इस विषय से संबंधित विविध मुद्दों पर आलेख तैयार कर प्रस्तुत किए गए ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया । सेमिनार की अध्यक्षता श्री डी.पी. भटेजा, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय ने की । उन्होंने अपने संबोधन में वित्तीय संकट के बारे में अपने विचार व्यक्त किए । कार्यक्रम के स्वागत भाषण में श्री ए.के. हांडा, महाप्रबंधक, नेशनल बैंकिंग समूह (उत्तर) ने उपरोक्त ज्वलंत विषय पर सभी बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं की भूमिका को सराहा । मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित डॉ. तरसेम चंद, निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने वक्तव्य में वित्तीय संकट के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रशंसा की और कहा कि बैंक ऑफ इंडिया द्वारा इस ज्वलंत विषय पर किया जा रहा यह सेमिनार सराहनीय है । बैंक ऑफ इंडिया ने एक ही मंच पर इतने अधिक बैंकों की प्रतिभाओं को वित्तीय संकट जैसे विषय पर राजभाषा में विचार-विमर्श के लिए उपस्थित होने का मौका दिया है । निश्चित रूप से ही यह कार्य न केवल वित्तीय मामलों की दृष्टि से बल्कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय कार्य है । विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री एस.के. मल्होत्रा, निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने वित्तीय संकट जैसे बैंकिंग विषय को राजभाषा के माध्यम से उठाये जाने एवं लेख प्रस्तुत किए जाने की मुक्त कंठ से सराहना की । उन्होंने कहा कि राजभाषा कार्यान्वियन की दिशा में उठाया गया यह सराहनीय कदम है ।

अंतिम (समापन) सत्र की अध्यक्षता श्री डी.पी. भटेजा,, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया ने की । सत्र संचालकों द्वारा विभिन्न सत्रों के दौरान हुए विचार-विमर्श से निकले निष्कर्षों के सारांश भी प्रस्तुत किये गये एवं समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री डी.के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार की सराहना की । उन्होंने कहा कि बैंक ऑफ इंडिया ने इस सेमिनार का अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से आयोजन किया है जो अन्य बैंकों के लिए भी एक मिसाल है । हमारा मुख्य उद्देश्य/प्रयोजन यही है कि बैंकिंग कामकाज राजभाषा में हो और आज वित्तीय संकट जैसे वित्त मामलों संबंधी विषय पर राजभाषा में पहल कर बैंक ऑफ इंडिया ने प्रशंसनीय कार्य किया है । मेरा अन्य बैंकों/संस्थाओं से आग्रह है कि वे राजभाषा कार्यान्वियन की दिशा में बैंक ऑफ इंडिया का अनुसरण करें । अंत में श्री कल्हण, प्राचार्य, स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, नोएडा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया ।

प्रतियोगिता/पुरस्कार

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.अनु. प.) 12, रीजेन्ट पार्क, कोलकाता-700040

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 9 फरवरी 2012 के तारा मंडल सभागृह, इंदिरा गांधी साइंस प्रांगण, पटना में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत "ग" क्षेत्र में संघ सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2010-11 के लिए राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कोलकाता को तृतीय पुरस्कार एवं कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय कार्यालय) के आयोजक आयुद्ध निर्माणी बोर्ड कोलकाता को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय केरल और लक्षद्वीप कोट्टण हिल बंगला तिरुवनंतपुरम-695010

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जो वार्षिक कार्यक्रम बनाए गए हैं, उसके सुचारु कार्यान्वयन करने के वास्ते इस निदेशालय को डी जी एन सी सी, नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण-पश्चिम), केच्ची, तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, केरल आदि स्थानों से पुरस्कार प्राप्त होने को मौके मिलते रहते हैं । 08 दिस. 2011 को कला मंदिर, मैसूर में आयोजित दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्र की ओर से आयोजित राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा के उत्तम कार्य निष्पादन के प्रति इस निदेशालय को द्वितीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया । उक्त सम्मेलन में इस निदेशालय के श्रीमती एम निर्मला कुमारी, हिंदी अनुवादक श्री एन पी सिन्हा, सचिव, राजभाषा विभाग की ओर से पुरस्कार ग्रहण कर लिया है ।

सहायक आसूचना ब्यूरो, गृह मंत्रालय, तिरूवनंतपुरम

स.आ. ब्यूरो, तिरुवनन्तपुरम को वर्ष 2010-11 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा निष्पादन के लिए नराकास (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति--जिसके 108 सदस्य स्थापनाएँ हैं) राजभाषा पुरस्कार के चयन में चौथा स्थान और उनका हिंदी गृह पत्रिका "सृष्टि" (सितंबर 2010 में प्रकाशित द्वितीय अंक) को वर्ष 2010-11 के उत्कृष्ट गृह पत्रिका की श्रेणी में पाँचवाँ पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

दिनांक 24-01-2012 को शाम 3.30 बजे को आयोजित संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान, संयुक्त निदेशक, स.आ. ब्यूरो, तिरुवनन्तपुरम को पुरस्कार वितरित किए गए ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर

दिनांक 18-11-2011दोपहर को संपन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ऊटी--कुन्नूर की अर्ध वार्षिक बैठक में वर्ष 2010-11 का राजभाषा श्रेष्ठ कार्य निष्पादन का चल वैजयन्ती शील्ड एवं प्रमाणपत्र न.रा.क.स. ऊटी-कुन्नूर अध्यक्ष श्री अशोक कुमार, महा प्रबंधक, कार्डाइट निर्माणी संरक्षण मंत्रालय, भारत सरकार, अरूवनकाडू, नीलगिरी के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया । यह गौरव की बात है कि इस विशिष्ट पुरस्कार, राजभाषा श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु इस केंद्र को तीसरी बार सम्मानित किया गया है, पिछले 2005-06, 2007-08 में भी मिला था ।

एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड को इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन के सर्वोत्कृष्ठ निष्पादनार्थ एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'ग' क्षेत्र के केंद्र सरकारी संस्थाओं के लिए लगाया गया वर्ष 2009-2010 के इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार (दूसरा स्थान) प्राप्त हुआ। कंपनी इस पुरस्कार के लिए छठवीं बार हकदार बन गयी। हिंदी दिवस के सिलसिले में 2011 सितंबर 14, को नई दिल्ली के विज्ञान भवन के प्लेनरी हॉल में आयोजित भव्य समारोह में भारत के सम्मानीय राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील के करकमलों से एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम. अय्यप्पन ने यह पुरस्कार हासिल किया। इस अवसर पर केंद्र गृह मंत्री श्री पी. चिदंबरम, गृह राज्य मंत्री श्री मुल्लाप्पल्लि रामचन्द्रन, श्री जितेंद्र सिंह, गृह विभाग के सचिव श्री आर.के. सिंह, राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती वीणा उपाध्याय भी उपस्थित थे।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय, गुवाहाटी को पूर्वोत्तर क्षेत्र के उपक्रम वर्ग में द्वितीय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

दिनांक 13 फरवरी, 2012 को गुवाहाटी शहर में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर वर्ष 2010-11 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में कार्य-निष्पादन की श्रेष्ठता के आधार पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के उपक्रम वर्ग में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय, गुवाहाटी को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री ए.एन.पी. सिन्हा, सचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने श्री आर.के. सिंगला, क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक, भा.वि.प्रा., पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी को राजभाषा शील्ड तथा श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, राजभाषा अनुभाग, पुणे

मध्य रेल, पुणे मंडल को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार

मध्य रेल के पुणे मंडल को वर्ष 2010-11 में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय सरकारी कार्यालयों एवं उपक्रमों की श्रेणी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पुणे नगर में केंद्रीय सरकार के 114 कार्यालयों एवं उपक्रमों में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा करने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष अर्थात् 2009-2010 में भी पुणे मंडल राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में अग्रणी रहा था और कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

राजभाषा के क्षेत्र में पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय इंदौर को प्रथम पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन को यथा-लक्ष्य गति देने तथा सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य) भोपाल द्वारा वर्ष 2010-11 की अवधि में पोस्टमास्टर जनरल इंदौर कार्यालय को श्रेष्ठ निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार महानगर पालिका के संत तुकाराम सभागृह, एन-5, सिडको, जीजामाता स्कूल के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में 16 मार्च 2012 को पश्चिम एवं मध्य क्षेत्र के राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में कुलपति डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद डॉ. विजय पांढरीपांडे ने संयुक्त सचिव राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली श्री डी.के. पाण्डेय की मौजूदगी में प्रदान किया। पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय इंदौर की ओर से सहायक निदेशक द्वितीय श्री पी.डी. वैरागी और हिंदी अनुवादक श्री प्रवीण कोटवाला ने इसे ग्रहण किया। इस अवसर पर हिंदी अनुवादक श्री प्रवीण कोटवाला को वर्ष 2010-11 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन में उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद अनुसंधान भवन, 2 रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद मुख्यालय (सीएसआईआरमु.) के राजभाषा अनुभाग तथा मानव संसाधन विकास केन्द्र (एचआरडीसी), गाजियाबाद के संयुक्त तत्वावधान में सीएसआईआर के उप वित्त सलाहकारों/वित्त एवं लेखा अधिकारियों के लिए एचआरडीसी, गाजियाबाद में दिनांक 01-02-12 से 03-02-12 तक आयोजित ''राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम''

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद मुख्यालय (सीएसआईआरमु.) के राजभाषा अनुभाग तथा मानव संसाधन विकास केन्द्र (एचआरडीसी), गाजियाबाद के संयुक्त तत्वावधान में सीएसआईआर के उप वित्त सलाहकारों/वित्त एवं लेखा अधिकारियों के लिए एचआरडीसी, गाज़ियाबाद में दिनांक 01-02-12 से 03-02-12 तक आयोजित ''राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया जिसमें तैंतीस (33) अधिकारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रक्षा मंत्रालय में कार्यरत प्रख्यात भाषा प्रेमी, कुशल प्रशासक, वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ डॉ. राकेश सहगल, आईडीएएस को आमंत्रित किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में बोलते हुए डॉ सहगल ने कहा कि भाषा हमारी संस्कृति, सभ्यता, भावनाओं, सोच, दृष्टि, रीति-रिवाजों, परम्पराओं की वाहक होती है। अतः हमें अपने कार्यों को मौलिक रूप से हिंदी में करने का निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए। वित्तीय कार्यों में राजभाषा हिंदी का उपयोग सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों के उपयोग से आसानी से सहज स्वीकार्य एवं लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि हमें अपने दैनिक कार्यों में उपकरणों का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से हमारी भाषा पर पकड़ बहुत ही मजबूत, सहज एवं अनायास बन जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि यदि कम्प्यूटर पर ही अपने द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों, वाक्याशों को अपलोड कर दें तो कम्प्यूटर हमारे संदर्भ के अनुसार उपयुक्त शब्द, वाक्यांश हमारी आवश्यकता के समय खोज कर हमारे सामने रख सकता है। यदि इस पद्धति से रोजाना एक आध घंटे कम्प्यूटर पर काम करेंगे तो उस पर उपलब्ध अनेक सुविधाओं की जानकारी हमारी पहुंच में आ जाएगी।

तत्पश्चात सीएसआईआर मुख्यालय के वरिष्ठ उप वित्त सलाहकार श्री सी.एस. मलिक, उप वित्त सलाहकार श्री एम. के. जैन, वित्त व लेखा अधिकारी श्री जी. के. नागपाल ने वार्षिक लेखा रिकॉर्ड्स के रख-रखाब में आम विसंगतियों और उनके समाधान, बैंक अकांउट मिलान तथा ओ.बी. अग्रिम/समायोजन और अन्य संबंधित मदों के बारे में प्रतिभागियों के बीच जहां एक ओर अत्यंत सरल, सहज व व्यावहारिक भाषा में अपने विचार रखे, वही प्रतिभागियों के अनेक प्रश्नों, दैनिक वित्तीय कार्यों में आने वाली कठिनाइयों के समाधान भी बहुत ही उपयोगी और व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत किए। यह सत्र वित्तीय कार्यों को सुगम और गतिशील बनाने की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी और उपयोगी सिद्ध हुआ।

भोजनावकाश के बाद परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ उप सचिव (राभा) श्री राकेश कुमार शर्मा व वित्त एवं लेखा अधिकारी श्री शेलेन्द्र प्रताप सिंह ने वित्तीय कार्यों को करते हुए राजभाषा हिंदी के उपयोग को कैसे अमलीजामा पहनाया जाए व किन विधियों, उपकरणों की सहायता से परिषद की विभिन्न प्रयोगशालाओं/संस्थानों में राजभाषा हिंदी के उपयोग में वृद्धि की जाए, विषय पर स्वरचित सलाइड शो पर पॉवर प्वांइट प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को www.msm.co.in/ilit, गुगल ट्रांस्लिट्रेशन व गुगल ट्रांस्लेशन जैसे डिजिटल टूल्स की जानकारी दी और प्रतिभागियों को www.msm.co.in/ilit सुविधा पर कार्य करने का अभ्यास भी कराया। साथ ही ये आशा भी व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी अपने-अपने कार्यालयों में अपने अन्य साथियों को इस सुविधा का उपयोग करने हेतु प्रेरित करेंगे ताकि संघ की राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया जा सके।

दूसरे दिन प्रथम के दो सत्रों में भारत सरकार के राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने यूनीकोड की उपयोगिता तथा उसके महत्वादि के साथ-साथ प्रतिभागियों को विभिन्न डिजिटल टूल्स यथा msn.co.in/ilit की उपयोगिता व राजभाषा से संबंधित अनेक वेबसाइटों आदि की जानकारी दी ।

तत्पश्चात परिषद मुख्यालय में कार्यरत वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी) पूरन पाल सीएसआईआर में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रभावी बनाने के लिए प्रतिभागियों को अत्यंत अभिनव, व्यावहारिक तथा उपयोगी जानकारी दी । इस दौरान राजभाषा के प्रति प्रतिभागियों के सामूहिक और व्यक्तिगत दायित्वों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया, साथ ही उनकी अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का निराकरण भी किया गया ।

भोजनावकाश के बाद वाले दो सत्रों में भारत सरकार के पूर्व वरिष्ठ निदेशक (राजभाषा) व विज्ञान एवम् प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. महेश चंद्र गुप्त ने प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा संबंधी संवैधानिक व्यवस्थाओं और उनके अनुपालनार्थ हमारे दायित्व विषयक सारगर्भित व अनुभवजन्य जानकारी दी तथा प्रतिभागियों को राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा अपने गौरवशाली अतीत की अत्यन्त प्रेरणास्पद जानकारी दी ।

कार्यक्रम के दूसरे दिन के अंतिम सत्र में सुश्री मीता लाल, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, अरविंद भाषा विज्ञान संस्थान ने वैज्ञानिक/कार्यालयी लेखन में ''द पैंगुइन इंग्लिश-हिंदी/हिंदी-इंग्लिश थिसारस ऐंड डिक्शनरी'' की भूमिका और कार्यालयी कार्य को राजभाषा हिंदी में सम्पन्न करने में उसकी उपयोगिता पर अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक तथा प्रेरक प्रस्तुतीकरण किया तथा विभिन्न हिंदी-अंग्रेजी-हिंदी शब्दों के पर्यायों के संबंध में प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण भी किया । प्रतिभागियों का मत था कि इससे उनके दैनिक कार्यालयी कार्यों को सहज व सुगम ढंग से हिंदी में करने को बल मिलेगा ।

कार्यक्रम के तीसरे दिन के प्रथम दो सत्रों में प्रतिनियुक्ति पर गए सीएसआईआर के वरिष्ठ उप वित्त सलाहकार श्री रत्न लाल शर्मा ने वित्तीय कार्यों में राजभाषा के सहज उपयोग के ऊपर अपना अनुभवजन्य व्याख्यान दिया और मत व्यक्त किया कि सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी का उपयोग प्रभावी ढंग से किया जाना चाहिए । इससे न केवल कार्य में गतिशीलता, पारदर्शिता आएगी, वरन् आने वाली पीढ़ीं के लिए भी एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत होगा ।

प्रतिभागियों द्वारा कार्यक्रम को अत्यन्त उपयोगी व ऊर्जावान पाया गया तथा कार्यक्रम के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिभागी अधिकारियों के बीच स्वत: स्फूर्त उत्साह, प्रतिबद्धता देखने को मिली ।

समापन तथा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह में डॉ. मनु सक्सेना, प्रभारी-वैज्ञानिक, एचआरडीसी तथा वरिष्ठ उप सचिव सीएसआईआर श्री राकेश कुमार शर्मा ने यह उम्मीद जताई कि तीन दिवसीय इस कार्यक्रम से प्रतिभागी अवश्य लाभान्वित हुए होंगे । उन्होंने यह भी कहा कि यह कार्यक्रम तभी सार्थक सिद्ध होगा जब इस दौरान अर्जित ज्ञान को प्रतिभागी अपने-अपने कार्यालयों में उपयोग में लाएंगे व अन्यों को भी इस हेतु प्रेरित-प्रोत्साहित करेंगे ताकि परिषद में संघ की राजभाषा नीति का सफलतम कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सके ।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का सफल समन्वयन, संचालन तथा संयंतीकरण परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी) पूरन पाल द्वारा किया गया ।

प्रधान कार्यालय, कार्पोरेशन बैंक मंगलूर

कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग

अधिकारियों के लिए विशेष कार्यशाला प्रशिक्षण

प्रधान कार्यालय के अधिकारियों के लिए दिनांक 21 फरवरी, 2012 को कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग विशेष कार्यशाला प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया । सहभागियों की सूची संलग्न है ।

श्रीमती सरस्वती, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा) ने कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों का औपचारिक रूप से स्वागत किया । तत्पश्चात् कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन डॉ जयन्ती प्रसाद नौटियाल, सहायक महा प्रबंधक ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में सहायक महाप्रबंधक महोदय ने

कहा कि तकनॉलोजी के विकास के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं ने भी स्थान पाया है । उन्होंने कंप्यूटर के विभिन्न आयामों से प्रतिभागियों को परिचित कराया । एच आर एम एस में हिंदी की सुविधा उपलब्ध कराने एवं हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयर जिनके माध्यम से हिंदी भाषा में काम करने में सुविधा मिल रही है इनके संबंध में जानकारी दी । यूनिकोड के आगमन से किसी भी भारतीय भाषा में कंप्यूटर में काम करना आसान हो गया है ।।आगे उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमारी राजभाषा हिंदी है, कार्यालयीन काम-काज में इसे आगे ले जाना हम सबका कर्तव्य है ।

डॉ के सी अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (राभा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ ।

डॉ के सी अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने यूनिकोड संस्थापन तथा कीबोर्ड परिचय, लघु टिप्पण लेखन, कीबोर्ड शॉर्ट कट का उपयोग, पत्र लेखन-पत्रशीर्ष, पत्र संख्या, दिनांक, पता, विषय आदि का द्विभाषीकरण तथा की बोर्ड उपयोग पर प्रशिक्षण दिया ।

दोपहर के सत्र में श्रीमती सरस्वती, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा) ने लघु अनुवाद तथा बैंकिंग शब्दावली सॉफ्टवेयर का उपयोग, हिंदी शब्द संसाधन अभ्यास कराया एवं स्टाफ सदस्यों के लिए संक्षिप्त टंकण परीक्षा एवं तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया ।

तत्पश्चात् प्रतिभागियों से कार्यशाला के संबंध में प्रतिसूचना प्राप्त की गई । सभी प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला को उपयोगी बताया तथा इस कार्यशाला के संबंध में अच्छी प्रतिक्रिया व्यक्त की ।

प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित सुझाव/प्रतिसूचना दिए गए:-

1. कार्यशाला का आयोजन दो कार्य दिवस हेतु किया जाए ।

2. संयुक्त अक्षरों पर अधिक टंकण कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिए । जिससे टंकण में आने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सके ।

समापन सत्र में डॉ जयन्ती प्रसाद नौटियाल, सहायक महाप्रबंधक ने आश्वासन दिया कि उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार किया जाएगा तथा कार्यशाला के दौरान आयोजित दो प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया ।

पृष्ठ 45 का शेष

एवं प्रफुल्लित रह कर भी मन को खुशी प्रदान की जा सकती है । इन सबके अलावा विश्राम करना भी इस मानव शरीर के लिए एक बहुत ही आवश्यक आवश्यकता है क्योंकि जैसे एक निर्जीव मशीन भी लगातार चलने से गर्म हो जाती है, और उसे भी काफी समय तक चला लेने के बाद थोड़े समय के लिए बन्द करना पड़ता है, एवं समय-समय पर उसकी सर्विसिंग, आइलिंग एवं ग्रीसिंग करने की आवश्यकता होती है तभी वह सही तरह से काम करती रह सकती है अन्यथा वह भी आगे कार्य करने से इन्कार कर देती है यानि कि खराब हो जाती है तो हम तो जीते जागते इन्सान हैं जिसमें शरीर और मन दोनों ही क्रियाशील रहते हैं, उन्हें भी अपनी कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि समय-समय पर उन्हें भी आराम दें, और आवश्यकता अनुसार ऑइलिंग एवं ग्रीसिंग भी करते रहना चाहिए । शरीर की ऑइलिंग एवं ग्रीसिंग पौष्टिक खाना एवं विश्राम है । अत्यधिक शोर से भी बचिए क्योंकि आजकल यह भी कई बीमारियों का कारण बन रहा है ।

अन्त में मैं कहना चाहूंगी, कि इतना ध्यान रखते हुए भी अगर किसी कारणवश रोग हो ही जावे तो सिर्फ एलोपैथिक पद्धति पर ही विश्वास नहीं करें हमारी भारतीय प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों को जिसमें आयुर्वेदिक चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथिक पद्धति, एक्यूप्रेशर, आदि आदि अनेक वह पद्धतियाँ है जिन्होंने ने भी अपनी उपयोगिता साबित की है और आज तो उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक आधार पर भी सफल माना जा रहा है तथा औद्योगिक जगत एवं समुद्र पार के देशों में भी इन्हें खूब अपनाया जा रहा है, तो हमें भी उन पर विश्वास करना चाहिए और उन्हें भी अपनाकर देखना चाहिए, तब आप पाएंगे कि वास्तव में यह अन्य पद्धतियां भी कम कारगर नहीं हैं बल्कि कभी-कभी ये वो काम कर देती है जो एलोपेथी भी नहीं पाती है । इस प्रकार उपरोक्त छोटी-छोटी बातों को अपनाकर एक भरपूर स्वस्थ जीवन का आनन्द उठाएं, यही मेरी पाठकों के लिए शुभकामना है । ■

यूनिकोड क्यों?

- सभी कार्य हिंदी में संभव । जैसे - वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि
- यह अंतर्राष्ट्रीय मानक है ।
- हिंदी की फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान ।

  (किसी भी ऑपरेटिंग सिस्टम तथा ब्राउजर में)
- हिंदी की-वर्ड पर किसी सर्च इंजन (गूगल आदि) में सर्च ।
- नि:शुल्क उपलब्ध एवं आसानी से installation

यूनिकोड क्या है?

यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लेटफॉर्म हो, चाहे कोई भी प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो ।

- यूनिकोड मानक में विश्व की लेखनीबद्ध भाषाओं के लिए सब करैक्टरों के इनकोड करने की क्षमता है ।
- यूनिकोड 16-बिट इनकोडिंग का प्रयोग करता है जो 65000 करैक्टरों से भी ज्यादा (65536) के लिए कोड-प्वाइंट उपलब्ध कराते हैं ।
- यूनिकोड स्टैंडर्ड प्रत्येक करैक्टर को एक विलक्षण संख्यात्मक मान और नाम देते हैं ।
- भारतीय भाषाओं के लिए Unicode Encoding के लिए UTF-8 का प्रयोग होता है ।

यूनिकोड enable करने की प्रक्रिया

राजभाषा विभाग की वेवसाइट

http : / / rajbhasha. gov. in

अथवा

http : / / rajbhasha. nic. in

के मेन पेज से अध्ययन सामग्री/ Study Material

भाषायी कंप्यूटरीकरण-यूनिकोड का प्रयोग पर क्लिक करें

पाठकों के पत्र

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' का 132वें अंक (जुलाई-सितंबर, 2011) की मानार्थ प्रति की एक प्रति प्राप्त हुई । राजभाषा हिंदी को राष्ट्रीय एकता एवं आत्मीयता की भाषा के स्तर पर ले जाने के लिए, यह पत्रिका जो कार्य कर रही है वह सराहनीय है । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूर्णतया सहायक है । सम्पादक मण्डल का कार्य प्रशंसनीय है ।

–नागेश आर. अय्यर
समन्वय अधिकारी
सी.एस.आई.आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स, सी.एस.आई.आर. कैंपस, तरमणी, चेन्नै-600113

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' अंक 131 (जुलाई-सितम्बर, 2011) पत्रिका में डॉ सीताराम अधिकारी का लेख "अनुवाद कला : एक परिचय", डॉ. कमलेश सिंह का लेख "देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान", गुलाबराय हाडे का लेख "वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएं", कैलाशनाथ गुप्त का लेख "भारतीय सिक्कों में नागारी लिपि" इत्यादि की लेख बहुत ही रोचक एवं उत्तम हैं । इसके अलावा इस त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से कई कार्यालयों के हिंदी संबंधी गतिविधियों की अद्यतन सूचनाएँ मिलती रहती हैं । इस पत्रिका के माध्यम से अवश्य ही हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है ।

–मीनू सरदार
सहायक निदेशक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, भुवनेश्वर, ओड़िशा

"राजभाषा भारती" का 132वां अंक (जुलाई-सितम्बर,) पत्रिका में समाहित सभी विषय ज्ञानवर्द्धक एवं सारगर्भित हैं । डॉ. के. मंजुला द्वारा लिखित "हिंदी के वर्चस्वी कवि त्रिलोचन" एवं श्री एन.आर. मार्तोडकर द्वारा लिखित "एक पेड़ की आत्मकथा" अत्यंत रोचक है ।

–हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु, 361 अण्णा सालै, चेन्नै-600013

त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती का अंक 132 (जुलाई-सितम्बर, 2011) पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न कार्यालयों की गतिविधियों, राजभाषा विभाग की नई पहलों तथा उत्कृष्ठ लेख इस पत्रिका को संग्रहणीय बनाते हैं ।

–एम.जी.सोम शेखरन नायर
हिंदी अधिकारी
द्रव नोदन प्रणाली केंद्र, वलियमला, तिरुवनंतपुरम-695547

आप द्वारा संपादित 'राजभाषा भारती' का जुलाई-सितंबर, 2011अंक 131 प्राप्त हुआ, धन्यवाद !

वर्तमान ज्वलंत विषयों के प्रति आपकी सोच व चिंतनशीलता मेरे लिए प्रशंसनीय हैं, बेशक ! उम्मीद है, कि आपके परिपक्व एवं सुलझे हुए संपादकत्व में एक समय-सापेक्ष्य एवं चिंतनशील विषयों को तरज़ीह देने वाली एक समर्पित और सारगर्भित पत्रिका का दर्जा भी जरूर प्राप्त कर लेगी ।

–गुलाबराव हाडे
महेश निवास, पहली मंजिल, दीप म्यूझिक के सामने, नूतन वसाहत अंबर्ड, जिला-जालना, (महाराष्ट्र)-431204

त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' का 131वां अंक (जुलाई-सितम्बर, 2011) पत्रिका में समाविष्ट सभी सामग्री पठनीय, ज्ञानवर्द्धक एवं उच्च स्तरीय है । विशेषकर डॉ. कमलेश सिंह का लेख ''देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान'' श्री देवेन्द्र उपाध्याय का लेख ''हिंदी के प्रचार-प्रसार और राजभाषा विभाग'', डॉ राज किशोर का लेख ''भारतीय कृषि एवं जन-जीवन के अप्रतिम महाविज्ञानी : घाघ एवं भड्डरी'', श्री कुलदीप कुमार का लेख ''जीव जन्तुओं का अजीबोगरीब संसार'', श्री आर.एस. सेंगर एवं सुश्री रेणु चौधरी का लेख ''स्वास्थ्य बूटी एलोवेरा'' विचार प्रधान एवं चिन्तन शील लेख है । राजभाषा गतिविधियों, का विस्तृत एवं सचित्र विवरण आपकी पत्रिका में चार चांद लगाता है ।

–उप महालेखाकार (प्रशासन)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का कार्यालय, मध्य प्रदेश ''लेखा भवन'', ग्वालियर-474002

''राजभाषा भारती'' पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । मुद्रण भी प्रशंसनीय है एवं इसमें प्रकाशित रचनाएं स्तरीय एवं संग्रहणीय हैं । इसमें प्रकाशित रचना ''अनुवाद कला : एक परिचय'', ''हिंदी के वर्चस्व कवि त्रिलोचन'', साही का साहित्य'', ''एक पेड़ की आत्मकथा एवं स्वास्थ्य-बूटी'', ''एलोवेरा'' का समावेश पत्रिका को पठनीय बनाने में सार्थक सिद्ध हुआ है ।

–जुगल किशोर
हिंदी अधिकारी
कृते महानिदेशक, आयुध निर्माणियां ''आयुध भवन'', 10-ए, शहीद खुदीराम बोस रोड, कोलकाता-700001

''राजभाषा भारती'' जिस उद्देश्य से निसृत है वह राजभाषा के क्षेत्र में बौद्धिक एवं भावनापूर्ण सर्वांगीण विकास के लिए दृढ़ संकल्पित हैं । पत्रिका में साहित्य के लगभग सभी सरल विधाओं का समावेश और उसके माध्यम से जनजागृति की परिकल्पना सचमुच श्रद्धेय है । भाव आप दें और हम पाठक मार्गदर्शन पा लें इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है ।

–ललिता नायर निर्दोष
सहायक निदेशक (रा.भा.)
कृते उप महानिदेशक (का.) प्रसार भारती, आकाशवाणी, चेन्नै-4

आपके विभाग की त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका सुंदर व जानकारी पूर्ण है । पत्रिका के सफल संपादन के लिए आपकों बहुत-बहुत बधाई ।

–प्रकाश गोकर्ण
सं.प्रबंधक (इलै) (रा.अ.)
कृते विमानपत्तन निदेशक-गोवा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा हवाई अड्डा, गोवा-403801

त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' का अक्तूबर-दिसम्बर, 2011 अंक पत्रिका में प्रकाशित संपादकीय हिंदी की महता को प्रदर्शित कर रहा है और हिंदी के प्रति संपादक जी के विचार अनुकरणीय एवं विचारणीय हैं । चिंतन स्तंभ में प्रकाशित हिंदी से संबंधित सभी लेख हमें हिंदी के भविष्य, उसकी वर्तमान स्थिति और किन कारणों से हिंदी को नुकसान हो रहा है, इन पर गहन विचार करने को मजबूर करती हैं । तकनीकी स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित लेख ''मधुमेह रोग की रोकथाम'' एक पठनीय लेख हैं वहीं ''वित्तीय समावेशन'' भविष्य में इसकी उपयोगिता और आवश्यकता को प्रदर्शित कर रहा है ।

–डॉ. अमर सिंह सचान
राजभाषा अधिकारी
राष्ट्रीय आवास बैंक, कोर 5.ए, चतुर्थ तल, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' अंक 132वें अंक पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका में डॉ. सीताराम अधिकारी द्वारा रचित लेख ''अनुवाद कला : एक परिचय'' एवं आर. एस. सेंगर एवं रेणु चौधरी द्वारा रचित लेख ''स्वास्थ्य बूटी ऐलोवेरा'' बहुत अच्छी लगी । विश्व हिंदी दर्शन और राजभाषा संबंधी गतिविधियों आदि स्तम्भों के मनन से प्रत्येक पाठक को एक और नई दिशा की ओर बढ़ चलने का सबल मिलता है ।

–वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी)-1, महाराष्ट्र, दूसरी मंजिल, प्रतिष्ठा भवन, न्यू मरीन लाईन्स, 101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई-400020

''राजभाषा भारती'' जुलाई-सितम्बर, 2011 अंक में राजभाषा कार्यान्वियन से संबंधी लेख कार्यान्वियन को एक नई दिशा प्रदान करते हैं तथा हिंदी के प्रेमियों को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रेरित करते हैं । आज के समाज के नये शब्द भूमंडलीकरण, उदारवाद, बाजारवाद, उत्तर आधुनिकता राजभाषा कार्यान्वयन को किस हद तक मदद करेगी, यह तो समय ही बताएगा फिर भी, हमें भाषा के मामले में बदलते माहौल के साथ कदम बढ़ा कर चलना है । ''भारतीय सिक्कों में नगरी लिपि'' लेख ज्ञानवर्धक है । इस सुंदर अंक को प्रकाशित करने के लिए आपको एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

–डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल
सहायक महाप्रबंधक
कार्पोरेशन बैंक, राजभाषा प्रभाग, प्रधान कार्यालय, मंगलादेवी मार्ग, डा.पे.सं. 88, मंगलूर-575001

त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' का अंक 132 पत्रिका में जिन बिंदुओं तथा साहित्यिक भावनाओं का सफल समन्वय, केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वियन समन्वय समिति की ओर ध्यानाकर्षित करता है । क्योंकि इस पत्रिका में साहित्यिक मनीषियों एवं महान कवियों द्वारा हिंदी को सार्वभौम सत्ता के रूप में दशार्या गया है । पत्रिका के गहन अध्ययन करने पर क्रांति एवं परिवर्तन की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है । अभिप्राय यह है कि इस भीड़ की दुनियां में – भीड़ को चीरते हुए हिंदी साहित्य को आगे बढ़ाना है । इस संबंध में हम आपसे आग्रह करना चाहेंगे कि ऐसी बहुमूल्य पत्रिका जिसमें संविधान और राजभाषा अधिनियम में राजभाषा संबंधी दायित्वों को निभाने के प्रति सजगता दिखाई गई है इस सिलसिले को जारी रखें । क्योंकि इस पत्रिका में जो सारगर्भित तथ्य दर्शाया गया है वह वास्तव में हर साहित्य प्रेमियों के लिए एक अद्भुत उपहार है, जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हुए पुन: आग्रह करते हैं कि त्रैमासिक पत्रिका ''राजभाषा भारती'' को समयानुसार ग्राह्य कराते रहें ।

–पि. के. सेनगुप्ता
सचिव/कार्यान्वयन अधिकारी (प्रभारी)
कलकत्ता डॉक लेबर बोर्ड, 20वीं अब्दुल हमीद स्ट्रीट, कोलकाता-700069

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' के 132 के अंक पत्रिका में सम्मिलित सामग्री काफी उत्कंठा बढ़ाने वाली तथा रोचक है । हमेशा की तरह यह अंक भी महत्वपूर्ण जानकारी से भरा हुआ है ।

–श्रीमती देवकी शेट्टीगार
हिंदी अधिकारी
वेतन लेखा कार्यालय (अन्य श्रेणी) तोपखाना/सेना वायुरक्षा लेखागार, नासिक-422009

'राजभाषा भारती' अंक 132 पत्रिका राजभाषा के महत्व और इसके कार्यान्वयन के लिए हमारे संवैधानिक दायित्व का बोध कराने के साथ-साथ साहित्य, पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं कई अन्य महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विषयों पर भी जानकारी उपलब्ध कराती है । इस अंक में प्रकाशित लेख 'हिंदी का प्रचार-प्रसार और राजभाषा विभाग' राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम यह तो नहीं कह सकते कि मंजिल नजदीक है लेकिन हम उचित राह पर हैं एवं आगे भी बढ़ रहे हैं । यह सब राजभाषा विभाग के प्रयासों का ही परिणाम है ।

–सुरेन्द कुमार
का. कार्यपालक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, वि.या.से. परिसर, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, देवनहल्ली, बेंगलूरू

'राजभाषा भारती' के 132वें अंक में प्रकाशित चिंतन, साहित्यिकी, पर्यावरण, इतिहास आदि सब लेख अत्यंत रोचक एवं आकर्षक हैं ।

–आर. महेश्वरी अम्मा
हिंदी अधिकारी
अंतरिक्ष विभाग, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, केरल, तिरुवनन्तपुरम-695022

'राजभाषा भारती' अंक 132 (जुलाई-सितंबर) पत्रिका में आपने जयपुर विमानपत्तन के हिंदी कार्यों की प्रगति के विषय में जो लेख लिखा है वह सराहनीय है तथा इससे निश्चित ही हमें अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने में प्रोत्साहन प्राप्त होगा ।

–प्रीति रानी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
कृते निदेशक विमानपत्तन, जयपुर

'राजभाषा भारती' का 131वां अंक (जुलाई-सितंबर, 2011) सदैव की भांति यह अंक भी स्तरीय और पठनीय है । हिंदी अनुवाद तथा देवनागरी लिपि से सम्बन्धित आलेख पर्याप्त जानकारी समेटे हुए हैं । साहित्यकार कवि त्रिलोचन और साही से संबंधित आलेख विशेष रूप से पठनीय हैं । लीक से अलग हटकर 'पर्यावरण' में 'पेड़ की आत्मकथा', 'जीव जन्तुओं का अजीबोगरीब संसार' तथा 'भारतीय सिक्कों में नागरी लिपि' ज्ञानवर्द्धन होने के साथ ही अत्यन्त रोचक भी हैं । सर्वाधिक प्रसांसनीय आलेख है 'स्वास्थ्य बूटी एलोविरा' जो रोचक और पठनीय होने के साथ ही अत्यन्त जनोपयोगी भी है । इस आलेख में कमी यही है कि इसमें स्वास्थ्य-सुधार के पक्ष पर कम जोर दिया गया है और सौन्दर्य-सुधार पक्ष पर अधिक । यदि स्वास्थ्य सुधार तथा इसके उपयोग के तरीकों पर कुछ और अधिक प्रकाश डाला जाता तो इसकी उपयोगिता और अधिक बढ़ जाती । सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित इस प्रकार के आलेख कृपया अधिक मात्रा में देने का प्रयत्न करें ।

–प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा
साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार
10/611, कावेरी पथ मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

'राजभाषा भारती' का जुलाई-सितम्बर, 2011 का 131 अंक का संपादकीय व सामग्री उत्कृष्ट है । इसमें छपे सभी लेख रोचक, ज्ञानवर्धक एंव उपयोगी हैं ।

–कमल किशोर गुलाटी
सहायक महाप्रबंधक
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, प्रधान कार्यालय, तिलक मार्ग, पोस्ट बॉ. सं.नं. जयपुर-302005

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' पत्रिका को पढ़कर बहुत अच्छा लगा । यह प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक है । आशा है भविष्य में भी कृतार्थ करते रहेंगे ।

–रामलाल शर्मा
कृते सहायक निदेशक (रा.भा.)
मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय आयकर भवन, क्रिश्चियन बस्ती, जी.एस.रोड, गुवाहाटी-781005

पत्रिका 'राजभाषा भारती' का अंक 132(जुलाई-सितम्बर, 2011) पत्रिका का समुचित आकार आकर्षक मुख्य पृष्ठ, समुचित मुद्रण और उच्च अधिकारियों एवं कर्मचारियों की स्तरीय रचनाओं को पत्रिका में यथोचित स्थान दिये जाने से पत्रिका पठनीय हो गई है । भारत सरकार/गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग और सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों को भी 'राजभाषा भारती' सचित्र समाहित में प्रकाशित किए जाने से पत्रिका संग्रहनीय हो जाती है । 'राजभाषा भारती' हिंदी में प्रकाशित पूरे देश में एक सजग भूमिका निभाई है ।

–देबराज भट्टाचार्य
मेजर दण्डपाल अधिकारी
कृते कमाण्डेन्ट 58 गोर्खा प्रशिक्षण केंद्र, पिन-900332, मार्फत 99 ए पी ओ

MGIPRRND—3608HA/2012—5,000

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली में जनवरी-मार्च, 2012 में संचालित त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीक्षांत समारोह 29 मार्च, 2012 को आयोजित किया गया । दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर प्रख्यात आलोचक डॉ. नामवर सिंह उपस्थित थे । चित्र में डॉ. नामवर सिंह प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए । डॉ. सिंह की बाईं ओर ब्यूरो के निदेशक डॉ. एस. एन. सिंह हैं ।

दिनांक 10-02-2012 को नई दिल्ली अंचल द्वारा "अतर्राष्ट्रीय वित्तीय संकट बनाम अर्थव्यवस्था" विषय पर अखिल भारतीय स्तर की संगोष्ठी के आयोजन पर संबोधित कर रहे हैं विशेष अतिथि श्री एस. के. मल्होत्रा, निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार । मंच पर (बाएं से दाएं) बैठे हैं डॉ. संजीव पाठक, मुख्य प्रबंधक, मानव संसाधन विकास विभाग, श्री हरविन्द्र सिंह, निदेशक, बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य अतिथि डॉ. तरसेम चन्द, निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, श्री डी. पी. भटेजा, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, श्री ए. के. हांडा, महाप्रबंधक, नेशनल बैंकिंग समूह (उत्तर), श्री ए. पी. महान्ति, आंचलिक प्रबंधक, नई दिल्ली अंचल ।

पं.सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

प्रपत्र-4 (देखिए नियम-8)

प्रैस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम

समाचार-पत्रों का पंजीकरण (केंद्रीय) नियम

'राजभाषा भारती' के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना

1. प्रकाशन स्थान	एनडीसीसी-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110003
2. प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064
4. क्या भारत का नागरिक है?	भारतीय नागरिक
5. प्रकाशन का नाम व पता	शांति कुमार स्याल, सहायक संपादक राजभाषा विभाग, भारत सरकार, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23438137
6. संपादक (पदेन) का नाम व पता	डॉ. जय प्रकाश कर्दम निदेशक (अनुसंधान), राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 दूरभाष : 011-23438129
7. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	लागू नहीं

मैं, शान्ति कुमार स्याल घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह./-

प्रकाशक के हस्ताक्षर

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), एनडीसीसी-II भवन, नई दिल्ली-110001 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित।